समर्पण

मरु-भारती
के
प्रधान संपादक
राजस्थानी साहित्य-गगन
के
जाज्वल्यमान नक्षत्र
व
हिन्दी जगत् के
श्रेष्ठ आलोचक एवं निबन्धकार
श्रद्धेय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल
को
उनके स्नेहमय निरंतर प्रोत्साहन
के लिए
श्रद्धा पूर्वक समर्पित

—गोविन्द अग्रवाल

भूमिका

लोक-कथाएँ साधारण जनता के उपचेतन और सचेत मन की लहरों के जनप्रिय रूप हैं। कथाओं में सभव असभव सभी कुछ आ जाता है, परन्तु उद्देश्य उन सब का बिलकुल स्वाभाविक होता है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों का जो मूर्त रूप लोक-कथाओं में मिलता है वह लिखित इतिहास में कहाँ रखा है। जनता के जीवन का जो प्रतिबिम्ब लोक-कथाओं में प्राप्त होता है मैं उसे इतिहास से कम नहीं समझता, कहीं कहीं तो वह इतिहास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। रोमाञ्चक वर्णन, करारे व्यग, जनमन की सर्वाङ्गीण भावनायें लोक-कथाओं में ही तो देखने को मिलती हैं। श्री गोविन्द अग्रवाल बरसों से राजस्थान की लोक कथाओं के सग्रह और सम्पादन पर जुटे हुये है। साहित्य के लिये यह कार्य बडे महत्त्व का है। इन्होंने तो एक हजार से ऊपर लोक कथाओं का सग्रह कर डाला है। हिन्दी साहित्य के लिये इनकी यह देन अमर रहेगी। राजस्थान ही क्या, राजस्थान के बाहर वाले क्षेत्रों पर भी इनका प्रकाश पडेगा। हम अपने इतिहास को इन लोक कथाओं के द्वारा जल्दी समझ सकेंगे, आनन्द और विनोद तो इनसे प्राप्त होगा ही। हिन्दी ससार श्री गोविन्द अग्रवाल का सदा आभारी रहेगा। मेरी हार्दिक बधाई।

झाँसी
२३।४।१९६४

वृन्दावनलाल वर्मा

यज्ञ का अनुष्ठान

राजस्थान का अतीत साहित्य और उसका सांस्कृतिक वैभव अत्यन्त समुज्ज्वल है। जिस मरु-रानी ने पानी रखकर रक्त का दान दिया, जहाँ के मानी आन-बान पर मरते आये, जहाँ सतियों की दिव्य ज्योति वातावरण को आलोकित करती रही, जहाँ के निवासियों को पद-पद पर संघर्ष करना पड़ा, उस राजस्थान की भूमि चाहे सस्यश्यामला न रही हो, चाहे वहाँ जल के अनन्त स्रोत न फूटे हों, किन्तु इसमें सन्देह नहीं, संस्कृति के जितने अगणित स्रोत इस प्रदेश में फूटे, उनकी कोई तुलना नहीं।

वैसे तो समूचे लोक-साहित्य की दृष्टि से ही राजस्थान अत्यन्त समृद्ध है किन्तु थोड़े 'अर्थवाद' का आश्रय लेकर यदि कहें तो कह सकते हैं कि यहाँ की लोक-कथाएँ तो गगन-मण्डल में टिमटिमाते हुए तारों की भाँति असंख्य हैं। इस प्रदेश की अन्तरात्मा में अनेक कथा सरित्सागर और सहस्र-रजनी चरित्र छिपे हुए हैं।

अनेक वर्षों से मैं एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो राजस्थान की असंख्य लोक-कथाओं को लिपिबद्ध करने का काम कर सकें। अन्त में मेरा ध्यान राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के धनी श्री गोविन्द अग्रवाल की ओर गया जो राजस्थानी लोक-कथाओं के चलते-फिरते कोश हैं। मेरे 'ओढ़ाने' से उन्होंने 'मरु-भारती' में राजस्थानी लोक-कथा-माला के अनुष्ठान का शुभारम्भ कर दिया। उनके अध्यवसाय, उनकी स्मरण-शक्ति और उनकी दायित्व-भावना को देख कर मुझे साश्चर्य आह्लाद हुआ। यह बड़े हर्ष की बात है कि राजस्थानी लोक-कथा-माला का यह यज्ञ जब से प्रारम्भ हुआ, तब से यह अखण्ड और अनवच्छिन्न क्रम से आज भी चल रहा है और मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि भविष्य में भी अप्रतिहत गति से आगे बढ़ता रहेगा।

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के अनन्य प्रेमी और पृष्ठपोषक श्रीयुत कृष्णकुमारजी बिड़ला का ध्यान उक्त कोश की ओर आकृष्ट हुआ। उन्हीं की सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से यह कोश खण्डशः पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है। मरु-भारती-परिवार तथा उक्त कोश के संग्रह-कर्त्ता श्री गोविन्द अग्रवाल—हम सभी श्री बिड़ला जी के चिरकृतज्ञ रहेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री गोविन्द अग्रवाल द्वारा प्रारम्भ किया हुआ यह अखंड कोश-ग्रन्थ लेखक को यशस्वी बनाएगा तथा कोश-ग्रन्थों के क्षेत्र में शोध करने वाले अनुसंधित्सुओं को भी इससे सहायता मिलेगी। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक की भूमिका लिख कर हमें गौरवान्वित किया है जिसके लिए हम आपके अत्यन्त आभारी हैं।

२५ जून १९६४ ई०

कन्हैयालाल सहल
प्रधान सम्पादक
'मरु-भारती'
पिलानी

नम्र निवेदन

बचपन मे माँ, दादी और दादा से बहुतेरी कहानियाँ सुनी थी, जिनमे से कुछ याद रही, कुछ भूल गया। मेरे छोटे दादाजी बहुत रोचक ढग से कहानियाँ कहा करते थे। उनके कहानी कहने का ढग इतना मोहक था कि पाँच छह वर्ष की अवस्था मे उनके मुँह से सुनी खप्परिया चोर जैसी बडी कहानियाँ भी आज मुझे ज्यो की त्यो याद हैं। कहानी शुरू करने से पहले वे,

बात कहता बार लागै,
हुकारै बात मीठी लागै,
बात मे हुकारो,
फौज मे नगारो,
आधा'क सोवै आधा'क जागै,
जागतोडा की पगडी
सूत्योडा ले भागै,
जद बातां का रग घोरा लागै ..।

आदि कह कर हम मन लगा कर कहानी सुनने और हुकारा देने के लिए तैयार करते और फिर, "तो रामजी भला दिन दे, एक साहूकार के च्यार बेटा हा", आदि से कथा शुरू करते। कहानी सुनते वक्त हुकारा देना बहुत आवश्यक है। इससे कथा कहने वाला अनुभव करता है कि कथा ध्यान से सुनी जा रही है और कथा कहने मे उसका उत्साह बढता रहता है। इसी-लिए फौज मे नगारे की तरह कथा मे हुंकारे का महत्त्व है।

कभी कभी मैं सोचा करता कि ये कथाएँ लिखी जाएँ तो अच्छा हो। मुझे लगता कि यह बहुमूल्य कथा-साहित्य शीघ्रता से नष्ट होता जा रहा है क्योंकि देश की आजादी के बाद आने वाली पीढी इस कथा-साहित्य से

बहुत दूर हो चुकी है और आगामी चन्द वर्षों में यह प्राचीन कथा-साहित्य सदैव के लिए नष्ट हो जाएगा। मेरे मन में बड़ी छटपटाहट थी कि किसी प्रकार इस साहित्य को संरक्षण मिले। तभी मुझे मरु-भारती के प्रधान संपादक आदरणीय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल का आदेश मिला कि मैं मरु-भारती के लिए राजस्थानी लोक-कथाएँ लिखूँ। उनका आदेश मेरी इच्छापूर्ति का साधन बन गया। मुझे ऐसा लगा मानो घर बैठे ही गंगा आ गयी और मैं इस कार्य में जुट गया। लेकिन विधि की विडंबना ही कहिए कि हार्दिक इच्छा और रुचि होते हुए भी इस कार्य को पूरा समय नहीं दे सका। लेकिन डॉ० साहब का सहज स्नेह और प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा और उन्होंने थोड़े ही समय में मुझसे एक हजार कथाओं से भी अधिक का संग्रह करवा लिया। ये कथाएँ बराबर मरु-भारती में निकल रही हैं और आगे भी निकलती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आदरणीय डॉ० साहब के प्रयत्न से ही ये कथाएँ अब पुस्तकाकार निकल रही हैं, जिससे इन राजस्थानी कथाओं के प्रचार और प्रसार में अधिकाधिक बढ़ोतरी हो सकेगी। इन सब के लिए मैं डॉ० साहब का हृदय से अत्यंत आभारी हूँ।

राजस्थान की चप्पा-चप्पा भूमि वीरों के बलिदानों से भरी पड़ी है। यहाँ का कण-कण राजस्थानी वीर और वीरांगनाओं की गौरवपूर्ण गाथाओं से देदीप्यमान हो रहा है। महाभारत के वीर योद्धा कर्ण ने श्रीकृष्ण से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरी चिता ऐसी जगह बनायी जाए कि जहाँ पहले कोई दाग न लगा हो। श्रीकृष्ण के दिव्य दृष्टि से देखने पर सूई की नोक के बराबर ऐसी जगह मिल भी गयी थी। लेकिन राजस्थान की धरती पर शायद सूई की नोक के बराबर भी ऐसी जमीन न मिलेगी जो शूरवीरों के खून से सिंचित न हुई हो। उन शूरवीरों के अद्‌भुत पराक्रम की कितनी कथाएँ काल के कराल गाल में समा गयी हैं, इसका कोई लेखा—जोखा नहीं। फिर जो कथाएँ उपलब्ध हैं, वे भी दिन प्रति दिन नष्ट होती जा रही हैं क्योंकि अधिकतर कथाएँ तो लोगों की जबान पर ही चलती आ रही हैं और जो कहीं हस्तलिखित भी पड़ी हैं, वे भी दीमक

का भोजन बन जाने की बाट जोह रही हैं। इसलिए इन कथाओं के संरक्षण की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इनको संरक्षण न मिलना एक राष्ट्रीय अपराध होगा।

बात गाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक कथाएँ, नीति-कथाएँ, बाल-कथाएँ, साहसिक और परियों आदि की विभिन्न प्रकार की अनगिनत कथाएँ हैं, जिन सबका संकलन होना अत्यावश्यक है। नीति-कथाएँ, पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं की तरह ही बहुत रोचक एवं उपयोगी हैं। प्रायः हर राजस्थानी कहावत के पीछे कोई न कोई कथा होती है। इन कथा कहानियों को लोग-बाग प्रायः अपनी मंडली में, सफर में, अवकाश के समय अथवा कोई प्रसंग उपस्थित होने पर कहते हैं। वैसे मोटे तौर पर इन कथाओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है —

१ वे घरेलू बाल कथाएँ जो घर की बड़ी बूढ़ी स्त्री (नानी, दादी) या पुरुष बालकों को सुनाता है। शाम होते ही घर भर के बालक अपनी नानी, दादी को घेर कर बैठ जाते हैं और सब अपनी अपनी पसंद की कहानी कहने का आग्रह करते हैं। पशु-पक्षियों की, चोर-साहूकार की और राजा-रानी आदि की कथाएँ कह कर वृद्धा बालकों का मनोरंजन करती है। किसी हास्य-कथा को सुनते वक्त बालक हँसते हँसते लोटपोट हो जाते हैं तो किसी दुःखान्त कथा को सुनकर वे गमगीन बन जाते हैं। ये छोटी-छोटी कथाएँ बालकों के कोमल मनों पर सदैव के लिए अंकित हो जाती हैं। कथा सुनाते वक्त वृद्धा बालकों के साथ विनोद भी करती जाती है। जब उसे बच्चों को टालना होता है तो वह कहती है —

"का'णी कैवै कागलो, हुंकारो देवै मइया,
आधलिये नें चोर लेग्या, भाग रै पागलिया।"

और कथा समाप्त करने पर वह अपने किसी नन्हें पोते का नाम लेकर कहती है —

"ओड का'णी, मूगा राणी, मूग पुराणा, नडू के सासरै का नाई बामण सैं काणा।"

रात के समय घर के काम-काज से निवृत्त होने पर कथाएँ कही जाती है। यदि कोई बालक अपनी माँ से दिन मे कथा कहने का आग्रह करता है तो माँ यह कह कर बच्चे को टाल देती है कि दिन मे कथा कहने से मामा रास्ता भूल जाता है।

इन कथाओ का एक बडा लाभ तो यह रहा है कि घर के सभी बालक बडो के सानिध्य मे आने का प्रयत्न करते है। बालको को मनोरजन के साथ साथ अच्छी शिक्षा मिलती है तथा इस मनोरजन मे कुछ खच नही होता। इसके विपरीत सिनेमा वगैरह आधुनिक मनोरजन के साधना के चल पडने से बालक बडो के समीप आने मे कतराते हैं, उनके सानिध्य से दूर भागते हैं और पैसे खच करके अवगुण सीखते हैं।

२ दूसरे प्रकार की कथाएँ वे है जो रावल, भाट ढाढी, चारण, मिरासी और राणा मगा आदि अपने आश्रय दाताओ या यजमानो को सुनाते हैं। ऐसी कथाएँ काफी बडी होती है। कथा सुनाने वाले तरह तरह के दोहे और गीत आदि बीच बीच मे बोलते जाते है जिससे कथाओ मे बहुत रोचकता आ जाती है। इस प्रकार कथा कहने वाले अपने विशेष ढग से कथा कहते है वे पुरजोर आवाज मे कथा कहते हैं जिससे बैठे हुए सारे श्रोता अच्छी तरह कथा सुन सकें। साथ ही कथा कहने वाला कथा के पात्रो का सफल अभिनय भी करता जाता है। घोडे के दौडाने का प्रसग कथा मे आता है तो कथा कहने वाला इस प्रकार की ध्वनि निकालता है जैसे वास्तव मे घोडा दौड रहा हो।

राजा और रईसो के मनोरजन का मुख्य साधन शिकार होता था, लेकिन घर पर फुरसत के वक्त वे कुशल कहानी कहने वालो से शूरो, सामन्तो, सुन्दरियो और वीरागनाओ की कथाएँ सुना करते थे और उन्हें भरपूर पुरस्कार भी देते थे। अपनी पसन्द की कथाओ को वे लिखवा भी लेते थे।

३ महिमा व्रत कथाएँ—जो एक स्त्री अन्य स्त्रियो को घर मे,

मन्दिर में अथवा तुलसी या बड़-पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर सुनाती है। महिला धार्मिक व्रत कथाओं का अपना महत्त्व है। कथा कहने वाली स्त्री कथा को हरूफ ब हरूफ इस प्रकार सुनाती है मानो कोई पुस्तक पढ़ रही हो। एक अक्षर भी कहीं कम या अधिक नहीं हो पाता। इन कथाओं का ही यह प्रभाव है कि इस मरु भूमि में जहाँ वर्षा बहुत कम होती है यत्र-तत्र बड़ पीपल जैसे बड़े और घनी छाया वाले वृक्ष दिखलाई पड़ जाते हैं। वृक्ष की एक हरी शाखा को तोड़ने मात्र से कितना पाप होता है, यह बात ये कथाएँ बतलाती हैं और साथ ही यह भी बतलाती हैं कि आक की एक डाली को नियमपूर्वक सींचने से भी कितना फल मिलता है। फलतः वैशाख और जेठ की कड़ी धूप में भी राजस्थानी महिलाएँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए और कुमारी कन्याएं योग्य वर पाने की अभिलाषा से बड़-पीपल आदि वृक्षों को दूर-दूर से पानी लाकर अपने हाथों से सींचती हुई दिखलाई पड़ती हैं। वन महोत्सव मनाने का कार्य तो अधिकतर अखबार और प्रचार तक ही सीमित रहा लेकिन इन कथाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव सदियों से स्पष्ट दिखलाई पड़ रहा है।

'गंगा और जमुना' जैसी कथाएँ यह बतलाती रहीं हैं कि अनजाने भी चोरी करने का कितना बड़ा पाप होता है और देवी-देवताओं को भी इसका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फलतः इन कथाओं का सुप्रभाव राजस्थान की नारी पर बहुत अधिक पड़ा है। ये कथाएँ यथासमय नियमपूर्वक सुनी जाती हैं और कथा सुन लेने पर ही अन्न-जल ग्रहण किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए पुत्र-पौत्रों की कामना और धन-धान्य की [प्राप्ति के] लिए विधान-सहित कथाएँ अवश्य सुनती हैं, इसलिए इन कथाओं की परंपरा अबाध गति से चलती रही है। इन कथाओं की एक और विशेषता यह है कि कथा के अंत में जो फलश्रुति कही जाती है, उसमें यह कामना की जाती है कि कथा में वर्णित कार्य को जो पूरा करते वाले को मिला, वैसा सब को मिले। आज 'जय जगत' या 'जिओ और जीने दो' का नारा सब का एक अनोखी सूझ

लगता है लेकिन राजस्थानी व्रत कथाओं की यह एक परंपरागत अनूठी देन है।

इनके अतिरिक्त कथाओं की एक चौथी किस्म वह कही जा सकती है जो नव-युवक यार दोस्त अपने साथियों में बैठ कर कहते है। इन कथाओं में अश्लीलता का पुट होता है, अतः ऐसा साहित्य लिपि-बद्ध नहीं किया जा सकता। यदि इन कथाओं से अश्लील अंश और शब्द निकाल दिये जाएँ तो ये कथाएं भी बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। मैंने इन कथाओं में कुछ अश्लील कथाओं को श्लील बनाकर पेश करने का प्रयत्न किया भी है।

इतिहास तो राजाओं के जन्म-मरण की तारीखों आदि का सूचीपत्र मात्र होता है। तत्कालीन जन-जीवन पर तो इन कथाओं से ही प्रकाश पड़ता है। ये लोक-कथाएँ ही राजस्थान के तत्कालीन जन-जीवन की सच्ची तस्वीर खींचती है और इन कथाओं का राजस्थान के जन-जीवन पर भरपूर असर रहा है।

जहाँ तक हो सका है, मैंने कथाएँ संक्षिप्त रूप में ही लिखने की चेष्टा की है लेकिन साथ ही मेरा यह प्रयत्न भी रहा है कि कथा का कोई आवश्यक अंग छूटने न पाये। कुछ ऐसे भी प्रसंग होते हैं जो थोड़े बहुत हेर फेर के साथ कई कथाओं में आते है। जो प्रसंग एक कथा में विस्तार से आ चुका है, वैसा ही प्रसंग दूसरी कथा में आने पर मैंने उसे बहुत संक्षिप्त कर दिया है। मैंने अपना कर्त्तव्य ईमानदारी पूर्वक और निष्पक्ष भाव से निभाने की चेष्टा की है। इसमें कहाँ तक सफल हो सका हूँ, यह तो विद्वान् और सहृदय पाठक ही बतला सकेंगे। जहाँ तक भाषा का सवाल है, मैंने सरलतम और बोलचाल की भाषा में कथाएँ लिखने का प्रयत्न किया है, जिससे अधिकाधिक पाठक इन कथाओं को पढ़ सकें तथा जिन राज्यों में हिन्दी का अभी बहुत प्रचलन नहीं हुआ है और जहाँ सरल हिन्दी ही समझी और पढ़ी जाती है, वहाँ के निवासी भी इन कथाओं में रुचि ले सकें। कथाओं में ठीठ राजस्थानी ही रखे गये हैं और यत्र-तत्र कुछ बहु प्रचलित

राजस्थानी शब्दों से भी पाठकों को परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

जितनी कथाएँ लिखी गयी हैं, वे सब सुनकर या पढ़कर मूल रूप में ही लिखी गयी हैं। मैंने अपनी ओर से उनमें कुछ भी मिलाने की चेष्टा नहीं की है। जिन सखियों, मित्रों, परिचित या अपरिचित महानुभावों से मैंने कथाएँ सुनी हैं या जिन महानुभावों द्वारा पूर्व लिखित कथाओं से मुझे सहायता मिली है उन सब का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लोक-कथाओं का रत्नाकर है और इसके रत्नों को इकट्ठा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है जो सरकार या कोई बड़ी साधनसंपन्न संस्था ही कर सकती है। किसी एक आदमी के बूते का यह काम नहीं है और विशेष कर मेरे जैसे आदमी का तो कतई नहीं जो इस कार्य में रुचि रखते हुए भी इसे अधिक समय नहीं दे सकता। फिर भी मेरी हार्दिक इच्छा है कि अधिकाधिक राजस्थानी लोक-कथाओं का संकलन करूँ और आशा करता हूँ कि हितैषियों के आशीर्वाद और सह-योग से इस कार्य को निरंतर जारी रख सकूँगा।

चूरू
१ अप्रेल १९६४

—गोविन्द अग्रवाल

● पाबू करै ऊग ई कोनी

एक राईका खेत मे हल चला रहा था। रास्ते चलते हुए किसी आदमी ने उससे पूछा कि भाई, क्या बो रहे हो ? राईका ने कहा कि नही बतलाऊँगा। तब उस आदमी ने कहा कि तुम नही बतलाओगे तो क्या है जब अनाज उगेगा तब देख लूंगा। इस पर राईका ने कहा कि पाबूजी महाराज ऐसा करें कि अनाज उगे ही नही, तब देख कैसे लेगा ?
(राईका—एक जाति विशेष) (पाबूजी—एक राजस्थानी वीर जो देवता की तरह माने जाते हैं, नायक जाति के लोग उन्हे अपना आराध्य देव मानते हैं)

● घी का तो मार्या ई फिरां हां

एक सेठ के घर में घाटा था, इसलिए वह खाने-पीने की चीजें भी पूरी न ला पाता था। एक दिन उसकी स्त्री ने खिचडी बनाई। सेठ जीमने बैठा तो उसकी स्त्री ने उसे खिचडी परोस दी और उस में थोडा सा घी डाल दिया। सेठ ने और घी माँगा तो उसकी स्त्री ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब वह बार-बार घी माँगने लगा तो उसकी स्त्री को गुस्सा आ गया कि घी लाता तो है नही, खाने के लिए इतना व्यग्र रहता है और उसने डोई (काठ का चम्मच) उठाकर उसके सिर मे दे मारी। सिर से रक्त बहने लगा और सेठ उठकर बाहर चला गया। किसी ने पूछा तो सेठ ने कह दिया कि गिर पडने से चोट लग गई। उस आदमी ने कहा कि इस पर घी लगा लो कि जिससे यह चोट ठीक हो जाए। तब सेठ ने लम्बी साँस लेकर कहा कि इस घी के कारण तो सारी खराबी हुई है।

● ग्यानैंकी उगाई

एक गाँव के ठाकुर ने जाट को पीट दिया तो जाट ने हाकिम के

पास पुकार की। हाकिम ने ठाकुर का तलब किया। ठाकुर ने गवाही में 'ग्याना' पंडित का नाम लिखा दिया। 'ग्याना' ने ठाकुर से कहा कि जिस वक्त आपका झगड़ा हुआ था उस वक्त मैं गाँव में नहीं था, तब आपने मेरा नाम क्यों लिखवाया? ठाकुर ने कहा कि जिस मंदिर में तुम पूजा करते हो उसके नीचे जो एक सौ बीघा जमीन हमने छोड़ रक्खी है उसकी आय तुम लेते हो या और कोई? तब पंडित ने कहा कि उसकी आय तो मेरे ही घर में आती है। इस पर ठाकुर ने कहा कि जो इस जमीन की आय लेगा, वही गवाही भी देगा, तुम नहीं तो कोई और देगा। तब 'ग्याना' ने गवाही देने की हाँ भर ली। हाकिम ने गंगाजल का पात्र हाथ में लेकर ग्याना से सच्ची बात कहने के लिए कहा तो 'ग्याना' ने गंगाजल के पात्र को हाथ जोड़े और कहा कि हे गंगामाई, तुझे मैं न उठाऊँगा तो और कौन उठायेगा? क्योंकि ठाकुर द्वारा मंदिर के नीचे छोड़ी गई जमीन का लाभ भी मैं ही तो उठाता हूँ।

हाकिम समझ गया कि इसे जबरन झूठी गवाही देने के लिए लाया गया है अतः उसने कह दिया कि इस आदमी की गवाही नहीं ली जायेगी और इजलास खत्म कर दिया। 'ग्याना' की जान में जान आई और उसने ठाकुर से कहा कि जब हाकिम मेरी गवाही लेता ही नहीं तब मैं क्या करूँ?

● तिणकलिये बिगोई

एक जाट घी का 'भरतिया' (गाँवों में से घी लेकर शहर में बेचने का धंधा करने वाला) था। उसके स्वयं के घर में भी कई गायें भैंसें थी। जाट की स्त्री ने एक दिन देखा कि हँडिया में दूध गरम हो गया है और उस पर मलाई आ गई है लेकिन एक तिनका हँडिया में पड़ा हुआ है। तिनके को फेंक देने से पहले उसने सोचा कि तिनके में जो मलाई लगी हुई है उसे बेकार क्या जाने दूँ, उसे चूस लूँ तो क्या हानि है? ऐसा सोच कर उसने तिनके को चूस लिया। लेकिन उसे मलाई के स्वाद का चसका लग गया। वह रोज दूध पर से मलाई उतारकर खाने लगी। दूध पर से मलाई उतर जाने के बाद उसमें घी कितना निकलता? अतः जब जाट

अगली बार घी बेचकर घर आया और उसने घी माँगा तो जाटनी ने चार की बजाय एक हँडिया घी की उसके सामने ला कर रख दी। जाटने पूछा कि और घी कहाँ है तो वह निरुतर हो गई। आखिर जाट के अधिक पूछने पर जाटनी ने कहा कि तिणकलिये (तिनके ने) बिगोई रावत, तिणकलिये बिगोई। और फिर उसने सारी बात जाट के सामने स्पष्ट कर दी।

● गादड़ियो ग्यारस करै

एक गीदड, हिरन और कौवा दोस्त थे। वे तीनो एक जाट के खेत मे खाने-पीने के लिये जाया करते थे। एक दिन जाट ने जाल फैलाया और हिरन जाल मे फँस गया। हिरन ने गीदड से प्रार्थना की कि इस जाल की रस्सी काट दे। लेकिन गीदड ने कहा कि आज तो मैं किसी चीज को मुंह नहीं लगाता, आज मैंने एकादशी व्रत किया है। गीदड ने सोचा कि हिरन खूब मोटा ताजा है, जाट इसे मारेगा तो कुछ मास अवश्य मेरे भी हाथ लगेगा। ऐसा सोचकर वह एक झाड में वहीं छुपकर बैठ गया। तब कौवे ने हिरन से कहा कि तुम मृतक के समान होकर पड रहो। मैं उस वृक्ष पर बैठता हूँ, जब मैं काँव-काँव करूँ तब तुम तुरन्त उठकर भाग जाना। जाट आया और उसने देखा कि हिरन मर गया है—अतः वह अपने जाल को समेटने लगा। जब जाट हिरन से दूर चला गया तो कौवा काँव-काँव करने लगा। हिरन तुरन्त उठकर भागा। जाट को हिरन की धूर्तता पर बडा गुस्सा आया और उसने अपनी कुल्हाडी हिरन की तरफ फेंकी। कुल्हाडी हिरन के न लगकर पास ही छुपे हुये गीदड को लगी और वह वहीं ढेर हो गया। इसी बात को लेकर यह गाथा चल पडी :—

> गादड़िया जी ग्यारसिया, थं को काटै माड़ी।
> भायलं पर दगो विचार्‌यो, बांधै पडी कुहाडी॥

गीदडजी ने तो एकादशी का उपवास किया था फिर भला वे किसी चीज को मुंह कैसे लगाते? उसने दोस्त के साथ कपट किया इसलिए उसके गले पर कुल्हाडी पडी।

● मियां जी की फारसी

एक मियाँजी फ़ारस गये और वहाँ टूटी-फूटी सी फारसी बोली जान गए। घर आये तो उन्होंने घर वालों पर रोब जमाने के लिए फ़ारसी छाँटनी शुरू की, वे अब पानी को पानी न कहकर आब कहने लगे। लेकिन घर का कोई भी आदमी कुछ समझता न था। फल यह हुआ कि मियांजी अपने ही घर में आब-आब करते हुए प्यास के मारे मर गए और पानी उनके सिरहाने पड़ा रहा—

> फारस गया फारसी पढ़ आया, बोलै अट पट बाणी।
> आब आब कर मर गया, सिराणै धर्यो पाणी॥

(मियाँजी फारस गये और फारसी पढ़ आये। अब वे अटपटी वानी बोलने लगे। फल यह हुआ कि वे 'आब, आब' करते मर गये और पानी सिरहाने रखा रह गया)

● गड़ूं क' वलूं ?

एक गाँव में सब मुसलमान ही मुसलमान रहते थे। गाँव में एक भी घर हिन्दुओं का न था, इसलिए गाँव में कोई हिन्दू आता तो उसे खाने-पीने को कुछ भी न मिलता। गाँव के लोगों ने सोचा कि यह तो बड़ी बुरी बात है कि कोई बटाऊ आए और निराहार चला जाए। ऐसा सोचकर उन्होंने एक मुसलमान औरत को ब्राह्मणी बनाकर एक झोपड़ी में बिठा दिया। गाँव के मुसलमान वहाँ पानी के घड़े भरकर रख देते और वह 'ब्राह्मणी' आने वाले हिन्दू अतिथि को रोटी बना देती। एक दिन एक वानी का पंडित वहाँ आया और नहा धोकर पूजा पाठ करके जब जीमने बैठा तो वह 'ब्राह्मणी' उसके पास आकर बैठ गई और बोली कि तुम समझदार आदमी से लगते हो अतः तुम्हें एक बात पूछती हूँ। पंडित ने कहा कि पूछो। तब उस स्त्री ने अपनी सारी बात बताई और पंडित से पूछा कि अब मैं अपनी लड़की की निकाह करूं या उसके फेरे फेरूँ ? पंडित को उसकी बात सुनकर बड़ी

.....ने हुई और वह गहरे सोच मे पड गया और बोला कि तू मुझे बता, कि, "मैं गड़ू या बल् ?"
हिन्दुओं को मृत्यु के बाद जलाया जाता है और मुसलमानो को जमीन में गाडा जाता है, लेकिन मैं न हिन्दू रहा और न मुसलमान ।

● सीलो सो पाणी ल्याओ

एक ठाकुर का बुढ़ापे में विवाह हुआ । विवाह में जब ससुराल वालो ने कहा कि कुअरसाहब, अमुक काम ऐसे कीजिए तो ठाकुर बोला कि धन्य हो धरती माता अभी तो हम कुंअरसाहब ही कहलाते है । जाडे के दिन थे, ठाकुर ने ससुराल की स्त्रियो पर रोब जमाते हुए कहा कि एक ठण्डे पानी का गिलास लाओ तो स्त्रियो ने आश्चर्य किया और कहा कि कुअरसाहब तो अभी बिल्कुल नौजवान ही हैं । ठाकुर ने एक गिलास ठंडे पानी का पी तो लिया लेकिन उसके दाँत बजने लगे । लेकिन अपनी कमजोरी को छिपाते हुए उन्होंने कुछ देर बाद ठंडे पानी का एक गिलास और मंगवाया और उसे भी किसी तरह पी गए । नतीजा यह हुआ कि ठाकुर साहब का शरीर जुड गया और वे सदैव के लिए ठण्डे हो गए ।

● गाँव की भुवा

गाँव के ठाकुर की एक बहिन थी जो बालविधवा थी । वह बडी झगडालू थी और अपने भाई के घर ही रहा करती थी । सवेरे ही वह गाँव की स्त्रिया से झगडा करने के लिए निकल जाती और निरर्थक कलह करके शाम को घर आ जाती । गाँव के लोग उसके कारण बडे तग थे । एक दिन सबने मिलकर ठाकुर से प्रार्थना की कि किसी तरह बूआजी को रोका जाए । ठाकुर ने कहा कि मैं स्वय इसके मारे बहुत हैरान हूँ, लेकिन कोई उपाय नही सूझता । आखिर सबने एक योजना बनाई कि बूआजी नित्य बारी-बारी से एक-एक घर मे जाया करें और वही कलह कर लिया करें । गाँव मे तीन सौ साठ घर थे अत प्रत्येक घर की बारी एक वर्ष मे आने लगी और गाँव के लोगो को राहत मिली। एक दिन जिस जाट

के घर मे बूआजी के आने की बारी थी उसी दिन जाट के बेटे की बहू गौना लेकर आई थी। लेकिन उसकी सास इस बात से बहुत चिंतित थी कि आज ही वह दुष्टा नी कलह करने के लिए आयेगी। बहू ने सास की उदासी का कारण जानकर घर के सब लोगों को खेत पर भेज दिया और बोली कि आज मैं बूआजी से स्वय निपट लूँगी। सब लोग खेत चले गये और बहू आँगन में बैठकर चरखे पर सूत कातने लगी। बूआ ने बहुत बक-वास की लेकिन बहू एक शब्द भी नही बोली। बूआजी चाहती थी कि बहू बराबर लड और यह वाक्-युद्ध शाम तक चलता रह तब आनन्द आये। लेकिन बहू के न बोलने से वह शीघ्र ही परेशान हो गई और बहू स बोली कि आज तू जीती और मैं हारी। आज से मैं कलह नही किया करूँगी। तब बहू उठकर बूआजी के पैरो लगी और बोली कि जीती तो आप ही हैं, मैं तो आपकी सेविका हूँ, मुझे तो बस आपका आशीर्वाद चाहिए। उसी दिन से बूआ ने गाँव म जाना और कलह करना छोड दिया।

● खारियो ढेड

एक पति-पत्नी मे बहुत प्रेम था लेकिन उनके पडोस मे उल्टी गगा बहती थी। उनका पडोसी अपनी पत्नी को नित्य पीटा करता था। पडोसी की स्त्री का उनका प्रेम देखकर डाह हो गई। वह किसी प्रकार उनम खटपट कराने की सोचने लगी। एक दिन उसने पडोसी की पत्नी के पास जाकर उसे बहकाया कि तेरा पति तो ढेड (चमार) है। उसका नाम खारिया ढेड था, मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ, यदि विश्वास न हो तो उसके शरीर को अपनी जीभ से चाट के देख लेना, उसमे नमक की कडुआहट आयेगी। उधर उसका पति शाम को घर आ रहा था तो वह उसे रास्त मे ही मिली और उससे बोली कि तुम्हारी स्त्री डाकिन है और वह रात को तुम्हारे कलेजे स खून चूसा करती है। इस प्रकार पति और पत्नी दोनो के मन मे शका हो गई। रात को खा-पीकर दोनो लेट गये, जब पत्नी ने देखा कि पति गाढी नींद मे सो रहा है तो वह धीरे स उठी और उसकी छाती पर जीभ फिराकर देखने लगी। गर्मी के दिन थे अत पसीने क कारण उस

कुछ कडुआहट मालूम हुई। उधर उसका पति भी जाग रहा था, वह भी पत्नी की परीक्षा करने के लिए केवल नींद का बहाना करके पड़ा था। जब उसकी पत्नी उसकी छाती पर जीभ फेरने लगी तो उसने सोचा कि सचमुच ही यह डाकिन है और वह जोर से चीख उठा, "डाकिन, डाकिन !" इधर उसकी पत्नी भी पुकार उठी "खारिया ढेढ, खारिया ढेढ !"

● इत्ती दूर विन्नै क्यु गई नी ?

एक जाट की माँ मर गई। उसने उसकी हड्डियाँ गगाजी मे प्रवाहित करने के लिए एक हड्डिया ब्राह्मण (जो ब्राह्मण मृतक मनुष्यों की हड्डियाँ गगाजी मे प्रवाहित करने का कारोबार किया करते थे) को भेजा। ब्राह्मण गगाजी न जाकर किसी तालाब मे हड्डियाँ डालकर आ गया। जाट को शक हुआ कि ब्राह्मण गगाजी नही गया और कही बीच मे से ही आ गया है। इस लिए उसने ब्राह्मण से कहा कि रात को स्वप्न मे मेरी माँ आई थी और वह कह रही थी कि ब्राह्मण मुझे रास्ते मे ही डाल गया है। इस पर ब्राह्मण ने तुरत जवाब दिया कि वह राड इतनी दूर इधर आई, उधर क्यों न गई ? इधर आने के बदले उधर जाती तो अब तक गगाजी पहुच जाती।

● फेरा उधेड़ ले

एक सेठ और एक सेठानी घर मे सो रहे थे। रात को एक चोर घर में आ घुसा तो सेठ ने सोचा कि इसे तरकीब से पकडना चाहिए। ऐसा सोचकर वह अपनी पत्नी से बोला कि मैं तो हरिद्वार जाऊँगा और इसी वक्त जाऊँगा। चोर ने देखा कि जाग हो गई है तो वह एक खमे के सहारे छुप कर खड़ा हो गया। उधर सेठानी ने कहा कि कहीं इस वक्त भी हरिद्वार जाया जाता है ? लेकिन सेठ ने हठ पकड लिया। बात बढ गई। सेठानी ने कहा कि आपने मेरे साथ फेरे फेरे हैं, ऐसे चले जाओगे कोई मजाक नहीं है। तब सेठ ने खीझकर कहा कि अपने फेरे

उधेड़ ले। सेठानी ने पूछा कि फेरे भला कैसे उधेड़े जा सकते हैं? इस पर सेठ ने कहा कि एक मलमल का थान ला मैं अभी फेरे उधड़वा देता हूँ। सेठानी थान लाई तो सेठ ने कहा कि यहाँ इस खंभे के चारों ओर आठ बार इस कपड़े से परिक्रमा लगाओ और अपने फेरे उधेड़ लो। सेठानी ने कहा कि आठ बार ही क्या? तीन तो ब्याज के ही हो गए अतः ग्यारह बार परिक्रमा लगानी होगी। इस प्रकार बात करके सेठ आगे और सेठानी पीछे चलने लगी और उन्होंने चोर को खूब अच्छी तरह खंभे के साथ जकड़ दिया। तब सेठानी ने कहा कि फेरे पंचों के सामने लिए गए थे अतः उन्हें बुलाना आवश्यक है। तब सेठानी जाकर पड़ोस के लोगों को बुला लाई और बोली कि हमने फेरे उधेड़ लिए हैं। पड़ोसी उनकी बात सुनकर हैरान हो गए कि इन्हें आज क्या सूझी है? इतने में एक ने पूछा कि खंभे के साथ यह कौन बँधा हुआ है? तब सेठ ने कहा कि इसी के कारण तो हमें फेरे उधेड़ने पड़े हैं। तब चोर की समझ में आया कि यह सब प्रपंच तो मुझे पकड़ने के लिए ही किया गया था।

● चोरी अर ठगी

एक चोर और एक ठग साथ-साथ कमाने के लिए चले। दोनों नगर में दिन भर घूमते रहे लेकिन एक पैसा भी हाथ न लगा। शाम हो गई तो उन्होंने देखा कि एक बनिया अपनी दुकान पर दीवट के सहारे दिन भर की बिक्री के रुपये गिन रहा है। उन्होंने भाँप लिया कि उसके आस-पास कहीं दियासलाई नहीं है। अच्छा मौका देखकर एक ने एक कंकड़ी उठा कर दीपक को मारी और दिया बुझ गया। जैसे ही बनिया दुकान में दिया सलाई लाने गया चोर ने सारे रुपये उठाये और दोनों गली में भाग गये। बनिये ने दीया जलाया तो देखा कि वहाँ एक पैसा भी नहीं है। उसने शोर मचाया तो अन्य लोगों के साथ वे दोनों भी वहीं आ गये और पूछने लगे कि क्या हुआ? दुकानदार की बात सुनकर सब यही कहने लगे कि यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। तब उन दोनों ने कहा कि इसमें आश्चर्य क्या है? यदि सेठ अभी उतने ही रुपये लेकर बैठे तो वह आदमी फिर

रुपये उठाकर भागेगा और फिर आपके सामने यहीं आ जाएगा। सब के कहने पर बनिया फिर पये लेकर बैठा। ठग ने ककडी मारी, दीपक बुझ गया और ठग फुर्ती से रुपये लेकर चम्पत हुआ और चोर भी खिसक गया। सब यही देखते रहे कि वह फिर आ रहा होगा। लेकिन वे क्यों आने लगे थे? पहले वाले रुपये चोर को मिले क्योंकि उसने चोरी से रुपये उड़ाये थे। दूसरी बार के रुपये ठग को मिले क्योंकि उसने सबके सामने रुपये ठगे थे। इस प्रकार चोरी और ठगी दोनों साथ-साथ हुई।

● भंगण अर पंडत

एक पंडितजी बाजार से गुजर रहे थे कि एक भंगिन से उनका दुपट्टा छू गया। पंडितजी बिगडने लगे। लोगों ने बीच-बचाव करना चाहा, लेकिन पंडितजी लाल-पीले होते गये। तब भंगिन ने लोगों से कहा कि आप सब लोग जाइये, यह तो मेरा पति है, मैं इसे अपने घर ले जाऊँगी। यों कह कर उसने पंडितजी का हाथ कसकर पकड लिया। भंगिन की बात सुनकर पंडितजी को पसीना आ गया और उनका सारा गुस्सा काफूर हो गया। वे भंगिन से हाथ छोड देने की प्रार्थना करने लगे। तब भंगिन ने कहा कि पंडितजी !। मैं तो चांडालिनी हूँ ही, आप भी चांडाल बन गए थे, क्योंकि क्रोध चांडाल का ही स्वरूप है जो आप पर कुछ देर पहले सवार था। इसलिए मैंने आपको अपना पति बनाया था। अब वह चांडाल आप को छोड चुका है और अब आप जा सकते हैं।

● कंजूस को धन

एक सेठ के पास बहुत धन था लेकिन साथ ही वह कृपण भी एक ही था। अपने पेट को भी पूरी रोटी नहीं देता था। एक दिन वह किसी दूसरे गाँव जाने लगा तो उसके बेटे की बहू ने उसे रास्ते में खाने के लिये कुछ रोटियाँ बाँध दी और पानी की झारी भर दी। दोपहर को जब भूख लगी तो सेठ जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठ कर रोटी खाने लगा। रोटी खाने के बाद जब वह सुराही से पानी पीने लगा तो उसने देखा कि पानी

में चीनी घोल कर उसे शर्बत बना दिया गया है। उसे बड़ा क्रोध आया और उसने सारा पानी वहीं एक बिल में उँडेल दिया। बिल में एक काला नाग रहता था, वह बहुत प्यासा था। उसने वह सारा शर्बत पी लिया और सेठ को वरदान देने के लिए बाहर निकला। उसने सेठ से कहा कि तुम्हें जो माँगना हो सो माँग लो, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। सेठ ने कहा कि कल आकर माँग लूंगा। सेठ अपने घर गया और उसने सारी बात घर वालों से कही। बहू ने कहा कि आप नागराज से यही वर माँग लें कि जितना धन हमारे पास है वह हमारा ही हो जाए। सेठ को यह बात बड़ी विचित्र सी लगी लेकिन बहू के कहने से उसने दूसरे दिन जाकर नागराज से यही वरदान माँग लिया। नाग ने उसे और दूसरा वर माँगने को कहा लेकिन सेठ अपनी बात पर अड़ा रहा। चूंकि नाग वचन-बद्ध था अतः उसने वही वरदान सेठ को दे दिया। अब सेठ सच्चे अर्थों में अपने धन का मालिक हो गया। अब वह इच्छानुसार उसे भोगने लगा जबकि पहले सिर्फ उसकी रखवाली ही करता था।

● आलसी को दालद कोनी जावै

एक बार एक साधु ने एक आदमी को पारस दिया और कहा कि अमुक समय तक तुम इसे अपने पास रख सकोगे और अपनी इच्छानुसार लाभ उठा सकोगे। उस आदमी ने सोचा कि अब भला किस बात की चिन्ता है? अब तो पारस की सहायता से जब भी चाहूँगा धन-कुबेर बन जाऊँगा। उसने आलस्य में समय बिता दिया और अवधि समाप्त हो गई। ठीक समय पर वह साधु उसके सामने फिर प्रकट हुआ और उससे पारस माँगा। वह आदमी साधु के सामने बहुत गिड़गिड़ाया कि आप कुछ ही क्षण और ठहर जाइये, लेकिन साधु न माना। वह पारस लेकर चला गया और वह आदमी अपनी अकर्मण्यता को कोसता रह गया।

● पठान की चतराई

एक पठान अपनी औरत के साथ किसी दूसरे गाँव जा रहा था

रास्ते मे प्यास लगी तो पठान एक जाट के खेत मे से एक मतीरा तोड लाया और दोनो ने उसे खा लिया। पठान वहाँ से उठकर चलने लगा तो उसने एक रुपया मतीरे की कीमत स्वरूप वहाँ रख दिया। थोडी देर बाद जाट वहाँ आया और उसने सोचा कि बिना पूछे किसी ने मतीरा तोडा है तो उससे अधिक कीमत वसूल करनी चाहिए। वह उन दोनो के पीछे दौडा और थोडी ही दूर पर उन्हे पकड लिया। पठान उसे पहले दो रुपये देने लगा फिर पाँच। लेकिन जाट ने कहा कि मैं तो अपना मतीरा ही लूगा। दोनो झगडते झगडते राजा के पास गए तो राजा ने फैसला दिया कि जब तक पठान जाट का मतीरा न लौटाये पठान की औरत जाट के पास रहे। फैसला सुन कर पठान बहुत चकराया लेकिन वह तो राजा का हुक्म था। पठान वहाँ से चला आया और पठान की स्त्री जाट के साथ चल पडी। पठान ने गाँव मे से कुछ मूग खरीदे और उन्हे एक बोरे मे डालकर बाजार म आ गया। अनाज के दूकानदारो से उसने कहा कि मेरे पास बहुत मूग हैं। माल पीछे ऊँटो पर लदा आ रहा है, जिसको लेना हो यहाँ आ जाए। बाजार मे मूग का भाव बारह रुपये मन था तो उसने आठ रुपये मन मे मूग देने का करार कर लिया और मूग लेने वालो से पेशगी रुपये लेने लगा। सभी लोग मूग लेने के लिए व्यग्र हो रहे थे। पठान के पास हजारो रुपये पेशगी आ गए। तब पठान ने कहा कि जब तक और मूग आयें तब तक मेरे पास जितने मूग हैं वे तो तुलवा लो। उसने तराजू के उल्टे पलडे से मूग तौलने शुरू किये तो लोगो ने कहा कि पठान साहब! यह क्या मजाक करते हो? कही उलटे पलडे से भी मूग तौले जाते हैं? पठान ने कहा कि मैंने उलटे सीधे की बात तो आपसे की नही है। अपने दस्तूर के मुताबिक आपको मूग तौल रहा हूँ। वे लोग उसे राजा के पास ले गये तो राजा ने दोनो की बात सुन कर फैसला दिया कि उलटे पलडे से भी नही, सीधे से भी नही, खडे पलडे से मूग तौल दो। अब तो मूग का एक दाना भी दुकानदारो को नही मिल सकता था, लेकिन राजा का फैसला अन्तिम था। वे सब लोग

वहाँ से आ गए तो पठान ने कहा कि नाई, यहां तो ऐसा ही न्याय होता है। एक मनीरे के बदले में मेरी औरत जाट को दिला दी गई तो मूग भी आपको म्हूंड़े पल्डे में ही तुलवाने होंगे। तब गाँव के सब लोगों ने जाट को कुछ दे दिला कर समझाया और पठान की औरत पठान को दिला दी। तब पठान ने भी सारे रुपये दुकानदारों को लौटा दिये।

● दो दिवालिया

एक आदमी साधारणतया तेल-नून का व्यापार करता था। कारोबार में घाटा लगा और उसका दिवाला निकल गया। मांगने वाले उसकी दुकान पर आकर हो हल्ला मचाने लगे। कोई दो रुपया मांगता था कोई पांच। कुल पचास रुपये का दिवाला था। उसी रोज गाँव में एक सेठ ने एक लाख रुपये का दिवाला निकाला। उस आदमी ने सोचा कि जब पचास रुपये के लिए इतना गुल गपाड़ा मचा हुआ है तो लाख रुपये के लिए न जाने क्या हुआ होगा? वह देखने के लिए सेठ के घर गया। लेकिन उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ जरा भी हो हल्ला नहीं है। सारे काम अपने ढंग से चल रहे हैं। उसने सेठ से अपने मन की बात कही तो सेठ ने कहा कि लो पचास रुपये ले जाओ और मांगने वालों को चुका दो। हमारे तो जहाँ लाख का दिवाला है वहाँ एक लाख पचास का सही।

● जाट की चतराई

एक जाट के खेत में चार जने घुस गए। एक ब्राह्मण एक ठाकुर एक बनिया और एक नाई। चारों मतीरे तोड़ तोड़ कर खाने लगे। जाट आया तो उन सबको अपने मन में देख कर उसे बड़ा क्रोध आया लेकिन उसने तरकीब से काम निकालने की सोची। पहले उसने नाई को पकड़ा और कहा कि ब्राह्मण तो दादा हैं इनका तो सब कुछ है ही, और ये ठाकुर हैं अन्न मालिक हैं और ये सेठ हैं जिनसे सारे काम निकलते हैं लेकिन तुमसे तो हर काम पैसे देकर करवाता हूँ तू कैसे इनके साथ खेत में घुस गया? यों कह कर जाट ने नाई को ठोक पीट कर

खेत से बाहर निकाल दिया । फिर उसने सेठ सेकहा कि ब्राह्मण देवता तो दादा हैं और ठाकुर साहब मालिक हैं तुम खेत मे कैसे घुसे ? यदि रुपये उधार लेता हूँ तो उनका व्याज तुम्हें देता हूँ। यों कह कर जाट ने उसे भी निकाल दिया। फिर जाट ने ठाकुर से कहा कि खेत जोतता हूँ तो तुम्हें लगान देता हूँ फिर तुम खेत मे क्यो घुसे ? यो कह कर ठाकुर को भी निकाल बाहर किया और फिर उसने पडित जी को आड़े हाथो लिया और उन्हे भी पीट पाट कर निकाल दिया।

● ऊँट अर बलद

दो पडित साथ साथ कमाने के लिये जा रहे थे। रास्ते मे एक गाँव आया तो दोनों वहीं एक सेठ के यहां ठहर गए। जब एक पडित किसी काम से बाहर गया तो सेठ ने दूसरे से उसके विषय मे पूछ-ताछ की। दूसरा पडित बोला कि वह तो निरा बैल है। जब पहला पडित बाहर से आया तो दूसरा पडित बाहर चला गया। अब सेठ ने उससे बाहर गए हुए पडित के विषय मे पूछा तो उसने कहा कि भला उसे क्या आता जाता है? वह तो बना बनाया ऊँट है। शाम को जब दोनों खाना खाने बैठे तो सेठ ने एक के सामने 'चारा' (ऊंटो के खाने के लिए मोठों की पत्ती, डठल आदि) और दूसरे के सामने 'पाला' (झड बेरी की पत्ती) रख दिया। दोनो पडितो को सेठ की यह हरकत बडी बुरी लगी तो सेठ ने एक पडित की ओर इशारा करके दूसरे से कहा कि इन्होंने आप को ऊँट बतलाया था और आपने इनको बैल बतलाया था। अत मैंने उपयुक्त खाना ही आप श्रीमानो को पेश किया है। सेठ की बात सुन कर दोनों पडित लज्जित हो गए।

● म्हां को गोलो होकर गाजर खा छै ?

एक ठाकुर ने गोले से पूछा कि तू क्या खा रहा है ? गोले ने उत्तर दिया कि गाजर खा रहा हूँ। तब ठाकुर ने रोब से कहा कि अरे हमारा गोला होकर भी तू गाजर (जैसी तुच्छ वस्तु) खा रहा है ? इस पर गोले ने उत्तर दिया कि गाजर भी कहाँ नसीब होती है ? यह तो मैंने गडक-

(कुत्ते) के मुह से छीनी है। आप कहते हैं तो इसे कुए में डाल देता हूँ। तब ठाकुर ने नम्र होकर कहा कि ला मुझे दे दे, मैं खा लूगा यदि कुएँ मे डालेगा तो मैं पहले कुए मे गिरूगा।

● सुलफियाँ की बावडी

झुंझनू मे एक बार कुछ सुल्फेबाज एक बगीची मे बैठे हुए थे। नशे की झोंक मे उन्होंने विचार किया कि यदि अमुक बावडी को यहाँ ले आया जाए तो सदैव के लिए आराम हो जाए। ऐसा सोच कर वे बावडी लाने के लिए चल पडे। जाते हुए उन्होंने रास्ते मे देखा कि अमुक सेठ की हवेली का कोना बाधा देगा अतः इसे फाड देना चाहिए। ऐसा सोचकर वे उस कोने को तोडने लगे। सेठ ने आकर पूछा तो उन लोगो ने कहा कि हम बावडी ला रहे हैं, तुम्हारी हवेली का कोना अडेगा इसलिए इसे फोडने जा रहे हैं। तब सेठ ने नम्रता पूर्वक उनसे कहा कि आप इतनी मेहनत व्यर्थ ही क्या कर रहे हैं? हवेली का कोना मैं अपने आदमियो से तुडवा रहा हूँ। आप बावडी ले आइये। उन लोगो ने सेठ की बात मान ली और आगे चल पडे। बावडी पर पहुँच कर उन्होंने अपनी पगडिया और साफो से बावडी को बांध कर खींचना शुरू कियालेकिनबावडी टस से मस न हुई। पागडी और साफे सब खींच-खांच में टूट गए और सुल्फेबाजो का नशा उतर गया।

● दो घडी को घामड कूटो, सारै दिन की सैल

एक माली के पास दो बैल थे। एक खूब काम करता था और दूसरा बिल्कुल "घैन्द" (काम चोर) था। जब भी माली उसे जोतता, वह बीच मे ही बैठ जाता और मारने पर भी नहीं उठता था। तब हारकर माली ने एक ही बैल से सारा काम करना शुरू कर दिया। उस बेचारे को अब जरा भी आराम नहीं मिलता था। एक दिन तग आकर उसने अपने साथी बैल से पूछा —

सुणरे भाई पैल, कियाँ छूटै गैल ?
तब पैल ने उत्तर दिया —
दो घडी को धामड कूटो, सारे दिन की सैल ।

माई पैल सुनो, जरा बतलाओ तो कि मेरा पीछा कैसे छूटे ? पैल ने उत्तर दिया कि यह तो बहुत आसान है। यदि काम नहीं करोगे तो माली दो घडी कूट पीट कर और परेशान हो कर तुम्हें छोड देगा । फिर चाहे दिन भर सैर करना ।

● हीरो अर पारस

एक मठी मे एक बाबाजी रहा करते थे। उनके दो चेले थे। एक दिन एक चेले का परोसा दूसरा खा गया। (परोसा—किसी के यहाँ से आया हुआ एक वक्त का भोजन) इस पर दूसरे ने उसके गले मे पहनने वाले दो बडे-बडे तुलसी की जड के बने मनको (हीरो) को छुपा दिया। शाम को दोनो मठी मे झगड रहे थे, एक ने कहा मेरा 'पारस' दे, दूसरे ने कहा कि मेरे 'हीरे' दे। उसी समय दो चोर वहाँ खडे उनकी बातें सुन रहे थे। उन्होने सोचा कि आज तो निहाल हो जाएँगे। हीरा और पारस दोनो यहाँ है। रात को वे मठी में घुसे। उन्होंने बहुत ढूढा लेकिन 'पारस' उन्हे नही मिला। अलबत्ता दो हीरे उन्हे एक कपडे मे बँधे एक कोने मे पडे मिले। वे उन्हे ही लेकर भागे। सवेरे जब सूर्य के प्रकाश मे उन्होने उन हीरो को देखा तो दोनो अपने सिर पीटने लगे।

● सूत्या की पाडा जणै

दो आदमियो की भैंसें साथ-साथ ब्याने को हुई। दोनो उनके ब्याने की बाट देख रहे थे। रात अधिक बीत गई तब एक ने कहा कि दोनो आदमियो के जागने से क्या लाभ ? एक आदमी सो जाए और जब भैंस ब्याने को हो तब दूसरे को जगा लिया जाए। यों कह कर एक आदमी सो गया और दूसरा जागता रहा। थोडी देर बाद दोनो भैंसें ब्या गई। जो जाग रहा था उसकी भैंस ने 'पाडा' प्रसव किया और दूसरे की भैंस ने 'पाडी'। लेकिन

चूंकि पाडी की कीमत पाडे से अधिक होती है, इसलिए जागने वाले ने 'पाडी' को अपनी भैंस के साथ लगा दिया और 'पाडे' को दूसरी भैंस के पास खडा कर दिया। फिर उसने अपने साथी को जगाया कि भई! जल्दी से उठ, मेरी भी आँखें लग गई थी। भैंसे तो ब्या गई हैं। जागने पर उस आदमी ने कहा कि 'पाडी' तो मेरी भैंस के अनुरूप लगती है। तब दूसरे ने कहा कि नही, तुम्हारी भैंस ने तो यह 'पाडा' ही जना है। दोनो में विवाद होने लगा इतने मे एक तीसरा आदमी वहाँ आ गया और उसने दोनो की बातें सुनकर कहा कि भई, जो कुछ हो, "सूत्यों की तो पाडा ही जणै।"

(जो सोएगा उसकी भैंस तो पाडा ही जनेगी अर्थात् जो सोएगा वह घाटे मे ही रहेगा)

● चोर चोरी सें गयो, पण हेराफेरी तो करै

एक चोर किसी साधु के उपदेश से चोरी करना छोड कर उसका शिष्य बन गया। साधु के और भी बहुत से शिष्य थे, नया शिष्य उनके तूबे और उनकी लँगोटियाँ इधर उधर कर दिया करता। इसकी तूबी उसके पास और उसकी लँगोटी इसके पास। तब उन लोगो ने महन्त के पास शिकायत की। उन्होंने नये शिष्य को बुलाकर पूछा तो उसने कहा कि बाबाजी! मैं तो हेरा-फेरी करके ही सतोष कर लेता हू, चोरचोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया?

● होगी' चाँदी

कुछ सुल्फे बाज एक बगीची मे बैठे दम लगा रहे थे। जब सुल्फा जल जाता तो एक कहता कि हो गई चांदी। दूसरा कहता कि डाल दो घडे मे। इस प्रकार सुल्फे की बनी राख को वे घडे मे डाल देते और 'खखार' (बलगम) भी उसी मे डालते। कुछ चोर उधर से गुजरे तो उन्होने सोचा कि यहाँ चाँदी बन रही है। अत आज रात को यहीं भाग्य आजमाना चाहिए। जब सुल्फे बाज चले गए तो अँधेरा होते ही वे बगीची मे घुसे।

एक ने जैसे ही घड़े मे हाथ डाला, उसका हाथ बल्गम और राख मे लिपट गया। उसने सोचा कि भला यह कैसी चाँदी है? हाथ बाहर निकाल कर देखा तब सारी बात उनकी समझ म आई और वे अपने भाग्य को कोसते हुए वहाँ से चल पड़े।

७ सीक डोबोजी

एक गाँव म एक 'सीक डोबोजी' थे। उनका यही काम था कि जब गाव म कोई भी भोज होता तब सीक डोबोजी घी परोसते। वे यह बताया करते कि इस भोज म इतना घी लगेगा और उतना घी एक बरतन मे डालकर उनके सुपुर्द कर दिया जाता था। भोज म घी चुक न जाए इस बात की जिम्मेदारी सीक डोबोजी' पर रहती थी और जो घी बच जाता था उसे वे अपने घर ले जाते। बस यही उनकी तलब थी। इस काम पर उनका एकाधिकार था। सीक डोबोजी मर गए तो गाव के लोगो को चिंता हुई कि यह पद किसे दिया जाए? सीक डाबाजी' के एक लडका था लेकिन लोगो ने कहा कि उसे इतना अनुभव नही है यदि कही भोज म घी चुक जाए तो बडी नामूसी हो जाए। तभी सयोग से गाव मे एक आदमी मर गया और उसके मृतक भोज की समस्या लोगो के सामने आ खडी हुई। उन्होने तय किया कि एक बार तो स्वर्गीय सीक डोबोजी के लडके को ही यह पद दिया जाए और उसे बतला दिया जाए कि भोज मे इतना सा घी लगेगा। फिर देखा जाएगा। भोज शुरू हुआ तो 'सीक डोबोजी' के लडके ने घी का पात्र हाथ म ले लिया और उसमे एक तिनका (सीक) डाल लिया। हर जीमने वाले के सामने जाकर वह घी म तिनका डुबोकर उसे दिखला देता और कहता —

सीक डोबोजी मर गया देखो पचो घी।"

और आगे बढ जाता। इस प्रकार सारा घी पात्र म बच गया और वह उसे अपने घर ले गया।

२

● डेढ़ छैल की नगरी में ढाई छैल

एक राजा का कुंअर अपने घोड़े पर चढ़ा एक गांव में से होकर निकला तो उसने देखा कि एक जाट की लड़की गोबर 'थाप' रही है (पाथ रही है) और तिल चबा रही है। कुंअर ने उससे जान बूझकर उल्टे ढंग से पूछा :—

तिल थापणी, गोबर चाबणी, ई गांव को के नांव ?

(तिल पाथने वाली और गोबर चबाने वाली, इस गाँव का नाम क्या है?)
लेकिन जाट की बेटी भी कुछ कम न थी, उसने भी उसी ढंग से उत्तर दिया—

सेल चढ़्या घोड़ा फरकावणियां,
नांव गांव को ईंटेली।

(सेल पर चढ़े, घोड़े को फहरानेवाले, इस गाँव का नाम ईंटेली है।)
कुंअर उसकी बात सुनकर बड़ा नाराज हुआ। उसने जाट की बेटी से कहा कि मैं तुझे विवाह करते समय चौथे फेरे में छोड़ूंगा। जाट की बेटी ने भी जवाब दिया कि तू बड़ा डेढ़ छैल बना फिरता है, मैं भी तेरे जाये (तेरे बेटे) से तुझे सात जूते लगवाऊँगी।

राजकुमार चला गया और घर जाकर अनशन करके सो गया। जो कोई भी उससे पूछता राजकुमार उसे टाल देता। अन्त में राजा ने कुंअर के जिगरी दोस्त को उसके पास भेजा कि जाकर अनशन के कारण का पता लगाओ। राजकुमार ने अपने दोस्त से सारी बात कह दी। राजा ने जाट को बुलवाकर कह दिया कि तेरी लड़की का विवाह राजकुंअर से करना होगा। जाट ने हाँ भर ली। कुंअर ने चूंकि यह बात कह दी था कि मैं चौथे फेरे में जाट की बेटी को छोड़ दूंगा अतः कोई भी बड़ा बूढ़ा उसके साथ जाने को तैयार नहीं हुआ। सब युवक ही युवक बारात में गए। जब तीन फेरे हो चुके तो राजकुमार जान बूझकर बेहोश हो गया। साथियों ने कहा कि कुंअर को मिरगी आ गई है मिरगी दूर होने पर इन्हें फिर ले

आयेंगे। यों कहकर वे कुँअर को पालकी में लिटा कर ले गए। इधर जाट की बेटी ने कुँअर की कटारी अपने पास ले ली थी अतः उसने चौथा फेरा कटार से ले लिया। विवाह सम्पन्न हो गया।

जाट की बेटी ने सोचा कि राजा का बेटा तो अपनी बात पूरी कर गया, अब मैं किस प्रकार अपनी बात पूरी करूँ ? इसी चिन्ता में वह घुलने लगी। जाट ने बेटी से पूछा कि घर में किसी बात की कमी नहीं है, फिर तू क्यों घुली जा रही है ? बेटी ने कहा कि मैं तीर्थ-यात्रा के लिए जाना चाहती हूँ। जाट ने उसे काफी धन देकर तीर्थ-यात्रा के लिए भेज दिया। जाट की बेटी अब अपने पति के गाँव चली। राजा मर गया था अतः अब उसका पति ही राजा बन गया था। जाट की बेटी ने गूजरी (ग्वालिन) का वेष बनाया और उसने कुछ अच्छी नस्ल की गायें खरीद लीं। उसी राजा के गाँव में आकर उसने डेरा लगाया। एक गाय को वह अच्छे अच्छे मेवे चराती। मेवे चराने से उसका दूध भी उत्तम होता। उस दूध का दही जमाकर 'गूजरी' बनठन कर बाजार के चौराहे पर दही बेचने के लिए आ बैठी। जो भी आता गूजरी से दही का भाव पूछता, गूजरी दही का भाव सौ रुपये पाव बतलाती। इतना महँगा दही भला कौन खरीदता ? राजा का दोस्त उधर से गुजरा तो उसने भी दही का भाव पूछा। भाव सुनकर उसने सोचा कि दही में जरूर कोई विशेषता है। उसने सौ रुपये का पावभर दही लिया और राजा के महल में गया। राजा तब थाल पर बैठा ही था। दोस्त ने दही ले जाकर राजा को दिया। दही खाकर राजा की तबीअत फड़क उठी। राजा होने पर भी उसने ऐसा दही कभी नहीं चक्खा था। राजा ने दोस्त से पूछा तो दोस्त ने सारी बात राजा को बतला दी।

दूसरे दिन राजा स्वयं गूजरी के पास पहुँचा। गूजरी ने कहा कि आप मेरे डेरे पर पधारिये। राजा डेरे पर गया। गूजरी ने राजा को मोह लिया और वह वहीं रहने लगा। जब वह गर्भवती हो गई तो उसने राजा से कहा कि अब मैं जाऊँगी। राजा ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की लेकिन

वह बोली कि मैं फिर आऊँगी, आप मुझे भूल न जाएँ इसलिए मुझे कोई सहिदानी दे दीजिए। राजा ने अपनी अँगूठी निकाल कर गूजरी को दे दी। गूजरी अपने घर चली गई।

समय पाकर उसके एक लड़का हुआ जो दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। चूंकि वह और लड़कों से होशियार था अतः वह दूसरे लड़कों को मार पीट दिया करता था। एक दिन उसने एक ब्राह्मण के लड़के को घोड़ा बनाया और खुद उस पर सवार हो गया। उसने 'घोड़े' को बुरी तरह पीट दिया। उसकी माँ जाट के घर गई और उसने जाट की बेटी से कहा कि छिनाल कहीं की, न जाने किसका लड़का लाई है जो मारे 'बाम' के लड़के को मारता पीटता है। लड़के ने भी यह बात सुनी। वह कटार लेकर अपनी माँ के पास गया और उससे बोला कि या तो मेरे पिता का नाम बतला अन्यथा तुझे मारूँगा। उसकी माँ ने कहा कि तू नाम पूछ कर क्या करेगा? अगर तू अपने बाप को सात जूतें मारने की प्रतिज्ञा करे तो मैं नाम बतला सकती हूँ। बेटे ने प्रतिज्ञा कर ली और तब उसकी माँ ने सारी बात उससे खोलकर कह दी। सारी बात सुनकर बेटे ने कहा कि माँ भले ही मेरा बाप राजा है लेकिन मैं उसको सात जूते तुम्हारे नाम के और सात मेरे नाम के कुल चौदह जूते मारूँगा।

यों कहकर वह अपने पिता के नगर को चल पड़ा। नगर में आकर वह फूलाँ मालिन के घर ठहरा। फूलाँ ने पहले तो उसे टरकाना चाहा लेकिन जब उसने फूलाँ को एक सोने का टका दिया तो फूलाँ ने उसे खुशी-खुशी अपने यहाँ ठहरा लिया। रात को उसने सारे नगर में इश्तहार चिपका दिए— 'डेढ़ छैल की नगरी में ढाई छैल आयो है ठगै गो ठगावैगो कोनी।' इश्तहार की चर्चा राजा के पास पहुँची तो राजा ने कहा कि अढ़ाई छैल को पकड़ना चाहिए। राजा ने होशियार मीणा को यह काम सौंपा। अढ़ाई छैल ने अनजान बनकर फूलाँ से पूछा कि आज गाँव में क्या चर्चा है? फूलाँ ने अढ़ाई छैल की बात बतलाई और साथ ही यह भी कहा कि आज उसे पकड़ने के लिए मीनें जायेंगे। अढ़ाई छैल ज्योतिषी का वेष बना-

कर उन मीना के घर गया। घरों में केवल स्त्रियाँ ही थी। ज्योतिषी ने पचांग देखकर मीना की स्त्रियों से कहा कि आज आधी रात पीछे तुम्हारे घरों में 'डाकी' आयेंगे और तुम सब को खा जायेंगे। इसके लिए यही उपाय है कि इस बात की चर्चा तो किसी से करना नही और तुम सब ईंट, पत्थर, मूसल आदि लेकर बैठ जाना। जब वे आयेंगे तो यही कहेंगे कि—हम तुम्हारे घर के है लेकिन उनका विश्वास न करना। ईंट, पत्थर आदि से उन्हें मार देना। या उनको पट्टी पढ़ाकर ज्योतिषीजी चले गए और स्त्रियों ने उनके कहे मुताबिक सारी तैयारी कर ली।

रात को मीने अढाई छैल को पकड़ने निकले। इधर अढाई छैल ने नाई का वेष बनाया और छैनी हाथ में लेकर निकल पड़ा। वह इधर-उधर देखता जाता था। मीनों ने उसे टोका तो 'नाई' ने कहा कि तुम अपना काम करो, मेरे काम में बाधा क्या डालते हो ? मैं अढाई छैल की हजामत बनाने जा रहा हूँ। मीना ने उत्सुकता से पूछा कि अढाई छैल कहाँ है तो 'नाई' ने कहा कि वह गाँव के बाहर तालाब पर आयेगा। मीने उसके साथ तालाब पर गये। नाई ने कहा कि तुम्हे देखकर अढाई छैल यहाँ नही आयेगा अत मैं तुम्हारे सिर के बाल मूड देता हूँ फिर तुम पानी में खड़े रहना। यदि तुम्हारे बालो वाले सिर पानी में दिखलाई पड़ेंगे तो अढाई छैल को सन्देह हो जाएगा और बाल मुंडा देने से उसे वहम नही होगा। मीने बाल मुंडाने के लिए राजी हो गए। नाई ने भी बिना धार वाले उस्तरे से उन्हे मूडना शुरू कर दिया। उनके सिरों में जगह जगह खून निकल आया, कटे स्थानों पर नाई जान बूझकर नमक मिला पानी लगाता था। उन्हे बड़ी तकलीफ होती थी लेकिन अढाई छैल को पकड़ने के लालच में उन्होंने सारी तकलीफ सहन कर ली। बाल मुंडवाने के बाद मीने तालाब में गर्दन तक पानी में खड़े होकर अढाई छैल की प्रतीक्षा करने लगे। इधर 'नाई' उनके सारे कपड़े लत्ते लेकर चपत हो गया। जब दो बज गए और अढाई छैल नही आया तो मीनों ने जान लिया कि वह 'नाई' ही अढाई छैल था। तब वे ठिठुरते हुए तालाब से बाहर निकले, लेकिन कपड़े तो नाई ले गया

था अत नगे ही घरो को चले। उधर उनकी देवियाँ तैयार बैठी थीं। उन्हें देखते ही सब एक साथ बोलीं कि बेचारा ज्योतिषी सच कहता था, वे देखो सामने डाकू आ रहे हैं। वे सब उन पर डंडे-पर-डंडे बरसाने लगीं। वे चिल्लाते रहे कि हम तुम्हारे घर वाले हैं पर उनकी एक नहीं सुनी गई। लेकिन जब उजाला हुआ और सारा भेद खुला तो औरतें पछताने लगीं और उनने सबको उठा उठाकर घरों मे ले गईं।

जब सवेरे राजाजी को रात की हकीकत मालूम हुई तो उन्होंने बिगड़ाकर कोतवाल को यह काम सौंपा। 'अढाई छैल' ने फूला से सारी बात मालूम कर ली। रात को अढाई छैल एक बुढ़िया का वेष बनाकर एक सूने मकान में चक्की चलाने लगा। कोतवाल गश्त लगाता हुआ उधर से निकला तो उसने बुढ़िया से पूछा कि तू यहाँ इस वक्त क्या कर रही है? 'बुढ़िया' बोली कि हुजूर, मैं अढाई छैल के घोड़े के लिए दाना दल रही हूँ। थोड़ी देर मे अढाई छैल यहाँ आयेगा। कोतवाल ने कहा कि बुढ़िया, तू अपने घर जा, मैं यहाँ बैठूंगा। कोतवाल ने बुढ़िया के कपड़े पहिन लिए और स्वयं बुढ़िया का वेष बनाकर दाना दलने लगा। बुढ़िया रूपी अढाई छैल कोतवाल के कपड़े लेकर वहां से खिसक गया। जब रात बीत चली और अढाई छैल नहीं आया तो कोतवाल की समझ मे यह बात आ गई कि अढाई छैल तो वही था। कोतवाल लुकता छिपता अपने घर गया।

कोतवाल की आप बीती सुनकर राजा ने फौजदार को बुलवाकर उसे यह काम सौंपा। उधर अढाई छैल ने फूलाँ से सारी बात मालूम कर ली। फूला ने उसे यह भी बतला दिया कि फौजदार का दामाद बारह वर्षों से लापता है और फौजदार की बेटी अपने बाप के यहाँ ही रहती है। अढाई छैल ने और भी सब आवश्यक बातें फूलाँ से पूछ ली। फिर वह काशी के ज्योतिषी का वेष बना कर फौजदार के घर गया। फौजदार ने ज्योतिषी के सामने अपना दुखड़ा रोया कि मेरा दामाद आज बारह वर्ष से लापता है। ज्योतिषीजी ने पत्रा देखा और फौजदार से कहा कि आज रात को तुम्हारा दामाद आ जाएगा। इतने वर्षों म वह तुम्हारा घर भूल सकता है अत तुम आठ और

नौ बजे के बीच अपने घर के बाहर बैठे रहना। वह इसी दरमियान तुम्हारे घर के आगे से गुजरेगा। फौजदार ने ज्योतिषी को अच्छी भेंट देकर विदा किया। रात को अढाई छैल ने एक व्यापारी का वेष बनाया। उसने कई तरह का सामान एक बैल पर लाद लिया और रात के नौ बजे वह फौजदार के घर के आगे से गुजरा। फौजदार ने जाना कि यही मेरा दामाद हो सकता है। उसने बैल वाले को वहीं रोक लिया। साधारण पूछताछ के बाद उसे यकीन हो गया कि यही मेरा दामाद है। वह गलबाँही डालकर अपने दामाद से मिला। उसने भी पूरा अभिनय किया। घर मे सबको यह विश्वास हो गया कि यह जँवाई ही है। घर मे दामाद का बहुत आदर सत्कार हुआ तथा बहुत रात गये तक जँवाई के गीत गाये गये। आधी रात को जँवाईजी सोने के लिए गये। जब फौजदार की बेटी सो गई तो 'अढाई छैल' ने उस के सारे गहने उतार लिए और फिर वह चुपके से रफू-चक्कर हो गया। सवेरे जब फौजदार को सारी बातें मालूम हुई तो उसने सिर पीट लिया। लडकी का धन और उसकी इज्जत लूटकर अढाई छैल उसे बुद्धू बना गया था। उधर अढाई छैल को न पकड सकने के कारण वह राजा का कोप-भाजन भी बन गया।

अन्त मे राजा ने स्वय अढाई छैल को पकडने का निश्चय किया। उसने नगर के चारो दरवाजे बन्द करवा दिये। एक दरवाजे पर उसने 'काठ' रखवा दिया और स्वय नगर का पहरा देने लगा। करीब आधी रात को एक युवती राजा के सामने से गुजरी। युवती पूर्ण शृगार किये थी और हाथ मे पूजा की थाली लिए हुए थी। थाली मे दीपक जल रहा था और थाली चलनी से ढकी थी। राजा ने टोका, कौन है ? युवती ने निर्भीक भाव से उत्तर दिया कि मै फौजदार की बेटी हूँ। राजा ने फिर पूछा कि यहाँ आधी रात को किस लिए आई है बेटी ? इस पर युवती ने कुछ लजाकर कहा कि बापजी, आपको तो यह पता ही है कि कल रात अढाई छैल मेरा धर्म भ्रष्ट कर गया। अब मैं कहीं की नही रही, अत पास ही के भैरव मन्दिर मे फिर से पवित्र बनने के लिए जा रही हूँ। भैरव की कृपा से मेरा

कष्ट दूर हो जाएगा। युवती चली गई और थोड़ी देर बाद ही राजा के पास लौट आई। साधारण बातचीत के बाद उसने राजा से पूछा कि बापजी, यह क्या रखा है? राजा ने कहा कि बेटी, यह 'काठ' है। इसमें अपराधियों को पकड़ कर कस दिया जाता है। आज दुष्ट अढाई छैल को पकड़ कर इसमें कसूंगा। युवती ने कहा कि बापजी, यह तो मैंने आज ही देखा है भला मैं भी देखूं कि इसमें अपराधी कैसे जड़ा जाता है? राजा ने अपना एक पैर काठ में रखा और बोला कि देख इस तरह एक पैर इस छेद में डाल दिया जाता है और दूसरा पैर तीन छेद छोड़कर चौथे छेद में। फिर इस काठ को बन्द करके ताला लगा दिया जाता है युवती ने कहा कि बापजी, मुझे काठ में जड़कर दिखलाइये। राजा ने कहा कि बेटी तुझे काठ में क्या जड़ूंगा ले मैं स्वय ही काठ में जड़ा जाकर तुझे दिखला देता हूँ। राजा युवती के हाथों काठ में बन्द हो गया। तब युवती ने अपना जूता निकाल कर राजा को सात जूते मारे और बोली कि ये सात जूते तो मेरी मां के नाम के है और ये सात जूते मेरे नाम के हैं। यों कहकर उसने राजा को सात जूते और लगा दिए। फिर राजा को उसी हालत में छोड़कर स्वय नौ दो ग्यारह हो गया। राजा जी की बड़ी दुदशा हुई। सबेरे लोगो ने उन्हें काठ में से निकाला।

दूसरे दिन राजा ने घोषणा करवादी कि अढाई छैल के सात गुनाह माफ हैं। वह दरबार में हाजिर हो उसे भरपूर इनाम दिया जाएगा। अढाई छैल दरबार में हाजिर हो गया। राजा ने उससे जूते मारने का कारण पूछा तो उसने पीछे की सारी घटना बतलाई। राजा ने कहा कि मैंने उससे विवाह किया ही नही था तो लड़का बोला कि आपकी कटार से फेरे पूरे किये गए थे तथा मेरे जन्म की कहानी आपको यह अँगूठी कहेगी। राजा को सारी बातें याद हो आइ। उसने अढाई छैल को अपना बेटा घोषित कर दिया और उसकी मा को बुलवाकर अपनी रानी बना ली।

● खोटी बहू

एक गाव मे एक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री कर्कशा थी और

इसी कारण वह कमाने के लिए दिसावर नहीं जाता था क्योंकि उसे आशका थी कि मेरी स्त्री मेरे पीछे से माँ को सतायेगी। स्त्री अपने पति से कहती कि तुम दिसावर जाओ, लेकिन वह टालता रहता। आखिर उसने अपनी स्त्री से कहा कि यदि तुम मेरी माँ को अपने बच्चों की तरह ही रखो तो मैं दिसावर जा सकता हूँ। स्त्री ने कहा कि तुम जैसा कहते हो मैं वैसा ही करूँगी। पति दिसावर चला गया तो स्त्री ने अपनी सास को भी बच्चो की तरह ही रखना शुरू कर दिया। बच्चो का मुडन हुआ तो बहू ने सास का भी मुडन करवा दिया। उसने सास को बच्चो का आँधिया पहना दिया, उसके कानो मे बालियाँ डाल दी और गले मे कौडी बाँध दी। अब उसकी सास भी बच्चों के साथ ही गली मे खेलने जाती।

जब ब्राह्मण दिसावर से घर आया तो उसने अपनी स्त्री से पूछा कि माँ कहाँ है? स्त्री ने कहा कि बच्चा के साथ गली म खेल रही होगी, अभी बुलाती हूँ, यो कहकर उसने आवाज लगाई—

कान कुडकली गल कोडी।
तेरो पूत बुलावै घर आ मोडी॥

जब वह घर आई तो माँ की हालत देखकर बेटा अवाक् रह गया।

● पूलासर को पूलजी

चमारो के यहाँ विवाह था, सभी पच जमा हुए। पचो ने जितना कहा उतना 'आदण' (चावल) राधने के लिए चढा दिया गया, लेकिन कुछ लोग इससे सतुष्ट नही हुए। उनका कहना था कि पूलासर के पूलजी पच की सलाह नही ली गई, यह हम सबका तथा स्वय पच का अपमान है। हम विवाह मे शामिल नही होगे। निदान पूलजी पच को बुलवाया गया, पूलजी बेचारा बडे असमजस मे पड गया। उसे कुछ भी पता नही था कि 'आदण' कितना कमती बढती किया जाए। अन्त मे उसने निर्णय दिया कि इसमे दो 'करुडी' (मिट्टी का एक छोटा पात्र) डाल दो और दो 'करुडी' निकाल लो। पूलजी का फैसला सुनकर असतुष्ट लोग खुशी के

मारे नाच नाच कर कहने लगे कि फैसला हो तो ऐसा हो, हम कहते थे न कि पुन्जी वडा सयाना पच है। अब नोज मे खाना खमनी कहनी हरगिज नहीं हो सकेगा।

● चिडी अर कागलो

एक कौवे और एक चिडी न सीर (साये) मे खेती की। चिडी खेत मे गई लेकिन कौवा इधर उधर हो गया। चिडी ने कौवे को आवाज दी कि आओ खेत म हल चलाएँ। लेकिन कौवे ने उत्तर दिया —

> आऊ छू जी आऊ छू, आमलिया गटकावू छू।
> काचा पाका तेरे बेई भी ल्याऊ छू॥

बेचारी चिडी ने अकेले ही सारा खेत जोता।

फिर चिडी ने कौवे को पुकारा कि आओ खेत म 'निनाण' करें, लेकिन कौवे ने फिर वही बात कही —

> आऊ छू जी आऊ छू, आमलिया गटकावू छू,
> काचा पाका, तेरे बेई भी ल्याऊ छू।

चिडी ने अकेले ही सारा 'निनाण' किया। जब खेती पक गई तो चिडी ने कौवे को फिर पुकारा कि आओ 'सिटटी' तोडें लेकिन कौवे ने फिर वही बात कह दी। चिडी ने 'खला' निकालते वक्त फिर कौवे को पुकारा लेकिन कौवे ने वही बात कह कर टाल दिया। चिडी ने सारा अनाज निकाला। उसने बाजरा अलग किया और तूंतडे (भूसी) अलग करके उनका एक ढेर लगा दिया। बाजरे का ढेर छोटा था और तूतडा का ढेर काफी बडा था। चिडी ने थोडा बाजरा 'तूतडा' के ढेर पर छिडक दिया और तब उसने कौवे को पुकारा कि आकर अपना हिस्सा ले लो। अब कौवा बडी उतावली से आया। चिडी ने कौवे से पूछा कि तुम कौन सा ढेर लोगे? कौवे न देखा कि एक ढेर बहुत बडा है और दूसरा बहुत छोटा। उसने कहा कि मैं तो बडा ढेर लूंगा। कौवे ने बडा ढेर ले लिया और चिडी ने छोटा। उनके पास एक गाय और एक बैल भी थे। कौवे न कहा कि मेरे म गाय का पलट

नही होगा, मैं तो अपन बैल पर चढा फिरूँगा। यों कहकर उसने बैल ले लिया और गाय चिडी के हिस्से मे आ गई। चिडी अब गाय के दूध मे खीर बनाकर खावे और मौज करे, उधर कौवे ने बाजरे के दाने तो चुग लिए अब उसके पास केवल तूतडो का ढेर रह गया। लाचार अब कौवा 'तूतड़ां' को बैल के मूत मे भिगोवे और खावे।

● सेठाणी को गीत

एक सेठ दिसावर जाने लगा तो उसकी सेठानी ने कहा कि मेरे लिए दिसावरी गीत लाना। सेठ बारह महीने दिसावर रहकर घर लौटने लगा तो उसे गीतो की बात याद आई। सेठ ने सारा नगर छान मारा लेकिन कहीं दिसावरी गीत नही मिले। अन्त में वह बिना गीत खरीदे ही घर को चल पडा। जब वह लौट रहा था तो एक खेत की मेंड पर बैठकर सुस्ताने लगा। खेत वाले ने सेठ से पूछा कि इतने उदास क्यों हो? सेठ ने कहा कि सेठानी ने दिसावरी गीत मँगवाये थे लेकिन कहीं मिले नही, वह जाते ही गीत माँगेगी तो उसे क्या दूँगा? खेत वाले ने कहा कि मेरे साथ खेत मे आओ, मैं तुम्हें गीत दूँगा। सेठ उसके साथ हो लिया। थोडी दूर पर एक चूहा अपना बिल खोद रहा था, खेत वाला बोला "खोदै खरर खरर" दोनो आदमियो को खडा देखकर चूहा कुछ इधर उधर चलने लगा। इस बात को देखकर खेत वाला बोला "चालै सरर सरर"। चूहा आँखें मटका कर उन्हे देखने लगा तो वह फिर बोला, "देखै डुगग मुगग," अब तो चूहा छलाँग लगाकर भाग गया। इस पर खेत वाला फिर बोला, "कूदै लाग-फलाँग" गीत पूरा बन गया।

खोदै खरर खरर।
चालै सरर सरर ॥
देखै डुगग मुगग।
कूदै लाँग फलाँग ॥

अब सेठ खुशी खुशी घर आया और उसने सेठानी को गीत सुना

दिया। सेठानी भी बडी प्रसन्न हुई। दिन मे ता गीत याद करने का उसे समय नही मिला। रात को वह गीत याद करने लगी —

खोदे खरर खरर

सयाग मे उसी वक्त सेठ का एक पडोसी उसके घर मे चोरी करने के लिए सेंध लगा रहा था। पडोसी ने सोचा कि सेठानी ने मुझे देख लिया है अत वह ओट म छिपने के लिए चला, तभी सेठानी बोली —'चालै सरर सरर' अब चोर भागने क लिए इधर उधर ताकने लगा, इतने म सठाना फिर बोली, देखे डुगग मुगग' अब तो चोर का सब्र खत्म हो गया और वह सिर पर पांव रख कर भागा तो सेठानी बोल उठी—'कूदे लांग फलांग। चोर का निश्चय हो गया कि सेठानी ने मुझे देख लिया है और सेठ सवेरे ही मुझे राजा के पास दड दिलवाएगा। वह घबडाया हुआ सठ के पास आया और अपने अपराध के लिए उससे क्षमा मागने लगा। पडासा क द्वारा सारी बात सुनकर सेठ सेठानी को हँसी आ गई।

● राजा और नाई

एक राजा को कविता का बडा शौक था। साधारण कविता पर भी वह भरपूर इनाम दिया करता था। एक दिन एक ब्राह्मणी ने अपने ब्राह्मण से कहा कि तुम भी कोई कविता सुनाकर राजा से द्रव्य लाओ ताकि घर का काम चले। ब्राह्मण बोला कि मैं तो कुछ जानता नही राजा को क्या सुनाऊँगा ? ब्राह्मणी बोली कि रास्ते म जो कुछ देखो वही जोड जाडकर सुना दना। ब्राह्मण चला। रास्ते म उसन दखा कि एक कौआ तालाब की पाल पर बैठा है वह चाच मे पानी भरता है और अपनी चाच का पत्थर पर घिस घिस कर तेज करता है। कौआ बार बार इसी क्रिया को दुहरा रहा था। ब्राह्मण न तुक मिलाई —

घसै घसै अर फेर घसै, घस घस भर पाणी।
तेरे मन की बात काल्‌डा सारी ही म्हे जाणी॥

राजा ने कविता सुनी और ब्राह्मण का इनाम देकर विदा कर दिया।

राजा का मंत्री राजा को मार कर स्वयं राज-पाट हथियाना चाहता था। इस काम के लिए उसने राजा के कालू नामक नाई को लालच देकर अपनी ओर मिलाया। मन्त्री ने योजना बनाई कि कालू जब दूसरे दिन राजा की हजामत बनाने जाए तो उस्तरे से राजा का गला काट डाले। दूसरे दिन नाई गया लेकिन उसकी हिम्मत नही पड रही थी। वह बार बार सिल्ली पर पानी डालकर उस्तरे को घिस रहा था। यह देखकर राजा को पहले दिन वाली कविता याद आ गई, वह बोल पडा :—

घसै घसै अर फेर घसै, घस घस गेरै पाणी।
तेरै मन की बात कालूड़ा, सारी ही म्हे जाणी॥

राजा के मुँह से यह बात सुनते ही नाई सुन्न हो गया। उसने राजा के पैर पकड लिए और गिड गिडा कर बोला कि मन्त्री जी ने मुझे यह जघन्य कार्य करने के लिए कहा था। राजा ने सारी बात जान ली। उसने नाई को माफ कर दिया और मन्त्री को फाँसी पर चढवा दिया। फिर उसने ब्राह्मण को बुलाकर भारी पुरस्कार दिया।

● राजा और हंस

एक बहेलिया नित्य जगल मे शिकार करने के लिए जाया करता था। एक दिन जगल मे एक हस और हसनी (हसी) को उसने अपने तीर का निशाना बनाना चाहा। हस-हसी ने कहा कि तुम हमे मत मारो। हम तुम्हे दो मोती नित्य दे दिया करेंगे। बहेलिया मान गया और मोती लेकर घर आ गया। वह नित्य दो मोती ले आता और उन्हे बेच देता। कुछ ही दिनो मे उसके पास काफी रुपये जमा हो गए। पडोसिन ने बहेलिये की बदलती दशा देखी तो उसे बडी डाह हुई। उसने बहेलिये की स्त्री से सारी बात का पता लगा लिया। बहेलिये के कोई सन्तान न थी इसमे बहेलिया और उसकी स्त्री बडे दुखी रहते थे। पडोसिन ने बहेलिये की स्त्री से कहा कि यदि तू हंस का मास खा ले तो तेरे निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होगा। बहेलिये की स्त्री ने अपने पति से हस का मास लाने के लिए कहा। स्त्री के कहने पर

बहेलिये ने दूसरे दिन जंगल में जाकर हंसा को मारना चाहा। हंसा ने बहुत प्रार्थना की लेकिन वह नहीं माना। हंसा ने कहा कि हम तुम्हें बहुत मोती देंगे लेकिन बहेलिया नहीं माना। संयोग से उसी वक्त वहाँ शिकार खेलता हुआ राजा भी आ पहुँचा। हंसों की करुण पुकार सुनकर राजा ने बहेलिये से कहा कि या तो इन्हें छोड दे अन्यथा मैं तुझे अभी जान से मार डालूँगा। बहेलिया डर गया और उसने हंसा को छोड दिया।

राजा हंसा के जोड़े को अपने महल में ले आया और वहीं उन्हें नित्य मोती चुगाने लगा। अब हंस-हंसी वहाँ निर्भय होकर आनन्द पूर्वक रहने लगे। जब वहाँ रहते रहते उन्हें बहुत दिन हो गए तो एक दिन हंस ने हंसी से कहा कि राजा ने हमारा बडा उपकार किया है इसका बदला चुकाना चाहिए। यों कहकर हंस राजा के पास जाकर बोला कि महाराज, समुद्र पार के उस देश की राजकुमारी अनिंद्य सुन्दरी है आप मेरे ऊपर चढ़कर वहाँ चलें। राजा जाने लगा तो रानी बोली कि आप कब तक लौटेंगे? राजा ने कहा कि मैं सावन की तीज तक अवश्य आ जाऊँगा। रानी ने कहा कि सावन की तीज तक मैं तुम्हारी राह देखूँगी, यदि तुम तब तक नहीं आये तो मैं चिता में जल मरूँगी।

राजा हंस पर सवार होकर राजकुमारी के नगर में पहुँचा। राजकुमारी के रूप को देखकर राजा मोहित हो गया। उधर राजकुमारी ने भी राजा से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। दोनों का विवाह हो गया और दोनों हंस पर सवार होकर लौट पडे। समुद्र के इस पार आने पर राजकुमारी ने राजा से कहा कि महाराज मैं अपनी माँ का दिया हुआ नौ लखा हार वहीं भूल आई हूँ, सो मुझे हार लाने के लिए वापिस जाने की आज्ञा प्रदान करें।

राजा ने कहा कि मैं तुझे और बहुतेरे हार बनवा दूँगा लेकिन राजकुमारी ने हठ पकड लिया। हंस ने राजा से कहा कि मैं समुद्र लाँघने से थक गया हूँ अतः दोनों को साथ नहीं ले जा सकूँगा, आप यहीं ठहरें, मैं राजकुमारी को लेकर जाता हूँ। राजकुमारी हंस पर बैठकर चली गई। अपने

महल मे पहुँच कर राजकुमारी ने हस को एक जगह बैठ जाने की आज्ञा दी और स्वय हार ढूँढने मे लग गई। महल मे दीपक जल रहा था, दीपक था और हस की पाँखो पर गिरा और हस जल गया। हार ढूँढ कर राजकुमारी हस के पास आई तो हस को जला देखकर अवाक् रह गई। वह उदास हो कर हस के पास ही बैठ गई।

उधर राजा समुद्र के परले पार हस की बाट देख रहा था। ज्यो ज्यो विलम्ब होता जा रहा था त्यो त्यो राजा की व्याकुलता भी बढती जा रही थी। कई दिन बीत गये और हस नही आया तो राजा ने समुद्र मे डूब जाने की मन मे ठान ली। उसी रात को राजा ने एक वृक्ष पर चकवा-चकवी को आपस मे बातें करते हुए सुना। चकवी बोली "ओ चकवा, कहनी बात, कटैनी रात।" चकवा बोला कि घर बीती कहूँ या पर बीती? चकवी ने उत्तर दिया कि घर बीती तो सदा ही कहते हो, आज तो पर बीती ही कहो। इस पर चकवा बोला कि मैं बीट करता हूँ। यदि कोई सुनता गिनता हो और मेरी बीट को ऊपर की ऊपर लेकर अपने शरीर मे मलकर समुद्र मे घुसे तो समुद्र का पानी फट जाए और वह आसानी से समुद्र को पार कर जाए। इस पर चकवी बोली कि यदि कोई मेरी बीट को मृत प्राणी पर पानी मे घोलकर छिडक दे तो वह तुरन्त जिन्दा हो जाए। यो कह कर दोनो ने बीट डाली तो राजा ने ऊपर की ऊपर ले ली। चकवी की बीट उसने अपने पास रखली और चकवे की बीट को शरीर मे मलकर पानी मे उतर गया। समुद्र का पानी फटता गया और राजा समुद्र के पार पहुँच गया। समुद्र पार कर के वह राजकुमारी के महल मे गया। राजकुमारी तब भी हस के पास ही बैठी थी। राजा ने राजकुमारी से सारी बात जान कर चकवी की बीट पानी मे घोलकर हस पर छिडक दी। हस पख फड फडाकर उठ बैठा। अब राजा रानी फिर हस पर सवार होकर उड चले। समुद्र के इस किनारे आये तो राजा ने देखा कि लडकिया सावन की तीज के गीत गा रही है। राजा को तुरन्त ध्यान आया कि यदि आज अपने नगर मे नही पहुँचूंगा तो रानी सती हो जाएगी। हस ने कहा कि मैं दोनो को लेकर तो इतनी जल्दी वहा

नहीं पहुँच सकूगा, हां, आप मुझे एक चिट्ठी लिख दीजिए तो मैं आपका सदेश रानी तक पहुँचा दूंगा। राजा ने रानी के नाम चिट्ठी लिखी कि मैं शीघ्र आ रहा हूँ तुम सती मत होना। हंस चिट्ठी लेकर उडा।

उधर रानी जलने के लिए चिता में बैठी थी और चिता म अग्नि लगाई ही जा रही थी कि हंस ने राजा की चिट्ठी ले जाकर रानी की गोद म गिरा दी। रानी ने चिट्ठी उठा कर पढ़ी, राजा का सदेश पाकर वह चिता से बाहर आ गई। लोग कहने लगे कि ढाग करना आसान है, जलना आसान नहीं है। तब रानी ने सबको राजा की चिट्ठी दिखला दी। सारे लाग मान गए।

उधर हंस चिट्ठी गिरा कर फिर उड गया और राजा और राजकुमारी को ले आया। राजा और नई रानी को देख कर सारी प्रजा आनन्द उत्सव मनाने लगा।

तब हंस ने राजा स कहा कि महाराज, आपने हमारे प्राण बचाये थे तथा आपने हमको बहुत सुख पूवक यहा रखा, लेकिन हम जगल के जीव हैं सो एक जगह बद होकर रहना नहीं चाहते। हमने आपका बदला चुका दिया है और अब हम जा रहे हैं। यो कह कर हंस और हंसी आकाश म उड गए।

● सादूलै बेटै नै के भावै ?

एक गादड की स्त्री गमवती थी। उसने गीदड स कहा कि मेरे अभी प्रसव होगा अत किसी उपयुक्त स्थान की तलाश करो। गीदड ने कहा कि यहाँ आस पास तो कोई ऐसा स्थान नहीं है। हाँ, वह शेर की मांद खाली पडी है। उसी म चल कर प्रसव कर ले, जब सिंह आयेगा तब देखा जाएगा। दोनों शेर की मांद म चले गए और गीदड की स्त्री ने एक बच्चा जन दिया। थाडी ही देर म उन्हें सिंह आता दिखलाई दिया। जब वह गुफा के नजदीक आ गया तो गीदड ने आवाज बदल कर अपनी स्त्री से पूछा कि हे पाटमदिणी, 'सादूला' बेटा खाने के लिए क्या मांगता है ? (सादूलै बेटै नै के भावै ?) गीदड की स्त्री ने भी उसी लहजे म जवाब दिया कि महाराजा-

धिराज 'सार्दूला' कुअर सिंह का मांस मांगता है। इस पर गीदड बोला कि तुम थोडी देर चुप रहो, सिंह अभी यहाँ आ रहा है आवाज सुन कर भाग जाएगा। सिंह के आते ही उसका शिकार करूँगा।

गुफा मे हो रहे सवाद को सुनकर सिंह डर कर भाग गया। थोडी देर मे वह फिर आया तो गीदड-दपती ने फिर उसी युक्ति से काम लिया। सिंह फिर भाग गया। मांद को छोडकर सिंह वन म मारा मारा भटकने लगा। वन के अन्य पशुआ ने सिंह की व्याकुलता जान कर सिंह के सामने सारी बात खोल कर कह दी। गीदड गीदडी की इस हिमाकत पर सिंह बडा क्रोधित हुआ और उनका कामतमाम करने के लिए वह अपनी मांद की ओर भागा। लेकिन उसी जगह वृक्ष पर एक कौआ बैठा था जो गीदड का दोस्त था। वह शीघ्रता स उडकर गीदड के पास आया और बोला कि तुम्हारी पोल खुल गई है सिंह क्रोध म भरा इधर भागा आ रहा है अपनी जान की खैर चाहो तो यहा से निकल भागो। इतना सुनते ही राजाधिराज गीदडराज और उनकी पाटमहिषी सादूल कुअर को वही गुफा मे छोड कर भाग गय।

● वैर वदलो

एक ठाकुर युद्ध मे जाने लगा तो उसन अपन मित्र से कहा कि मैं युद्ध म जा रहा हूँ यदि मैं युद्ध मे मारा जाऊँ तो अमुक स्थान पर मेरे पांच हजार रुपय गडे हुए हैं सो ले जाकर मेरी स्त्री और बच्चो को दे देना। मित्र न ठाकुर को विश्वास दिलाया कि वह ऐसा ही करेगा। ठाकुर युद्ध म चला गया लेकिन इस बार उसकी विश्वसनीय घोडी ने उसे धोखा दे दिया। रणक्षत्र म घोडी एसी अड गई कि ठाकुर के लाख चेष्टा करने पर भी वह टस से मस न हुई। ठाकुर युद्ध म मारा गया।

जब ठाकुर के मित्र को इस बात का पता चला तो उसने ठाकुर के बताये हुए पाच हजार रुपय स्वय रख लिय। वही ठाकुर अपन मित्र के यहाँ पुत्र बनकर जन्मा। बहुत वर्षों बाद पुत्र का मुह देखकर वह बहुत प्रसन हुआ। लडका बडा हुआ और उसका विवाह कर दिया गया वह घर म

आ गई। लेकिन विवाह होने के बाद ही लड़का बीमार हो गया। उसके बाप ने उसे बचाने का भरसक यत्न किया लेकिन उसकी बीमारी बढ़ती ही गई और वह मरणासन्न हो गया। उसका बाप रोने लगा तो बेटे ने कहा कि अब क्यों रोता है? मैं वही ठाकुर हूँ जिसके पाच हजार रुपये तूने मार लिये थे। जितने रुपये तूने मेरी बीमारी पर लगा दिये है उतन छोडकर शेष रुपये मेरे बच्चा को भज दे अन्यथा फिर अगले जन्म म तुमस शष रुपये वसूल करूँगा। तब उसके बाप ने कहा कि मैंने तो तुम्हारे रुपय मारे थे, लेकिन इस बेचारी बहू ने तेरा क्या बिगाडा था जो इस यो दु ख दकर जा रहा है। तब लड़का बोला कि यह इसी काबिल है यह दुष्टा मेरे पिछले जन्म म घोडी थी और इसन युद्धक्षत्र म मुझे जानबूझ कर मरवाया था इसलिए इसे भी यह दड भोगना ही पडेगा। यो कह कर लडके ने दम तोड दिया।

● अब क्यु रोवै ?

एक पडित बडा ज्ञानी था। बडी उम्र म जाकर उसके एक लडका हुआ। पडित ने अपन ज्ञान के बल स जान लिया कि मैं इस लडके के पूव जन्म के एक लाख रुपये मागता हूँ। लडका अपना ऋण चुकाने आया है, वह जिस दिन यह ऋण चुका देगा उसी दिन चला जाएगा (मर जाएगा)।

पडित का राज-दरबार म बहुत मान था वह राज-पंडित था। उसने अपनी स्त्री को समझा दिया था कि मेरी अनुपस्थिति म लडके को कही मत जाने देना और राज-सभा म तो कदापि न जाने देना।

एक दिन राजा ने किसी आवश्यक काम से पडित को बुलवा भेजा। लेकिन पडित तब बाहर गया हुआ था। राजकमचारी ने पडित के लडके से कहा कि पडितजी नही हैं तो आप ही चल सुना है आप भी बडे विद्वान् हैं। लडके की माँ ने उसे दरबार म जानेसे बहुत मना किया लेकिन लडका न माना। तब उसकी माँ ने कहा कि यदि जाते हो तो जाओ लेकिन राजा स कोई उपहार मत लाना। लडका चला गया। राजा के प्रश्नो का पडित के लडके ने समुचित उत्तर दिया। राजा बडा प्रसन्न हुआ और उसन लडके

को बहुत भारी पुरस्कार देना चाहा, लेकिन लडके ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया। तब राजा ने एक नारियल मंगवाकर उसमें एक लाख रुपये की एक मणि डलवादी और फिर पंडित के लडके से कहा कि हम आपको कुछ भी नहीं दे रहे हैं लेकिन खाली हाथ नहीं जाने देंगे, अतः भेंटस्वरूप सिर्फ एक नारियल आपको देते हैं, सो आप स्वीकार कर लें। पंडित का लडका नारियल लेकर घर आ गया। उसने नारियल अपनी माँ को दे दिया। नारियल देते ही वह मृत होकर जमीन पर गिर पडा। उसकी माँ धाड मार कर रोने लगी। पंडित घर आया तो उसने जान लिया कि लडके ने अपना ऋण चुका दिया है। उसने नारियल को अपनी स्त्री के सामने तोडा और वह मणि निकाल कर उसे दिखला दी और बोला कि मैंने तुझे पहले ही सारी बात बतलादी थी, अब क्यों रोती है?

● मागत को ख्याल

एक सेठ एक साधु के पास नित्य जाया करता था। एक दिन सेठ ने साधु से कहा कि मेरी स्त्री को बच्चा होने वाला है, अतः कल नहीं आ सकूगा। साधु ने कहा कि जब तुम्हारे लडका हो तो पहले उसे यहाँ ले आना। लडका होते ही सेठ उसे लेकर साधु के पास गया। साधु ने कहा कि इस बच्चे को ले जाकर जमीन में गाड दो। साधु की बात सुनकर सेठ अवाक् रह गया। तब साधु ने सेठ से कहा कि तुम कुटिया के बाहर खडे हो जाओ। सेठ बाहर चला गया तो साधु ने लडके से पूछा कि तू सेठ के कितने रुपये माँगता है? लडके ने उत्तर दिया कि मैं सेठ के दस हजार रुपये माँगता हूँ, लेकिन तुमने तो मुझे सवा हाथ कपडे में ही रख दिया। सेठ को सही बात का पता चल गया और उसने साधु के कहे अनुसार लडके को ले जाकर गाड दिया। इस प्रकार साधु के कहने से सेठ ने छः लडके गाड दिये। जब वह सातवें लडके को लेकर साधु के पास चला तो उसकी स्त्री ने कहा कि अब मैं इस लडके को नहीं ले जाने दूंगी, लेकिन सेठ नहीं माना। वह लडके को लेकर साधु के पास गया। लडके ने साधु से कहा कि यह सेठ तो मेरे इतने रुपये माँगता

है कि मैं कुछ कह ही नहीं सकता। जब यह स्वयं ही कह देगा कि मैंने अपने रुपये भर पाये तभी मैं इसे छोड़कर जाऊँगा। तब साधु ने सेठ से कहा कि इस लड़के को ले जाकर इसका लालन-पालन कर, लेकिन इसे कहीं बाहर मत जाने देना।

लड़का बड़ा हो गया। एक दिन उसने अपने बाप से कहा कि मैं अब कमाने के लिए जाऊँगा। उसके बाप ने कहा कि हमारे पास बहुत धन है, तुम्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन लड़का नहीं माना और घर से निकल पड़ा।

वह पास के एक गाँव में पहुँचा तो उसने देखा कि एक जगह एक मकान बन रहा है। उसने वहाँ एक पत्थर देखा और मकान मालिक से कहने लगा कि यह पत्थर मुझे दे दो और इसकी कीमत ले लो। यो पत्थर साधारण दिखलाई देता था, लेकिन मकान-मालिक ने उससे पचास रुपये माँगे। लड़के ने रुपये दे दिये और पत्थर घर भिजवा दिया। उसने अपने बाप को चिट्ठी लिखी कि इस पत्थर को सम्हालकर रख देना। जब सेठ पत्थर को कमरे में रखवाने लगा तो उसका एक कोना टूट गया। पत्थर के टूटते ही सारा कमरा हीरे-मोतियों से भर गया। यह देखकर सेठ ने अपने लड़के को चिट्ठी लिखी कि मैंने तुम्हारी कमाई भर पाई अब कहीं न जाकर सीधे घर आ जाओ। चिट्ठी लेकर सेठ का आदमी उसके पास पहुँचा। लड़के ने चिट्ठी पढ़ी और वहीं ढेर हो गया। सेठ को खबर मिली तो वह रोता-कल्पता साधु के पास गया। साधु बोला कि मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि जब तुम भरपाई कर दोगे तभी यह लड़का मर जाएगा, अब पछताने में क्या फायदा है?

● कठियारो और राजा

एक कठियारा लकड़ियाँ बेचकर चार आने रोज लाया करता था जिनमें से एक आना वह किसी पुण्य कार्य में लगा देता और शेष तीन आना में अपने घर का काम चलाया करता। एक रात को कठियारे की स्त्री ने कठियारे से कहा कि तुम सिर्फ चार आने रोज कमाते हो जिनमें से भी एक

आना दान कर देते हो। इससे सबको बडी तकलीफ होती है, अतः तुम नित्य एक आने का दान करना बन्द कर दो। एक चौथाई दान तो राजा भी नही करता। इस पर कठियारे ने उत्तर दिया कि राजा अपनी 'करनी' में अपनी करनी, मैं दान देना कदापि बन्द नही करूँगा। कठियारे की झोपड़ी के बाहर खड़ा राजा इन दोनो की बातें सुन रहा था। उसने सबेरे ही कठियारे को दरबार मे बुलवा लिया। राजा ने कठियारे से पूछा कि रात को तुम अपनी झोपडी मे क्या बातें कर रहे थे ? कठियारे ने उत्तर दिया कि महाराज, यद्यपि आप राजा हैं लेकिन मेरी झोपडी मे मैं जो चाहूँ बात करूं, इसे पूछने का आप को कोई अधिकार नही है। कठियारे की बात सुनकर राजा अप्रसन्न हुआ और उसने कठियारे को जेल मे डाल दिया।

कठियारे के लिए नित्य रात को स्वर्ग से विमान आया करता और वह उसमे बैठ कर नित्य स्वर्ग जाया करता। उसी जेल मे एक सेठ भी था। उसने एक दिन कठियारे से पूछा कि तुम रात को कहाँ जाया करते हो ? कठियारे ने सारी बात सेठ को सच सच बतला दी। सेठ ने कहा कि एक रात मुझे भी स्वर्ग ले चलो। कठियारा बोला कि विमान मे तो तुम नही बैठ सकोगे, लेकिन तुम विमान का पाया पकड़ लेना। रात को विमान आया तो सेठ भी पाया पकडकर स्वर्ग मे पहुँच गया।

सेठ ने स्वर्ग के दूतो से पूछा कि यह सुन्दर महल किसका है तो दूतो ने कहा कि यह कठियारे के लिए है। फिर सेठ ने पूछा कि ये विविध प्रकार के भोजन किसके लिये हैं तो उत्तर मिला कि ये सब कठियारे के लिये है। सेठ ने फिर पूछा कि सब चीजें कठियारे के लिये ही है तो भला मेरे लिये क्या है ? देवदूतो ने उत्तर दिया कि तुम्हारे लिये क्या होता ? तुमने कभी किसी को एक पैसा भी दिया नही, अत तुम्हारे लिए यहाँ कुछ भी नही है। सेठ ने देवदूतो से फिर पूछा कि मेरे लिए कुछ नही है तो हमारे राजा के लिए तो कुछ होगा ही। इस पर दूतो ने सेठ को खून और मवाद की बहती हुई नदी दिखला दी और कहा कि तुम्हारा राजा बडा अन्यायी है सो उसके लिए यह नदी तैयार है। सेठ ने पूछा कि राजा के पापो का क्या प्रायश्चित्त

है तो दूतों ने कहा कि यदि राजा नगे पैरों फिर कर गायों की बारह वर्ष सेवा करे तो उसके पाप धुल सकते हैं।

स्वर्ग में घूम फिर कर जब वे लौटने लगे तो वहाँ एक मोची आया। मोची ने सेठ से कहा कि सेठ, मैं तुम्हारे एक चवन्नी माँगता हूँ सो मेरी चवन्नी दे जाओ। सेठ बोला कि मेरे पास इस वक्त कुछ भी नहीं है। इस पर मोची ने सेठ के शरीर से चार आने की कीमत का चमड़ा काट लिया। अनन्तर कठियारा और सेठ विमान में बैठ कर जेल में आ गए।

सवेरा होते ही सेठ ने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की। राजा ने सेठ को बुलवा लिया। सेठ ने रात की सारी बात राजा को सुनाई और साथ ही उसने अपने शरीर का वह भाग भी दिखलाया जहाँ से मोची ने सेठ की खाल काटी थी। राजा पर सेठ की बात का बड़ा असर हुआ। उसने कठियारे सहित सारे कैदियों को मुक्त कर दिया और स्वयं नगे पैरों गायें चराने चला गया।

नदी के किनारे गायें चराते-चराते जब उसे बारह वर्ष पूरे हो गये तो एक दिन हाल की ब्याई एक गाय का बछड़ा नदी में बह गया। राजा को बड़ा दुःख हुआ कि बछड़े की हत्या और सिर लगी। राजा उदास होकर वहीं बैठ गया। एक पहर बाद बछड़ा नदी में से स्वयं ही निकल कर गाय के पास आ गया। गाय ने बछड़े से पूछा कि बेटा, जन्मते ही मुझे छोड़कर तू कहाँ चला गया था? इस पर बछड़ा बोला कि माँ, इस अन्यायी राजा को तेरी सेवा करते-करते आज बारह वर्ष हो गये अतः इसके पाप धोने गया था। अब इसके लिए खून और मवाद की जो नदी थी, वह दूध-दही की नदी बन गयी है। राजा ने बछड़े की बात सुनी तो उसे सांसारिक कार्यों से वैराग्य हो गया और वह अपने मंत्रियों को राज-काज सम्भला कर स्वयं तपस्या करने के लिए जंगल में चला गया।

● राजा और साहूकार की बेटी

कुछ लड़कियाँ शहर की गलियों में खेल रही थीं। वे सब आपस में

गया था कि वह मात जूते खाकर भी बात करने के लिए राजी हो गया। राजकुमारीने राजा को सात जूते मारे और फिर उसे तबू मे लिवा ले गई। वहाँ राजा ने राजकुमारी के साथ गन्धर्व-विवाह कर लिया। जब राजा जाने लगा तो राजकुमारी ने सैनाणी स्वरूप राजा की अँगूठी ले ली। राजा आगे बढ़ा और साधु के बतलाये हुए गाँव मे पहुँचा, लेकिन साधु ने राजा को जो नाम बतलाया था उस नाम का कोई आदमी उस गाँव मे नही था। अत राजा निराश होकर वहाँ से अपने नगर मे लौट आया।

जगल की राजकुमारी वही साहूकार की लड़की थी, जिसने राजा को सात जूते मारने का प्रण किया था। उसने अपना प्रण पूरा कर लिया था और जब वह उसी सुरग के रास्ते बुर्ज मे आ गई थी। कुछ दिनों के पश्चात् उसने घोषणा कर दी कि वह गर्भवती है। राजा को उसकी बात सुनकर बड़ा क्रोध और आश्चर्य हुआ। वह रानी को मारने के लिए स्वय बुर्ज मे पहुँचा, लेकिन तब रानी ने राजा को अँगूठी उसे दिखला दी और सारा भेद खोल दिया। सारी बात समझकर राजा चुप हो गया।

● सब में भली चुप

दो पड़ोसिनें आपस मे खूब लड़ती थीं। रोटी खा-पीकर ज्यांही वे निवृत्त होतीं—दोनों वाक्‌युद्ध मे जुट जातीं और शाम तक वैसे ही झगड़ती रहतीं। एक स्त्री के बेटे की बहू आई और वह यह सब देखकर दग रह गई। उसने अपनी सास से कहा कि पड़ोसिन कल जब लड़ने के लिए आये तो तुम ये लड्डू खाती रहना, उससे एक बार भी मत बोलना। दूसरे दिन पड़ोसिन आई तो बहू ने सास को लड्डू देकर पिछले दिन की बात दोहरा दी। सास लड्डू खाने लगी। उसने बहुत चाहा कि वह पड़ोसिन को करारा जवाब दे, लेकिन बहू ने सास को बोलने नहीं दिया। उस दिन पड़ोसिन हारकर कुछ पहले ही चली गई। बहू ने तीन-चार दिन तक यही नुस्खा काम मे लिया और तब पड़ोसिन ने भी हार कर आना छोड़ दिया। दोनों की लड़ाई सदा के लिए खत्म हो गई।

● राम कियां मिलै ?

एक माँ-बेटा थे । बेटे ने कहा कि माँ, मैं राम से मिलने के लिए जाता हूँ । बेटा जगल मे चला गया । जाते वक्त वह खाती से एक काठ की रोटी बनवाकर लेता गया । जब भी उसे भूख लगती वह काठ की रोटी की तरफ देख लेता । बारह वर्ष तक वह बिना अन्न खाये जगल मे तपस्या करता रहा, लेकिन उसे राम के दर्शन नही हुए, तब वह घर आ गया । उसकी माँ ने पूछा कि बेटा, तुझे राम के दर्शन हुए ? बेटे ने कहा कि नही माँ, मुझे राम के दर्शन नही हुए। माँ ने पूछा कि तू वहाँ क्या खाता था तो बेटे ने उत्तर दिया कि मैं जाते वक्त खाती से काठ की एक रोटी बनवाकर ले गया था, जब भूख लगती तो उस रोटी को देख लेता था और कुछ नही खाता था । माँ ने कहा कि बेटा तेरे प्राण तो रोटी मे बसे थे, तुझे भला राम कैसे मिलते ?

लडका फिर जगल मे चला गया । इस बार वह सूखे पत्ते खाकर बारह वर्ष जगल मे रहा, लेकिन राम नही मिले, वह फिर घर लौट आया । माँ के पूछने पर उसने सारी बात सच सच बतला दी । इस पर माँ ने कहा कि तेरा मन तो पत्ते खाने मे लगा था, तब तुझे राम क्यो कर मिलते ? लडका फिर चला गया । इस बार वह सिर्फ हवा का भक्षण करके रहा, लेकिन राम नही मिले । बारह वर्ष बाद घर आया तो माँ ने कहा कि बेटा, जब तक जरा भी वासना मन मे रहेगी, राम नही मिलेगे । इस बार लडके प्रण किया कि राम के दर्शन होने पर ही घर आऊँगा ।

वह जगल मे चला गया और पैरो मे रस्सी बाँध कर एक वृक्ष से औधा लटक गया । उसे मृत जानकर कौवे उसके शरीर पर चोंचें मारने लगे, लेकिन लडका अपने निश्चय पर अटल रहा । उसने कौवो से कहा—

काग सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास ।
दो नैणा मत खाइयो, राम मिलण की आस ॥

(हे कौवो मेरा सारा शरीर तुम खा लो, शरीर से चुन चुन कर सारा माँस खा लो, लेकिन मेरी दो आँखें मत खाना, इन्हे राम-दर्शन की आशा है ।)

उनके निश्चय पर भगवान प्रसन्न होकर उनके सामने तुरन्त प्रकट हो गए।

● चाचो-भतीजो

चचा और भतीजा गंगा-स्नान के लिए गये। गंगा पर स्नान करने वालों की अपार भीड़ थी। किसी ने गंगा के किनारे फल का त्याग किया, किसीने दूध का। चचा बोला कि मैं तो क्रोध का त्याग करूंगा। भतीजे ने कहा कि चाचाजी, क्रोध का त्याग करना बड़ा मुश्किल है, लेकिन चचा अपने निश्चय पर अटिग रहा।

गंगा-स्नान करके दोनों घर आगए। भतीजे ने ब्राह्मणों को भोज दिया। लेकिन उसने अपने चचा को नहीं बुलाया। भतीजे की चाची ने अपने पति से कहा कि तुम्हारे भतीजे ने बड़ा भोज किया है, और उसने तुमसे कहा भी नहीं। लेकिन उसके पति ने जरा भी रोष प्रकट नहीं किया। चचा बिना बुलाये भी भतीजे के घर चला गया। जब वह जीमने बैठा तो भतीजे ने एक थोड़ा (दो पसर) धूल चचे की पत्तल में डाल दी। लेकिन चचा जरा भी क्रुद्ध नहीं हुआ, वह चुपचाप उठकर खड़ा हो गया। तब भतीजा चचे से लिपट गया और बोला कि चाचाजी, आपने सचमुच क्रोध का त्याग किया है। अनन्तर दोनों ने साथ बैठ कर भोजन किया।

● टोंकनड़ी

एक भाई अपनी छोटी बहिन को बहुत प्यार करता था, लेकिन उसकी स्त्री अपनी ननद को जरा भी नहीं चाहती थी। उसका भाई कमाने के लिए गया तो अपनी स्त्री से कहता गया कि पिता घर में नहीं हैं, टोकनी (बहिन का नाम) को जरा भी दुख मत देना, इसे अच्छी तरह खिलाना-पिलाना। यों कह कर वह कमाने के लिए चला गया।

सवेरे जब टोकनी ने भावज से खाना मांगा तो उसने ननद को दुत्कारते हुए कहा कि बड़े तड़के ही तुझे भूख सताने लग गई, पहले जा कर गोबर चुग ला। बेचारी टोकनी गोबर चुगने चली गई। जब वह आई तो

भावज ने उसे बाजरे के दो रोटिये (छोटी रोटी) दे दिये और उन पर बाजरे की 'ल्हुक्सी' (बाजरे के ऊपर से उतरे हुए छिलके आदि) डालदी। ऐसा खाना देखकर टोकसी की आखों में आँसू आ गए उससे वे रोटिये खाये न गए। वह उन रोटियों को नित्य इकट्ठा करने लगी।

अब टोकसी सवेरे गोबर चुगने और शाम को लकडियाँ बीनने जाया करती। भूख-प्यास व तिरस्कार से वह बहुत दुबली हो गई। लकडियाँ बीनने या गोबर चुगने जाती तो टोकसी एक टील पर बैठ कर करुण स्वर में कहती —

बाप गयो माँडवै, भाई गयो अजमेर
भावजडी दुख देवै, टोकसडी मरज्या ये टोकसडी मरज्या।

(बाप माँडवे, और भाई अजमेर चला गया भौजाई दु ख दे रही है अरी टोकसडी मरजा, अरी टोकसडी मरजा)

यो बहुत दिन बीत गए। एक दिन भाई दिसावर से आया तो उसने टोकसी को उपर्युक्त बात कहते हुए सुना। वह सहसा टोकसी को पहिचान नहीं सका। टोकसी की दशा देख कर उसे बडा दु ख हुआ। वह टोकसी को घर ले आया। घर आकर उसने अपनी स्त्री से पूछा कि टोकसी कहाँ है तो उसने उत्तर दिया कि अभी खाना खा कर गई है बाहर खेल रही होगी। तब उसने टोकसी को उसके आगे खडा करके कहा कि पापिन, तू ने मेरी बहिन की क्या दशा कर रखी है ? टोकसी ने वे सारे रोटिये भाई को लाकर दिखलाये जो भौजाई टोकसी को खाने के लिए दिया करती थी। भाई को बडा गुस्सा आया और उसने अपनी स्त्री का झोटा पकड कर उसे घर से बाहर निकाल दिया।

● बाण कोनी छूटै

एक जाटनी को चोरी करने की आदत थी। बिना चोरी किये उसे कल नहीं पडती थी। और तो और वह अपने घर की भी चीज चुरा लेती थी। जाटनी के बेटे अपनी बहिन के यहाँ भात लेकर जाने लगे तो

जाटनी बोली कि मैं भी साथ चलूंगी। लड़कों ने कहा कि हम तुम्हें साथ नहीं ले जाएंगे, क्योंकि तू चोरी किए बिना रहेगी नहीं और तेरे चोरी करने के कारण हम सबको नीचा देखना पड़ेगा। जाटनी ने सौगन्ध खा कर चोरी न करने की प्रतिज्ञा की। बेटों ने कहा कि यदि तू चोरी करेगी तो हम तुझे जान से मार डालेंगे। माँ के विश्वास दिलाने पर वे उसे भी साथ ले गए। भात भर कर घर आने पर बेटों ने माँ से पूछा कि तू कुछ वहाँ से चुरा कर तो नहीं लाई है? इस पर जाटनी ने कहा कि तुम्हारे डर के कारण मैं और कुछ तो नहीं लाई, लेकिन एक दिन मुझ से नहीं रहा गया तो मैंने दो मिट्टी के फूटे दीये अपनी अंगिया में छिपा लिये, इससे उन्हें कोई हानि नहीं हुई और मेरा व्यसन पूरा हो गया। यों कह कर उसने दोनों दीये अंगिया में से निकाल कर अपने बेटों के सामने रख दिये।

● विनायकजी और जाटणी

एक दिन विनायकजी नदी के किनारे बैठे थे। एक जाटनी उधर से निकली। वह चार रुपये का घी लेकर शहर में बेचने जा रही थी। विनायकजी ने जाटनी से कहा कि थोड़ा घी मेरे पेट पर लगाती जा। इस पर जाटनी बोली कि मेरा घी तौला हुआ है, लगाने से कम हो जाएगा और फिर तुम्हारा पेट भी बहुत बड़ा है। यों कहकर वह जाटनी चली गई। फिर एक दूसरी जाटनी आई। वह दो रुपये का घी लेकर जा रही थी। विनायकजी ने उसे भी घी लगाने के लिए कहा। उसने कहा कि भाई, घी तो तौला हुआ है लेकिन तुमने कह दिया तो घी लगाये देती हूँ। यों कह कर उसने घी लगा दिया। शहर में गई तो उसको दो रुपये के घी के चार रुपये मिल गए, लेकिन चार रुपये वाली का घी किसी ने पूछा भी नहीं। वे दोनों आपस में मिली तो दो रुपये वाली ने कहा कि आज तो मैंने विनायक के पेट पर घी लगाया था सो मुझे दो रुपये के घी के चार रुपये मिल गए। इस पर दूसरी बोली कि वह मुझे भी मिला था, लेकिन

मैंने उसके पेट पर घी नही लगाया सो मेरे घी को तो आज किसी ने पूछा भी नहीं ।

या कह कर वह विनायक के पास पहुँची । उसने विनायक से कहा कि मैं तुम्हारे पेट पर घी लगाऊगी, लेकिन विनायक ने उत्तर दिया कि तेरे हाथ बडे खुरदरे हैं, मैं तुझ से घी नही लगवाऊगा । विनायक ने जाटनी को कई बार टालने की चेप्टा की लेकिन जाटनी ने सोचा कि मुझे भी चार के आठ रुपये मिल जाएगें अत वह हठ करने लगी । अन्त में विनायक जी ने कहा कि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो घी लगा दे । जाटनी ने दो उग-लिया में जरासा घी लेकर विनायक के पेट पर लगा दिया । तब विनायक ने कहा कि तू ने दो उँगलिया भर कर घी लगाया है सो तरे घी के दो रुपये ही तुझे मिल जाएगे ।

(फलश्रुति—हे विनायकजी महाराज, चार रुपय के दो रुपयें किसी को न मिलें दो रुपये के चार रुपये सब को मिलें)

● नीच मत्री और राजकुमार

एक राजा के कई रानियां थी, लेकिन सतान एक के भी नही थी । एक बार एक रानी के एक लडका हुआ, लेकिन अन्य रानिया ने छल से उसके लडके को जगल में फिकवा दिया और लडके की जगह एक पत्थर रख दिया । राजा उसी जगल में शिकार के लिए गया था । बच्चे के रोने की आवाज सुन कर वह उसके पास पहुँचा । लडका बहुत ही सुन्दर था । राजा उसे घर ले आया । गणको ने कहा कि यह लडका चक्रवर्ती राजा होगा । राजा उसका बहुत लाड-प्यार से लालन पालन करने लगा ।

राजा का मत्री बडा दुप्ट था । उसने सोचा कि राजा इस लडके को न उठा लाता तो मेरे ही लडके को राज्य मिल जाता । यो सोचकर वह राजा के लडके को मरवाने की घात में रहने लगा । मत्री का परिवार दूर के एक गाव में रहता था । एक दिन मत्री ने राजकुमार को एक चिट्ठी लिख कर दी और कहा कि इसे मेरे गाँव जाकर मेरे लडके को

दे देना। इस चिट्ठी को न तुम पढना, न और किसी को देना। मन्त्री ने चिट्ठी में लिख दिया कि चिट्ठी लाने वाले को तुरत विष दे देना। राजकुमार मन्त्री के गाँव तक पहुचते-पहुचते बहुत थक गया। वह मन्त्री के बाग में पहुच कर एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। उसकी आँख लग गई और वह गाढी नींद में सो गया। मन्त्री की लडकी बाग में घूमने आई तो उसने सोये हुये राजकुमार को देखा। राजकुमार को देखते ही उसने सोचा कि कितना सुन्दर युवक है ? फिर उसने राजकुमार की जेब से चिट्ठी निकाल कर पढी। उसने विचार किया कि यह चिट्ठी तो पिताजी की लिखी हुई है। उन्होंने इसे विष देने के लिए लिखा है सो शायद भूल से लिख दिया है। मेरा नाम विषया है, निश्चय ही उन्होंने मेरे लिए ही लिखा होगा कि विषया को इसे दे देना। मन्त्रिकुमारी ने विष की जगह विषया कर दिया और चिट्ठी राजकुमार की जेब में रख दी।

राजकुमार ने चिट्ठी ले जाकर मन्त्री के लडके को दे दी और मन्त्री के लडके ने उसी वक्त राजकुमार से अपनी बहिन का विवाह कर दिया। राजकुमार मारा गया या नहीं यह जानने के लिए मन्त्री अपने घर गया, लेकिन वहाँ तो दूसरी ही बात हो गई थी। मन्त्री ने सोचा कि राज्य के लिए अपने दामाद की बलि देनी पडे तो भी क्या है ? या सोच कर उसने देवी के मन्दिर में चार हत्यारों को नियुक्त कर दिया और उनसे कह दिया कि अभी यहाँ एक लडका आएगा सो उसे आते ही मार डालना। उधर मन्त्री ने अपने दामाद से कहा कि हमारे यहाँ ऐसा नियम है कि विवाह के पश्चात्, दूल्हा काली-देवी के मन्दिर में दर्शन के लिए अकेला जाता है सो आप अकेले जाकर मन्दिर में देवी के दर्शन करके आयें। राजकुमार दर्शन करने चला। रास्ते में उसका छोटा साला अपने मित्रों के साथ चौसर खेल रहा था, लेकिन वह बराबर हारता जाता था। साले ने जीजा से कहा कि आप कुछ देर यहाँ खेलें, देवी के मन्दिर तक मैं हो आता हूँ मैं आपको वहाँ से देवी का प्रसाद ला दूँगा, पिताजी पूछें तो कह देना कि मैं दर्शन कर आया। मन्त्री का लडका गया और जल्लादों ने उसे मार डाला।

राजकुमार को जीवित देख कर मंत्री ने उसे दुबारा मन्दिर जाने के लिए कहा। इस बार उसके बड़े साले ने सोचा कि मैं अपनी जान देकर भी यदि बहिन को विधवा होने से बचा सकूं तो अच्छा होगा, क्योंकि मैं तो अभी अविवाहित ही हूँ। यों सोचकर उसने अपने जीजा को जाने से रोक दिया और स्वयं मन्दिर में चला गया। जल्लादों ने उसका भी काम तमाम कर दिया और फिर वे अपने घर चले गये। मंत्री मन्दिर में पहुँचा और वहाँ का दृश्य देख कर अवाक् रह गया। उसने सोचा कि जिसके लिए मैं यह सब अन्याय कर रहा था जब वही नहीं रहा तो मुझे यहाँ रह कर क्या करना है? अतः वह भी कटार खाकर मर गया। राजकुमार ने सोचा कि मन्दिर में जो जाता है वह लौट कर नहीं आता, अतः चल कर देखना चाहिए कि मामला क्या है? मन्दिर में पहुंच कर राजकुमार ने सारा दृश्य देखा। उसने सोचा कि इस सारे हत्याकाँड का कारण मैं ही हूँ, अतः वह भी कटार निकाल कर मरने के लिए उतारू हो गया। देवी ने कहा कि मंत्री को अपनी नीच करनी का फल मिला है, तुम व्यर्थ उसके पीछे क्यों अपने प्राण देते हो? लेकिन राजकुमार नहीं माना। तब देवी ने उन तीनों को भी जिन्दा कर दिया।

मंत्री को अपनी नीच करनी पर बड़ी ग्लानि हुई और वह घर-बार छोड़ कर जंगल में निकल गया। राजा ने मंत्री के लड़के को बुला कर उसे मंत्री का पद दे दिया और राजकुमार को राजपाट सौंप कर स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चला गया।

पलक-दरियाव

एक सेठ का लड़का एक महात्मा के पास जाया करता था। एक दिन लड़के ने महात्मा से कहा कि महाराज, मुझे 'पलक-दरियाव' दिखलाइए। महात्मा ने कहा कि यह काम बड़ा मुश्किल एवं जोखिम का है। लेकिन लड़के ने हठ कर लिया। तब महात्मा ने कहा कि तू अपने घरवालों से एक दिन और एक रात की छुट्टी ले आ, लेकिन इस बात की चर्चा

कभी किसी से न कहना, अन्यथा तू पत्थर का हो जाएगा।

लड़का घर वालों से छुट्टी लेकर आ गया तो महात्मा ने अपना चमत्कार दिखाया। उस एक दिन रात की अवधि में ही लड़के का दूसरी जगह जन्म हो गया, वह युवा भी बन गया और उसका विवाह भी हो गया। अब वह आधे दिन अपने पहले घर में रहता और आधे दिन अपने नये घर में। इसी प्रकार आधी रात तक अपने पुराने घर में अपनी पहली स्त्री के पास रह कर आधी रात के बाद अपनी नई स्त्री के पास चला जाता।

एक दिन उसकी पहले वाली स्त्री ने अपनी सास से कहा कि तुम्हारा बेटा हमेशा आधी रात को न जाने कहाँ चला जाता है। घर वालों ने लड़के से पूछा कि तू आधी रात को कहाँ जाया करता है? इस पर लड़के ने कोई उत्तर नहीं दिया। घरवालों के बहुत कहने-सुनने पर लड़का बोला कि यह बात मेरे से मत पूछो अन्यथा पछताओगे। लेकिन घरवालों ने कहा कि चाहे जो हो हम इस बात को जानकर ही रहेंगे। लड़के ने सारी बात कह दी और कहते ही वह पत्थर का हो गया। अब सारे घरवाले रोने-कलपने लगे। इधर ये लोग रो रहे थे, तो उधर लड़के के नये घर वाले रो रहे थे। दोनों तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

संयोग से उसी वक्त शिव-पार्वती उधर से गुजरे। पार्वती ने शिव से कहा कि प्रभो ये लोग क्यों रो रहे हैं? इनका दुःख दूर करो। शिव ने पार्वती से कहा कि यह तो मृत्यु-लोक है यहाँ तो ऐसे बहुत से मिलेंगे, तुम किस किस की चिन्ता करोगी? लेकिन पार्वती नहीं मानी और वह सोन चिड़ी बन कर वृक्ष पर जा बैठी। तब शिवजी ने पत्थर के उस बुत पर अपना त्रिशूल फेंका, मूर्ति के दो टुकड़े हो गये और प्रत्येक टुकड़े का एक-लड़का बन गया। एक लड़का अपने पहले घर में रह गया और दूसरा नये घर में चला गया। शिव-पार्वती ने कैलाश की राह ली।

● राजा को सुपनो

एक दिन एक राजा ने सपने में एक चांदी का वृक्ष देखा जिसके सोने

की डालें, रूपे के पत्ते और मोतिया के गुच्छे लगे थे । वृक्षपर हस-हसनी मोती चुग रहे थे और वृक्ष के चारो ओर अप्सराए नृत्य कर रही थी। राजा ने सवेरे दरबार में अपना सपना सुनाया और कहा कि जो आदमी मेरा सपना सच्चा कर देगा उसे मैं अपना आधा राज दे दूगा। लेकिन कोई भी इस असमव कार्य को करने के लिए तैयार नही हुआ। किसी ने कह दिया कि ऐसे काम साधारण लोगो से नही हुआ करते, राजकुँवर ही ऐसे काम कर सकते हैं। उस राजा के सात लडके सुहागिन रानी से व एक लडका दुहागिन रानी से था। उपर्युक्त बात सुन कर वे आठो वृक्ष लाने के लिए घोडो पर सवार होकर चल पडे। चलते चलते वे एक नगर में पहुचे। उस नगर की राजकुमारी का यह प्रण था कि जो उसे चौसर में जीत लेगा उसीसे वह विवाह करेगी। हारे हुए राजकुमारो को वह कैद में डलवा देती थी। आज तक उसे कोई नही जीत सका था और बहुत से राजकुमार उसके यहा कैद में पडे चक्की पीस रहे थे। सातो राजकुमार भी उस राजकुमारी से विवाह करना चाहते थे। इसलिए उन्होने नगाडे पर चोट लगाई और राजकुमारी के महल में चौसर खेलने के लिए पहुँच गये लेकिन बारी-बारी से सातो ही हार गए और उन्हें कैद में डाल दिया गया। दुहागिन का लडका भी अन्य लोगो के साथ चौसर का खेल देख रहा था। उसने लक्ष्य किया कि राजकुमारी ने चुहिया का एक छोटा बच्चा सिखा-पढा रखा है और वही राजकुमारी के उलटे पाँसो को सीधा कर देता है। दुहागिन के लडके ने बिल्ली का एक छोटा बच्चा पाला और उसे सिखा-पढा कर तैयार कर लिया। फिर वह राजकुमारी के साथ चौसर खेलने पहुचा। बिल्ली के बच्चे को देखकर चुहिया का बच्चा नही आया और राजकुमारी हार गयी। शर्त के अनुसार राजकुमार से उसका विवाह हो गया। राजकुमार ने अपने सातो भाइयो को छोडकर शेष सब कैदियो को मुक्त करवा दिया और फिर उसने राजकुमारी से कहा कि मै आगे जा रहा हूँ—लौटती बार तुझे अपने साथ ले चलूगा। राजकुमारी के पूछने पर उसने विचित्र वृक्ष की बात उससे कही।

राजकुमारी ने कहा कि यह वृक्ष हमारे ही पास है। हम सब सात बहिनें हैं, तुम शेष छ बहिनों से और विवाह कर लो, हम तुम्हे वृक्ष दे देंगी। राजकुमार के साथ जब सबका विवाह होगया तो सातों ने कहा कि विचित्र वृक्ष का भेद अब हम तुम्हे बतलाती हैं। यों कहकर उन्होंने राजकुमार को एक तलवार, एक घोटा (छोटी गदा), एक बेंत और एक अँगूठी दी और उसे सारी तरकीब बतलादी। राजकुमार ने तलवार से उन सातों के सिर काट डाले और फिर बारी-बारी उनको घोटे से पीटने लगा। एक को पीटते ही वहाँ चांदी का वृक्ष खडा हो गया, दूसरी को पीटने से उसमें सोने के डाले निकल आये, तीसरी को पीटने से वृक्ष में रूपे के पत्ते आगए, चौथी को पीटने से वृक्ष में मोतियो के गुच्छे लग गए, पाँचवी का पीटने से वृक्ष पर हस-हसिनी आ बैठे, छठी को पीटने से हस मोती चुगने लगे और सातवी को पीटने से अप्सराएँ वृक्ष के चारो ओर नाचने लगी। तब राजकुमार ने उन सब पर बेंत फिराई जिससे परियों सहित समूचा वृक्ष बेंत में समा गया और बेंत से अँगूठी को छुआते ही सातों राजकुमारियाँ खडी हो गई। राजकुमार को यह सब पाकर बडी प्रसन्नता हुई।

अब उसने अपने सातो भाइया को कैद से छुडवा दिया। उसके कहने पर राजकुमारियो ने सातो की जांघा पर कँदिया के दाग लगा दिये। दुहागिन का राजकुमार सातो परिया का जादू के बेंत मे समेट कर तथा तलवार आदि लेकर उन भाइया के साथ घरको चल पडा। साता ने पूछा कि क्या तुम विचित्र-वृक्ष ले आये हो? दुहागिन के लडके ने उन्हें एक बडा तूबा देतेहुए कहा कि विचित्र वृक्ष इसी तूबे म है। इस तूबे का पानी से भरे तालाब मे छोडकर पीटने से विचित्र वृक्ष पैदा हो जाएगा। उसकी बात सुनकर सातों के मन मे कपट आ गया। पानी पीने के बहाने वे उसे कुएँ पर ले गए और मौका पाकर उस कुएँ मे धकेल दिया। फिर वे खुशी-खुशी तूबा लेकर घर आगये। घर आकर उन्होने पिता से कहा कि हम विचित्र वृक्ष ले आये हैं। उनके कहने के अनुसार राजा ने एक तालाब

खुदवाया और उसे पानी से भरवा दिया । फिर राजा ने ऐलान करवा दिया कि अमुक दिन विचित्र वृक्ष सबको दिखलाया जाएगा ।

सारी प्रजा तालाब पर इकट्ठी हो गई । सातों राजकुमार तूंबे को जल में छोड़कर उसे पीटने लगे, लेकिन वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं दिखलाई पड़ा । तूंबे के टुकड़े-टुकड़े हो गए । राजा और राजकुमारों की बड़ी हंसी हुई ।

उधर कुए से पानी निकालने वाले किसी आदमी ने दुहागिन के लड़के को कुए से बाहर निकाला और कुछ दिन बाद वह भी अपने नगर में पहुँच गया । उसने अपने पिता से कहा कि पिताजी, मैं सचमुच विचित्र वृक्ष लाया हूँ और सबके सामने आपको दिखलाऊगा । राजा ने फिर घोषणा करवाई । इस बार लोगो को विश्वास नहीं हुआ, इसलिए आधे लोग आये और आधे नही आये ।

अब दुहागिन के लड़के ने तलवार और घोटे आदि की सहायता से विचित्र वृक्ष खड़ा करके दिखलाया । सारी प्रजा वाह-वाह कर उठी । राजा भी बहुत प्रसन्न हुआ । जब सारे लोग चले गए तो राजकुमार ने कहा कि ये सातो मेरी विवाहिता पत्नियाँ हैं ।

राजा के यहाँ यह प्रथा थी कि जिस दिन नववधू घर आये उस दिन राजकीय भोज हो और नव-वधू राज-परिवार के सारे सदस्यो को खाना परोसे । प्रथानुसार भोज की तैयारी की गई लेकिन जब राजा अपने सातो पुत्रो के सहित जीमने बैठा तो बहुओ ने राजा से कहलवाया कि हम भोजन नही परोसेंगी, क्योंकि आपके साथ हमारे चोर बैठे है । राजा उनकी बात नहीं समझा तो दुहागिन के लड़के ने सातो भाइयों की जघाओ पर लगे दाग दिखलाये और उसने राजा से कहा कि ये सातो मुझे कुएँ मे डाल आये थे । राजा सातो पर बड़ा अप्रसन्न हुआ । उन सातो की माताओ को उसने दुहाग दे दिया और दुहागिन को सुहाग दे दिया । फिर वह दुहागिन के लड़के को राजपाट देकर स्वय वन मे तपस्या करने के लिए चला गया ।

● गुलबकावली को फूल

एक राजा के लडका हुआ तो पडितो ने राजा से कहा कि राजकुमार बडा होने पर बडा प्रतापी राजा बनेगा, लेकिन आप बारह वर्ष तक राजकुमार को न देखें, अन्यथा आप अन्धे हो जाएगे। राजा ने राजकुमार के लिए अलग एक बहुत ऊँचा महल बनवा दिया। राजकुमार दिन-दूना-रात चौगुना बढने लगा। जब वह दस वर्ष का हुआ तो तीर तलवार चलाने मे उसने बडी निपुणता प्राप्त करली।

एक दिन राजा शिकार खेलने गया। वह एक शिकार का पीछा बहुत देरसे कर रहा था, लेकिन शिकार को मारने मे सफल नही हो रहा था। उधर राजकुमार अपने महल मे ऊपर से यह सब दृश्य देख रहा था। उसने एक तीर चला कर उस जानवर को मार डाला। राजा ने सोचा कि जिस शिकार को मैं नही मार पाया उस शिकार को जिसने मारा है वह निश्चय ही बहुत वीर होगा। राजा ने घूमकर देखा तो उसे महल पर खडा राजकुमार दिखलाई पडा। राजकुमार को देखते ही राजा वहीं अन्धा हो गया।

अन्धा हो जाने से राजा बडा दुखी हुआ। उसने पडितों को बुलवा कर पूछा कि मेरा अन्धापन कैसे दूर हो सकता है? पडितो ने कहा कि यदि गुलबकावलीका फूल आंखों में लगायाजाए तो आप को फिर से दिखलाई पडने लगेगा। राजा ने दरबार में बीडा फेरा कि जो गुलबकावली का फूल लाएगा उसे भारी पुरस्कार मिलेगा, लेकिन यह कार्य आसान नही था, अत कोई भी इसके लिए तैयार नही हुआ। किसी ने कह दिया कि जिसने राजा को अन्धा किया है, वही फूल लाये।

अन्त में ग्यारह वर्ष का राजकुमार अपने उडन-बछेडे पर सवार होकर फूल लाने के लिए चला। चलते-चलते वह समुद्र के किनारे पहुँचा। अपने उडन-बछेडे पर सवार होकर ही उसने समुद्र पार किया। समुद्र के उस किनारे पर एक महात्मा तप कर रहे थे। राजकुमार वहीं बैठ गया। तीन दिन के बाद महात्मा ने आँखें खोली। राजकुमार ने महात्मा को

प्रणाम किया। राजकुमार की प्रार्थना पर महात्मा ने कहा कि जिस बाग में गुलबकावली का वृक्ष है उसके चारों ओर मनुष्यभक्षी राक्षस पहरा देते हैं। तुम ऐसा करना कि कुछ बकरे मारकर अपने साथ ले जाना और उन्हें राक्षसों के आगे डाल देना। राक्षस उनका मास खाने मे लग जाएगे और तुम बाग मे चले जाना। बाग की उत्तर दिशा में एक वृक्ष खडा होगा जो सारे वृक्षों से सुन्दर एव निराला होगा। वही गुलबकावली का वृक्ष है। उसका फूल तोडकर तुम शीघ्रता से अपने बछेडे पर सवार होकर निकल आना। राक्षस तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हे एक क्षण ठहरने के लिए कहेंगे, लेकिन तुम मुडकर पीछे की ओर मत देखना, नही तो तुम उसी जगह पत्थर के बन जाओगे। मैं तुम्हें कुछ तिनके मत्रित करके देता हूं। लौटते वक्त इन्हें पीछे की ओर फेंकते रहना इससे राक्षस तुम्हारा कुछ बिगाड न सकेंगे।

राजकुमार ने वैसा ही किया और गुलबकावली का फूल लेकर बगीचे से उड चला। राक्षसो ने उसका बहुत पीछा किया और उसे एक बार मुडकर देखने के लिए बहुत प्रलोभन दिये, लेकिन राजकुमार ने उनकी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। राजकुमार फूल लेकर उसी महात्मा के पास आ गया। महात्मा ने राजकुमार से कहा कि बारह वर्ष पूरे होने में अभी कुछ दिन शेष हैं। अत तुम राजा की आँखो मे फूल मत लगाना अन्यथा वह फिर अन्धा हो जाएगा।

राजकुमार गुलबकावली का फूल लेकर सकुशल अपने नगर मे आ गया। उसने फूल अपनी मा को दिया और उसे लगाने की विधि भी उसे बतलादी। रानी ने उसी विधि से राजा की आँखो मे फूल लगाया और राजा की आँखें खुल गई। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। बारह वर्ष पूरे होने पर उसने राजकुमार को देखा। राजा ने उसे सारा राजपाट सौंप दिया और स्वय तपस्या करने के लिए वन में चला गया।

● चिप्पम चिप्पा और खुल्लम खुल्ला

एक छोटे लडके का पिता मर गया तो वह अपने चचा के पास रहने

लगा। उसकी चाची उसे बड़ा दुख देती। एक दिन वह जंगल से लकड़ियाँ लाने के लिए गया। उसने बहुत सारी लकड़ियाँ इकट्ठी करके बाँधली, लेकिन वह इतना बोझ उठा नहीं सका। अपनी दुरवस्था पर वह फूट-फूट कर रो रहा था। संयोग से उसी वक्त महादेव-पार्वती उधर से जा रहे थे। बच्चे का रोना सुनकर पार्वती ने महादेवजी से कहा कि इस बच्चे का कष्ट आप दूर करें। महादेवजी ने कहा कि तुम पगली बनी हो, यह तो मृत्यु लोक है, यहाँ तो पग-पग पर ऐसे लोग मिलेंगे, तुम किस किस की कष्टकथा सुनोगी ? लेकिन पार्वती नहीं मानी। तब शिवजी ने लड़के से रोने का कारण पूछा। लड़का बोला कि मेरे माँ-बाप तो मर गये हैं, मेरी चाची मुझे बड़ा दुख देती है। उसने मुझे बहुत सारी लकड़ियाँ लाने के लिए भेजा है मैंने लकड़ियाँ तो बाँधली हैं, लेकिन बोझ अधिक होने से मैं गट्ठर को नहीं उठा सकता हूँ। शिवजी ने कहा कि मैं तुम्हें इस कष्ट से छुटकारा दिला देता हूँ। जब तुम्हारी चाची चाचा तुम्हें कष्ट दें तो तुम कह दिया करो, 'चिप्पम चिप्पा'। तुम्हारे इतना कहते ही वे जमीन में चिपक जाएंगे और जब तुम कहोगे 'खुल्लम खुल्ला' तभी वे छूटेंगे। लड़का खुशी-खुशी घर आ गया। जब उसके चाचा चाची उसे डाँटने लगे तो उसने झट 'चिप्पम चिप्पा' कह दिया। दोनों तुरन्त जमीन से चिपक गये। उन्होंने छुटकारा पाने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन वे छुटकारा नहीं पा सके। तब उन्होंने लड़के से प्रार्थना के स्वर में कहा कि हमें इस आफत से छुड़ा। लड़के ने उनसे प्रतिज्ञा करवा ली कि वे अब कभी उसे नहीं सताएंगे। इसके बावजूद, जब कभी वे बच्चे को सताते तो वह इस उपाय से अपना छुटकारा कर लेता।

● होत की भैण, अण होत को भाई

एक दिन एक फकीर शहर में आवाज लगाता घूम रहा था कि कोई 'बात खरीद लो कोई बात' खरीद लो। एक सेठ के लड़के ने उसे बुलवा कर पूछा कि तू 'बात' कैसे बेचता है ? फकीर बोला कि मैं एक बात का एक आने का टका लेता हूँ। सेठ के बेटे ने फकीर को चार आने के टके

देकर चार बातें सुनी "(१) होत की गैण, (२) अण-होत का भाई, (३) पीठ पीछे नार पराई, (४) दौलत पास की।"

बातो को परखने के लिए सेठ का लडका अपने पास चार कीमती लाल लेकर घर से निकल गया। अपने शरीर पर चिथडे लपेटे अत्यन्त गरीबी हालत मे वह अपनी बहिन के गाँव में पहुँचा। वहाँ पहुच कर वह एक कुए पर ठहर गया और उसने अपने आने की सूचना अपनी बहिन के पास पहुँचा दी। जब उसकी बहिन ने सुना कि उसका भाई बहुत ही फटे हाल में आया है तो वह बोली कि यदि वह घर आ गया तो मुझे अपनी देवरानियों-जेठानियों के सामने लज्जित होना पडेगा। अत वह बासी रोटियों के रूखे-सूखे टुकडे लेकर अपने भाई के पास पहुँची और उससे बोली कि रोटी खाकर यहाँ से चला जा। रोटिया देकर वह शीघ्रता से अपने घर लौट गई। भाई ने रोटिया खाई नही, उसने सारी रोटिया एक हडिया मे बन्द करके वही कुए के पास गाड दी। एक बात की परीक्षा हो चुकी थी। अब वह दूसरी बात की परीक्षा करने के लिए उसी वेष मे अपने भाई के गाव मे पहुँचा। उसके भाई ने जब यह सुना तो वह बहुत सारे आदमियो को साथ लेकर तथा भाई के लिए अच्छे वस्त्र और आभूषण लेकर उसके पास पहुचा, वह उसे बहुत आदर के साथ अपने घर ले आया। भाई ने उससे कहा कि तुम यही रहो तथा मेरे साथ ही कारोबार करो। लेकिन वह एक दिन चुपचाप तीसरी बात की परीक्षा करने के लिए अपनी ससुराल पहुँच गया। उसने एक फकीर का वेष बनाया और अपने श्वसुर की हवेली के सामने ही वह धूनी धुका कर बैठ गया।

उस सेठ की लडकी जो उसे ब्याही थी कुलटा थी। उसने साधु वेष मे धूना तापते हुए अपने पति को पहिचान लिया। उसने सोचा कि पति ने मेरी सारी करतूत देखली है। यदि मैं इसे मरवा दू तो सभी बाधाए दूर हो जाएगी। अत उसने रात को चार जल्लाद उसके पास भेजे और उनसे कह दिया कि इस ढोंगी साधु को चुपचाप जगल मे ले जाकर मार आओ। जल्लाद उसे उठा कर जगल में ले गये। साहूकार के बेटे ने उन

चारा को चार लाल दकर अपनी जान वचाइ । इस प्रकार, चारा बाता की परीक्षा हा गई ।

जल्लादा स छुटकारा पाकर सठ का बेटा दूसरे दिन बडी सजधज के साथ अपनी ससुराल पहुँचा । ससुरालवाला ने उसका बहुत सम्मान किया, लेकिन उसकी बहू उस देखकर सन्न रह गई। दामाद ने अपने श्वसुर से कहा कि मैं यहाँ एक पल भी नही रुकूगा, यदि आप भेजना चाहें ता अपनी लडकी को इसी वक्त मेरे साथ भेज दीजिए। उस भय था कि यदि वह कुछ खाये-पीयेगा तो उसकी स्त्री उसमें अवश्य विष मिला देगी। इसलिए उसने वहाँ कुछ भी खाने-पीनेस सर्वथा इनकारकर दिया।ससुराल वाला न बहुत दहेज देकर अपनी बेटी को दामाद क साथ भेज दिया।

लौटते वक्त वह फिर अपनी बहिन क घर पहुँचा। इस बार बहिन ने उसका बहुत आदर किया और उसके लिए विविध प्रकार क भाजन बनाये गये। जब उसके आगे भाजन का थाल आया ता उसने अपने गहने और माहर रुपये थाल के पास रख दिए और कहने लगा —

जीमो रे म्हारा कडा बाँकडा,
जीमो रे म्हारा म्होर रुपैया—आदि-आदि।

उसकी बातें सुनकर उसकी बहिन ने कहा कि भैया यह क्या कह रह हो तुम पागल ता नहीं हो गये ? तब उसने कुए पर गडी हँडिया लाकर अपनी बहिन को दिखलाई कि भाई का भाजन ता इस हडिया म है। इस थाल म परोसा गया भाजन तो इन गहना और माहर रुपया का ही है।

फिर वह अपनी स्त्री का लेकर घर आ गया। उसने अपने घरवाला को अपना स्त्री की सारी करतूत बतलाई और उस उसी क्षण मार डाला।

● पापी वीरो पाप कुमायो

एक साहूकार क एक लडका तथा दो लडकियाँ थी। लडका बडा था और उसका विवाह हो गया था। लडकियाँ छाटी-छाटी थीं। एक बा

नाम था रूपा दूसरी का नाम था चम्पा। साहूकार दिसावर जाने लगा तो उसने अपने बेटे-बहू से कहा कि दोनों बच्चियों को बहुत आराम से रखना, इन्हें किसी प्रकार का दुख मत देना। साहूकार चला गया। पीछे से भौजाई अपनी छोटी-छोटी ननदों को बहुत सताने लगी। एक दिन उसने अपने पति से कहा कि मैं तभी खाना खाऊँगी, जब तुम अपनी दोनों बहिनों को मारकर इनके खून से चूनर रंग कर ला दोगे। पति ने पत्नी को बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। तब भाई एक दिन अपनी दोनों बहिनों को जंगल में ले गया। वहाँ जाकर उसने दोनों को मार डाला और उनके खून में चुनरी रंग कर उसने अपनी स्त्री को ला दी।

जहाँ उन दोनों बहिनों को मारा गया था वहाँ दो झाड़ियाँ उग आईं। झाड़ियों के बेर गहरे लाल रंग के और बहुत मीठे थे। साहूकार दिसावर से लौटा तो रास्ते में उसने उन झाड़ियों को देखा। उसने बेर तोड़ने के लिए एक झाड़ी में हाथ डाला तो वह दूसरी से बोली कि बहिन देख, हत्यारे घर का आदमी मेरे बेर तोड़ रहा है। इस पर दूसरी बोली —

मैं रूपा, तू चम्पा,
आपणा बोरिया आपणो बापजी खा।

(मैं रूपा हूँ और तू चम्पा है। अपने बेर अपने पिता ही तो खा रहे हैं।)

दोनों झाड़ियों की बातें सुनकर साहूकार ने उनसे पूछा कि तुम क्या कह रही हो सो मुझे साफ समझाकर कहो। इस पर झाड़ियाँ बोलीं।

पापी बीरै पाप कुमायो,
भैणा के खून की चूनड़ी रंगाई।

(पापी भाई ने पाप अर्जित किया है। उसने बहिनों के खून से अपनी स्त्री के लिए चूनर रंगी है।)

फिर उन दोनों ने सारी बात अपने पिता से खोल कर कही। उन दोनों की बातें सुनकर पिता को बहुत दुख हुआ। घर जाकर उसने अपने बेटे से पूछा कि रूपा चम्पा कहाँ हैं? इस पर उसने कह दिया कि वे बीमार

हुई थी, मैंने उनका बहुत इलाज करवाया, लेकिन वे मर गईं। बाप को बेटे की बात से सतोष नहीं हुआ। वह बेटे और बहू को झाड़ियों के पास ले गया। झाडियो ने फिर अपनी करुण मृत्यु का सारा हाल उनके सामने कहा। बाप ने बेटे को घर से निकाल दिया और बहू को मार कर वहीं डाल दी।

● करणावत सिरदार

एक करणावत सरदार के घर में एक बिलाव हिल गया। दवणे (दूध-दही आदि ढकने के लिए सूराखदार मिट्टी के बड़े पात्र) को उलट कर उसके नीचे रखा दूध-दही भी वह खा जाता। एक दिन घर के सारे लोग उसे पकड़ने के लिए जागते रहे, लेकिन आदमियो को देखकर बिलाव नहीं आया। दूसरे दिन उन्होंने एक कमरे मे दूध-दही के पात्र रखकर कमरे को खुला छोड दिया। बिलाव कमरे में घुसा और सरदारो ने कमरा बन्द कर दिया। दो दिन तक बिलाव कमरे में बन्द पडा रहा। फिर सब घर वालों ने बिलाव के ऊपर एक बडा और भारी कपडा डालकर उसे मुश्किल से पकडा। उन्होंने बिलाव की कमर में मोटा रस्सा डालकर गाँव में घुमाया और फिर उसे मार दिया।

सरदारो ने बारहटजी से जस (यशोगान) कहने के लिए कहा तो बारहटजी बोले —

> करडी कूती करणावतां, गल् मे घाली लाव।
> कड बांधी काठो करयो, मारयो बोड बिलाव॥

● चम्पो के चाचा तव शरणम्

बहुत सी स्त्रियाँ गगा-स्नान कर रही थी। स्नान के पश्चात् पडा उन्हें सीताराम, सीताराम तव शरणम् कह कर कीर्तन करवाने लगा। एक स्त्री सीताराम के स्थान पर 'चम्पो के चाचा तव शरणम्' कहकर कीर्तन करने लगी। पडे ने उसे टोका कि सीताराम-सीताराम कह। इस पर वह बोली

कि यही तो कह रही हूँ, चम्पो के चाचा का यही तो (सीताराम) नाम है ।

● न्योलियो राजा जागे छै

एक राजा के सात रानियाँ थी । छ को सुहाग था और एक को दुहाग । लेकिन सतान एक के भी नही थी । एक दिन राजा जगल मे एक साधु के पास गया और उसने साधुसे प्रार्थना की कि महाराज, मेरे एक भी पुत्र नही है । अत ऐसा कुछ उपाय कीजिये कि जिससे मेरे पुत्र हो । साधु ने राजा को अपना चिमटा दिया और कहा कि सामने जो आम का पेड दिखलाई पड रहा है, उस पर यह चिमटा फेकना, सात आम धरती पर आ गिरेंगे, लेकिन लालच मत करना । राजा चिमटा लेकर गया और उसे वृक्ष पर फेंका । चिमटे सहित सात आम जमीन पर आ गिरे । राजा ने सोचा कि एक बार चिमटा और फेंकू तो सात आम और आजाएगे । यह सोच कर उसने दुबारा चिमटा फेंका, लेकिन इस बार साता आम और चिमटा सब वृक्ष पर जा टगे । राजा अपना-सा मुह लेकर रह गया । वह फिर साधु के पास आया और उसने कहा कि महाराज, चिमटा तो वृक्ष पर टग गया। साधु ने कहा कि तुमने लालच कियाहोगा। इसबार तुम्हे अपना 'चिटिया' देता हूँ, इसे एक बार ही फेंकना, सात आम, चिटिया और चिमटा सब तुम्हारे पास आ जाएगे । राजा ने चिटिया फेंका और सब चीजें आगईं । उन्हें लेकर वह साधु के पास आया । साधु ने कहा कि साता आम अपनी साता रानिया को दे देना, साता के सात लडके हो जाएगे । राजा ने आम लाकर साता को दे दिये । छहा सुहागिन रानिया ने ता आम खा लिये, दुहागिन रानी काम में लगी थी, अत उसने आम उठाकर चूल्हे पर रख दिया । आम को एक नेवला सूघ गया । काम कर लेने के पश्चात् दुहागिन रानी ने आम खाया ।

नौ महीने बाद सुहागिन रानियों के कुअर जन्मे और दुहागिन के एक नेवला जन्मा । कुअर कुछ बडे हुए तो एक दिन अपने-अपने घोडों पर

चढ़कर कमाने चले। नेवले ने कहा कि माँ, मैं भी इनके साथ जाऊँगा। उसकी माँ ने कहा कि तू भला इनके साथ किस पर चढ़ कर जाएगा? नेवले ने कहा कि मुझे एक बिल्ली लाद। नेवला बिल्ली पर चढ़कर और ताकू (तकुआ) लेकर उनके साथ हो लिया। चलते एक नाला आया। नाले को देखकर घोड़े ठिठक गए। नेवला बोला कि मैं तो अपनी बिल्ली को एक ऐसा तकुआ लगाऊँगा कि यह एक छलांग में नाले को पार कर जाएगी। इस पर राजकुमारों ने कहा कि पहले तकुआ लगाकर हमारे घोड़ों को पार करो। नेवले ने घोड़ों की पीठ में तकुआ गड़ाया और वे नाले को पार कर गये। तब नेवले ने अपनी बिल्ली के तकुआ छुआया और बिल्ली भी नाले के पार हो गई।

वहाँ से वे आगे बढ़े। शाम हुई तो वे एक बुढ़िया के घर ठहरे। बुढ़िया वास्तव में डाकिन थी। जब डाकिन ने देखा कि ये सब सो गए हैं तो वह उन्हें मारने के लिए छुरी तेज करने लगी। और सब तो सोगए थे, लेकिन नेवला जाग रहा था वह बोल उठा —

डाकण छुरी पलारै है,
न्योलियो राजा जागै है।

(डाकिन अपनी छुरी तेज कर रही है नेवला राजा जग रहा है।)
नेवले ने डाकिन से पूछा कि बुढ़िया माई बुढ़ियामाई यह क्या कर रही है? डाकिन बोली कि कुछ नहीं या ही सब्जी काटने के लिए जरा चाकू घिस रही हूँ। नेवला सोने का बहाना करके पड़ रहा। बुढ़िया थोड़ा देर बाद फिर छुरी तेज करने लगी। नेवला फिर बोल उठा —

डाकण छुरी पलारै है
न्योलियो राजा जागै है।

डाकिन ने फिर बहाना बनाया और सो गई लेकिन नेवला जान गया कि यह वास्तव में डाकिन है और हम सबको मारने के लिए छुरा तेज कर रही है। उसने अपने भाइयों को जगाया। उस डाकिन के सात लड़के थे और एक लड़की थी। नेवले तथा राजकुमारों ने मिल कर डाकिन के सातों लड़कों

को अपनी जगह सुला दिया और स्वय राव वहाँ से खिसक गए। कुछ देर बाद डाकिन फिर उठी और उसने राजकुमारो के भुलावे में अपने सातो बेटा को मार डाला। सातो के सिर उसने छीके पर रख दिये। सवेरे जब उसकी बेटी उठी और उसने कलेवा माँगा तो डाकिन बोली कि छीके पर कलेवा रखा है, जा ले ले। डाकिन की लडकी ने छीके पर स एक सिर उतार कर देखा तो वह चीख पडी कि माँ, यह तो भाई का सिर है। डाकिन ने आकर देखा तो उसके साता बेटा के सिर छीके पर रखे थे। अब वह बहुत हायतोबा मचाने लगी।

इधर नेवला अपने भाइयोसहित एक कुम्हार के घर ठहरा। रात को कुम्हार के लडके को शौच की हाजत हुई तो कुम्हार ने नेवले को उसके साथ भेजा। नेवला कुम्हार के लडके की पीठ में तकुआ गडाता हुआ उसे घरसे दूर ले गया और फिर उसने उसे डराकर पूछा कि बता तेरे माँ-बाप का धन कहाँ है? लडके ने डरते-डरते कहा कि बाप का धन चक्की के नीचे गडा है और माँ का चूल्हे की 'बेवणी' में। घर आकर नेवले ने दोनो जगहा से खोद कर सारा धन निकाल लिया और उसे एक मरियल-सी गधी को खिला दिया। सवेरे जब वे जाने लगे तो नेवले ने कुम्हार से वह गधी माग ली। कुम्हार ने देखा कि अब यह दो-चार दिन में मरने ही वाली है। अत उसने खुशी-खुशी वह गधी नेवले को दे दी।

नेवला राजकुमारो के सहित घर आ गया। उसने एक मोटा सोटा मँगाया और गधी को पीटने लगा। गधी सारा धन फेंकने लगी। सुहागिन रानियो ने अपने बेटा से कहा कि देखो नेवला कितना धन लाया और तुम कुछ भी नहीं लाये। राजकुमारो ने नेवले को मुह माँगे रुपये देकर वह गधी खरीद ली और उसे अपने महल में ले जाकर पीटने लगे। सारा महल लीद से सड उठा, लीद में सिर्फ एक दमडी और एक खोटा पैसा निकला, अधिक मार पडने से गधी वही मर गई। यह देखकर सब लोग राजकुमारो की खिल्ली उडाने लगे।

● वढ वढ रे चन्नणिये का रुख

एक राजा के सात लडके और एक लडकी थी। लडकी के सोने के बाल थे। इसलिए उसका नाम सोनल-दे पड गया था। एक दिन वह तालाब पर नहाने गई तो उसका एक बाल वहाँ टूट कर गिर गया। कुछ देर बाद उसका छोटा भाई भी तालाब पर नहाने गया तो उसे वह बाल मिल गया। उसने निश्चय किया कि जिसका भी यह बाल है मैं उसे ही ब्याहूँगा। लडका घर आया और उसने यह बात अपनी माँ से कही। उसकी माँ ने कहा कि यह तो तेरी बहिन का बाल है, बहिन से कैसे शादी हो सकती है? लेकिन लडका किसी प्रकार नही माना, वह 'आटी पाटी' लेकर सो गया। निदान, बहिन के साथ उसकी शादी निश्चित हो गई। विवाह की सारी तैयारियां होने लगा।

जब बहिन को इस बात का पता लगा तो उसे बहुत दुख हुआ और वह चुपचाप घर से निकल कर एक चन्दन के वृक्ष पर जा बैठी। घर वाले भी ढूंढते खोजते वृक्ष के नीचे पहुँचे। सोनल्दे के बाप ने अपनी बेटी से कहा —

> तेरे बाप के धम्मक धाणी,
> चावल सीजे , मूग फलीजे,
> फेरां की वरियाँ वाई टल रेई, ये टल रेई।

'बेटी, विवाह की सब तैयारियां हो चुकी हैं और अब फेरा के वक्त तू यहा आ बैठी"

इस पर सोनल्दे ने उत्तर दिया— पैली था नैं बापूजी कहती अब सुसरोजी कयूं कर कहस्यूं राज ? वढ वढ रे चन्नणिये का रूख ऊचाई बध।' चन्दन का वृक्ष और भी ऊंचा बढ गया। फिर बारी-बारी से घर के सारे लोग उसे मनाने आये, लेकिन हर बार वह इसी प्रकार सबको

यथोचित उत्तर देती रही और चन्दन का वृक्ष ऊंचा बढ़ता चला गया। अन्त में उसका छोटा भाई आया और उसने भी वही बात कही तो बहिन ने उत्तर दिया—'पैली था नै बीरोजी कहती, अब माल्जी क्युकर कहस्यु राज, बढ बढ रे चननिये का रूख ऊचोई बढ।' उसके इतना कहते ही चन्दन का वृक्ष सोनलदे को लिए हुए आकाश में चला गया और सब लोग देखते ही रह गए।

● बादस्या और वजीर की लुगाई

एक बादशाह के वजीर की स्त्री बहुत सुन्दर थी। नाई ने बादशाह के कान भरे कि हुजूर, आपके हरम मे एक भी बेगम खूबसूरती मे वजीर की स्त्री की होड नही कर सकती। बादशाह ने कहा कि यह तो ठीक है, लेकिन वजीर को कैसे टाला जाए? नाई ने कहा कि वजीर को उम्दा घोड़े खरीद कर लाने के लिए भेज दीजिए। बादशाह ने वैसा ही किया और वजीर की अनुपस्थिति में उस वजीर के महल में जाने का मौका मिल गया। बादशाह ने रात को अपने महल से लेकर वजीर के महल तक कनात तनवाई और उसकी आड में वजीर के महल में पहुँच गया। वजीर की स्त्री की यह आदत थी कि जब वजीर घर पर नही होता था तो वह साते वक्त चने की दाल मुह में भर कर सोती, जिससे उसके मुह से बड़ी बदबू निकलती।

बादशाह ने कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि वास्तव में वजीर की स्त्री बहुत ही सुन्दर है लेकिन जब वह उसके नजदीक पहुँचा तो बदबू से उसका दम घुटने लगा। उसने सोचा कि अत्यत सुन्दर होने पर भी इस स्त्री में यह बड़ा ऐब है, वह उल्टे पैरा वहाँ से भागा, लेकिन जल्दी में उसके पैर का एक जूता वही रह गया। वजीर की स्त्री सवेरे उठी तो उसने जूता नही देखा, लेकिन जब दो तीन दिन बाद वजीर आया तो उसका ध्यान जूते की ओर गया। वह समझ गया कि यह जूता बादशाह

का है और मेरे पीछे से वह अवश्य मेरी स्त्री के पास आया है। उसने अपनी स्त्री से जूते के बारे में बहुत कुछ पूछा, लेकिन वह सर्वथा इनकार करती रही। तब वजीर ने यह नियम बना लिया कि वह सवेरे उठते ही मान काढ़े अपनी स्त्री की पीठ पर लगा देता। महीने भर तक वह ऐसा ही करता रहा। लेकिन वजीर की स्त्री इनकार ही करती रही। अन्त में खीज कर वजीर ने अपनी स्त्री को घर से निकाल दिया। वह बेचारी अपने पीहर चली गई। अपने बाप के पूछने पर उसने सारी बात सच-सच बतलादी। उसका बाप भी किसी अन्य बादशाह के यहाँ वजीर था। वह अपने दामाद वाले बादशाह के दरबार में गया और अवसर पाकर उसने बादशाह से पूछा कि कोई आदमी सौ साल से एक खेत जात रहा हो और उसे एक दम से छोड़ कर अलग हो जाए तो उसका क्या किया जाए? इस पर बादशाह बोला कि यदि वास्तव में कोई ऐसा करता है तो यह उसकी बड़ी नालायकी है। इस पर बादशाह का वजीर बोला कि हुजूर, यदि खेत में सिंह हिल जाए तो बेचारा खेत वाला क्या करे? बादशाह सारी बात समझ गया और बोला कि खेत में एक तलैया थी और सिंह वहाँ पानी पीने गया अवश्य था लेकिन पानी में ऐसी बदबू आ रही थी कि सिंह वहाँ से प्यासा ही लौट गया और अब सिंह को ऐसी घृणा हो गई कि वह कभी उस खेत में जाने का नाम नहीं लेगा। तब वजीर बोला कि यदि वास्तव में यही बात है तो खेत वाला अपना खेत फिर सँभाल लेगा। बातों-बातों में सारी बात तय हो गई और वजीर की स्त्री फिर अपने घर आ गई।

● खप्परियो चोर

एक आदमी दिल्ली के बादशाह के यहाँ नौकरी किया करता था। उसकी यह आदत थी कि वह नित्य महल से कोई न कोई वस्तु अवश्य चुरा कर लाया करता। और कुछ हाथ नहीं लग पाता तो मिट्टी का दीया ही उठा लाता। वह बहुत बूढ़ा हो गया और बीमार रहने लगा। एक दिन उसके बेटे ने उससे पूछा कि बापजी, आप मरते क्यों नहीं हैं?

यदि आपकी कोई इच्छा हो तो मुझे बतलाइये मैं उसे पूरी करूंगा। बाप ने बेटे से कहा कि यदि तू खप्परिया चोर बन जाए तो मेरा स्वप्न पूरा हो जाए और मैं आराम से मर सकूं। बेटे ने बाप को विश्वास दिलाया कि मैं वास्तव में खप्परिया चोर बनूगा।

दूसरी रात को बाप बेटे दोनों चोरी करने के लिए साथ साथ निकले। वे अनाज की एक दुकान में चोरी करने के लिए घुसे। मामूली दुकान थी। ढूंढने पर उन्हें एक थैली में बीस पच्चीस रुपये मिले। खप्परिये ने अपने बाप से कहा कि यह बेचारा गरीब आदमी है इसके यहां क्या चोरी करें? चल चल कर बादशाह के महल में चोरी करेंगे। बाप ने कहा कि कहीं हाथ में आया हुआ पैसा भी छोडा जाता है? लेकिन खप्परिया ने नहीं माना उसने बाप से कहा कि या तो आप थैली छोड दें अन्यथा पास में ही किला है सो हल्ला करके सिपाहियों को बुलाता हूँ। लाचार बुड्ढे ने थैली वहीं छोड दी।

दूसरे दिन खप्परिया एक होशियार लुहार के पास पहुंचा और उसने लुहार को पांच रुपये देकर कहा कि ये पांच रुपये लो मुझे एक हथौडा और पांच खूंटियां ऐसी बना कर दो कि यदि उन्हें लोहे की दीवार में ठोकूं तो उसमें भी ठुक जाएं। लुहार ने शाम तक खूंटियां बना कर उसे दे दीं। रात को दोनों बाप बेटे चोरी करने के लिए बादशाह के महल के पास पहुंचे। जब घडियाल ने एक डंका लगाया तो खप्परिये ने एक चोट के साथ एक खूंटी महल की दीवार में गाड दी। घंटे की आवाज में खूंटी की आवाज मिल गई। उस खूंटी को पकड कर खप्परिया ऊपर चढा और दूसरे डंके की आवाज के साथ उसने दूसरी खूंटी भी गाड दी। यों पांचों खूंटियों के सहारे वह महल में जा पहुंचा। पीछे-पीछे उसका बाप भी चढ गया।

महल में पहुंच कर खप्परिये ने देखा कि बादशाह पलंग पर लेटा है। वह आधा सोया है आधा जाग रहा है उसके पैताने की ओर 'बातडिया' बैठा बात कर रहा है। इधर की रानी बादशाह के मुंह में लगी है, बातडिया

की बात पर कभी वह 'हूँ' कह देता है, कभी नहीं। खप्परिये ने जाते ही बानडिये की गर्दन एक ही बार में काट डाली। फिर उसने बादशाह के पलंग के पाये के नीचे से एक सोने की ईंट निकाली और बानडिये की गर्दन उसके नीचे लगा दी। फिर उसने बानडिये के हाथ पैर आदि तीनों पाया के नीचे सरका दिये और शेष तीनों सोने की ईंटें भी निकाल लीं। खप्परिया यह काम भी करता जाता था और साथ ही बानडिये की-सी बोली में कहता भी जाता था कि बादशाह के महल में चोरी होती है, बानडिये की गर्दन कटती है, पलंग के नीचे से सोने की ईंटें निकलती हैं आदि, आदि। बादशाह ने सोचा कि बानडिया कोई बात कह रहा है। खप्परिया चारों ईंटें लेकर महल से उतर गया। लेकिन जब उसका बाप उतरने लगा तो बादशाह की आँखें खुल गईं। वह एक पल में सारी बात समझ गया। खप्परिये के बाप ने अपना सिर झरोखे से निकाल लिया था और वह उतरने की कोशिश में था कि बादशाह ने पीछे से उसकी टाँगें पकड़ लीं। खप्परिये ने बचने का और कोई रास्ता न देखकर अपने बाप का सिर काट लिया और अपने घर आ गया।

दूसरे दिन बादशाह ने खप्परिये के बाप का धड़ दरबार में पहिचानने के लिए मँगवाया लेकिन सबने यही कहा कि बादशाह सलामत, बिना सिर के धड़ की क्या पहिचान हो? तब बादशाह ने कहा कि जो आदमी इसका सिर काट ले गया है वह उसे जलाने अवश्य आयगा। तभी उसे पकड़ा। यों कहकर उसने बहुत सारे सिपाहियों को मसानों पर पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया। खप्परिया दिन में बादशाह के यहाँ नौकरी करता और रात को चोरी किया करता था। दिन में वह दरबार का सारा भेद जान लिया करता। सिपाहियों को छलने की योजना उसने बनी बनाई।

मरघट पर सिपाही तैनात हो गये। इधर रात पड़ने हो खप्परिये ने एक फकीर का वेष बनाया, आगे के एक बड़े खप्पड़े में उसने अपने बाप का सिर दबाया और उसे अपने हाथ में डाल लिया। फिर वह 'यहाँ फकीर का काट सिर, यहाँ फकीर का काट सिर' की आवाज लगाता हुआ

मसान की ओर निकल गया। मसान पर सिपाहियो का पहरा बैठा था। फकीर ने वहा भी यही आवाज लगाई तो कुछ ने कहा कि यहा बादशाह का हुक्म नही है कुछ ने कहा कि बेचारे को अपना रोटा सेंक लेने दो, अपना क्या जाता है ? निदान उन्होने फकीर को रोटा सेंक लने की आज्ञा दे दी। फकीर ने एक जलती हुई चिता मे आटे का लोयडा दबा दिया। जब उसने देखा कि उसके बाप का सिर अच्छी तरह जल गया है तो उसने सिपाहियो से कहा कि हुजूर, मैं एक अधेले का नमक मिर्च ले आता हूँ आप मेरे रोटे की निगाह रखना, कही यह जल न जाए। यो कहकर वह चलता बना और अपने घर जाकर सो गया।

इधर सवेरे बादशाह ने सिपाहियो को तलब किया तो उन्हें अपनी भूल मालूम हुई। बादशाह ने कहा कि वह फकीर ही खप्परिया चोर था। यो कह कर उसने उन सिपाहियों को नौकरी से हटा दिया। फिर बादशाह ने कहा कि जो शख्स सिर को जला गया है वह उसके 'फूल' चुनने के लिए भी अवश्य आयेगा। अत इस बार बडी सावधानी से पहरा दिया जाए। यो कह कर बादशाह ने दूसरे सिपाहियो को मसान का पहरा देने के लिए नियुक्त किया। रात को खप्परिये ने एक जच्चा का वेष बनाया उसने आटे का एक बच्चा बनाकर उसे गोद में ले लिया और पाच सात स्त्रिया का साथ कर लिया। एक थाली में चौमुखा दीया जलाकर तथा बहुत सारे लड्डू साथ लेकर जच्चा अन्य स्त्रियो के साथ जलवा पूजने के लिए गीत गाती हुई चली। सिपाहियो ने टोका कि यहा बादशाह सलामत का हुक्म नही है। जच्चा न कहा कि बहुत वर्षों के बाद फकीरा की दुआ से मेरे बच्चा हुआ है, यदि इस कुछ हो गया तो इसकी जिम्मेदारी तुम लोगो पर होगी। सिपाही पशोपेश में पड गए। जच्चा न सब की गोद में पाच-पाच सात-सात लड्डू डाल दिये। वे लड्डू खाने लगे और इधर जच्चा रूपी खप्परिये ने अपने बाप के फूल चुन लिए। फूल चुनकर खप्परिया स्त्रियो के साथ घर पडा। खप्परिये ने लौटते वक्त फूल जमुनाजी में प्रवाहित कर दिये और फिर अपने घर जाकर आराम स सो रहा।

अगले दिन सारा हाल जानकर बादशाह ने उन सिपाहियों को भी नौकरी से हटा दिया और खुफिया-पुलिस के सिपाहियों को इस कामपर नियुक्त किया। खप्परिया तो वहीं मौजूद था। वह दरबार में आ गया। उसने ज्योतिषी का वेष बनाया और पोथी-पत्रा लेकर उन सिपाहियों के घर पहुँचा, जिन्हें रात को ड्यूटी पर जाना था। ज्योतिषी को आया देखकर सिपाहियों की स्त्रियां बड़ी आतुरता से 'दिन-मान' पूछने लगीं। ज्योतिषी ने पत्रा उलटते हुए उंगलियां पर हिसाब लगाकर बताया कि दिनमान बहुत 'म्याऊ' (बुरे) हैं। ज्योतिषी बोला कि तुम्हारे मर्द तो खप्परिये चोर को पकड़ने जाएंगे और रात को तुम्हारे घर डाकी (राक्षस) आयेंगे सो वे तुम सबको बच्चे बच्चे सहित खा जाएंगे। यदि उनसे बचना चाहो तो मूसल, पत्थर, राख की भरी हांडियां आदि जो भी मिल सकें बटोर कर बैठ जाना। आधी रात पीछे 'डाकी' आएंगे। वे सब कहेंगे कि हम तुम्हारे घरवाले हैं, लेकिन उनकी एक न सुनना। यदि तुम उन्हें पहिचान गई तो फिर खैर नहीं। और इस बात की चर्चा किसी से न करना। अपने मर्दों को भी इस बात का पता न लगने देना। यों पट्टी पढ़ाकर ज्योतिषी कुछ ले देकर वहां से चलता बना।

रात को खप्परिया एक अँधेरी व सूनी गली में अपनी दूकान लगाकर बैठ गया। वहां बैठकर वह बड़े-पकौड़ी बनाने लगा। बड़े पकौड़िया में उसने बहुत मिर्च मसाले डाले व भांग आदि नशीली चीजें भी उनमें भरपूर मिला दीं। गश्त लगाते हुए खुफिया-पुलिस के सिपाही वहां पहुंचे तो उन्होंने बड़क कर उससे पूछा कि इतनी रात गए यहां क्या करता है? खप्परिये ने बड़े दीन स्वर में कहा कि हुजूर, गरीब आदमी हूं बड़े-पकौड़ी बनाकर बाल-बच्चों का पेट पालता हूं। बड़े-पकौड़ी बहुत स्वादिष्ट हैं, आप भी खायें, पैसा की कोई बात नहीं है, जब आपके पास हों, तब दे देना। सिपाही बड़े खाने बैठ गए। बड़े वास्तव में ही बहुत स्वादिष्ट थे, अतः वे बड़े स्वाद से पेट भर भर कर बड़े खाने लगे। खप्परिया बीच-बीच में टोक देता कि हुजूर, मैं गरीब आदमी हूँ मेरे पैसे दे देना। सिपाही बड़ी लापरवाही से कहते—

"हा, हा ! तेरे पैसे मिल जायेंगे, तू बेपरवाह आने दे।" सिपाहियो ने खूब डटकर बडे खाये। अब उन्हें बडी प्यास लगी। सिपाहियो ने पानी मागा तो खप्परिया बोला कि हुजूर, पानी की तो एक बूद भी नही है। सिपाहियों के गले सूखने लगे और भग आदि नशीली चीजो के कारण वे सब बेहोश होकर वही गिर गए। अब खप्परिये ने उनकी वर्दिया उतार ली और पानी में राख घोलकर उन सब के शरीर पर पोत दी। फिर वह सब कपडे लेकर चलता बना। आधी रात के बाद जब ठड अधिक पडने लगी तो सिपाहियो का नशा कुछ हल्का हुआ। वे गिरते-पडते अपने घरों को चले। उधर उनकी देवियां उनका स्वागत करने के लिए तैयार बैठी थी। उन्हे आते देखकर वे बोली कि बेचारा ज्योतिषी सच कह रहा था, वे देखो वे आ रहे हैं। ज्योही वे कुछ नजदीक आये देवियो ने पत्थर, मूसल और राख की हाडियो से उनका स्वागत किया। वे चिल्लाते रहे कि कुलटाओ, हम तुम्हारे घर के है, लेकिन उनकी कौन सुनता था। निदान सब अधमरे होकर वही गिर पडे। मुह अँधेरे जब लोग इधर-उधर आने-जाने लगे तो उन्होंने पास जाकर उन्हें पहिचाना। मुहल्ले के लोग एक से पूछते अरे कौन, पहाड खा, तो वह बेचारा पडे पडे ही कहता, 'हैं', फिर दूसरे से पूछते, हाथीखा ? वह भी क्षीण स्वर में उत्तर देता, 'हैं'। तब उन्होने जाकर उनकी घरवालिया से कहा कि रडियो, तुम्हारे घर वाले तो बाहर पडे सिसक रहे हैं। तब वे उन्हें उठा-उठा कर अपने-अपने घरो में लेगई और उस मरदूद ज्योतिषी को गालिया देने लगी।

खुफिया पुलिस के सिपाहियो की असफलता से बादशाह को बडी निराशा हुई। बादशाह के दरबार मे मैना नाम की एक वेश्या बहुत चतुर, चालाक समझी जाती थी। उसने बादशाह से निवेदन किया कि जहापनाह, इस कनीज को भी खप्परिये चोर को पकडने का मौका बख्शा जाए। बादशाह ने प्रसन्नतापूर्वक मैना को आज्ञा देदी। रात को मैना ने बहुत बढ़िया शृगार किया और श्रेष्ठ वस्त्र आभूषणो से सज-धज कर और अपने आदमियो (सारगिया, तबलची आदि) को साथ लेकर गाती बजाती

शहर की गलियों में घूमने लगी। रात को वेष बदलकर खप्परिया मैना के पास पहुँचा। उसने मैना से पूछा कि आज इस प्रकार रात को घूमने का क्या प्रयोजन है? मैना ने कहा कि मैं खप्परिये चोर को पकड़ने निकली हूँ। इस पर खप्परिया बोला कि मैना, खप्परिया तो मेरा दोस्त है। मैं तुम्हें अभी उससे मिला सकता हूँ। थोड़ी ही देर में वह अमुक कुए पर आवेगा। खप्परिये के कहने पर मैना ने अपने आदमियों को घर भेज दिया और स्वयं उसके साथ कुए पर चली गई। कुए पर पहुँचकर खप्परिये ने मैना के सारे गहने कपड़े उतार लिये और उसे नगी करके कुए में लटका दी। खप्परिया सारे गहने कपड़े लेकर अपने घर चला गया और मैना कुए में लटकी रही। बड़े तड़के कुए से पानी निकालने वाले आये तो मैना ने कहा कि धीरे से निकालना। वे लोग डर कर भागने लगे कि कुए के अन्दर आज तो भूत है। इस पर मैना ने कहा कि न यहा भूत है न प्रेत, मैं मैना भगतन हूँ। तब उन लोगों ने मैना को बाहर निकाला। वह ठिठुरती, सिकुड़ती, लजाती अपने घर भागी।

मैना की दुर्दशा सुनकर बादशाह को हँसी आ गई। बादशाह ने सोचा कि चोर को चोर पकड़ सकता है। इसलिए उसने राज्य भर के नामी चोरों को बुलवाया। उन चोरों में से कुछ चोर जो सबसे होशियार थे उन्हें यह काम सौंपा गया। चोरों ने बादशाह से कहा कि हमें एक बहुत बढ़िया ऊँट और एक नौलखा हार दिलवा दीजिए। बादशाह ने उन्हें ऊँट और हार दिलवा दिये। तब चोरों ने ऊँट के गले में नौलखा हार डालकर उसे छोड़ दिया और स्वयं वेष बदलकर ऊँट के आगे-पीछे चलने लगे। चोरों ने सोचा कि खप्परिया ऊँट को गायब करने की कोशिश करेगा और तब हम उसे पकड़ लेंगे। खप्परिये के घर से थोड़ी दूर पर ही एक बाजीगर 'जादू' का तमाशा दिखला रहा था। खप्परिये ने बाजीगर को पाँच रुपये दिये और उससे कहा कि वे आदमी जो इधर आ रहे हैं उन्हें थोड़ी देर यहां बिलमा लेना। वे लोग उधर आये तो बाजीगर बड़ी मस्तरगी से तमाशा दिखाने लगा, 'ऊँट का घोड़ा बनाता हूँ, घोड़े की गाय बनाता हूँ,

कहा कि आपका चोर अमुक घर में है, हम घर के बायें कोने पर खून का पंजा लगाकर आई हैं।

कप्परिया भी तब वहीं था। दूतियोंकी बात सुनकर वह बुदबुदाया, "रंडियों ने मुझे मार डाला।" वह तुरन्त वहां से निकला और सीधा कसाई की दूकान पर पहुँचा। उसने दो रुपये देकर खून की एक हँडिया ली और आकर अपने घर के आसपास के सारे घरों के बायें कोना पर खून के पंजे लगा दिये। थोड़ी देर के बाद राज्य के सिपाही वहाँ पहुँचे और पंजे का निशान देख-देखकर घरों को फाड़ने लगे। दो घर फूटे, दस घर फूटे, बीस घर फूटे, तब लोगोंने जाकर बादशाह से पुकार की, आलमपनाह, हमारे घरों में कौनसे 'टोटिये' (ऊँट) बैठे हैं, आप हमें क्यों उजड़वा रहे हैं? बादशाह ने हुक्म दिया कि दूतियों को थोथे बाँस मार कर निकाल दिया जाए।

अब बादशाह ने वजीर से कहा कि वजीर साहब, यह काम आपके बिना न होगा। वजीर ने कप्परिये को पकड़ने का बीड़ा उठाया। कप्परिया मन ही मन हँसा और उसने वजीर का उल्लू बनाने की योजना गढ़ ली। रात को कप्परिये ने एक बुढ़िया का वेष बनाया। नगर के एक सुनसान हिस्से के एक टूटे झोंपड़े में वह गरीब बुढ़िया के वेष में चक्की चलाने लगा।

आधी रात को वजीर उधर से अपने घोड़े पर चढ़ा हुआ निकला तो उसने बुढ़िया को टोका। बुढ़िया बोली हुजूर, गरीब बुढ़िया हूँ, कप्परिये चोर के घोड़े के लिए दाना दलती हूँ। वह आधी रात के बाद आकर दाना ले जाता है और मुझे दो रुपये दे जाता है, उसी में अपना काम चलाती हूँ। वजीर ने कहा कि मैं उस बदमाश कप्परिये को पकड़ने के लिए ही घूम रहा हूँ। बुढ़िया बोली कि हुजूर, मैं आपको उसे पकड़ा तो दूँगी लेकिन आप ऐसा करें कि घोड़े को तो दूर बांध दें और अपने वस्त्र भी उतार कर यहीं रख दें। हुजूर फिर मेरे कपड़े पहन कर चक्की चलाएँ। जब कप्परिया आकर अपना दाना मांगे तो उसका हाथ पकड़ लें।

वजीर को यह तरकीब पसन्द आ गई और उसने वैसा ही किया। खप्परिया वहाँ से खिसका और वजीर के कपड़े-लत्ते लेकर तथा उसके घोड़े पर सवार होकर वहाँ से चम्पत हो गया। इधर वजीर खप्परिये की बाट देखता रहा। जब उजाला होने लगा तो वजीर की समझ में यह बात आई कि खप्परिया तो वही था। तब उठकर वजीर लुकता छिपता अपने घर पहुँचा।

वजीर की गत सुनकर बादशाह झुंझलाकर बोला कि साले सब हराम की खाने वाले हैं, आज मैं स्वयं उस दुष्ट खप्परिये को पकड़ूँगा। शाम हुई तो खप्परिया एक गधे पर बहुत सारे चिथड़े लादकर जमुना किनारे पहुँचा और कपड़े धोने लगा। एक काली हँडिया भी उसने अपने पास छिपा कर रख ली। आधी रात को बादशाह चक्कर लगाता हुआ जमुना किनारे पहुँचा। बादशाह ने पूछा कि आधी रात को यहाँ कपड़े धोने वाला कौन है? 'खप्परिये' ने हाथ जोड़कर अरज की कि हुजूर वो मस्ताना धोबी है आलमपनाह! बादशाह ने पूछा कि अरे मस्ताना, यहाँ आधी रात को क्या कर रहा है? मस्ताने ने फिर अरज की कि हुजूर, आपकी पोशाक इसी वक्त धोया करता हूँ, क्योंकि दिन में किसी चांडाल की छाया पड़ जाए तो आपकी पोशाक नापाक हो जाए। फिर 'मस्ताना' ने पूछा कि हुजूर आज आधी रात को यह तकलीफ क्या उठा रहे हैं, तो बादशाह ने कहा कि मैं आज खप्परिये चोर की तलाश में हूँ। 'मस्ताना' बोला कि जहाँपनाह, खप्परिया तो आधी रात के बाद हमेशा ही यहाँ आया करता है और हम दोनों यहाँ बैठ कर बहुत देर तक गप शप किया करते हैं। अब वह आने ही वाला होगा। मैं उसे आज आप के हवाले कर दूंगा, लेकिन आप उस वृक्ष की आड़ में खड़े हो जाएं और घोड़े को भी दूर बाँध दें। बादशाह ने वैसा ही किया। थोड़ी देर बाद खप्परिया किसी व्यक्ति को सम्बोधित करता हुआ-सा बोला 'अरे खप्परिया, आज तेरी जान की खैर नहीं है, आज खुद बादशाह सलामत तुझे पकड़ने आये हैं।" फिर खप्परिये ने आवाज बदल कर और हँडिया में मुँह देकर कहा, "अरे मस्ताना, बाद-

शाह की ऐसी की तैसी, मुझे पकड़ने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है।" यों दो चार संवादों के बाद खप्परिये ने हँडिया औंधी कर नदी की धारा में बहा दी और बादशाह की ओर मुंह करके बोला कि हुजूर, यह दुष्ट नहीं मानता है, वह जा रहा है। बादशाह अपने कपड़े उतार कर और नंगी तलवार लेकर नदी में कूद पड़ा। अंधेरे में काली हँडिया को बादशाह ने खप्परिया का सिर समझ लिया और बहुत देर तक हँडिया के पीछे भागता रहा। अन्त में उसने लपक कर हँडिया पर तलवार का वार किया। हँडिया के टुकड़े हो कर नदी में डूब गए। बादशाह के मुंह से सहसा ही निकल पड़ा, 'उफ, धोखा'।

इधर खप्परिया बादशाह की पोशाक पहन कर तथा उसके घोड़े पर सवार हो कर चल दिया। जाते वक्त वह महल के पहरेदारों से कहता गया कि मैं (बादशाह) तो आ गया हूँ, थोड़ी देर में खप्परिया आयेगा सो फाटक मत खोलना। उधर बादशाह लौटकर उस स्थान पर आया तो वहां न कपड़े थे और न घोड़ा था। वह थककर चूर हो गया था तथा जाड़े के मारे कांप रहा था। वह पैदल महल की ओर चला। गिरता-पड़ता महल के फाटक पर पहुँचा तो पहरेदारों ने किवाड़ नहीं खोले। बादशाह ने कहा कि मैं बादशाह हूँ लेकिन पहरेदारों ने कहा कि बादशाह सलामत तो घोड़े पर सवार होकर कभी के आ गये, तू खप्परिया चोर है। बादशाह अधिक देर तक वहां खड़ा नहीं रह सका और गिर पड़ा। पहरेदारों में कोई समझदार आदमी भी था, उसने कहा कि भले आदमियो, देखो तो सही, कहीं बादशाह सलामत ही न हों, यदि खप्परिया भी होगा तो हम सब को खा तो नहीं जाएगा। 'बाना' जलाकर उन्होंने देखा तो बादशाह बेहोश जमीन पर पड़ा था। बादशाह के 'जबाड़ जुड़' गए थे। बादशाह को इस हालत में देख कर पहरेदारों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। वे बादशाह को उठाकर महल में ले गए। बादशाह को रूई के पलंग में लिटाया गया।

स्वस्थ होने पर जब बादशाह दरबार में पहुँचा तो उसने घोषणा

करवा दी कि जो खप्परिया चोर को पकड़ कर लाएगा उसे दिल्ली का आधा राज्य दिया जाएगा। खप्परिया बादशाह के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला कि हुजूर, यदि मेरे सात गुनाह माफ कर दिए जाएँ तो मैं खप्परिया को पकड़ सकता हूँ। अपने एक अदने नौकर की छोटे मुह बड़ी बात सुनकर बादशाह को आश्चर्य हुआ। लेकिन बादशाह ने उसके सारे गुनाह माफ कर देने का वचन दिया। तब खप्परिया बोला कि बादशाह सलामत, मैं ही खप्परिया चोर हूँ। बादशाह को विश्वास नही हुआ तो खप्परिये ने सोने की ईंटें आदि सारी चीजें ला लाकर बादशाह को दिखलाइ। तब बादशाह ने खप्परिये से कहा कि तुझे शाबाश है यदि तेरे जैसे दो चार आदमी हो तो दिल्ली शहर को उजाड़ बना डालें। यो कहकर बादशाह ने अपने वचनानुसार खप्परिये को अपना आधा राज्य दे दिया।

● दुनियादारी

एक लड़का एक साधु के पास जाया करता था। लड़के का विवाह हो गया तो उसका साधु के पास जाना बहुत कम हो गया। साधु ने इसका कारण पूछा तो लड़का बोला कि महाराज मेरी स्त्री मुझे आने नहीं देती। वह कहती है कि मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नही रह सकती। मेरी पत्नी मुझे बहुत प्यार करती है। इस पर साधु ने कहा कि आज तुम घर जाकर बहुत अच्छी रसोई बनवाना और जब रसोई तैयार हो जाए तो तुम मृतक के समान होकर पड़ जाना। तुम्हें असलियत का पता चल जाएगा।

लड़के ने वैसा ही किया। जब रसोई तैयार हो गयी तो वह एक खंभे में पैर फँसा कर और मृतवत होकर पड़ रहा। स्त्री ने जब देखा कि उसका पति मर गया है तो उसने खूब छककर भोजन किया और फिर इत-मीनान से रोने बैठी। पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गये। वे उसके पति का पैर निकालने के लिए खंभे को तोड़ने लगे तो वह बोली कि अब यह तो मर ही गया है इसका पैर काटकर निकाल लो व्यर्थ में खंभा क्या तोड़ रहे हो? पत्नी की बात सुनकर पति सहसा उठ बैठा और वह सीधा उस साधु के पास चला गया।

एक दो दिन बाद उसकी स्त्री उसे लिवाने के लिए कुटिया पर पहुँची तो वह बोला कि मैं दुनियादारी देख चुका हूँ। तुम वही तो हो जो खसम के लिए मेरा पैर कटवा रही थी। अब तुम जाओ, मैं नहीं आने का।

● राजकुमारी फूलमदे

एक राजा के लड़के ने हठ पकड़ लिया कि मैं शादी नहीं करूँगा। राजा ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ा रहा। तब राजा ने नाराज हो कर उसे एक बुर्ज में कैद करवा दिया। राजकुमारी फूलमदे का उड़नखटोला रात को उसी बुर्ज के ऊपर से होकर जाया करता था। फूलमदे ने सोचा कि यह बुर्ज हमेशा सूना रहा करती थी, आज इसमें कौन कैदी आ गया है? कैदी को देखने के लिए वह बुर्ज में गयी। राजा का लड़का फूलमदे को देखते ही उस पर मोहित हो गया। फूलमदे के पूछने पर राजकुँअर ने उसे सारी बात बतलादी और फिर उससे यह भी कहा कि मैं तुमसे इसी वक्त शादी करने के लिए तैयार हूँ। फूलमदे ने अपने सिर के जूड़े में से एक सुन्दर फूल निकाला, फूल को उसने अपने बाल के चारों ओर फिराया और फिर उसे एड़ी के नीचे दबाकर चली गयी। राजकुँअर कुछ नहीं समझा, लेकिन उसने अपने पिता से कहलवाया कि वह शादी करने के लिए तैयार है। उसे बाहर निकाला गया। उसने अपने पिता से रात की सारी बात कही, लेकिन कोई भी इस पहेली को नहीं सुलझा सका। इस पर राजकुमार ने कहा कि मैं यदि शादी करूँगा तो बस उसी स्त्री से।

राजा ने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि हर कोई आदमी अपनी समझ के अनुसार इस बात का अर्थ बतलाए। जो भी बात का अर्थ बतलाने आता, उसे कुछ न कुछ दे दिया जाता। एक दिन एक गंजे सिर का ग्वालिया अपनी भैंस पर चढ़ कर आया। उसको देखकर सब हँसने लगे, लेकिन उसने कहा कि मैं तुम्हारी पहेली अभी सुलझाये देता हूँ। बुर्ज में जो लड़की आई थी उसका नाम फूलमदे है। बालों के चारों ओर उसने जो फूल को फिराया उसका मतलब यह है कि उसने यहाँ पूछा था

एक बहुत सुन्दर बगीचा है और एडी के नीचे फूल दबाने का अर्थ यह है कि वहा तक फूलों की सडक है। राजकुमार को उसकी बात जँच गयी और उसने गजे ग्वाले से कहा कि तू मेरे साथ चलकर उसका पता लगा। गजे ने कहा कि जब तक मैं लौटूगा मेरा भैंसा मर जाएगा। राजकुमार ने भैंसे की निगरानी का अच्छा प्रबन्ध कर दिया और तब दोनों यथेष्ट धन लेकर फूलमदे की खोज मे निकल पडे।

फूलमदे के नगर मे पहुँच कर उन्होंने फूला मालिन के घर अपना अड्डा जमाया। एक दिन फूलमदे की दासी कपडा खरीदने के लिए बाजार गयी तो गजे ने राजकुमार से कहा कि यह जो कपडा पसन्द करे उसे तुम ले लेना। राजकुमार दासी के पीछे पीछे हो लिया। दासी ने जो कपडा पसन्द किया, दुकानदार ने उसके सौ रुपये माग। इस पर दासी मुह बिचका कर आगे चलने लगी। लेकिन राजकुमार ने उसी कपडे को दो सौ रुपये देकर खरीद लिया। फिर उसने कपडे की तह मे एक चिट्ठी लिख कर डाल दी और वह कपडा दासी को दे दिया।

कुछ ही देर मे दासी लौटी। वह हर कदम पर एक फूल रखती जा रही थी। राजकुमार ने गजे से पूछा कि इसका क्या अर्थ है तो गजे ने कहा कि फूलमदे को अपने आने की खबर हो गई है और उसने दासी से कहलवाया है कि तुम फूलो के बगीचे मे ठहरो। वे दोनों जाकर फूलो के बगीचे मे ठहर गये लेकिन फूलमदे ने उनकी फिर सुधि नही ली। छ महीने बीत गये और राजकुमार के सारे पैसे खतम हो गये। तब एक दिन दासी फूलो का गजरा गूथने के लिए बाग मे आई तो गजे ने उसे खूब पीटा। फिर उसने फूलो के गजरे मे एक चिट्ठी लिख कर लगा दी कि हम इतने दिनों से तुम्हारा इन्तजार कर रहे है, और तुम हमारी सुधि नही लेती। हमारे पास खाने पीने को भी पैसे नही रहे।

फूलमदे वास्तव मे उन दोनो को भूल ही गई थी। चिट्ठी देखते ही उसे ध्यान आ गया। उसने एक काली हँडिया मे बहुत से हीरे-मोती भरवाये, और उसमे एक रस्सी का टुकडा डलवाया। फिर हँडिया

को घोड़ा की लीद से भरवा कर उसने राजकुमार के पास भेज दी। राजकुमार कुछ नहीं समझा, लेकिन गजे ने कहा कि हीरे-मोती तो हमारे खर्चे के लिए हैं। लीद, हँडिया और रस्सी का मतलब यह है कि महल की एक मोरी अस्तबल में खुलती है, उसमें एक रस्सी लटकी रहेगी, तुम उसीके सहारे महल में आना।

रात को दोनों मोरी के नीचे पहुँचे। गजे ने कहा कि महल में मैं जाता हूँ क्योंकि राजकुमारी तुमसे जो बातें पूछेगी, उनका तुम ठीक से उत्तर नहीं दे सकोगे और वह तुम्हें इसी मोरी से नीचे फेंक देगी। लेकिन राजकुमार ने सोचा कि गजा उससे स्वयं विवाह कर लेगा, अतः उसने गजे का प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब गजे ने कहा कि मोरी से मुँह निकालते ही फूलमदे तुमसे पूछेगी कि तुम कौन हो? तब तुम कह देना कि मैं पगला राजकुमार हूँ। फिर जब वह तुमसे पूछे कि यहाँ क्यों आये हो तो तुम कहना कि फूलमदे से मिलने आया हूँ। जब वह पूछे कि फूलमदे कौन सी है तो तुम कहना कि जो मुझ से बात कर रही है वही फूलमदे है। इस पर वह अपनी सारी दासियों को वहाँ से हटा देगी और तुम्हें पलंग पर बैठने के लिए कहेगी। वहाँ बहुत से पलंग बिछे होंगे, लेकिन उन सब में से बीच वाले पलंग पर बैठना जैसे वहाँ पन्द्रह पलंग हों तो दोनों तरफ के सात-सात पलंग छोड़कर आठवें पर बैठना। राजकुमार ने वैसा ही किया, लेकिन फूलमदे ने उसकी चेष्टाओं से जान लिया कि यह किसी के सिखाये अनुसार काम कर रहा है, इसे स्वयं कुछ भी ज्ञान नहीं है। राजकुमार पलंग गिनकर बीच के पलंग पर तो बैठा, लेकिन सिरहाने बैठने के बजाय पायताने की ओर बैठ गया। राजकुमारी का शक पूरा हो गया और उसने दासियों को बुलवाकर राजकुमार को उसी मोरी से नीचे फिंकवा दिया। इधर गजा तो पहले ही जानता था कि राजकुमार इसी मोरी से फेंका जाएगा, अतः उसने वहाँ घास का ढेर लगा दिया था, राजकुमार घास के ढेर में गिरा, अतः उसको चोट नहीं लगी।

गजे ने कहा कि मैं तुमसे पहले ही कह रहा था कि तुम निरे बेवकूफ

हो। फिर दोनों वहाँ से पास के एक गाँव में गये। उस गाँव के बढ़ई बहुत प्रसिद्ध थे। इनके पास हीरे-मोती तो यथेष्ट थे ही, इसलिए इन्हों ने बढ़इयों से काठ का एक बड़ा शिवालय बनवाया जो देखने में बिल्कुल ईंट-पत्थर के शिवालय जैसा लगता था। और जिसके हिस्से अलग-अलग करके कहीं भी लेजाकर शिवालय खड़ा किया जा सकता था।

जब शिवालय तैयार हो गया तो उसे रातोंरात फूलमदे के नगर में खड़ा कर दिया गया। राजकुमार पुजारी बन गया और गजा पहरेदार बन गया। नगर के लोगों ने जब शिवालय देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। सारे लोग यही कहते थे कि यह शिवालय रात को आकाश से उतरा है। नगर भर के लोग शिवालय में शिव के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। गजे ने शिवालय की परिक्रमा में एक बारी रखवाई थी। उसने एक बहुत बढ़िया रथ वहाँ हर वक्त खड़ा रखने के लिए एक रथ-वान (सारथी) को रख लिया। उसने रथवान को समझा दिया कि इशारा पाते ही रथ को हवा कर देना।

फूलमदे भी शिवालय में दर्शन करने के लिए आई तो गजे ने उसे दूर से ही आती देख कर राजकुमार से कहा कि कुछ समय के लिए मुझे पुजारी बनने दो तो मैं तुम्हारा काम बना दूँगा, अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी, क्योंकि तुमसे कुछ हो नहीं सकेगा। लेकिन राजकुमारने सोचा कि गजा स्वयं फूलमदे को ले उड़ेगा, सो उसने गजे की बात नहीं मानी। तब गजे ने सारी योजना राजकुमार को समझा दी कि जब फूलमदे परि-क्रमा देने जाए और बारी के पास पहुँचे तो उसे जबरन् पकड़ कर रथ में डाल लेना और हवा हो जाना। राजकुमार ने वैसा ही करने की कोशिश की, लेकिन बारी खुलते ही हवा का एक ऐसा तेज झोंका आया कि राज-कुमार फूलमदे को पकड़ने में झिझक गया। केवल फूलमदे का दुपट्टा उसके हाथों में आया और फूलमदे 'धोखा, धोखा' चिल्लाती हुई वहाँ से भागी। गजे ने देखा कि यहाँ रहने में अब कुशल नहीं है। इसलिए वे दोनों रथ में बैठकर वहाँ से भाग गये।

वहाँ से चलकर वे एक दूसरे नगर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग गाने-बजाने और नाचने में बहुत प्रवीण हैं। गजे ने उन्हें काफी रुपये देकर बीन बजाना और राजकुमार ने बहुत बढ़िया नृत्य करना सीख लिया। फिर दोनों वहाँ से फूलमदे के नगर में आये। नगर में आने पर उन्होंने सुना कि फूलमदे का विवाह किसी राजा के लड़के से शीघ्र ही होने वाला है। यह सुनकर राजकुमार उदास हो गया, लेकिन गजे ने कहा कि मैं अपना आखिरी दाँव लगाता हूँ। इस में असफल हो गये तो फिर जिंदगी भर पछताना ही पड़ेगा।

गजे ने राजकुमार को बहुत सुन्दर जनाने कपड़े पहनाये और उसका शृंगार करके उसे एक सुन्दर नर्तकी का रूप दे दिया। वह स्वयं वीणा बजाने वाला बन गया और नगर के चौराहे पर आकर उन्होंने अपना अड्डा जमाया। गजा वीणा बजाने लगा और राजकुमार नर्तकी के वेष में नाचने लगा। नर्तकी का नाच देख कर लोग मन्त्रमुग्ध से हो गये। सब ने कहा कि इस नर्तकी का नृत्य राजकुमारी फूलमदे के विवाह में अवश्य होना चाहिए।

बात राजा तक पहुँची और उसने उन दोनों को बुलाया। नर्तकी ने बहुत सुन्दर नृत्य किया और गजे ने बहुत उत्तम बीन बजायी। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने बीन बजाने वाले से इनाम माँगने के लिए कहा। गजा बोला कि अन्नदाता, पहले मुझे वचन दीजिए। राजा के वचन दे देने पर गजा बोला कि हुजूर! मुझे सिर्फ दो रुपये चाहिए। हम नाचने-गाने वाले नहीं हैं, हम बनजारे हैं। यह मेरी मामी है आज चौदह वर्ष हो गये इसका खाविंद इसको छोड़कर चला गया हम उसे ही ढूढ़ते फिर रहे हैं। अब खबर लगी है कि आपके नगर के पास ही एक गाँव में मेरा मामा है। मैं उसे लिवाने के लिए जाता हूँ, मुझे राह-खर्च के लिए सिर्फ दो रुपये ही चाहिए और तब तक आप मेरी मामी की हिफाजत से रखें। अगले दिन आकर मैं इसे ले लूँगा। राजा ने 'बनजारी' को सुरक्षित रखने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली और बनजारा चला गया। राजा ने सुरक्षा की दृष्टि से बनजारी को फूलमदे

के पास महल में भेज दिया।

बनजारी ने अवसर पाकर फूलमदे को अपना असली परिचय दिया और उसे गंजे की बनायी हुई योजना भी बतला दी। राजकुमार को फिर से पाकर फूलमदे बडी प्रसन्न हुई। शाम को बारात आयी तो फूलमदे ने दूल्हे को महल मे बुलवा लिया। दूल्हा फूलमदे को पसन्द नही आया। रात को उसे खूब शराब पिलायी गयी और 'बनजारी' ने अपना नृत्य उसे दिखलाया। जब वह नशे मे चूर हो गया तो 'बनजारी' ने उसे मार-काट कर महल के नीचे से बहने वाली नहर मे फेंक दिया। फिर उसने अपने कपड़े भी नहर मे फेंक दिये और स्वय मरदाने कपड़े पहन कर अस्तबल वाली मोरी से उतर गया।

सवेरे राजकुमारी ने यह बात उडा दी कि दूल्हा बनजारी पर आसक्त हो गया और रात को उसे लेकर भाग गया। राजा को दूल्हे की नालायकी पर बहुत क्रोध आया और उसने बारातियों को पीटकर अपने नगर से निकाल दिया।

शाम को बनजारा अपने भाई (राजकुमार) को लेकर राजा के पास आया और सलाम करके बोला कि हुजूर! मेरी भाभी को शीघ्र बुलवा दीजिए, मेरा भाई उसके बिना बडा बेचैन हो रहा है। राजा के पास कोई उत्तर न था। उसने बनजारे से सारी बात कह दी।

राजा की बात सुनकर 'बनजारों' के मुह उतर गए और वे सांस मार कर वही बैठ गये। गजे ने राजा से कहा कि हुजूर, बनजारी तो गयी सो गई, अब उसके बिना मेरा भाई भी जीवित नही रहेगा। खैर, जो हुआ सो हुआ, हमे तो इसी बात का बडा अफसोस है कि आप एक राजा होकर अपना वचन नही निभा सके। राजा बड़ी दुविधा में पड गया। अन्त मे सोच विचार कर उसने अपनी सारी दासियों को शृगार करके बुलवाया और बनजारे से कहा कि जो उसे पसन्द आये, वह उसी औरत को बदले मे ले ले। सारी दासियाँ उसके सामने से निकल गयी, लेकिन बनजारे ने किसी को पसन्द नही किया।

दोनों बनजारे फिर निराश होकर जाने लगे तो राजा ने सोचा कि यह तो अच्छा नहीं होगा। फिर उसने बनजारे से कहा कि यदि तुम मेरी बेटी फूलमदे को बनजारी के बदले मे लेना चाहो तो मैं उसे भी दे सकता हूँ, लेकिन वाचा चूकना अच्छा नहीं समझता। फूलमदे शृंगार करके उनके सामने आई। राजा अलग हट गया। फूलमदे को इस रूप मे देखकर राजकुमार बेहोश होकर गिर पडा। गजे ने देखा कि बना बनाया काम बिगड रहा है तो उसने राजकुमार को चार जूते कसके मार दिये। राजकुमार की बेहोशी जाती रही। राजा ने गजे से पूछा कि क्या बात है? गजा बात को सम्हालते हुए बोला कि हुजूर! यह राजकुमारी के लिए भी ना-नू कर रहा है, अत मैंने इसे जूते लगा दिये कि क्या तेरी बनजारी राजकुमारी फूलमदे से भी अधिक सुन्दर थी? अब यह राजकुमारी के साथ विवाह करने के लिए राजी हो गया है।

फूलमदे और राजकुमार का विवाह हो गया, फिर वे सब वहाँ से चल पडे। रास्ते मे एक पहाड के पास उन्होंने डेरा डाला। पहाड पर घूमने-घामते गजा एक गुफा मे जा घुसा। गुफा मे एक बूढे बाबाजी तप करते थे, जिनके केश इतने लम्बे थे कि वे जमीन पर लहरा रहे थे। गजे ने देखा कि बाबाजी ने अपनी जटा से एक डिबिया निकाली और उसे खोल कर उसमे फूक मारी तो वहाँ अप्सराओं का नृत्य होने लगा। कुछ देर बाद बाबाजी ने डिबिया बन्द कर ली और अप्सराएँ उसम समा गयीं। बाबाजी ने डिबिया जटा मे दबा ली। गजे ने लपक कर डिबिया जटा मे से निकाल ली, गजे के पैरो से बाबाजी के केश दबे तो वे चिल्लाने लगे कि कौन है जो मेरे केश खीच रहा है? लेकिन गजा डिब्बी लेकर गुफा से बाहर आ गया। अब सब लोग आगे बढे।

राजकुमारी ने देखा कि राजकुमार म कुछ आनी-जानी नहीं है, सब सब करामात गजे की ही है। अत जब वे अपने नगर मे पहुँचे तो राजकुमारी फूलमदे ने गजे से कहा कि मैं तुम्हारे पीछे आयी हूँ। राजकुमार तो बस नाम का ही राजकुमार है। गजा इस बात को पहले से ही

साड गया था । उसने राजकुमारको जादू की डिबिया देकर उसे सारी तरकीब बतला दी और उसने फूलमदे से कहा कि सारी करामात इस डिबिया मे है, मेरे पास कुछ नहीं है । राजकुमार ने डिबिया खोलकर उसमे फूक मारी तो वहाँ अप्सराओं का नृत्य होने लगा। अब फूलमदे को विश्वास हो गया कि सारी करामात इस डिबिया मे ही है। वह राजकुमार के साथ लग गई।

गजे ने अपना भैसा सँभाला। जब उसने देख लिया कि भैसा दुबला नही हुआ है तो उसे बडा सन्तोष हुआ और वह अपने भैंसे पर सवार होकर पदडक-पदडक करता हुआ जगल की ओर भाग चला।

● चाल पूतली घर चालां

एक बादशाह और एक साहूकार का लडका आपस मे दोस्त थे । वे साथ-साथ खाते-पीते, साथ-साथ शिकार खेलने जाते और सदैव साथ ही रहते थे। इन दोनों की शादियाँ बचपन मे ही हो चुकी थी, लेकिन युवा हो जाने पर भी उनकी स्त्रियाँ अभी ससुराल नहीं आयी थी। एक दिन वे दोनो शिकार खेलने जा रहे थे,तो उन्होंने एक मलग को यह कहते हुए सुना कि युवा होने पर भी जिसकी पत्नी पीहर में रहती है, उसके बराबर गया-बीता भी कोई नही। वे दोनो वही से लौट आये और अपने-अपने माता-पिताओं से कहकर अपनी बहुओं को लाने चल पड़े।

पहले दोनों बादशाह के बेटे की ससुराल पहुँचे। ससुराल वालों ने उनका बहुत आदर-सत्कार किया। जब रात को बादशाह के बेटे को महल मे पधारने के लिए कहा गया तो उसने कहा कि मैं महल में अकेला नही जाऊँगा, मेरा दोस्त भी साथ रहेगा। ससुराल की स्त्रियों ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह नहीं माना तो कमरे के बीचोबीच कनात तनवा दी गयी। एक ओर साहूकार का लडका सो गया तथा दूसरी ओर शाहजादा और उसकी पत्नी। जब बादशाह का शाहजादा सो गया तो उसकी स्त्री धीरे से उठी और महल से नीचे उतरी। साहूकार के लड़के

को नींद नही आई थी, अत वह भी उठकर उसके पीछे-पीछे चला । बाद शाह की बेटी कुलटा थी और वह हर रात एक फकीर के पास जाया करती थी। आज वह कुछ देर से पहुची थी इस लिए फकीर गुस्से मे भरा बैठा था। उसने जाते ही शाहजादी को चार कोड़े लगा दिये और बोला कि हरामजादी, आज इतनी देर कहाँ रही ? वह बोली कि आज मेरा खाविंद आया है सो इसी कारण देर हो गयी । शाहजादी की बात सुनकर फकीर और भी आगबबूला हो गया और बोला कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती, जा अभी अपने खाविंद का सिर काट कर ला। वह तुरन्त गयी और अपने सोते हुए पति का सिर काट कर ले आयी। वह सिर लेकर आयी तो फकीर बोला कि दुष्टा ! तू जब अपने पति की ही नही हुई तो मेरी क्या होगी, जा निकल यहाँ से, फिर कभी मुझे अपना मुंह मत दिखाना। साहूकार का बेटा यह सब कौतुक देख रहा था। शाहजादी चली गयी तो साहूकार के लड़के ने फकीर का सिर काट कर वही फेंक दिया और स्वय शाहजादी से पहले आकर सो रहा। शाहजादी अपने पति का कटा सिर अपने साथ ले आयी थी और महल में आते ही उसने हल्ला मचा दिया कि इस आदमी ने सोन में मेरे पति को मार डाला। साहूकार के हाथों मे तुरन्त हथकड़ियाँ पड़ गयी ।

सवेरे बादशाह ने हुक्म दिया कि उस नालायक का मैं मुह देखना नहीं चाहता, उसे ले जाकर फासी दे दो। फासी के तख्ते पर ले जाकर जब उससे पूछा गया कि तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है तो उसने कहा कि मैं बादशाह से दो बातें करना चाहता हूँ। बादशाह ने कहा कि मैं ऐसे कमीने का मुह देखना नही चाहता। तब वजीर के कहने पर दोनों के बीच मे एक कनात तनवा दी गयी और दोनो कनात के दोनो तरफ बैठ गये। साहूकार के लड़के ने बादशाह से कहा कि तुम्हारी बेटी कुल्टा है, वह नित्य आधी रात को जगल में एक फकीर के पास जाया करती थी। गत रात को वह कुछ देरी से पहुची तो फकीर ने उसकी पीठ पर चार कोड़े लगाये और कहा कि अपने खाविंद का सिर काट कर ला। वह सिर काट कर ले गयी तो

तो उसने मुह फेर लिया। बहुत पूछने-ताछने पर जब उसने सारी बात कही तो स्त्री ने अपने पति से कहा कि तुम अपने दोस्त को पुकारो, वह आ जाएगा। साहूकार के लडके के पुकारते ही सचमुच बादशाह का लडका उसके पास आ गया। फिर सबने खब अच्छी तरह खाना खाया और दोनो वही आराम से रहने लगे।

साहूकार के बेटे की स्त्री ने उनसे कहा कि तुम तीन दिशाओ मे शिकार खेलने जाना, मगर दक्षिण दिशा में मत जाना। वे लोग ऐसा ही करते, लेकिन एक दिन बादशाह का बेटा एक शिकार के पीछे दक्षिण दिशा की ओर चल पडा। साहूकार के बेटे ने उसे बहुत मना किया, लेकिन वह नही माना तो वह भी उसके पीछे पीछे चलने लगा। शिकार का पीछा करते-करते वे बहुत घने जगल में पहुच गये। शिकार आखो से ओझल हो गया और वे दोनो भटक गये। प्यास के मारे शाहजादे का गला सूखने लगा तो साहूकार के लडके ने कहा कि तुम एक वृक्ष की छाया में बैठो मैं पानी खोजता हूँ। फिर उसने एक टीले पर चढ कर देखा तो उसे कुछ कौवे उडते हुए दिखलाई पडे। साहूकार का लडका उसी दिशा में चल पडा और थोडी ही देर मे एक तालाब पर पहुँच गया। तालाब के किनारे एक बहुत सुन्दर नारी की पुतली खडी थी जो उस तालाब में रहने वाली नाग कन्या की मूर्ति थी। पुतली बहुत ही सुदर थी। साहूकार के बेटे ने सोचा कि यदि उसका दोस्त इस पुतली को देख लेगा तो वह कभी यहाँ से जिन्दा नही लौटेगा अत उसने बहुत सारा कीचड लेकर पुतली के ऊपर पोत दिया। फिर वह दोस्त के लिए पानी लेकर उसके पास पहुँचा। बादशाह के बेटे ने कहा कि मेरी प्यास नही बुझी है मैं खुद तालाब पर चल कर पानी पीऊगा। साहूकार के बेटे ने उसे बहुत रोकना चाहा, लेकिन वह नहीं माना। दोनो तालाब पर गये। बादशाह के बेटे ने पानी मुह में लेकर पुतली के ऊपर कुल्ला फेंका तो उसका कुछ हिस्सा दिखलाई पडने लगा। अब तो वह बराबर पुतली पर कुल्ले फेंकने लगा। पुतली का कीचड घुल गया। पुतली के सौन्दर्य को देखकर शाहजादा

दीवाना हो गया और पुतली से लिपट कर 'चाल पूतली घर चालाँ ए, चाल पूतली घर चालाँ ए' की रट लगाने लगा। साहूकार के बेटे ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। तब वह अपने घर आ गया और घर आ कर उसने अपनी स्त्री से सारी बात कही। उसकी स्त्री ने कहा कि वह नागकन्या की पुतली है। नाग हर रात तालाब से निकल कर वहाँ घूमा करताहै, लेकिन वह इतना विषैला नाग है कि उसकी फुफकार से ही घास जल जाती है। तुम्हारा मित्र रात भर वहाँ रहगा तो उसकी फुफकार से वह मर जाएगा। तुम एक बडी ढाल लेकर जाओ जिसके चारा ओर नोकदार कीलें लगी हो। जब साप अपनी मणि रखकर घूमने जाए तो तुम वृक्ष पर से रस्सी बाँध कर ढाल से मणि को ढक देना। साँप उस ढाल पर फन मार मार कर स्वय मर जाएगा। तब तुम उस मणि को ले लेना। मणि के छुआते ही तालाब का पानी फट जायगा और तुम्हे अन्दर जाने के लिए रास्ता मिल जायगा। उस रास्ते तुम नाग-कन्या के महल में पहुच कर नाग-कन्या को प्राप्त कर सकोगे।

साहूकार के लडके ने वैसाही किया और नाग-कन्या को बाहर ले आया। पुतली के पास आकर उन दोना ने देखा तो शाहजादा मरा पडा था। वे दोनो भी वहीं बैठ गये। रात को एक वृक्ष पर चकवा-चकवी बोले। चकवी ने चकवे से कहा कि ओ चकवा कह नी बात कटैनी रात' चकवा बोला कि घर-बीती कहू या पर बीती? चकवी बोली कि घर बीती तो सदा ही कहते हो आज तो पर-बीती ही कहो। चकवा बोला कि तालाब के किनारे जो बादशाह का लडका मरा पडा है उसे मेरी बीट घोल कर कोई पिलादे तो वह जिंदा हो जाए। या कह कर चकवे ने बीट डाली और शाहूकार के लडके ने चुपचाप वह बीट ले ली।

फिर चकवी बोली कि यह जी भी उठेगा तो क्या होगा? इसकी अभी चार मौतें और हैं। पहले तो जब यह यहा से जाएगा तो इसे रास्ते म एक बहुत सुदर कोडा पडा दिखलाई देगा, यह उसे उठाएगा और उठाते ही

वह कोडा सांप बन कर इसे डस लेगा। फिर आगे जायगा तो रास्ते पर एक बड़ा वृक्ष आयगा। ज्यों ही यह वृक्ष के नीचे से निकलेगा, वृक्ष का एक बड़ा 'डाला' (मोटी शाखा) इसके ऊपर गिरेगा और यह वहीं मर जाएगा। यदि वहां से भी बच गया तो जब यह अपने नगर में पहुँचेगा तो नगर का दरवाजा इसके ऊपर गिरेगा और यह वहीं मर जाएगा और कदाचित् वहां से भी बच गया तो रात को सोने में इसे काला नाग डस लेगा, उस मृत्यु से इसका बच सकना असंभव ही है और फिर बचाने वाला यदि इस बात को किसी से कह देगा तो वह तुरत ही पत्थर का हो जाएगा। चकवे ने पूछा कि क्या बचाने वाला फिर जिन्दा हो सकता है तो चकवी बोली कि हाँ, हो तो सकता है। यदि राज कुमार जीवित रहा तो इसके एक लड़का होगा। यदि उसे मार कर उसका खून बुत पर छिड़का जाएगा तो वह जिन्दा हो जाएगा। यों कहकर दोनों पक्षी उड़ गये।

सवेरा होते ही साहूकार के बेटे ने चकवे की बीट घोल कर उसे पिलादी। पिलाते ही वह उठ बैठा और उठते ही "चाल पूतली घर चालां ए" की रट लगाने लगा। तब साहूकार के बेटे ने कहा कि यह सजीव पुतली तेरे सामने प्रत्यक्ष खड़ी है, अब उठकर इसके साथ घर चल। तीनों घोड़ों पर सवार हो कर चल पड़े। साहूकार के बेटे ने अपने दोस्त का घोड़ा आगे रखा और स्वयं उसके पीछे चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर बादशाह के लड़के ने देखा कि एक बहुत सुन्दर चिकना और काला कोड़ा रास्ते में पड़ा है। ज्यों ही वह उसे उठाने के लिए झुका, साहूकार के लड़के ने उसके घोड़े की पीठ पर एक चाबुक कस कर मार दिया। चाबुक लगते ही घोड़ा दस कदम आगे कूद गया। बादशाह के लड़के ने मुड़ कर देखा तो वह कोड़ा सांप बन कर चला जा रहा था। उसने आश्चर्य के साथ अपने मित्र से इस भेद को पूछा, लेकिन उसने बात टाल दी। आगे वह वृक्ष आया तो उसने फिर बादशाह के बेटे के घोड़े की पीठ पर एक चाबुक जमा दिया। घोड़ा फुर्ती से निकल गया और वृक्ष का 'डाला' जमीन पर गिर गया। बादशाह के बेटे ने फिर अपने मित्र से पूछा, लेकिन उसने फिर बात

डाल दी। जब वे नगर में पहुने तो साहूकार के बेटे ने बादशाह से जाकर कहा कि शाहजादा शादी करके आ रहा है, अत तोरण-द्वार को मेरे कहने के अनुसार सजाया जाए। बादशाह ने हुक्म दे दिया और उसने दरवाजा तुडवा कर उसे कागज और कपडे से सजवा दिया। बादशाह का लडका नीचे से गुजरा तो दरवाजा गिरा, लेकिन कागज और कपडे का बना होने के कारण उसे कोई क्षति नही पहुँची।

नाग-कन्या ने भी चकवे-चकवी की बात सुनी थी, अत उसने साहूकार के लडके को अपने कमरे की छत में एक बडा छेद करके उसमें छुपा दिया। आधी रात को काला नाग फुफकारता हुआ छत से उतरने लगा। साहूकार के बेटे ने झट तलवार से उसके टुकडे कर दिये, लेकिन साँप के विष की एक बूद नाग कन्या के होठ पर गिर गई। अब साहूकार का लडका दुविधा मे पड गया। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि मित्र की पत्नी को बचाना चाहिए। इसलिए वह नीचे उतरकर राजकुमारी के होठ पर पडी विष की बूद को अपने होठ से चूसने लगा। इतने में बादशाह के लडके की आँख खुल गयी। वह झट नगी तलवार लेकर उसे मारने पर उतारु हो गया। साहूकार के बेटे ने कहा कि मैं निर्दोष हूँ और तुम्हारी पत्नी की जान बचाने के लिए ही मैं यह कर रहा था, लेकिन शाहजादा नही माना। तब साहूकार के लडके ने सोचा कि मरना तो दोनो तरफ है ही अत मित्र के दिल पर जो विचार आ गया है उसे दूर करदू तो ठीक रहे। या सोचकर उसने शाहजादे से कहा कि मैं तुम्हे सारी बात खोल कर कह देता हूँ लेकिन मैं पत्थर का हो जाऊगा। शाहजादे ने कहा कि चाहे जो कुछ हो, मैं इस रहस्य को अवश्य जानूगा। तब साहूकार के बेटे ने आदि से अन्त तक सारी बात शाहजादे को कह दी और कहते ही वह पत्थर का बन गया। साहूकार के बेटे ने शाहजादे को यह बात भी बतलादी कि नौ महीने बाद तुम्हारे लडका होगा, यदि तुम उसके रक्त के छींटे मेरे ऊपर डालोगे तो मैं फिर जिन्दा हो जाऊगा।

नौ महीने बाद शाहजादे के लडका हुआ, लेकिन उसने मित्र की बात

की जान बूझ कर उपेक्षा कर दी। नाग-कन्या ने उस मित्र के उपकारों का स्मरण कराया लेकिन वह बोला कि अपनी गद्दी के उत्तराधिकारी को क्या मैं मार डालूं? लेकिन नागकन्या से नहीं रहा गया। एक दिन जब उसका पति बाहर गया तो नागकन्या ने अपने पुत्र को मार कर उसका खून साहूकार के बेटे के बुत पर छिड़क दिया। खून के छींटे पड़ते ही साहूकार का बेटा जिन्दा हो गया। नागकन्या की भलाई के कारण उनका बेटा भी जीवित हो गया। जब शाहजादा महल में आया और उस मित्र का बुत नहीं दिखलाई पड़ा तो उसने पूछा कि बुत कहां है? नागकन्या ने कहा कि मैंने उसे जीवित कर दिया है। अब शाहजादे ने कहा कि मेरे लड़के को जल्दी से मुझे दिखला, अन्यथा तेरा सिर अभी तलवार से उड़ा दूंगा। नागकन्या ने लड़के को हाजिर कर दिया। फिर उसने साहूकार के बेटे से कहा कि तुमने मेरे पति के बहुत उपकार किये हैं जिनका बदला कभी नहीं उतर सकता लेकिन तुम्हारे लिए यह अपने बेटे के खून की एक बूंद भी गिराने के लिए तैयार नहीं हुआ अतः अब यही उचित है कि यहां से अन्यत्र चल जाओ। साहूकार के बेटे को भी यह बात जंची और वह अपनी पत्नी को लेकर अन्यत्र चला गया।

● राजा वीर विकरमादीत और चौबोली

राजा विक्रमादित्य के पास एक दिन शनिदेव ने आकर कहा कि राजन! मैं तुम्हारे पास सात वर्ष के लिए आया हूं। चाहे तुम सात वर्षों के लिए अपनी प्रजा पर कष्ट डाल दो चाहे तुम रानीसहित सात वर्ष का दसूटा (देश निकाला) ले लो। राजा ने रानी से सलाह की और प्रजा को कष्ट न देकर वे दोनों साधारण वेष में अपने राज्य से बाहर चले गये।

चलते चलते वे दोनों एक दूसरे राजा के नगर में पहुंचे। वह राजा हमेशा सदावत बांटा करता था। विक्रमादित्य ने राजा से कहा कि मैं सदावर्त लेने नहीं आया हूं नौकरी चाहता हूं। राजा ने विक्रमादित्य को अपने महल की ड्योढ़ी पर पहरेदार नियुक्त कर दिया। राजा ने पहरेदार को

सख्त हिदायत कर दी कि मेरी अनुपस्थिति में किसी 'मर्द' को महल की ड्योढी के अन्दर नही घुसने देना । एक बार राजा शिकार खेलने गया । रानी के महल के नीचे से एक इत्र बेचने वाला बनजारा गुजरा । बनजारे के पास इतना बढिया इत्र था कि उसकी सुगन्ध से सारा वातावरण महक उठा। रानी ने बनजारे को महल के नीचे से गुजरते हुए देखा । बडा सुन्दर और स्वस्थ युवक था। रानी बनजारे और उसके इत्र पर मोहित हो गई । उसने दासी को भेजकर बनजारे को बुलवाया, लेकिन पहरेदार ने बनजारे को महल में नही जाने दिया । दासी ने रानी से जाकर कहा । रानी कामान्ध हो रही थी, उसने पहरेदार को बहुत डराया-धमकाया, लेकिन वह टस से मस नही हुआ । जब रानी वहाँ से नही टली तो पहरेदार ने बनजारे को बेंत लगाकर बाहर निकाल दिया । फिर उसने दासी और रानी को भी दो दो चार-चार बेंत लगा दिये । रानी क्रुद्ध नागिन की तरह फुफकार उठी । रानी ने अपना सारा शृंगार उतार फेंका और मैले वस्त्र पहिनकर महल में लेट गई । राजा आया तो उसने शिकायत की, ऐसा भी निगोडा क्या पहरेदार रखा है जो मेरी इज्जत लूटने के लिए उतारू हो गया । राजा ने रानी को धीरज दिया और कहा कि सवेरा होते ही उस नालायक को मरवा डालूगा ।

उस राजा के पास चार 'बीर' थे जिनकी सहायता से वह जब चाहता इच्छानुसार वेष बना लेता था । राजा साँप बनकर विक्रमादित्य के डेरे पर पहुँचा और विक्रमादित्य के जूते मे छिपकर बैठ गया । उधर विक्रमादित्य की स्त्री ने अपने पति से उदासी का कारण पूछा तो विक्रमादित्य ने सारी घटना कह सुनाई और बोला कि राजा तो रानी की ही बात मानेगा और मुझे अवश्य प्राण-दण्ड देगा । रानी बोली कि तुम भी तो राजा विक्रमादित्य हो, तुमने भी तो बहुत फैसले किये है । तुमने तो राजा की इज्जत बचाई है, यदि यहाँ का राजा मूर्ख तथा अन्यायी नही होगा तो तुम्हे प्राण-दण्ड के बजाय पुरस्कार देगा । राजा साप बना हुआ सारी बातें सुन रहा था । उसने जान लिया कि यह राजा विक्रमादित्य है और इसने आज मेरी इज्जत बचाई है ।

दूसरे दिन उसने पहरेदार को दरबार में बुलाया। पहरेदार डर रहा था, लेकिन राजा ने उसे धैर्य बंधाया। फिर उसने दरबारियों से पूछा कि यदि कोई आदमी किसी की इज्जत बचाये तो उसे क्या देना चाहिए? आज इस पहरेदार ने मेरी इज्जत बचाई है, अत: इसे क्या पुरस्कार देना चाहिए?

किसी ने कहा कि इसे दो गांव देने चाहिए, किसी ने कहा कि इसे चार गाँव देने चाहिए। राजा ने सोचा कि विक्रमादित्य मुझसे बड़ा राजा है और इसके पास मुझसे अधिक गांव हैं तब भला इसे दो चार गांव क्या दिये जाएं। अन्त में सोच विचार कर उसने अपनी बेटी का विवाह राजा विक्रमादित्य से करने की घोषणा कर दी।

विवाह हो गया। कुछ दिन बाद विक्रमादित्य ने सोचा कि मैं देश निकाला मांगने के लिए निकला हूँ, लेकिन यहाँ तो अपने घर से भी अधिक आनन्द में हूँ, अत: यहाँ से अन्यत्र चलना चाहिए। उसने राजा से कहा कि मैं अब दूसरी जगह जाऊँगा। राजा ने कहा कि आपको जो वस्तु चाहिए वह मुझसे माँग लें। विक्रमादित्य ने कहा कि कल मांगूगा। विक्रमादित्य ने नई रानी से यह बात कही तो उसने कहा कि मेरे पिता के पास चार 'वीर' हैं, तुम वे ही मांग लेना। लेकिन पहले उसे वचनबद्ध कर लेना नहीं तो वह किसी हालत में अपने 'वीर' नहीं देगा। विक्रमादित्य ने वैसा ही किया। दूसरे दिन जब राजा ने विक्रमादित्य से मांगने के लिए कहा तो विक्रमादित्य ने राजा से 'वाचा' ले लिया। वाचा लेने के बाद विक्रमादित्य ने राजा से कहा कि अपने चारों वीर मुझे दे दीजिए। विक्रमादित्य की बात सुनकर राजा भौंचक्का सा रह गया। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि विक्रमादित्य को उसके वीरों का पता भी है। फिर उसने सोचा कि हो न हो उसकी बेटी ने ही यह भेद विक्रमादित्य को बतलाया है। उसने विक्रमादित्य से कहा कि मैं तुम्हें वचन दे चुका हूँ इसलिए वीर तुम्हें दूंगा, लेकिन पहले वीरों से पूछ लेना है कि वे तुम्हारे पास जाना भी चाहते हैं या नहीं। फिर उसने चारों वीरों को बुलाकर पूछा। वीरों ने

कहा कि हम एक ही शर्त पर इसके साथ जाने को तैयार है कि राजा के पहले हमारा नाम आये। अब तक यह राजा विक्रमादित्य है आज से वीर-विक्रमादित्य कहलाये। विक्रमादित्य ने वीरो की शर्त स्वीकार करली और राजा ने चारो वीर उसे दे दिये।

राजा अपनी दोना रानिया और चारा वीरो को लेकर वहाँ से चल पडा। चलते-चलते वह चौबोली के नगर म आया। राजा कुए पर बैठा था, इतने में चौबोली की दासी कुए से पानी लेने के लिए आई। उसने कुए से कहा कि कुए! चौबोली के नाम उछल जा। कुए का पानी उमड-कर बाहर आ गया, दासी ने पानी भर लिया और चली गई। राजा इस बात को देखकर चकित रह गया। उसने अपने वीरा से पूछा तो वीरो ने कहा कि इस गाव की राजकुमारी का नाम चौबोली है, वह बडी चतुर चालाक है, उसका प्रण है कि जो उसे रात भर में चार बार बुलवा देगा उसी से वह विवाह करेगी। न बुलवा सकने पर वह उस आदमी को कैद में डलवा देती है। उसके नाम से कुए का पानी भी ऊपर उठ आता है। राजा ने वीरो से कहा कि मैं चौबोली से अवश्य शादी करूगा। वीरो ने कहा कि यह काम इतना आसान नही है इसमें धैर्य और युक्ति से काम लेना पडेगा।

दूसरे दिन चौबोली की दासी पानी भरने के लिए आई तो वीरा ने विक्रमादित्य से कहा कि हम कुए की सतह पर लेट जाएगे और पानी नही उछलने देंगे। तुम दासी से कह देना कि अब तक कुआँ चौबोली के नाम से उछलता था लेकिन अब से यह वीर विक्रमादित्य के नाम से उछलेगा। दासा ने कई बार कुए से कहा लेकिन कुआँ नही उछला, तब विक्रमादित्य ने कुए स कहा कि कुए, विक्रमादित्य के नाम से उछलो। तुरन्त ही पानी ऊपर आ गया। दासी आश्चर्यचकित होकर लौट गयी और उसने चौबोली से सारी घटना कह सुनाई।

इधर वीरा ने विक्रमादित्य से कहा कि हम चौबोली को अवश्य बुलवा देंगे, लेकिन इससे पहले तीन परीक्षाए और होगी। जब तुम चौबोली के

महल में जाओगे तो तुम्हारे आगे एक बकरा खड़ी की जाएगी और तुम से कहा जाएगा कि इस बकरी का दूध निकालो। बकरी का दूध तुम कदापि नहीं निकाल सकोगे, अतः तुम केवल बकरी के थन पकड़ कर बैठ जाना हम स्वयं उस बरतन को दूध से भर देंगे। फिर एक शेर तुम्हारे सामने दिखलाई पड़ेगा। वह शेर यद्यपि देखने में असली शेर के जैसा ही होगा, लेकिन वास्तव में वह नकली शेर है, तुम उससे जरा भी भय न करना और निधड़क आगे बढ़ जाना। आगे जाने पर तुम्हें पानी का एक दरिया दिखलाई पड़ेगा लेकिन वास्तव में वह उस बड़े नागे की करामात है जो चौबोली ने अपने महल पर लगा रखा है। पानी की एक बूंद भी वहाँ नहीं है अतः तुम निडर होकर आगे चले जाना। चौबोली तुम से कदापि नहीं बोलेगा हम चारों उसके ढालिए, दीपक, झारी और हार में अदृश्य होकर घुस जाएंगे और चौबोली को बोलने के लिए विवश करेंगे।

राजा वीरों की बतलाई हुई युक्तियों के सहारे चौबोली के महल में बिना किसी बाधा के पहुँच गया। रात्रि का पहला पहर हुआ। राजा ने चौबोली को बुलवाने का हर कोशिश की, लेकिन उसने होठ भी नहीं हिलाया तब राजा ने पलंग से कहा कि ढालिए, तू ही कुछ बोल जिससे यह रात तो किसी प्रकार कटे। ढालिया बोला कि राजा! तू यहाँ कहाँ आ फँसा? यह औरत बड़ी क्रूर है। ढालिये का बोलना देख चौबोली को बड़ा आश्चर्य हुआ। ढालिया बोला कि राजा, तुम्हें एक बात कहता हूँ जिससे तुम्हारी एक पहर रात कट जायगी। यों कहकर ढोलिये ने अपना कहना प्रारंभ का —

एक साहूकार के लड़के और राजकुंवर दोनों में बड़ी दोस्ती थी। छुटपन से ही वे साथ रहते थे और उन्होंने आपस में तय कर लिया था कि दोनों में से जो भी पहले अपनी ससुराल जाय वह दूसरे को साथ ले जाये। संयोग से साहूकार का लड़का पहले मुकलावा करके लाने के लिए अपनी ससुराल चला। उसने राजा के कुंवर को भी साथ चलने के लिए कहा। राजा का कुंवर बहुत सारे घुड़सवार आदि साथ लेकर राजसी ठाटबाट

से साहूकार के लडके के साथ चला । साहूकार के लडके को अब यह चिन्ता हुई कि यदि कुंवर का स्वागत-सत्कार उसके योग्य नहीं हुआ तो बहुत शर्म की बात होगी । रास्ते में देवी का एक मन्दिर आया । साहूकार के लडके ने मन्दिर में जाकर देवी से यह मनौती मानी कि यदि राजकुंवर का स्वागत-सत्कार बहुत उत्तम हो जाएगा तो मैं लौटती बार अपना सिर तुम्हारे चरणों में चढा दूगा ।

साहूकार के लडके की ससुराल वाले बहुत सपन्न व्यक्ति थे और देवी की कृपा होने से राजकुमार तथा उसके सभी साथियो का बहुत ही बढिया आतिथ्य हुआ । लौटती बार राजकुमार रास्ते भर उसी की प्रशसा करता रहा । जब वे लोग देवी के मन्दिर के पास पहुँचे तो साहूकार के लडके ने कहा कि मैं देवी के दर्शन करके अभी आता हू । साहूकार के बेटे की मुराद पूरी हो गई थी अत उसने जाते ही तलवार से अपना सिर काटकर देवी को चढा दिया । जब बहुत देर हो गई और वह नहीं लौटा तो राजकुमार भी वहाँ पहुँच गया । राजकुमार वहाँ का दृश्य देखकर सकपका गया और उसने सोचा कि मित्र की हत्या का लाछन मुझे लगेगा, अच्छा यही है कि मैं भी यही अपना सिर काटकर देवी के चरणो म रख दू । राजकुमार ने भी अपना सिर काटकर देवी को चढा दिया । जब वे दोनों नहीं लौटे तो साहूकार के बेटे की बहू भी वहाँ गई । दोनो के कटे सिर देखकर उसने सोचा कि अब मुझे जीकर क्या करना है सो वह भी तलवार से अपना सिर काटने को उद्यत हो गई, लेकिन तभी देवी ने उसे रोकते हुए कहा कि तू कटे हुए सिर धडो पर जोड दे दोनो जीवित हो जाएगे । उसने जल्दी स सिर उठाये और दोनों धडो पर रख दिए । दोनो जीवित हो गये । लेकिन जल्दी मे उसने अपने पति का सिर तो राजकुमार के धड से जोड दिया और राजकुमार का सिर अपने पति के धड से जोड दिया । अब राजा तुम यह बतलाओ कि वह किस की औरत हुई, सिर वाले की या धड वाले की ? यह सुनकर विक्रमादित्य बोला कि स्त्री पर तो धड वाले का ही अधिकार होना चाहिए क्योकि उसके शरीर पर सिर ही तो

दूसरा है शेष सारा शरीर तो उसी का है। विक्रमादित्य की बात सुनकर चौबोली को तैश आ गया। उसने राजा से कहा कि तुम कहते हो कि मैं राजा वीर विक्रमादित्य हूं, और मैंने अपने जीवन में न्याय ही किया है, बस, देख लिया तुम्हारा न्याय, औरत धड़ वाले की नहीं सिर वाले की होगी, क्योंकि सिर के बिना धड़ का क्या मोल है? विक्रमादित्य ने कहा कि ऐसा ही सही, तुम बोल गई यही मेरे लिए काफी है। फिर विक्रमादित्य ने नगारची से कहा —

चौबोली बोली पैलें बोल।
मार रे नगारची ढोल पर चोव॥

नगारची ने ढोल पर डंका लगा दिया।

फिर राजा ने चौबोली की झारी (सुराही) से कहा कि एक पहर रात तो ढालिये ने कटवा दी, एक पहर रात तू कटवा। प्रारम्भिक बातचीत के बाद झारी ने कहना शुरू किया —

एक साहूकार और राजा के बेटे में बड़ी दोस्ती थी। उन्होंने छुटपन में ही यह प्रतिज्ञा करली थी कि विवाह के बाद जिसकी भी औरत पहले आये वह पहली रात अपने पति के मित्र के पास रहे। संयोग से साहूकार के बेटे की बहू पहले आई। रात को दोनों पति-पत्नी महल में गये तो पति उदास मुंह चुपचाप बैठ गया। कुछ देर तो बहू भी चुपचाप बैठी रही, लेकिन फिर उसने अपने पति से पूछा कि सुहाग रात को ही आप इतने उदास क्यों है? या तो मैं आपको पसंद नहीं आई या मेरे पिता ने जो दहेज दिया है वह आपको नहीं भाया? तब साहूकार के बेटे ने अपनी पत्नी को सारी बात बतलाई। इस पर वह बोली कि आप इसकी चिंता न करें, मैं सारी रात आपके दोस्त के पास रह आऊंगी। यों कह कर वह मिष्ठान्न का थाल सजाकर और हाथ में चौमुखा दीया लेकर राजा के कुंअर के पास चली। रास्ते में उसे चार चोर मिले। चोरों ने उसे पकड़ लिया। उन्हें तो सारा और सोना दोनों मिल गए। स्त्री ने उनसे कहा कि मैं अपने पति का एक काम सिद्ध करने जा रही हूं आते वक्त तुम जैसा कहोगे

वैसा ही कर दूंगी । पहले तो चोरा ने उसकी बात नहीं मानी, लेकिन उसके अधिक विश्वास दिलाने पर चोरा ने उसे जाने दिया । आधी रात को साहूकार के बेटे की बहू राजकुअर के महल में पहुँची । उसे एकाएक सामने देखकर वह बोला कि देवी ! तू कौन है ? बचपन का वायदा उसे याद नहीं रहा था । साहूकार के बेटे की स्त्री ने उसे अपने पति की कही हुई सारी बात कह दी । राजकुमार को उसकी बात सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई और उसने अपने मित्र की स्त्री को चुनरी उढाकर अपनी बहिन बना ली तथा उसका थाल हीरे-मोतियों से भर कर उसे सम्मान सहित लौटा दिया । साहूकार के बेटे की स्त्री वहां से चलकर चोरों के पास आई और उसने चोरों से कहा कि अब चाहो तो मुझे लूट लो । चोरों ने उससे पूछा कि तू कहाँ गई थी और क्या करके आई है ? यह हमें सच-सच बतला । साहूकार के बेटे की स्त्री ने आदि से अन्त तक की सारी बात उन्हें बतला दी । चोरों ने सोचा कि जब राजकुवर ने ही इसे बहिन बना कर चुनरी उढा दी तो हम भी इसे अपनी बहिन ही बनायेंगे । यों आपस में सलाह करके उन्होंने अपने पास जो कुछ भी था सो देकर उसे अपनी बहिन बना ली और उसे अपने घर जाने को कह दिया । अब राजा तुम यह बतलाओ कि इसमें भलमनसी किसकी रही चोरों की या राजा के लडके की ? राजा ने कहा कि भलमनसी चोरों की रही । इस पर चौबोली फिर झुंझलाकर बोली कि भलमनसी तो राजा के कुअर की रही क्योंकि उसने पत्नी रूप में प्राप्त हो सकने वाली सुन्दरी को बहिन बना लिया । विक्रमादित्य ने कहा कि जैसा तुम कहती हो वही सही । यों कह कर उसने नगारची से कहा —

चौबकली बोली दूजं बोल,
मार रे नगारची ढोल पर चोव ।

नगारची ने ढोल पर दूसरी बार डंका लगाया ।

दो पहर रात बात गई तो विक्रमादित्य ने दीये से कहा कि रात्रि का तीसरा पहर अब तू ही कटवा दे । तब दीपक ने कहना शुरू किया —

एक ब्राह्मण और एक साहूकार का लडका आपस में दोस्त थे । जब

वे दोनों युवा हो गए तो अपनी-अपनी बहुओं को लाने के लिए साथ-साथ ससुराल चले। जब वे दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँचे कि जहाँ से उनके रास्ते अलग अलग होते थे, तो दोनों ने इकरार किया कि जो पहले बहू को लेकर यहाँ आये वह दूसरे के आने तक यहीं उसकी बाट देखे। यों कहकर वे अलग-अलग हो गये।

ब्राह्मण का लड़का अकेला था, किन्तु साहूकार के लड़के के साथ एक नाई था। साहूकार का लड़का ससुराल पहुँचा तो उसका बहुत सत्कार हुआ। नाई चिलम पर आग रखने के लिए हवेली में गया तो स्त्रियों ने आपस में बातचीत की। एक ने पूछा कि खातिरदारी नाई की अधिक होनी चाहिए या जँवाई की? दूसरी ने कहा कि यदि जँवाई की खातिरदारी कम भी हो तो भी वह जाकर किसी से कुछ कहेगा नहीं। इसलिए नाई की खातिरदारी ही अधिक होनी चाहिए, जिससे वह सबके सामने बड़ाई करे। ऐसा ही किया गया। जँवाई बाबू को किसी ने पूछा भी नहीं और नाई की बड़ी खातिरदारी हुई। इससे साहूकार के लड़के को बड़ा रंज हुआ। उसने अपने पिता की ओर से एक चिट्ठी लिखी कि घर में तक-लीफ हो रही है, इसलिए बहू को फौरन भेज दिया जाए। दूसरे दिन सवेरे ही साहूकार के लड़के ने अपने श्वसुर को चिट्ठी दे दी और श्वसुर ने उसी वक्त दामाद और बेटी को रथ में बिठलाकर विदा कर दिया। रास्ते में नाई साहूकार के लड़के से छेड़खानी करता जाता था कि जँवाई बाबू की खातिरी अधिक हुई है या नाई की? इससे साहूकार के लड़के का क्रोध और भी बढ़ गया। चलते चलते वे एक तालाब पर पहुँचे। बहू ने जान लिया कि उसका पति बिल्कुल भूखा है। इसलिए उसने एक थाल में मिठाई भर कर थाल उसके सामने रखा, लेकिन वह तो बहुत नाराज था। वह अपनी बहू को वहीं छोड़ कर और नाई को साथ लेकर चला गया। बहू ने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की लेकिन वह नहीं रुका। जब वे दोनों चले गये तो बहू ने रथ के बैलों से कहा कि जहाँ से आये हैं वहीं चलो। रथ वापिस चल पड़ा, लेकिन बैल दूसरे रास्ते पड़ गए और रथ एक

अनजान नगर मे पहुँच गया। वहा साहूकार की लडकी फूला मालिन के घर ठहर गई। मालिन रोज बादशाह के लिए हार गूथ कर ले जाया करती थी। उस दिन साहूकार की लडकी ने हार गूथा तो उसे देख कर बादशाह बडा प्रसन्न हुआ। बादशाह ने कहा कि मैं इस हार गूथने वाली को देखना चाहता हूँ। मालिन ने बहुत कुछ छिपाने की चेष्टा की, लेकिन बादशाह नहीं माना।

साहूकार की लडकी को देखकर बादशाह उस पर मोहित हो गया। उसने साहूकार की लडकी से शादी का प्रस्ताव किया। साहूकार की लडकी ने कहा कि मेरा पति मुझे छोड गया है, यदि छ महीने मे वह लौट कर आ जाएगा तो मैं उसके साथ चली जाऊँगी और यदि वह छ महीने म नही आया तो मैं तुमसे शादी कर लूगी। लेकिन तब तक मेरे लिए एक अलग महल बनवा दीजिए। बादशाह ने कहा कि तू ही अपनी पसन्द का महल बनवाले। यो कह कर उसने महल बनवाने का प्रबन्ध कर दिया। साहूकार की स्त्री मरदाने वेष म रह कर महल बनवाने लगी।

उधर साहूकार का लडका आगे बढा तो उसे पूर्व निश्चित स्थान पर ब्राह्मण का लडका प्रतीक्षा करता हुआ मिला। साहूकार के लडके ने उससे पूछा कि तुम्हारी स्त्री कहा है? ब्राह्मण के लडके ने उत्तर दिया कि वह कुलटा थी, अत उसे नही लाया, वही छोड आया। फिर उसने साहूकार के लडके से पूछा कि तुम्हारा स्त्री कहा है? इसपर उसने कहा कि मैं उसे छोड आया हूँ और फिर उसने अपनी पत्नी को छोडने का कारण भी बतला दिया। ब्राह्मण ने कहा कि तुम भी कैसे पगले हो जो इतनी सी बात पर बहू को छोड आये। इसमे भला उस का क्या दोष था? अब वे तीनो उसे ढूढने निकले और घूमते-फिरते उसी नगर म जा पहुँचे। नाई ने मरदाने वेष म भी साहूकार के बेटे की बहू को पहिचान लिया। वे तीनों वही काम पर लग गय। बहू ने भी अपने पति को पहिचान लिया। शाम को वह तीनो को अपने घर ले गई और उन्हे खाने के लिए बैठाया। वह तीनो के लिए थाल लाई तो तीनो बार अपनी पोशाकें बदल कर आई। साहूकार के लडके ने

पूछा कि महल का मालिक कहा है ? तब सारा रहस्य खुल गया । साहूकार के बेटे की बहू ने बादशाह से कहा कि मेरा पति आ गया है, अत मैं इसके साथ जा रही हूँ । बादशाह ने भी अपने वचन का पालन किया और उसे जाने दिया । अब राजन्, तुम यह बतलाओ कि इसमे भलमनसी किसकी रही ? राजा बोला कि इसमे भलमनसी तो साहूकार के लडके की ही रही कि उसने अपनी छोडी हुई स्त्री को फिरसे अपना लिया । राजा की बात सुनकर चौबोली फिर चहकी, राजा वीर विक्रमादित्य ! क्या तुम ऐसा ही न्याय करते रहे हो ? इसमे भलमनसी तो वास्तव म साहूकार के लडके की बहू की थी, जो अकारण त्यागी जाने पर भी अपने सत पर कायम रही । तब विक्रमादित्य ने कहा कि तुम जो कहती हो वही सही । फिर उसने नगारची से कहा —

चोबकली बोली तीजो बोल,
मार रे नगारची, ढोल पर चोब ।

अब रात्रि का चौथा पहर आया तो विक्रमादित्य ने चौबोली के हार से कहा कि तीन पहर रात तो बीत गई है अब चौथा पहर तू ही कटवा दे । इस पर हार बोला —

एक ब्राह्मण, एक खाती, एक दर्जी और एक सुनार ये चार दोस्त थे। वे चारा कमाने निकले। रात हो गई तो तीन आदमी सो गये और खाती का लडका पहरा देने लगा। उसने एक पहर तक पहरा दिया और इस बीच उसने एक काठ की सुन्दर पुतली बनाकर खडी कर दी । फिर दर्जी का पहरा आया, उसने पुतली को सुन्दर वस्त्र पहना दिये । दो पहर रात बीत गई तो सुनार का पहरा आया । सुनार ने पुतली को सुन्दर सुन्दर गहना से सजा दी । अन्तिम पहरा ब्राह्मण का आया । उसने देखा कि एक सुन्दर पुतली गहने कपडा से सजी खडी है । ब्राह्मण ने अपने मन्त्र-बल से पुतली म जान डाल दी । सवेरे चारा झगडने लगे । उनम से हर एक यही कहता था कि यह मेरी स्त्री है । अब राजन् ! तुम्ही बतलाओ कि यह किसकी स्त्री बने ? राजा ने कहा कि खाती ने पुतली को बनाया था, इसलिए यह

उसी की स्त्री बननी चाहिए। इस पर चौबोली फिर बोल उठी कि खाती ने उसे जन्म दिया (बनाया) था, अत वह उसका बाप (जनक) बन गया। वर-पक्ष वाले जब व्याहने जाते है तो बहू के लिए गहना ले जाते है। सुनार ने पुतली को गहना पहनाया अत वही उसका पति हुआ। इस पर विक्रमादित्य ने कहा कि यही सही। फिर उसने नगारची को पुकारा —

चोबकली बोली चौथो बोल।
मार रे नगारची ढोल पर चोब॥

चौबोली चार बार बोल चुकी थी अत शर्त के अनुसार राजा वीर विक्रमादित्य से उसका विवाह हो गया। राजा ने सारे कैदियो को मुक्त करा दिया। उसके देशनिकाले की अवधि पूरी हो गई और वह तीनो रानियो को साथ लेकर अपनी नगरी म आ गया।

● करी पण कर कोनी जाणी

एक बादशाह ने सपने मे देखा कि उसके महल पर एक कौआ 'राबडी' खा रहा है। बादशाह ने सबेरे दरबार मे सपने का अर्थ पूछा, लेकिन कोई नही बता सका। तब बादशाह ने वजीर से कहा कि तुम्हे मेरे सपने का अर्थ बतलाना होगा। वजीर ने डर के मारे हा भर ली और तीन महीने की अवधि लेकर घर आ गया।

वजीर के तीन लडकिया थी। उन्हे पढाने के लिए एक उस्ताद आया करता था। वजीर की भूख-प्यास मिट गई थी और वह दिन प्रतिदिन सूखता चला जाता था। एक दिन उस्ताद ने वजीर से इसका कारण पूछा तो वजीर ने बादशाह के सपने की बात उस्ताद से कह दी। उस्ताद बोला कि अवधि पूरी होने पर आप मुझे दरबार मे ले चले। मैं इसका अर्थ बादशाह को बतला दूँगा। उस्ताद के विश्वास दिलाने पर वजीर को आशा बध गई कि यह अवश्य ही बादशाह के सपने का अर्थ ठीक-ठीक बतला देगा।

अवधि समाप्त होन पर वजीर उस्ताद को लेकर दरबार मे गया और बादशाह से बोला कि यह आदमी आपके सपने का अर्थ बतलायेगा। उस्ताद

बेचारे को कुछ पता नहीं था कि सपने का क्या अर्थ है। उसने बादशाह से कहा कि दरबार में एक 'तमोटी' (छोटा तंबू) तनवा दीजिए मैं एक घण्टे उसमें रहूँगा और इसके पश्चात् आपके सपने का अर्थ बतला दूंगा, लेकिन इस एक घण्टे की अवधि में कोई आदमी एक शब्द भी मुंह से न निकाले अन्यथा मैं कुछ नहीं बतलाऊंगा। उस्ताद ने अपने बचने की एक तरकीब निकाली थी, लेकिन बादशाह ने 'तमोटी' तनवा दी और सारे लोगों को बिल्कुल चुप रहने का आदेश दे दिया। जब एक घण्टा बीतने को आया तो बादशाह ने कहा कि तुम्हारा मांगा हुआ समय पूरा हो गया है, अब मेरे सपने का अर्थ ठीक-ठीक बतलाओ अन्यथा तुम्हें सपरिवार घानी में पिलवा दिया जाएगा। उस्ताद ने सोच विचार कर कहा कि हुजूर! आपके सात बेगम हैं, उनमें से एक बेगम चरित्र-भ्रष्ट हो गयी है, बस, यही आपके सपने का अर्थ है। बादशाह ने पूछा कि इसकी परीक्षा कैसे हो तो उस्ताद बोला कि आप बेगमों के महलों का पहरा स्वयं दें और जिस बेगम के महल में आपके मना करने पर भी रात को दीया जल उठे, उस ही आप कुलटा जानें। एक महीने की अवधि में आपको इस बात का पता लग जायेगा।

बादशाह ने ऐलान करवा दिया कि किसी बेगम के महल में दीया न जले और वह स्वयं रात को छुपकर महलों का पहरा देने लगा। एक दिन आधी रात को एक बेगम के महल में अचानक दीया जल उठा। बादशाह छुपे तौर पर महल में गया तो उसने देखा कि पहरेदारों का अफसर बेगम से बातें कर रहा है। कुछ देर बाद बेगम पहरेदार के साथ उसके घर गई और कुछ देर वहां रहने के पश्चात् महल में लौट आई। बादशाह ने छुपकर उनकी सारी करतूत देख ली।

दूसरे दिन बादशाह ने दरबार में आते ही उस बेगम को कहलवाया कि वह शृंगार करके दरबार में आये। पहले तो बेगम ने ना की, लेकिन बादशाह के दुबारा हुक्म देने पर वह शृंगार करके दरबार में आ गई। बादशाह ने उसका पर्दा हटवा दिया और बेगम से कहा कि दरबार में जो

आदमी तुम्हे अच्छा लगे उसका हाथ पकड ले । बादशाह के हुक्म सुनकर रात वाले पहरदार को बड़ी खुशी हुई । वह कही दूर खड़ा था लेकिन किसी बहाने से बेगम के पास तक आ पहुँचा । बेगम तो उसे ढूढ ही रही थी, उसने झट पहरेदार का हाथ पकड़ लिया । तब बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों को चौरंगा करके (हाथ-पाव काटकर) चौराहे पर गाड दो । बादशाह के हुकम का तुरन्त ही पालन हुआ ।

तब बादशाह ने वजीर को हुक्म दिया कि तुम एक बड़ा रजिस्टर लेकर उन दोनों के पास बैठ जाओ और उन दोनो को देखकर लोग-बाग जो कुछ भी कहे उसे रजिस्टर मे दर्ज करते रहो । वजीर रजिस्टर लेकर वहा बैठ गया और उन दोनों को देखकर लोग जो कहते वह लिखने लगा । देखने वालों का ताता लगा था, कोई कुछ कहता, कोई कुछ, वजीर को पलक मारने की फुर्सत न थी ।

उस्ताद को तो बादशाह ने रोक लिया था । उसकी अनुपस्थिति में उसकी औरत वजीर की लडकियो को पढाने आया करती थी । यो वह ठीक वक्त पर आ जाया करती थी, लेकिन आज वह भी बेगम और पहरे-दार का 'तमाशा' देखने लगी थी, अत उसे आने मे देर हो गई । जब वह देरी से आई तो वजीर की लडकियो ने इसका कारण पूछा । उस्ताद की औरत ने उन्हे सारी बात बतलाई । शाम हुई तो तीनो लडकिया भी मर-दाने वेष बना कर और घोडों पर सवार होकर 'तमाशा' देखने चली । उन दोनो की हालत देखकर एक ने कहा, करनी का फल है, दूसरी ने कहा जैसी करी वैसी भरी । इस पर तीसरी ने कहा 'करी तो तो सरी, पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती ।' यो कहकर तीनो चली गई । वजीर ने तीनो की बातें दर्ज की और अन्धेरा हो गया तो उठकर अपने घर आ गया । रजिस्टर उसने बादशाह के पास भेज दिया । बादशाह रजिस्टर को उलटता-पलटता रहा । देखते-दिखाते उसकी नजर वहां पहुँच गई जहा वजीर की तीनो लडकियो की बातें लिखी थीं । बादशाह वहीं रुक गया । उसने वजीर को बुलाकर कहा कि इन तीनो आदमियो को मेरे

सामने हाजिर करो। वजीर ने कहा कि हुजूर! मैं लोगो की बातें लिखने में इतना तल्लीन था कि मैंने किसी को आख उठाकर भी नहीं देखा। लेकिन वह तो शाही हुक्म था। लाचार वजीर फिर तीन महीने की अवधि लेकर घर आ गया। उसका खाना-पीना छूट गया। वजीर की बेटियो ने पूछा तो वजीर ने बादशाह का हुक्म उन्हें सुना दिया। लडकियो ने कहा कि बस इतनी सी बात के लिए क्यो घुले जा रहे हो? हम स्वय ही बादशाह को इसका उत्तर दे देंगी।

जिस दिन तीन महीने की अवधि समाप्त हुई और दरबार लगा उस दिन वजीर की लडकिया उसी प्रकार मरदाने कपडे पहिनकर और घोडा पर सवार होकर दरबार मे गयी और उन्होंने बादशाह से कहा कि वे बातें हमने कही थी। बडी बोली कि मैंने कहा था 'करनी का फल है' दूसरी बोली कि मैंने कहा था 'जैसी करी वैसी भरी' फिर तीसरी बडी मुस्तैदी से छाती ठोककर बोली, 'करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती।' बादशाह को उसके हाव-भाव से यह सन्देह हो गया कि यह पुरुष नहीं लडकी है। अत उसने छोटी लडकी को एकान्त मे ले जाकर पूछा कि सच-सच बतला तू कौन है? वजीर की लडकी ने पहले तो बहुत टालने की चेष्टा की लेकिन अन्त मे बतला दिया कि हम तीनो वजीर की बेटिया हैं। अब बादशाह ने वजीर से कहा कि अपनी छोटी लडकी का विवाह मेरे साथ कर दे। वजीर की इच्छा नहीं थी, लेकिन उसने बादशाह के साथ अपनी छोटी लडकी का विवाह कर दिया।

जब विवाह हो गया तो बादशाह ने नई बेगम के लिए जगल मे एक महल चिनवा कर उसमे बेगम को भेज दिया। महल मे एक भी दरवाजा या खिडकी नहीं रखी गई। सिर्फ एक छोटा सा झरोखा रखा गया। एक बादी नित्य आकर झरोखे मे से बेगम को खाना दे जाती। महल के बाहर पहरा बिठला दिया गया। कुछ दिन तो बेगम बादशाह की राह देखती रही, लेकिन फिर निराश होने लगी। एक दिन उसने महल की दीवार पर लिखा देखा, 'करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती।"

वह समझ गई कि बादशाह ने इसी बात के लिए मुझे यहा कैद किया है। एक दिन उसने अपनी बहिन के नाम एक चिट्ठी लिखी कि अपने घर से लेकर यहा तक सुरग खुदवाई जाए और वह चिट्ठी लेकर झरोखे के पास बैठ गई। किसी राह जाते के साथ उसने वह चिट्ठी अपने बाप के घर भेज दी। वजीर ने अपने घर से लेकर महल तक सुरग बनवा दी। वजीर की छोटी लड़की अपने बाप के घर आ गई और उसने अपनी दासी को महल मे भेज दिया। दासी उसी प्रकार झरोखे से खाना ले लिया करती।

वजीर की लड़की ने दो तीन सेर सोने के बाजरे जितने छोटे-छोटे दाने बनवाये और वह एक फकीर का वेष बनाकर नगर के बाहर अपना धूना धुका कर बैठ गयी। धूने की राख मे उसने सोने के कण मिला दिये। अब जो भी आदमी धूने पर आता फकीर उसे एक मुट्ठी राख धूने मे से उठा कर दे देता और उससे कह देता कि इस राख को पानी मे घोल लेना। पानी मे राख डालते ही सोना अलग हो जाता। नगर भर मे फकीर की बड़ी ख्याति फैल गयी। बात बादशाह तक पहुँची कि एक बडा सिद्ध फकीर आया है। बादशाह भी वजीर को साथ लेकर फकीर के पास पहुँचा। फकीर ने उनकी ओर विशेष ध्यान नही दिया। जब वे जाने लगे तो फकीर ने उन्हे भी एक एक मुट्ठी राख दे दी और उनसे कह दिया कि कल इसी वक्त आना। जब वे चले गये तो फकीर ने शेष लोगों से कह दिया कि कोई भी तीन दिन तक धूने पर न आये, अन्यथा उसे बहुत हानि उठानी पड़ेगी। दूसरे दिन बादशाह और वजीर नियत समय पर आ पहुँचे। बादशाह ने पानी मे राख घोल कर देखी थी और उसमे उसे काफी सोने के दाने मिले थे। बादशाह को निश्चय हो गया था कि यह अवश्य ही कोई करामाती फकीर है।

फकीर ने वजीर से कहा कि तुम भी जाओ। वजीर चला गया और बादशाह बैठा रहा। कुछ देर बाद जब बादशाह जाने को तैयार हुआ तो फकीर ने बादशाह की पीठ पर चार चिमटे कस कर जमा दिये और बोला कि साले जाता कहा है? तुझे तीन दिन यहीं रहना होगा, मैं एक

आवश्यक काम से तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। शाम को मेरी चेली तुम्हारे लिए भोजन लेकर यहा आ जाएगी सो तुम भोजन कर लिया करना। यदि तुम्हे अकेले मे डर लगे तो उसे भी साथ रख लेना। लेकिन खबरदार, जबतक मैं नही आऊँ, यहा से कही मत जाना और न किसी को यहा आने देना। बादशाह ने नतमस्तक होकर फकीर की आज्ञा शिरोधार्य कर ली।

फकीर चला गया। शाम को एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री सोलहा शृगार किये भोजन का थाल लेकर वहा आई। बादशाह ने छककर भोजन किया और फिर धूने पर बैठ गया, लेकिन उसे कलनही पड रही थी। बादशाह का मन चेली को देखकर चलायमान हो रहा था, लेकिन साथ ही फकीर का भय भी बना हुआ था। अन्त मे चेली के सौन्दर्य ने फकीर के भय पर विजय पा ली और दोनो वही सो रहे। जब चेली सवेरे उठ कर जाने लगी तो उसने बादशाह से कहा कि मुझे अपनी कोई पहिचान दे दें, क्योकि मैं तो फकीर के साथ रहती हूँ। आज इस गाव मे हूँ तो कल किसी दूसरे गाव मे। बहुत सभव है फिर कभी तुम्हारे नगर मे आना हो जाए। बादशाह ने अपना दुपट्टा कटार और अँगूठी उसे दे दी। तीसरे दिन फकीर आ गया और उसने बादशाह को छुट्टी दे दी। जाते वक्त फकीर ने बादशाह को धूने मे से उठाकर बहुत सारी राख भी दे दी। बादशाह चला गया तो फकीर ने भी अपनी माया समेट ली और वहा से चलता बना। वह चेली और कोई नही वही वजीर की बेटी थी। उसका काम बन गया था। अब उसने फकीर का वेष त्याग दिया और सुरग के रास्ते महल मे चली गई। बादी को उसने लौटा दिया। नौ महीने बाद उसके लडका हुआ। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर पहरेदारो ने डरते डरते बादशाह को इसकी सूचना दी। बादशाह ने कहा कि महल म परिन्दा भी पर नही मार सकता तब बच्चे के रोने की आवाज कैसे आ सकती है? बादशाह नगी तलवार लेकर महल की ओर चल पडा। दीवार तुडवाकर उसने महल मे प्रवेश किया। इधर बेगम ने बच्चे की उंगली मे बादशाह

की अँगूठी पहना दी, कमर में कटार खोंस दी और उसके गले में बादशाह का दुपट्टा लपेट कर उसे अलग सुला दिया। बादशाह ने बेगम से कड़क कर पूछा कि यह बच्चा कहां से आया, शीघ्र बतला, नहीं तो तेरा सिर अभी धड़ से अलग करता हूँ। बेगम ने कहा कि उधर बच्चा सोया है उसी से पूछ लो, वही सब कुछ बतला देगा। बादशाह ने बच्चे को देखा, दुपट्टा, कटार आदि देख कर भी उसे कुछ ध्यान नहीं आया। उसने बच्चे से कई बार पूछा, लेकिन वह बेचारा क्या जवाब देता? बादशाह गुस्से में भरा फिर बेगम के पास आकर बोला कि हरामजादी वह तो कुछ नहीं बोलता, अब या तो तू सही उत्तर दे अन्यथा अभी तेरा काम तमाम करता हूँ। इस पर बेगम ने तुनक कर कहा कि वह तो कुछ नहीं बोलता लेकिन क्या तुम्हारे भी हिये की फूट गई है? दुपट्टा कटार और अंगूठी जो बच्चा पहिने हुए हैं वे किसके हैं? बादशाह कुछ याद करता हुआ-सा बोला कि वे हैं तो मेरे ही लेकिन वे तो मैंने उस फकीर की चेली को दिये थे, तुम्हारे पास कहां से आ गये? इस पर बेगम फिर बोली कि तुम्हारी पीठ पर जो चिमटे मैंने लगाये थे वे तो तुम नहीं भूले होगे? तुमने इस महल की दीवार पर जो यह लिखवाया है, करी पण कर कोनी जाणी, करती तो करके दिखा देती। सो मैंने तुम्हें यही करके दिखलाया है। बादशाह की गर्दन झुक गई और वह सम्मान के साथ वजीर की बेटी को अपने महल में ले गया।

● वीर सयमराय

संवत १२०० के लगभग महाराज पृथ्वीराज चौहान ने माहुवा पर चढ़ाई की। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। स्वयं महाराज पृथ्वीराज घायल और मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े। उस समय गीधा ने महाराज के नेत्र अपनी चोंचों से निकालने चाहे। वीरवर सयमराय भी उनसे थोड़ी ही दूरी पर घायल हुए पड़े थे उन्होंने यह दृश्य देखा तो उनसे रहा नहीं गया। अधिक घाव लगने के कारण वे उठ तो नहीं सके, लेकिन वहीं

से अपने शरीर से मास काट-काट कर गीधा के पास फेंकने लगे, जिससे गीध महाराज के नेत्रो को छोड कर उधर लग जायें। वीरवर सयमराय की प्रशसा मे यह दोहा अत्यन्त प्रसिद्ध है—

> गोधन को पल भख दियें, ध्रप के नैन बचाय।
> सं देहो वैकुण्ठ में, गये जु सयम राय॥

● महाराजा पद्मसिंह

बीकानेर महाराज कर्णसिंह के पुत्र पद्मसिंह बड़े वीर थे। जब बादशाह औरगजेब दक्षिण विजय के लिए गया तो पद्मसिंहजी व उनके छोटे भाई मोहनसिंहजी भी उनके साथ थे। मोहनसिंह का कोतवाल से हिरन के लडाने पर कुछ विवाद हो गया। मोहनसिंह को कोतवाल ने अकेले मे मार डाला और फिर स्वय अपनी जान बचाने के लिए दरबार म जा बैठा। इधर जब पद्मसिंह जी को इस बात का पता चला तो वे उसी वक्त दरबार म गये और वहीं भरे दरबार म कोतवाल का सिर धड से उडा कर अपने भाई की मृत्यु का बदला लिया। इसी बात को लेकर पद्म सिंह जी की प्रशसा मे निम्न दोहा कहा गया है जो बहुत प्रसिद्ध है—

> एक घडी आलोच, मोहण रे करतो मरण।
> सोह जमशरो सोच, करतो हि जातो करणवत॥

● ठाकुर केसरी सिंह

बीकानर के महाराज जोरावर सिंहजी के समय में जयपुर नरेश अमय सिंहजी ने बीकानर पर घेरा डाला। इस पर बीकानेर महाराज ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंहजी स सहायता मागी। उन्होंने एक दोहा जयपुर नरेश को लिखा—

> अभो ग्राह बीकाण गज, मारू समंद अथाह।
> गरुड छाडि गोविन्द ज्यू, सहाय करो जयसाह॥

अर्थात् मरुस्थल रूपी अथाह समुद्र में बीकानेर रूपी हाथी को अभय

सिंह रूपी ग्राह ने पकड रखा है। हे जयसिंह, गरुड को छोडकर भगवान ने जैसे हाथी को बचाया था—उसी शीघ्रता से आकर हमारी सहायता कीजिए।

इस पर जय सिंहजी ने एक बड़ी फौज लेकर जोधपुर पर चढाई कर दी। अमरसिंहजी को खाली हाथ जोधपुर लौटना पड़ा। उधर जयसिंहजी की फौज बहुत बडी थी और उनके पास भारी तोपखाना था अत. अमरसिंह जी ने बिना लड़े ही कुछ दे, दिलाकर जयसिंह को वापिस किया।

जयसिंहजी की फौज बिना लड़े ही वापिस चल पडी। मार्ग मे मरारी का ठिकाना पड़ा। फौज के लोग गर्वपूर्वक आपस मे बातें करते जाते थे कि मारवाड़ के लोग बड़े कायर हैं जो उनसे तोपें खाली नही करवाई गई और हम अपनी भरी की भरी तोपें वापिस लिये जा रहे हैं। उस वक्त मरारी के ठाकुर केसरीसिंह थे। उनसे यह ताना नही सहा गया। वे अवसर पाकर श्री गोविन्ददेवजी की सवारी के हाथी को अपने किले मे ठेलकर ले गये और किले का दरवाजा बन्द कर लिया। महाराज सवाई जयसिंह ने उन्हे बहुत समझाया, लेकिन वे नही माने। निदान किले की दीवारो को तोडने के लिए जयपुर वालो को तोपें चलानी पडी और ठाकुर केसरी सिंहजी वीरतापूर्वक लड़कर वही कट मरे।

जब महाराज अमरसिंहजी ने यह बात सुनी तो उन्होंने कहा कि इतनी बडी फौज से लड़ने मे ठाकुर की कौन सी बुद्धिमानी थी? इस पर एक चारण ने महाराज से कहा कि नही अन्नदाता, केसरीसिंह अमर हो गये हैं, उन्होंने मारवाड़ के मुह पर सदैव के लिए कालिख नही पुतने दी.—

केहरिया करनाल, जुड़तो नहँ जयसाह सू।
आ मोटी अवगाल, रहती सिर मारू धरा॥

● जगदेव पँवार

धारा नगरी से एक ब्राह्मण कमाने के लिए प्रात काल ही चला। नगर से बाहर निकला तो उसे सामने से धारा नगरी का राजा उदयदीप

आता दिखलाई पड़ा । राजा को देखते ही ब्राह्मण का माथा ठनका और वह वहीं से लौटने लगा । राजा भी ब्राह्मण की बात को ताड़ गया । उसने ब्राह्मण से पूछा कि तुम वापिस क्यों चल पड़े ? ब्राह्मण ने टालने की बहुत चेष्टा की लेकिन राजा के अधिक पूछने पर ब्राह्मण ने कहा कि महाराज, मैं कमाने के लिए जा रहा था, लेकिन सामने निपुत्र राजा के दर्शन हो गये, यह अपशकुन हुआ, अतः घर लौट रहा हूँ । राजा को ब्राह्मण की बात सुनकर बड़ा दुःख हुआ । वह उसी वक्त अपने महल में आया । राजा ने सारा राज-काज अपने मंत्री को संभला दिया और स्वयं घोड़े पर सवार होकर उत्तराखंड की ओर चल पड़ा । राजा चलते-चलते एक बियाबान जंगल में पहुँच गया । वहां गुरु गोरखनाथजी बारह वर्षों की समाधि लगाये बैठे थे । राजा प्रणाम करके महात्मा के आगे बैठ गया । तीन दिन तक राजा वहीं बैठा रहा । तीन दिन बाद योगी की समाधि पूरी हुई और उसने अपने नेत्र खोले । राजा को सामने देखकर योगी ने कहा कि राजन्, तुम जिस प्रयोजन से आये हो वह मैं जानता हूँ । सामने जो आम का वृक्ष दिखलाई पड़ रहा है, वहां जाकर वृक्ष पर एक तीर मारो, दो आम गिर जाएंगे उन्हें लेकर यहां आ जाओ । राजा ने जा कर तीर मारा तो दो आम धरती पर गिर गये । राजा ने लालचवश फिर एक तीर मारा, लेकिन इस बार धरती पर गिरे दोनों आम भी वृक्ष पर चले गये । राजा गुरु के पास आया और उसने सारी बात गुरु से कही । गुरु ने कहा कि तुमने लालच किया, इसी से दोनों आम वृक्ष पर फिर जा लगे । अब लालच न करना । इस बार एक ही तीर मारना । राजा ने वैसा ही किया और आम लेकर गुरु के पास आ गया । गुरु गोरखनाथ ने दोनों आमों में बारह-बारह हाथियों का बल भर दिया और उन्हें राजा को देते हुए कहा कि इन्हें ले जाकर अपनी दोनों रानियों को दे देना, तुम्हारे दो पुत्र हो जाएंगे । राजा आम लेकर अपने नगर को लौट पड़ा ।

राजा इंद्रदीप के दो रानियां थीं, एक को सुहाग था तथा दूसरी को दुहाग था । राजा ने एक आम सुहागिन रानी को दिया तथा दूसरा

दुहागिन को। सुहागिन रानी ने उपेक्षा से आम को उठाकर आले में रख दिया कि आम खाने से भी कहीं बेटे पैदा होते हैं लेकिन दुहागिन रानी ने राजा के हाथ से आम पाया तो उसने अपने भाग्य को सराहा और उसने नहा धोकर आम खा लिया। तीसरे दिन राजा फिर सुहागिन रानी के महल में पहुँचा तो रानी को आम की बात याद आयी। रानी ने आम खा लिया लेकिन आम की करामात तब तक खत्म हो चुकी थी। दोनों रानियां गर्भवती हो गई।

इधर राजा उदयदीप को दिल्ली के बादशाह का बुलावा आ गया तो वह अपने सरदारों के साथ दिल्ली चला गया।।

नौ महीने बाद दोनों रानियों के दो लड़के हुए। पहले दुहागिन रानी के लड़का हुआ जिसका नाम 'जगदेव' रखा गया, फिर सुहागिन रानी के कुंवर हुआ, उसने अपने कुंवर का नाम 'रण धवल' रखा। सुहागिन रानी ने घुड़सवारों को बधाई का संदेश देकर दिल्ली भेजा, लेकिन दुहागिन रानी के पास कुछ था नहीं, अतः उसने एक साधारण हरकारे को राजा के पास भेजा। घुड़सवारों ने जाकर राजा उदयदीप को सुहागिन रानी के कुंवर होने की बधाई दी। राजा ने प्रसन्न होकर सारा राजपाट उसके नाम कर दिया। कुछ दिनों बाद दुहागिन का हरकारा राजा के पास पहुँचा और उसने राजा को बधाई का संदेश देते हुए कहा –

> द्वापर जुग की बात साल एक बात इकाणू।
> चैतमास चतरदसी वार आदीत बखाणू।
> राज उदिया दीप महर में उदो सवायो।
> जलम लियो जगदेव पूर नखतर जस पायो।
> राजा उदियादीप घर बटै बधाई बो घणी।
> औतार इन्द घर उतर्‌यो दल थमण धारा धणी।

संदेश सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन उसने हरकारे से कहा कि मैं तो सारा राजपाट 'रण धवल' के नाम कर चुका हूँ। फिर भी

राजा ने दुहागिन रानी का 'पेटिया' बन्द दिया तथा उसे और भी कई छोटी-मोटी सुविधाएं दे दी।

दोनो कुंअर बड़े होने लगे। जगदेव बारह हाथियो का बल लेकर जन्मा था, अत वह बचपन मे ही बहुत बली था, लेकिन 'रणधवल' साधारण लड़को की तरह ही था। अपने पिता की अनुपस्थिति म जगदेव गद्दी को सलामी देने जाया करता। जगदेव बचपन से ही सवा मन की साग अपने पास रखता था। जब वह सलामी देने जाता तो साग को धरती पर मारता। पूरी की पूरी साग धरती मे समा जाती, सिर्फ दो अगुल साग बाहर रहती। लौटते वक्त जगदव उसे 'चिमटी' (अगूठे और तर्जनी ऊँगली की पकड़) से खीच कर निकाल लिया करता। 'रणधवल' ने जाकर अपनी मा से सारी बात कही और बोला कि यह जगदेव कभी न कभी मुझे मार डालेगा। दूसरे दिन रानी ने लोहे के सात मोटे तवे उस स्थान पर गड़वा दिये। जगदेव ने साग मारी तो वह सातो तवा को छेदकर उसी प्रकार जमीन मे समा गयी। जाते वक्त जगदेव ने साग निकाली तो सातो तव साग म पिरोये हुए साथ ही निकल आये। यह देखकर रणधवल को और भी भय हो गया। उसने फिर जाकर अपनी मा स सारी बात कही। रानी ने कहा कि तुम डरो मत, तुम्हारे पिता को आने दो, मैं सारा बन्दोबस्त कर दूँगी।

बारह वष पूरे होने पर राजा उदयदीप अपनी नगरी को आया। जब वह नगर के समीप पहुँचा तो अचानक उसकी उँगली म भयकर पीड़ा होने लगी। राजा सीधा सुहागिन रानी के महल मे गया, लेकिन उसे चैन नही था पीड़ा बहुत अधिक थी और उसे किसी करवट कल नहीं पड़ती थी। सुहागिन रानी की जीभ में 'अमी' थी और वह राजा की उँगली अपने मुह में लेकर चूसने लगी। राजा को इससे शान्ति मिली और उसे नींद आ गई। सवेरे जब राजा उठा तो भला चगा था। राजा ने प्रसन्न होकर रानी से कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो वह माँगो। रानी ने राजा से वचन ले लिया और वचन लेकर उसने जगदेव के लिए बारह वष का 'देसूटा' (देश निकाला) माँग लिया।

नृपत वचन नादान राय सें आखै राणी ,
मेरो धवल अनाथ बसत ना सकै विराणी
या सें घवल वडो, जगदेव मोडमन धारालेयै
कय विरोध राणी अखै, सहना लिखो सनेह नें
उदल भान देसूटो जगदेव में ।

रानी की बात सुनकर राजा को बडा दुःख हुआ। अपने वीर पुत्र को देखने की उसे बडी इच्छा थी, लेकिन वचनबद्ध होने के कारण वह लाचार था। राजा ने जगदेव के लिए काला घोडा और काले वस्त्र किले के फाटक पर लगा दिये। उधर जगदेव को भी पिता के दर्शन करने की बडी लालसा थी, वह बडी उमग से पिता के दर्शन करने के लिए चला, लेकिन जब किले के फाटक पर उसने अपने लिए काला घोडा बधा और काले वस्त्र टगे देखे तो उसकी सारी लालसाओं पर पानी फिर गया। 'देसूटा' स्वीकार करते हुए उसने सबको सम्बोधित करते हुए कहा—

काला वस्तर किया कस्यो तुरग ताजो कालो,
छत्री म्हाने दे दियो देस निकालो ।
मात पिता सबही खडे, सभी खडो सिरकार,
लूल के मुजरो मानियो , जगदेव तणी जुहार ।

जगदेव वहाँ से चलकर फूल माटी' की राजधानी मे आया। फलमाटी ने जगदेव का बहुत सम्मान किया और उसने अपनी लडकी फुलवादे का विवाह जगदेव के साथ कर दिया। कुछ दिन वहाँ रह कर जगदेव रानी को साथ लेकर कन्नौज की ओर चल पडा। कन्नौज का राजा जयचन्द बडा वीर था तथा दलाँ पाँगलो राजा जयचन्द' के नाम से उसकी ख्याति थी। जगदेव ने देश निकाले के शेष दिन वही पूरे करने का विचार किया और रानी सहित घोडे पर चढकर कनौज के रास्ते चल पडा।

चलते चलते दोनो एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से दो रास्ते फटते थे। जगदेव ने जगल मे बकरी चराते वाले एक ग्वाले से पूछा कि कौन सा रास्ता कन्नौज को जाता है ? ग्वाले ने कहा कि दोनो ही रास्ते कनौज को

जाते हैं, लेकिन एक रास्ता तीन दिन का है और दूसरा छ महीने का। छ महीने वाला रास्ता निरापद है जब कि तीन दिन वाला रास्ता अत्यन्त खतरनाक है। तीन दिन वाले रास्ते मे पहले नौहत्थे शेर की चौकी है, फिर मगने हाथी की। इस रास्ते से जाने वाला इन दोनो से बचकर नहीं जा सकता। जगदेव ने रानी से पूछा तो रानी ने तीन दिन वाला रास्ता ही पसद किया। जगदेव रानी-सहित उसी रास्ते चल पडा तो ग्वाला भी अपने बछेडे पर सवार होकर उनके साथ हो लिया। रानी ने ग्वाले से पूछा कि तुम क्यो यह खतरा मोल ले रहे हो तो ग्वाले ने उत्तर दिया—

सिह मार्‌या सो बन घणो, नर मार्‌यां घरबार।
दोनू हाया हे सखि, मेरं मांझल घूमे बार॥

तब जगदेव ने ग्वाले को भी साथ ले लिया। काफी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि शेर सो रहा है और शेरनी उसको हवा कर रही है। जगदेव ने रानी से कहा कि मैं 'जनानी' (शेरनी) से क्या बात करूँगा, अत तू शेरनी से कह कि वह अपने शेर को जगा ले। इस पर रानी ने शेरनी से पुकार कर कहा—

सिंघणी सिंघ जगाय दे, म्हांनै होय अंवार।
थारं म्हारं पीव का, रल देखा बोहार॥

सिहनी ने उत्तर दिया—

मेरो सिंघ उजाड़ को सूत्यो है मैमत,
मत मरवावै कामणी तेरो जीवन लेज्या कत।

रानी ने फिर कहा—

तेरो सिंघ उजाड को, म्हारो बावन बीर,
मिस्री मूतं म्यान में नदी खलकै नीर॥

सिहनी ने फिर उत्तर दिया—

मो बोल्यां गिरवर डिगं, डिगं गजहस्तो का दन।
मत मरवावै कामणी, तेरो जीवत लेज्या कत॥

इस पर रानी ने व्यंग्य से कहा :—

नोटंकी कबाण है, सवा हाथ की भाल।
कईक तपसी ओढ़सी तेरे बाघ अमर की खाल।।

इस पर सिंहनी ने अपने पति को जगाते हुए कहा :—

उठो कंत निनालवा, दो राह बटेऊ अंत।
एक बलहल नेणी एक ऊजल दंती, ऊभा बाद करंत।।

सिंह उठा तो रानी ने अपने पति से कहा :—

बंया ऐसी चोट कर, ऐसी अंग लगाय।
सिर चक्के मूठी डिगे तो सिंघ छवां नें खाय।।

जगदेव ने एक ही वार में सिंह को धराशायी कर दिया तो सिंहनी भयभीत होकर भागने लगी। जगदेव ने रानी से कहा कि मैं जनानी पर हाथ नहीं उठाता, अत तुम इसका काम तमाम करो। रानी ने कछौटा मारा और सिंहनी के पीछे दौड़ी। सिंहनी की पूछ पकड कर रानी ने उसे घुमाकर चट्टान पर दे मारी। सिंहनी का भी काम तमाम हो गया। तब वे रात भर के लिए वही ठहर गये। रानी ने हाथी की बात चलाई तो जगदेव ने गर्व-पूर्वक कहा कि हाथी के दाँत उखाड कर तुम्हे दे दूगा सो उसके खूब चूड़े बनवा लेना।

सवेरे वे लोग चले तो कुछ दूर चलने पर मगने हाथी की चौकी आई। हाथी मस्ती मे झूम रहा था। हाथी को देखकर रानी ने अपने पति से कहा.—

रात'ज बोल्या बोलणा, इब निरभावो कंथ।
चूड़ा चिरावण थे कह्या गजहस्ती का दन्त।।

जगदेव ने हाथी का भी एक ही वार मे काम तमाम कर दिया। फिर वे निर्विघ्न कन्नौज पहुँच गये। कन्नौज पहुँचकर जगदेव एक ब्राह्मणी के घर ठहर गया। रानी ने ब्राह्मणी से कहा कि मुझे थोड़ा चमेली का तेल लाकर दे। रानी ने उसे एक सोने का टका दिया। ब्राह्मणी तेली के घर गयी, लेकिन तेली ने ब्राह्मणी को तेल नहीं दिया और उसे घर से निकाल दिया। तब जगदेव स्वय तेल लाने के लिए गया। तेली ने चिढकर जगदेव को गाली

दे दी। तेली के घर में लोहे की एक मोटी 'कुश' पड़ी थी, जगदेव ने तेली और उसकी स्त्री को पास-पास खड़ा करके लोहे की कुश उन दोनों के गले में डाल कर मोड़ दी। अब दोनों आपस में बंध गये। तेली लम्बा था और उसकी स्त्री नाटी थी। दोनों मुश्किल में पड़ गये। तेली और तेलिन ने सोचा कि राजा जयचन्द 'दलों पागला' कहलाता है, उसके दरबार में एक से एक शूरवीर हैं, अतः वहीं चलना चाहिए, सम्भव है कोई वीर इसे निकाल दे। तेली-तेलिन दोनों गिरते-पड़ते दरबार की ओर चल पड़े।

उधर जगदेव भी राजा जयचन्द के दरबार में पहुँच गया। दरबार सूरों-सरदारों से खचाखच भरा था। तेली-तेलिन ने दरबार में पहुँच कर पुकार की। राजा ने अपने सरदारों को हुक्म दिया कि इनके गले से यह लोहे की सलाखा निकाल दो, लेकिन कोई भी सरदार उसे निकालने में समर्थ नहीं हो सका। तब जगदेव ने उठकर बड़ी आसानी से सलाखा खोलकर दोनों को मुक्त कर दिया। सब लोग जगदेव की ओर देखने लगे। राजा ने सोचा कि ऐसा शूरवीर दरबार में रहे तो अच्छा है। जगदेव से जब राजा ने पूछा तो जगदेव ने उत्तर दिया कि मैं लाख टके रोज के लूंगा और काम सिर्फ वही करूँगा जो दूसरों से न हो सके। राजा ने जगदेव को लाख टके रोज पर रख लिया। जगदेव इन लाख टकों में से सिर्फ चार टके अपने लिए रखता था और शेष सब गरीबों को बांट देता था।

एक दिन राजा जयचन्द ने सोचा कि जगदेव को मैं लाख टके रोज देता हूँ सो देखना चाहिए कि यह इन टकों का क्या करता है? दूसरे दिन जब दरबार समाप्त होने पर जगदेव उठकर गया तो राजा जयचन्द भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। जगदेव ने नित्य की तरह आज भी अपने लिए चार टके रख कर शेष बांट दिये। आगे चलने पर जगदेव को चार जोगिनियाँ मिलीं। दो हँस रही थीं, दो रो रही थीं। जगदेव ने जोगिनियों से इसका कारण पूछा तो हँसने वाली दोनों जोगिनियों ने कहा कि हम आज राजा जयचन्द को मार कर उसके खून से अपने खप्पर भरेंगी, इसी खुशी में हम हँस रही हैं। रोने वाली जोगिनियों ने कहा कि राजा जयचन्द बड़ा प्रतापी

और धर्मात्मा राजा है, आज इसकी मृत्यु हो जाएगी, इसी दुख से हम रो रही हैं। तब जगदेव ने उनसे पूछा कि क्या राजा किसी प्रकार बच भी सकता है? जोगिनिया ने कहा कि यदि कोई आदमी अपने जेठे लड़के को मार कर हमारा खप्पर भर दे तो राजा बच सकता है।

जगदेव के तब तक एक लड़का हो चुका था। जगदेव जोगिनिया को घर ले गया। बच्चा पालने में सोया था और उसकी माँ रसोई बना रही थी। जगदेव ने जाते ही बच्चे को मार कर जोगिनिया के खप्पर भर दिये। वे संतुष्ट हो कर चली गयीं।

राजा जयचन्द सारी लीला देख रहा था। वह मन ही मन कहने लगा कि आज जगदेव ने अपने बच्चे को मारकर मुझे जीवन-दान दिया है वह अपने महल को लौट गया। जगदेव भी बाहर चला गया।

कुछ समय पश्चात उधर से शिव पार्वती निकले। पार्वती ने शिवजी से पूछा कि प्रभो यह बच्चा पालने में क्या मरा पड़ा है? शिवजी ने सारी बात कही तो पार्वती बोली कि इसे जिन्दा करोगे तभी मैं आपके साथ कैलाश को चलूंगी। पार्वती ने हठ पकड़ लिया तो शिवजी ने बालक को जिन्दा कर दिया। कुछ देर पश्चात जगदेव घर में आया तो उसने देखा कि रानी बच्चे को दूध पिला रही है। जगदेव ने सोचा कि सदाशिव ने मुझे नेकी का पुरस्कार दिया है।

दूसरे दिन जगदेव दरबार में गया तो राजा जयचन्द उस पर बड़ा प्रसन्न था। राजा ने अपनी लड़की कमोला जगदेव को ब्याह दी तथा उसे उच्च पद प्रदान किया।

नगर में 'कालिया' नाम का एक दाना आया करता था। प्रत्येक घर की बारी बंधी हुई थी। जिस घर की बारी होती उस घर के एक आदमी को दाने की बलि के लिए जाना पड़ता था। साथ में एक बकरा शराब का घड़ा और 'बाकला' राज्य की ओर से दाने के लिए जाया करते। एक दिन जगदेव घर आया तो जिस घर में वह रहता था वह ब्राह्मणी रो रही थी और 'गुलगुले' उतार रही थी। जगदेव ने ब्राह्मणी से इसका कारण

दाने को परास्त कर जगदेव घर आकर सो रहा। सवा पहर दिन चढ़ा तो वह दाने का कान लेकर दरबार मे पहुँचा। दाने के कान को देखकर सारे दरबारी भयभीत हो उठे। उधर कालिया दाना अपनी माँ कवाली के पास पहुँचा और बोला कि माँ, मेरा बड़ा तिरस्कार हुआ है अब मैं विष का प्याला पीकर मरूँगा। काली ने पूछा कि तेरी ऐसी दुर्दशा किसने की है तो कालू बोला कि उसी जगदेव ने। अब या तो मुझे उसका सिर लाकर दे अन्यथा मैं तेरे सामने ही विष का प्याला पीकर मरता हूँ। काली ने कहा कि मैं उसका सिर तुझे दूँगी तो नहीं लेकिन उसका कटा सिर तुझे दिखला अवश्य दूँगी। कालू इतने पर मान गया।

अब देवी ने विकराल वप बनाया और त्याव, त्याव कहती हुई राजा जयचन्द के दरबार म पहुँची। उसन दरबार म पहुँच कर जगदेव से दान मागा। जगदेव ने कहा कि देवी! मेरे घर चल अपने वित्त के अनुसार मैं तुम्हे दान दूँगा। राजा जयचन्द न इसम अपना अपमान समझा। उसने काली से कहा कि मेरे दरबार म आकर तू मेरे से दान न माग कर मेरे एक अदने नौकर से दान माग रही है वह बेचारा क्या दान देगा? देवी ने कहा कि जो दान वह दे सकता है वह तुम नहीं दे सकते। इस पर जयचन्द ने रोष पूर्वक कहा कि जितना वह देगा उससे चौगुना दान मैं तुम्हे दूँगा।

> काली जगदेव के साथ उसके घर चल पडी —
> छत्री खडग सनाथ ऊठ दिस घर ने हाल्यो,
> गैल हुई ककाल पोल बडताई दकाल्यो।
> नेत्रा, सरवणा इतणा फड साजै तनै,
> छत्री मूछ सवार सीस दीजै मनै॥

काली की माग सुनकर जगदेव को बडी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि सिर तो मेरे पास ही है इसे दे देना तो बहुत ही सरल है यदि यह कोई ऐसी चीज माग बैठती जो मेरे पास नहीं थी तो बडी मुश्किल होती। घर मे घुसते ही जगदेव ने नयी रानी कमोला से पुकार कर कहा —

कमोला कमोद भर झारी ल्याय झिगार ।
बाद मड्यो जयचन्द हूँ सूपा सीस ककाल ॥

लेकिन कमोला इस बात के लिए जग भी राजी नहीं हुई। उसने जगदेव से कहा कि हीरे, मोती आदि से ककाली का खप्पर भर दीजिए, मेरे पास हीरे, मोतियों की कमी नहीं है। लेकिन जगदेव ने सोचा कि हीरे मोतियों की कमी तो राजा जयचन्द के पास भी नहीं है, वह मेरे से चौगुने क्या हजार गुने हीरे-मोती भी दे सकता है। तब वह रानी फूलवादे के पास गया और उसने संक्षेप मे सारी बात उससे कही। फूलवादे ने सुनते ही कहा कि हाँ, एक सिर आपका और एक सिर मेरा दीजिए। जगदेव ने कहा कि यह तो ठीक है, लेकिन मेरा सिर काली को भेंट कौन करेगा? मैं अपना सिर काट कर देता हूँ, तुम उसे थाल म धर कर काली को भेंट कर देना। इतना कहकर जगदेव ने अपना सिर काट डाला। फूलवादे उसे थाल मे रखकर काली को भेंट देने गयी तो उसकी एक आँख मे पानी की एक कनी झलक पडी। देवी ने कहा कि जो रो कर भेंट देते हैं, मैं उनकी भेंट नहीं लेती। इस पर फुलवादे ने आँसू पोछ कर कहा कि देवी, मैं रोती नहीं हूँ, स्वामी के साथ मैं भी अपना सिर देना चाहती थी, लेकिन उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की, इसी दु ख से मेरी आँख मे पानी आ गया था, मैं सहर्ष यह भेंट तुम्हे दे रही हूँ। देवी ने सिर ले लिया और फूलवादे स कहा कि जगदेव के धड को सुरक्षित रखना, उस पर मक्खी न बैठने पाये। फिर वह दरबार को चल पडी। रास्ते म देवी को जगदेव का सीधी भानजा मिला, उसके एक ही आँख थी। मामा की भेंट देख कर भानजे ने भी अपनी वह आँख देवी को भेंट कर दी। अब देवी 'ल्याव-ल्याव' करती हुई जयचन्द क पास पहुँची। जयचन्द ने सोचा कि जगदेव ने हीरे-मोती आदि दिये होंगे, लेकिन जब थाल पर से वस्त्र हटाया गया और जयचन्द ने थाल मे जगदेव का कटा सिर देखा तो वह आश्चर्य-चकित रह गया। जगदेव के मुह की कान्ति वैसी ही बनी हुई थी। जयचन्द को आश्चर्य म डूबा देख जगदेव का सिर जोर से हस पडा।

राजा जयचन्द ने जगदेव से चौगुना दान देने का वायदा किया था।

अतः वह रनिवास मे गया। लेकिन एक भी रानी अथवा कोई पुत्र सिर देने के लिए तैयार नही हुआ। तब वह उदास मुंह काली के सामने आकर खडा हो गया और काली से बोला कि ले मेरा सिर काट ले। काली ने उपेक्षा से कहा कि यों तो कसाई सिर को काटा करते है, तू वचन हार गया है, अतः सात बार इस थाल के नीचे से निकल और सात बार कह कि जगदेव जीता, जयचन्द हारा। लाचार जयचन्द ने वैसा ही किया। काली ने सिर लेजाकर काल् को दिखला दिया। फिर वह जगदेव के घर की ओर चल पड़ी। रास्ते में थोनी भानजा मिला, देवी ने उसकी दोनों आँखें साबित कर दी। फिर देवी जगदेव के घर पहुँची। वह जानती थी कि जगदेव दान दिया हुआ सिर फिर स्वीकार नही करेगा, अतः उसने 'कथिया' नारियल का सिर जगदेव की धड पर लगा दिया। जगदेव हसता हुआ उठकर खड़ा हो गया।

दूसरे दिन जगदेव जयचन्द के दरबार मे जा बैठा। जगदेव को पुन. जीवित हुआ देखकर जयचन्द को बडा अचभा भी हुआ और विषाद भी। उसने कहा कि यदि ऐसी ही बात थी तो मैं अपने सारे परिवार के लोगों के सिर काटकर भेंट दे देता।

जगदेव के आगे जयचन्द को नीचा देखना पडा था, अत अपने दरबारियो की सलाह से जयचन्द ने एक नकली धारा-नगरी बनाई और उसे तोडकर अपने अपमान का बदला लेना चाहा। जब जगदेव को इस बात का पता चला तो वह 'धारा नगरी' की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध हो गया। जगदेव ने कहा —

> धारा भीतर मैं बसूं मो भीतर है धार।
> जै मे चालूं पीठ दे तो लाजै जात पँवार॥

जयचन्द उस धारा नगरी को नहीं तोड सका।

जगदेव के देश निकाले के बारह वर्ष पूरे हो गये थे, अत. वह अपनी दोनो रानियो और पुत्र को लेकर धारा नगरी को चल दिया। धारा-नगरी

मे आने पर उसका बहुत स्वागत-सत्कार हुआ और उसके माता पिता आदि सब बडे स्नेह से उससे मिले।

● हसा को बदलो

एक साल वर्षा नही हुई, सरोवर सूख गये तो दो हस हसी सरोवर से उडकर आश्रय की तलाश में एक साहूकार के बगीचे म आ गये। साहूकार बगीचे में गया तो उसने हस-हसी को एक वृक्ष पर बैठे देखा। बडी सुन्दर जोडी थी। साहूकार ने कहा कि तुम दोनो मेरे घर चलो। हस ने कहा कि हम एक-दो दिन के लिए तो नहीं चलेंगे, यदि तुम पूरे साल भर हमें रख सको तो हम तुम्हारे साथ चले चलेंगे। साहूकार बारह महीने का वायदा करके दोनो को अपने घर ले आया। हसो के लिए उसने एक छोटी तलैया बनवा दी और वह नित्य हसो को अढाई सेर अबीज मोती खाने के लिए देने लगा। साहूकार बहुत सपन्न था और जिस तिस तरह करके मोती डालता रहा। साल पूरा होने में दो दिन शेष रहे तो साहूकार के पास मोती नही रहे। एक दिन का काम उसने अपनी पत्नी का हार बेचकर चलाया, लेकिन दूसरे दिन साहूकार की स्त्री ने कहा कि अब मेरे पास भी कुछ नहा है लेकिन तुम ऐसा करो कि एक कीमती पत्थर पडा है उसी के मोती उतरवा कर हसो को डाल दो। साहूकार ने पत्थर के मोती बनवाये और उन्हें हसो के आगे रख दिए। हस ने हसी से कहा —

सूक ताल पटपड भयो, कहो हसा कित जाय।
प्रीत पुराणी कारणै, चुग-चुग कांकर खाय॥

हसो ने वे मोती चुग लिये। सयोग से उसी शाम को उत्तर दिशा में काली घटाए उठी और सर्वत्र भरपूर वर्षा हुई। साहूकार की बात रह गयी। हस साहूकार से विदा होकर उड चले।

साहूकार कुछ दिन अपने घर रहा लेकिन उसका सारा धन खत्म हो चुका था, अत वह कमाने के लिए घर से निकल पडा। चलते-चलते सयोग से वह उसी सरोवर पर पहुँच गया, जहा वे दोनो हस-हसी रहते थे।

साहूकार दुशाला ताने उसी सरोवर की पाल पर सोया था । हंस-हंसी ने दुशाला पहिचान लिया । उन्होंने आपस में कहा कि यह तो अपना आश्रय दाता साहूकार ही है । उन्होंने साहूकार को वहीं रख लिया और उससे कह दिया कि हम तुम्हें जहाज भर मोती देंगे, अत तुम नदी के किनारे एक जहाज लगा लो ।

साहूकार ने जहाज किनारे पर लगा दिया और हंस-हंसी उसमें नित्य मोती डालने लगे । एक रात साहूकार सोया था और हंस-हंसी जाग रहे थे । उसी समय चकवा-चकवी बोले कि यदि यह साहूकार आज रात को अपने घर पर होता तो इसके एक ऐसा सुन्दर पुत्र होता जो नित्य सवेरे सवा लाख का एक लाल उगलता । हंस ने चकवे-चकवी की बात सुनकर हंसी से कहा कि आज हम साहूकार के उपकार का बदला चुका सकते है, क्योंकि साहूकार के कोई संतान नहीं है और इस कारण साहूकार-दम्पति बड़े दुःखी रहते हैं । हंस ने साहूकार को जगाया और उसे अपने पंखों पर बिठलाकर उज्जैन की ओर उड़ चला । हंस ने रातोंरात साहूकार को उसके घर पहुँचा दिया । साहूकार ने अपनी स्त्री को जगाया । चौसर मंड गई और पासे ढलने लगे, 'ढ़ल म्हारा पासा ढुल हाणा, अठारा गुणीस पौबारा पच्चीस, कदे तीन काणा।' साहूकार रातभर घर रहकर सवेरा होते होते हंस के पंखों पर बैठकर लौट चला । जाते वक्त उसने अपनी स्त्री से कह दिया कि मेरे आने की बात मेरे मा-बाप से मत कहना अन्यथा वे कहेंगे कि स्त्री से तो मिल गया और माँ-बाप से नहीं मिला । साहूकार की स्त्री ने सास-ससुर से इस बात का कोई जिक्र नहीं किया ।

नौ महीने बाद साहूकार की स्त्री के लड़का हुआ । पैदा होते ही लड़के ने सवा लाख का एक लाल उगला,लेकिन घरवालों ने कहा कि बहू कुलटा है और उसे धक्के पर धक्का देकर घर से निकाल दिया । साहूकार की स्त्री नवजात शिशु को लेकर घर से निकल पड़ी । उसने सोचा कि यह नालायक बेटा ही मेरे कलंक और दुःख का कारण बना है । अतः नगर से बाहर निकलते ही उसने बच्चे को फेंक दिया और स्वयं आगे बढ़ गई ।

सामने से बादशाह की सवारी आ रही थी, उसे देखकर वह इधर-उधर छुप गई, लेकिन बादशाह की नजर उस पर पड़ गई। उसने साहूकार की स्त्री को अपने पास बुलाया। स्त्री की बात सुनकर बादशाह ने उसे धर्म की बेटी बना ली और उसे अपनी राजधानी में ले गया। बेटी ने बादशाह से कहा कि मैं नित्य प्रत्येक मांगने के लिए आने वाले दीन दुखी को एक सेर का एक लड्डू और एक रुपया बांटा करूंगी। बादशाह ने वैसा ही प्रबन्ध करवा दिया। इधर साहूकार के बच्चे को एक बनजारा जो अपनी 'बालद' लेकर उस रास्ते से जा रहा था, उठाकर ले गया। उसके भी कोई संतान नहीं थी, अतः वह उसका बड़े लाड चाव से पालन-पोषण करने लगा।

मोतियों का जहाज भर जाने पर साहूकार हंसा से विदा लेकर अपने घर आया। घर आने पर जब उसे पत्नी के निकाले जाने की बात मालूम हुई तो वह पागल होकर घर से निकल गया। घूमते फिरते वह उसी बादशाह की राजधानी में आ पहुँचा और किसी ने गरीब जानकर उसे वहां पहुँचा दिया जहाँ बादशाह की बेटी रुपये और लड्डू बांटा करती थी। साहूकार की स्त्री ने उसे देखते ही पहिचान लिया। साहूकार की स्त्री ने उसे अपने पास बुलाया और उसे नहलाया धुलाया। फिर उसने अपने हाथ से वही रसोई बनाई जो वह अपने घर पर अपने पति के लिए बनाया करती थी और उसने वही पोशाक पहनी। साहूकार को भोजन और पोशाक देखकर अपनी स्त्री की याद आने लगा और जब उसकी स्त्री उसके सामने आई और उसने कहा कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ तो साहूकार का चित्त सहसा ही ठिकाने आ गया। साहूकार की स्त्री ने अपने पति को काफी रुपये दिये और कहा कि एक एगा बढ़िया ऊंट लाओ जो जैं-जैं करता जैंपर जा उठतै पाण उदैपर जा। साहूकार वैसा ही ऊंट ले आया और एक रात को वे दोनों ऊंट पर सवार होकर निकल भागे। पकड़े जाने के भय से वे रास्ता छोड़कर जंगल में हो कर चलने लगे।

उस जंगल में वासुकी-नाग रहता था, वह तालाब से निकलकर जंगल में घूम रहा था। उसने अपनी मणि एक स्थान पर छोड़ रखी थी जिससे

बहुत दूर मे प्रकाश हो रहा था। साहूकार ने कहा कि इस मणि को ले चलें तो बहुत अच्छा हो, बडी कीमती मणि है। साहूकार की स्त्री ने मना किया, लेकिन साहूकार नही माना। साहूकार ऊंट को मणि के पास ले गया और उसे उठा कर ज्योंही चलने को हुआ, नाग ने आकर उसे डस लिया। साहूकार वहीं गिर पडा। नाग अपनी मणि को लेकर पास के तालाब में चला गया। साहूकार की स्त्री रोती-कलपती इधर-उधर भटकने लगी। इतने मे चार चोर आये, उन्होने साहूकार की स्त्री से सारा धन छीन लिया और फिर वे आपस में साहूकार की स्त्री के लिए लडने लगे। प्रत्येक यही कहता था कि इसे मैं ब्याहूगा। अन्त मे यह तय हुआ कि इसे शहर मे ले जाकर बच दिया जाए और इसकी कीमत स्वरूप मिलने वाले रुपया का बराबर बाट लिया जाए। आपस में या तय करके वे उसे दिल्ली ले गए और उसे एक वेश्या के हाथ बेच दिया। वेश्या ने किसी तगडे असामी की प्रतीक्षा मे साहूकार की स्त्री को छुपा कर रखलिया।

कुछ दिना बाद वही बनजारा दिल्ली शहर म आया। लडका भी अब युवा होने लगा था। वह बहुत ही सुन्दर था। नगर म उसके रूप की बहुत प्रसिद्धि हो गयी।

वह वेश्या उसे अपने घर बुला ले गयी। साहूकार की स्त्री से वेश्या ने कहा कि आज तू खूब शृगार कर ले। जब लडका कोठे पर चढा और तीन सीढिया शेप रही तो साहूकार की स्त्री ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे प्रभो मेरे सत की रक्षा कर। उसके इतना कहते ही उसके स्तनो से दूध की 'बत्तीसा धार छूटी और उनसे लडके का मुह भीग गया। लडका उलटे पैरो भागा। साहूकार की स्त्री की इस हरकत पर वेश्या को बडा गुस्सा आया। उसने कोडा उठाया और साहूकार की स्त्री की पीठ पर दस-बीस कोडे सडासड लगा दिये। साहूकार की स्त्री को बडा दुख हुआ और वह मौका देख कर वेश्या के घर के नीचे से बहने वाली नहर म कूद पडी। काठ का एक बडा लट्ठा उसके हाथ आ गया और वह उसी के सहारे नहर के बहाव मे बह चली। बहते-बहते वह जगल म पहुँच गयी, वहा एक

ग्वाला अपनी गायें चरा रहा था, उसने उसे बाहर निकाल ली। ग्वाले के भी कोई सतान नही थी अत वह उसे अपनी बेटी बना कर अपने घर ले आया और साहूकार की स्त्री वही रहने लगी। एक दिन साहूकार की स्त्री ने ग्वालिन से कहा कि मैं भी अय स्त्रियो के साथ शहर मे दूध-दही बेचने जाया करूगी। ग्वालिन ने अपने पति से पूछा तो ग्वाला बोला कि यदि उसकी इच्छा है तो उसे जाने दिया कर। दूसरे दिन वह भी अय स्त्रिया के साथ दही बेचने शहर मे गयी। 'बनजारे' का लडका अपने घोडे पर सवार होकर शहर म घूमने निकला था। उसने जान बूझ कर शरारत से उन ग्वालिना के बीच अपना घोडा चला दिया। सब स्त्रिया के बरतन गिर कर टूट-फूट गये। अय ग्वालिनें रोने लगी, लेकिन साहूकार की स्त्री कुछ न बोली। 'बनजारे' के लडके ने सारी स्त्रियों को पाच पाच रुपये दे दिये। उनका दही अधिक से अधिक दो दो रुपये का रहा होगा सो वे प्रसन्न हो गई। लेकिन साहूकार की स्त्री ने रुपये नही लिये उसे दही गिर जाने की जरा भी चिंता नही थी। बनजारे के लडके ने उससे इसका कारण पूछा तो साहूकार की स्त्री बोली —

सुत डार चली, बदसाह लई, बन माय गई
पिय भग डस्यो अरु चोर लई, मनै बच दई,
गनिका घर रे, काठ की नाव नदी तिर र,
महाराज कुमार भई गुजरी,
अब छाछ को सोच कहा करि रे।

उसके इतना कहते ही उसके स्तना से फिर दूध की धार छूटी और लडके के मुह पर गिरी। तब साहूकार की स्त्री न लडके से कहा कि मैं तेरी मा हूँ और तू मेरा बटा है। इस पर लडके ने पूछा कि पिताजी कहा है? साहूकार की स्त्री बोली कि चलो मैं तुम्हारे पिता को दिख लाती हूँ।

जब साहूकार को जगल म साप ने डस लिया था तो उसकी स्त्री को तो चोर बेचने के लिए दिल्ली ले गये थे और उसकी लाश वही तालाब

के किनारे पड़ी रही । वासुकी-नाग की कन्या सवेरे सूर्य भगवान की पूजा करने के लिए तालाव से निकली तो उसे साहूकार की लाश दिखलाई पड़ी, वह लौट कर अपने पिता के पास गई । पिता के पूछने पर उसने कहा कि पिताजी, आपके भय के कारण कोई पशु-पक्षी भी यहा नही आता है, और मैंने आज तक किसी नर पशु-पक्षी के दर्शन भी नही किये । आज मैंने एक आदमी को तालाव की पाल पर पड़े देखा है, वही मेरा प्रथम पुरुष-दर्शन है और वही मेरा पति है, अत आप उसे जिन्दा करके उसी के साथ मेरा विवाह कर दीजिए । नाग ने अपना विष चूस लिया और साहूकार जिन्दा हो गया । नाग ने अपनी लडकी का उसके साथ विवाह कर दिया । साहूकार कुछ दिन वहा रहा, फिर उसने एक दिन अपनी स्त्री से कहा कि मैं साहूकार हूँ, किसान लोग खाकर कमाते हैं (खा-पी कर खेत मे कमाने जाते हैं) हम कमा कर खाते है, अत यहा बैठा-बैठा नही खाऊगा, मैं तो कुछ व्यापार करूगा । नाग-कन्या ने उसे काफी धन दे दिया और साहूकार दिल्ली शहर मे आकर एक दूकान चलाने लगा । उसकी पहले वाली स्त्री जब वेश्या के यहा रहती थी तब सौदा खरीदने के लिए अक्सर वाजार जाया करती थी और उसने अपने पति को पहिचान लिया था । अब वह लडके को लेकर अपने पति के पास गयी । साहूकार दोनो को पाकर बडा प्रसन्न हुआ । तीनो जने वादशाह के दरबार मे पहुँचे । साहूकार और साहूकार की स्त्री ने कहा कि यह हमारा बेटा है, लडके ने कहा कि ये मेरे माता-पिता है, वनजारा मेरा वाप बना हुआ है, लेकिन वह मेरा वाप नही है । वादशाह ने वनजारे और उसकी स्त्री को दरबार मे बुलवाया । शक्ल सूरत से वादशाह ने निश्चय किया कि लड़का वास्तव मे साहूकार का वेटा है । उसने वनजारे से पूछा कि तुम्हे लडका कहां मिला तो वनजारे ने भय के मारे सारी वात सच-सच कह दी । वादशाह ने लड़का साहूकार को दिलवा दिया । अब साहूकार अपनी स्त्री, लड़के और नाग-कन्या को लेकर अपने घर आ गया और सब आनन्द-पूर्वक रहने लगे ।

● राम-गाय

जाट के खेत म फसल बहुत अच्छी थी। वह रात को खेत म रह कर खेत की रखवाली किया करता था। एक रात को बूंदी का एक बडा शेर खेत म आ घुसा। पत्ता की सरसराहट सुनकर किसान शेर के पास गया। किसान ने न कभी शेर देखा था और न शेर का नाम ही सुना था। शेर ने ज्यो ही मुह फाड कर 'हा' की तो जाट ने अपनी 'जनी' उसके कठा म घुसेड दी। शेर वही मर गया। सबेरे गाव का ठाकुर जाट के खेत म से गुजरा तो जाट ने पूछा कि ठाकरा, यह कौन जानवर है? ठाकुर ने जाट को भुलावा देते हुए कहा कि अरे यह तो राम-गाय है किस पापी न इसकी हत्या कर दी? जाट डरते-डरते बोला कि यह राम-गाय रात को खेत म घुस गयी थी और मैंने ही इसे मार डाला अब इसका क्या प्रायश्चित्त होना चाहिए? ठाकुर बोला कि इसकी पूछ को गले म डाल कर गगाजी जाना चाहिए और पूछ को गगाजी म प्रवाहित करनी चाहिए तथा सारे गाव को भोज देना चाहिए। जाट उदास मन अपन घर आया और उसने अपने बटो से सारी बात कही। बडा लडका बोला कि राम-गाय की पूछ मैं गगाजी म प्रवाहित कर आऊँगा तथा आन के बाद गाव का भोज दे दिया जाएगा इसम घबडाने की क्या बात है? फसल इस बार बहुत अच्छी हुई है। लडका पूछ लेकर गगाजी को चल पडा।

इधर ठाकुर न मरे शेर का सिर काटा और उसे ले कर राजधानी की ओर चल पडा। राजा के पास पहुँच कर उसन राजा को शेर का सिर दिखलाया और कहा कि मैंने इस शेर का शिकार किया है। शेर वास्तव म बडा जबरदस्त था। राजा न प्रसन्न होकर ठाकुर को ऊचा ओहदा तथा एक गाव बख्श दिया। शेर का सिर किले के फाटक पर टाग दिया गया।

इधर जाट का बटा 'राम-गाय' की पूछ को गगाजी म प्रवाहित करके घर आ गया तो भोज की तैयारी करन लगा। जाट न सोचा कि मैंने

राम गाय को मार कर बडा अपराध किया है। यदि राजा को पता चलेगा तो वह नाराज होकर न जाने क्या दड देगा, अत राजा भी भोज मे शामिल हो तो ठीक रहे। यो सोच कर जाट राजा को लिवाने चल पडा। किले के फाटक पर उसने 'राम-गाय' का सिर टगा देखा और देखता ही रह गया। वह सोचने लगा कि यह तो उसी गाय का सिर है, इसे यहा लाकर किसने टाग दिया ? जब वह बहुत देर तक उस सिर की ओर देखता रहा तो पहरेदार ने पूछा कि तू इस प्रकार क्या देख रहा है ? यह शेर का सिर है। जाट बोला कि यह तो 'राम-गाय' का सिर है, यह गाय तो मेरे हाथ से मर गयी थी। पहरेदार ने राजा को खबर की। राजा ने जाट को बुलवाया, ठाकुर भी वही बैठा था, जाट को देखते ही वह सकपका गया। जाट ने आदि से अन्त तक सारी बात राजा से निवेदन करके कहा कि इसमे मेरा कोई दोष नही है मेरे 'हा' की चिढ है, जो मेरे सामने 'हा' कहता है उसे मैं बिना मारे नही छोडता। राजा ने परीक्षा लेने के लिए जोर से हाका किया—हा '। राजा के हाका करते ही ठाकुर भय के मारे नीचे लुढक गया लेकिन जाट राजा पर पिल पडा। उसने राजा को अधमरा कर दिया। दरबारियो ने बडी मुश्किल से राजा को छुडवाया। राजा को निश्चय हो गया कि शेर को जाट ने मारा है। उसने ठाकुर को पदच्युत कर दिया, उसका गाव छीन लिया और जाट को भारी पुरस्कार दे कर विदा किया।

● परालब्ध जाग्या सैं काम वणै

दो जाट भाई थे। एक गरीब था तथा दूसरा बहुत मालदार। एक दिन गरीब भाई के यहा एक पाहुना आ गया। उसे खेत मे ठहरा कर जाट अपनी भाभी के पास गया और बोला कि भाभी ! आज एक पाहुना आ गया है, सो उसे भोजन कराना है, लेकिन मेरे पास थाली नही है, सो कुछ देर के लिए मुझे एक थाली दे दो। भोजन करने के बाद पाहुना चला गया और जाट काम मे लग गया। शाम हुई तो वह अपने घर आ गया।

घर आते ही उसकी भाभी ने अपनी थाली मागी। उसने कहा कि मैं थाली खेत पर भूल आया हूँ, सबेरा होते ही ला दूगा। लेकिन भाभी ने सोचा कि देवर गरीब है और इसने थाली को कही गिरवी रख दिया है। अत वह बोली कि मुझे तो इसी वक्त थाली लाकर देनी पडेगी। वह बेचारा डरते-डरते खेत की ओर चल पडा। खेत के पास पहुँच कर उसने देखा कि एक आदमी उसके भाई के खेत की रखवाली कर रहा है। उसने हिम्मत करके पूछा कि तू कौन है? पहरेदार ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे भाई का प्रारब्ध हूँ जो उसके सोते मे भी उसके खेत की रखवाली करता हूँ। जाट ने पूछा कि मेरा प्रारब्ध कहाँ है? उसने उत्तर दिया कि तुम्हारा प्रारब्ध सात समुन्दर पार फला जगह सो रहा है। जाट ने थाली लाकर भावज को दे दी और सबेरा होते ही स्वय अपने प्रारब्ध को जगाने के लिए चल पडा।

चलते-चलते वह एक खेजडे के वृक्ष के नीचे से गुजरा। खेजडे ने उससे पूछा कि भाई! तू कहाँ जा रहा है? जाट ने उत्तर दिया कि मैं अपना प्रारब्ध जगाने जा रहा हूँ। खेजडे ने जाट से कहा कि न तो कोई राहगीर मेरी छाया मे बैठता है और न मेरे सागर ही लगता है। कृपा करके अपने प्रारब्ध से पूछना कि इसका क्या कारण है? खेजडे की बात सुन कर जाट आगे बढा।

आगे बढने पर एक नगर आया। उस नगर के चारो ओर एक आदमी बडी व्याकुलता से 'हाय जला, हाय जला,' कहता हुआ चक्कर लगा रहा था। उसने भी जाट से कहा कि मेरे तन-मन मे आग लगी है, कृपा करके अपने प्रारब्ध से पूछ कर आना कि यह किस प्रकार शान्त हो सकती है।

जाट वहाँ से आगे बढा। चलते-चलते थक गया तो एक वट-वृक्ष के नीचे सो गया। थोडी देर बाद उसे कुछ आवाज सुनायी पडी और वह उठ बैठा। उसने देखा कि एक बडा काला नाग वृक्ष पर चढ रहा है और उसी के डर से वृक्ष पर बने एक घोसले मे किसी पक्षी के बच्चे ची-ची कर रहे हैं। जाट ने साप को मार डाला और निश्चिन्त हो कर सो गया।

यह घोसला गरुड-जाति के एक पक्षी का था। काला नाग उसके बच्चों को खा जाया करता था और इसलिए गरुड दम्पति बडे दुखी रहते थे। शाम को वे दोनो लौटे तो उन्होंने देखा कि वृक्ष के नीचे कोई सोया हुआ है। गरुड ने सोचा कि हो न हो यही आदमी बच्चो को खा जाया करता है, इस लिए वह उसे मार डालने के लिए उसकी ओर झपटा। लेकिन गरुड़ की स्त्री ने उसे ऐसा करने से मना किया और बच्चे भी ची-ची करने लगे। बच्चो ने जब सारी बात बतलाई तो वे राहगीर पर बडे प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे जगाया। जाट ने काले नाग को अपने सिरहाने से निकाल कर दिखलाया। गरुड वहाँ से उडा और जाट के लिए खाने-पीने की सामग्री ले आया। जब वह खा-पी चुका तो गरुड ने जाट से कहा कि तुमने हमको बडे दुःख से छुटकारा दिलाया है, हम तुम्हारा क्या प्रिय करें, हमे बतलाओ। जाट ने सारी बात उन्हे बतला दी। सबेरा होते ही गरुड ने जाट को अपनी पीठ पर बिठलाया और वह समुद्र को लांघता हुआ उड चला। समुद्र मे एक बडा मगर रहता था। उसने जाट से पुकार कर कहा कि भाई! मेरी भी एक बात सुनते जाओ। इतने बडे समुद्र मे रहकर भी मैं भूखा-प्यासा मर रहा हूँ। मेरा कष्ट कैसे दूर होगा, यह पूछ कर आना। सात-समुद्र पार पहुँचकर जाट ने उस स्थान को खोजा, जहाँ उसका प्रारब्ध सोया पडा था। जाट का प्रारब्ध उस वक्त करवट ले रहा था। जाट ने उसे जगाया। प्रारब्ध ने जागकर कहा कि अब तुम निश्चिन्त रहो, मैं जग गया हूँ। जाट के तीनो प्रश्नो का उत्तर उसने सक्षेप मे यो दिया कि उस मगर के गले मे सवा मन सोने की मणि है, यदि वह मणि किसी को दे-दे तो उसका सारा कष्ट मिट जाएगा। उस आदमी के पास बडी विद्या है यदि वह अपनी विद्या किसी दूसरे को सिखलादे तो उसे शान्ति मिल सकती है और उस खेजडे के वृक्ष के नीचे धन के चार 'टोकने' गडे हुए हैं, यदि वह वृक्ष चारो टोकने किसी को दे-दे तो राहगीर उसकी छाया मे बैठने लगेंगे और उस में 'सागर' भी लगने लगेगा।

जाट गरुड़ पर सवार होकर लौटा। रास्ते मे मगर मिला। अपने

दुख का कारण जानकर मगर ने सवा मन सोने की मणि उसी जाट को दे दी। जाट समुद्र के इस पार आ गया। फिर उसे वह विद्वान् पंडित मिला। उसने अपनी सारी विद्या जाट को सिखला दी। वहाँ से चलकर वह 'खेजडे' के वृक्ष के पास पहुचा। खेजडे ने कहा कि धन के टोकने तुम्हीं निकाल कर ले जाओ। अब जाट हर तरह से सम्पन्न और विद्वान् बन गया। घर आकर उसने गरुड को विदा दी और अब वह खूब आनन्द और ठाट से रहने लगा।

● मीडकै की चतराई

एक चतुर मेंढक पानी के एक नाले के किनारे पर बैठा टर्र-टर्र कर रहा था कि अचानक एक कौवे ने पीछे से उसकी टाग पकडली और उसे आकाश मे ले उडा। मेंढक बहुत घबराया और किसी प्रकार बचने का उपाय सोचने लगा। कौवा उसे ले जाकर एक वृक्ष पर बैठा और उसे खाने की तैयारी करने लगा। इतने मे मेंढक जोर-जोर से हँसने लगा। कौवे को बडा आश्चर्य हुआ। उसने मेंढक से पूछा कि साक्षात् मृत्यु को देख कर भी तू हँस क्या रहा है? मेंढक बोला कि मृत्यु मेरे सामने नहीं, तेरे सामने खडी है। यहाँ मेरी एक मौसी बिल्ली रहती है, यदि तू ने मुझे यहाँ कुछ भी क्षति पहुँचायी तो तेरी खैर नहीं। बिल्ली मौसी तेरा एक-एक पर बिखेर देगी और तेरा कलेजा खा जाएगी। मेंढक की बात सुनकर कौवा फिर उसकी टाग पकड कर उडा और उडता-उडता एक चट्टान पर जा बैठा, लेकिन जैसे ही वह मेंढक के शरीर पर चोच मारने को तैयार हुआ, मेंढक फिर हँस पडा। कौवे के पूछने पर मेंढक ने कहा कि यहाँ मेरा एक मामा काला नाग रहता है। यदि तूने मुझे जरा भी हानि पहुँचाई तो तेरी जान की खैर नही। अब कौवा मेंढक को लेकर वहाँ से भी उडा और उडते-उडते भैराजी के एक 'थान' पर पहुँचा। लेकिन मेंढक वहाँ भी हँसने लगा और बोला कि मुझे भैरोजी का इष्ट है और यदि इनके 'थान' पर ही तूने मुझे मारने की कुचेष्टा की तो ये तुझे भस्म कर देंगे। हताश हो कर कौवा

मेंढक को लेकर वहाँ से भी उड़ा और घूम फिर कर उसी नाले के पास आ गया। नाले को देखकर मेंढक उदास हो गया। कौवे ने पूछा कि शायद यहाँ तुझे बचाने वाला कोई नहीं है, इसी से तू उदास है। मेंढक ने उदास होकर उत्तर दिया कि बेशक, यहाँ मेरा कोई नहीं है। अब आप मुझे अच्छी तरह खा सकते है लेकिन एक प्रार्थना मेरी भी सुन लें तो बड़ा अच्छा हो। मुझे तो खैर मरना ही है, लेकिन आप की चोंच बड़ी 'भोथरी' है। आप इसे सिला पर घिस कर कुछ पैनी करलें तो मुझे कष्ट कम होगा और मैं मर कर भी आप का उपकार मानूंगा। कौवे ने मेंढक की बात मानली और वह उससे बोला कि मैं नाले से पानी लाकर अपनी चोच पैनी कर लेता हूँ लेकिन खबरदार, तू यहाँ से इधर-उधर मत हो जाना। मेंढक ने कौवे को भरोसा दिलाया, लेकिन कौवे के जाते ही मेंढक फुदककर पानी में घुस गया। कौवे ने सिल पर घिस-घिस कर अपनी चोच पैनी की और फिर वह मेंढक को इधर उधर देखने लगा। जब मेंढक उसे कही दिखलाई नही पड़ा तो वह उसे पुकारने लगा कि मेंढक, जल्दी आओ मैंने अपनी चोच पैनी कर ली है। कौवे की बात सुनकर मेंढक ने पानी मे से ही उत्तर दिया कि तूने अपनी चोच तो पैनी कर ली है, लेकिन तेरी बुद्धि बहुत मोटी है। तू उसे भी पैनी कर ले तब मैं तेरे हाथ लग सकूगा। बेचारा कौवा अपना-सा मुह लेकर वहाँ से उड़ गया।

● भगवान खुद अवतार क्यूं लेवै ?

एक दिन एक बादशाह ने अपने वजीर से पूछा कि तुम्हारे भगवान् स्वय ही क्यों अवतार लेते है, क्या उनके पास नौकर-चाकरो की कमी है ? पृथ्वी का भार हल्का करने के लिए वे उन्हें भी तो भेज सकते हैं। वजीर ने उत्तर दिया कि बादशाह सलामत ! मैं इसका उत्तर आपको फिर कभी दूगा।

घर आकर वजीर ने नगर के सबसे कुशल कारीगर को बुलवाया और उससे कहा कि मुझे बादशाह के पोते की एक ऐसी उत्कृष्ट काठ की

मूर्ति बनाकर दे जो हूबहू उससे मिलती हो तथा सहसा ही कोई उनमे भेद न कर सके। कारीगर ने कुछ ही दिनों मे मूर्ति तैयार कर दी। मूर्ति को देखकर वजीर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने मूर्ति को बादशाह के पोते के जैसे ही गहने-कपड़े पहना दिये।

एक दिन बादशाह अपने बहुत से साथियों के साथ नौका-विहार को निकला। बादशाह का पोता भी साथ था। मौका पाकर वजीर ने बादशाह के पोते को छुपा दिया और उस मूर्ति को अपने पास ले लिया। जब नाव नदी के बीचाबीच पहुँची तो वजीर ने अवसर देखकर मूर्ति को नदी मे गिरा दिया। बादशाह ने जाना कि मेरा पोता ही नदी मे गिर गया है, उसने आव देखा न ताव, झट पोते को बचाने के लिए नदी मे कूद पड़ा। तभी वजीर ने बादशाह से कहा कि हुजूर! इतने सेवकों के पास होते हुए भी जैसे आप स्वयं ही नदी मे कूद पड़े, इसी प्रकार भगवान् अपने भक्तों को कष्ट मे देखकर स्वयं इस धरा पर अवतार लेते हैं। वजीर की बात सुनकर बादशाह ला जवाब हो गया

● सीत की खीर

एक औरत नित्य श्री रामचन्द्रजी के मंदिर में जाया करती थी। मन्दिर मे हनुमानजी की भी मूर्ति थी। वह औरत हमेशा खाली हाथ जाया करती, मन्दिर मे चढ़ाने के लिए वह कुछ भी नहीं ले जाती, लेकिन प्रसाद ग्रहण करने मे सबसे आगे रहती। हनुमानजी की मूर्ति के आगे खड़ी होकर वह एक 'मन्तर' बोला करती —

गऊ माता दूधो देसी, चावल देसी राम।
बीं दूधं की खीर बणंगी, जीमंगो हणमान॥

पुजारी भी उसकी 'सूखी' भक्ति से तंग आ गया था। एक दिन जब वह उपर्युक्त मंत्र पढ़ रही थी तो पुजारी ने उससे कहा कि इस खीर मे तुम्हारा क्या साझा है? गऊ माता दूध दे देगी और राम चावल देंगे। जब खीर बन जाएगी तो हनुमान स्वयं ही भोग लगा लेंगे, तुम

व्यर्थ ही क्यों तकलीफ उठाया करती हो ? पुजारी की बात सुनकर स्त्री लजा गई ।

● गादड़े की कुटलाई

एक जगल मे एक हाथी मरा पडा था । एक गीदड उधर से निकला तो मरे हाथी को देखकर वह फूला नही समाया । उसने सोचा कि कई महीनो का आहार इकट्ठा ही मिल गया । लेकिन हाथी का चमडा यू भी काफी मोटा होता है । फिर धूप मे पड़े रहने के कारण सूखकर वह और भी सख्त हो गया था । गीदड किसी प्रकार, उसका भेदन नहीं कर सकता था । गीदड वहीं बैठकर हाथी को चिरवाने की कोई तरकीब सोचने लगा । इतने में वहां एक शेर आ गया । गीदड ने शेर को देखते ही उठकर नमस्कार किया और बोला कि महाराज, मैं आपका बदीमी सेवक हूँ । आपके लिए ही इस शिकार की मैं देख-भाल कर रहा हूँ कि कोई मुह लगाकर इसे जूठा न कर जाय । गीदड की नम्रता देखकर सिंह बडा खुश हुआ और बोला कि मैं मुर्दा मास नही खाता । इस हाथी को कई दिना तक खाओ । यो कहकर सिंह चला गया । लेकिन उसके जाते ही एक बाघ आ गया । गीदड ने सोचा कि अब इसको भी टरकाना चाहिए । यो सोचकर उसने बाघ से कहा कि आज तुम यहां कहां आ गये ? इस हाथी को एक बडा शेर मारकर गया है, उसने मुझे रखवाली पर छोडा है, यदि अपनी जान की खैर चाहो तो इसी वक्त यहाँ से चले जाओ । यह सिंह खास तौर स बाघ का तो जानी दुश्मन है, क्योकि एक बार एक बाघ ने इसके शिकार को जूठा कर दिया था । गीदड की बात सुनकर बाघ वहां से नौ-दो ग्यारह हो गया ।

बाघ के जाते ही वहाँ एक चीता आ गया । अब गीदड ने सोचा कि इस चीते से हाथी को चिरवाना चाहिए । यो सोचकर गीदड ने चीते से कहा कि आज तो तुम बहुत भूखे नजर आ रहे हो, तुम बहुत दिनों से मिले हो, अत तुम्हारी मनुहार करना मेरा कर्त्तव्य है । इस हाथी को अभी-अभी

एक सिंह मारकर गया है। वह नहा धाकर थोडी ही दर मे लौट आएगा। तब तक तुम इस हाथी का थोडा मास खा लो। मैं उधर बैठकर सिंह की राह देखता हूँ, लेकिन जैसे ही मैं कहूँ कि सिंह आ रहा है, तुम एकदम भाग जाना, नही तो तुम्हारी हत्या का पाप मुझे लगेगा। यों कहकर गीदड एक ऊँचे टीले पर बैठकर सिंह को देखने लगा और चीता उस मृत हाथी को चीरने लग गया। चीते ने अपने तेज दांतो और नुकीले पजो स हाथी की कडी खाल को चीर डाला। गीदड बैठा-बैठा सब कौतुक देख रहा था। जब गीदड ने देखा कि काम बन गया है तो वह दौडा-दौडा चीते के पास आया और बोला कि शेर आ गया है। गीदड की बात सुनते ही चीता सिर पर पैर रखकर भागा। गीदड ने सोचा कि अब सारी बाधाएँ दूर हो गईं। वह हाथी को मुह लगाने ही वाला था कि एक दूसरा गीदड और आ गया। पहले वाले गीदड ने गुर्राकर कहा कि दुष्ट! अपने प्राणो की खैर चाहता है तो यहां से इसी क्षण भाग जा। आने वाला गीदड कुछ अकडने लगा तो पहले वाला गीदड उस पर टूट पडा और उसने उसके पुरजे-पुरजे बिखेर दिये फिर उसने कई दिनो तक बिना किसी बाधा के हाथी का माँस खाया।

● अद्‌भुत सिलोक

राजा भोज के पास जो कोई पडित नया श्लोक बनाकर ले जाता उसको राजा पुरस्कार स्वरूप एक स्वर्ण-मुद्रा दिया करता था। एक दिन राजा महल म चौसर खेल रहे थे, आकाश म मघ घिर रहे थे। इतने म एक पडितजी राजा के महल म पहुँचे और उन्होने एक श्लोक सुनाया जिसका भावार्थ था —

> कालो उजलो बरण है, बिन पग भाज्या जाय।
> बिना जीव बोलै घणा, जाचै जगती आय॥

श्लोक सुनकर महल के झरोखे म खडी दासी ने अपने पास स एक स्वर्ण-मुद्रा निकाली और पडितजी से कहने लगी कि पडितजी! आपने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, इसलिए मैं आपको यह क्षुद्र भेंट देती हूँ। दासी

की बात सुनकर राजा ने उससे पूछा कि पडितजी का श्लोक तेरे ऊपर कैसे घटता है ? दासी ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ , मैं झरोखे से आकाश की ओर देख रही थी, आकाश मे श्वेत रग के बादल हैं, काली घटाएँ घिर रही हैं, बादलो के पैर नही हैं, लेकिन दौडे चले जा रहे हैं, बिना प्राणो के ही वे बहुत बोलते हैं (गरजते हैं), वे स्वय किसी से याचना नही करते, दूसरे ही उनकी याचना करते हैं। इस प्रकार, यह श्लोक पडितजी ने मेरे ऊपर ही कहा है। इतने मे पास बैठे हुए दीवानजी जो एक पत्र लिख रहे थे बोल पडे कि नही, नही, पडितजी ने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, अत पडितजी को पुरस्कार मैं दूगा। देखिए श्वेत रग के कागज हैं, जिन पर काली स्याही से लिखा जाता है, अक्षरो मे प्राण नही हैं, लेकिन ये बोलते हैं, पत्र के पैर नही हैं, लेकिन यह एक जगह से दूसरी जगह जाता है, यह किसी से कुछ नहीं चाहता, दूसरे ही इसकी कामना करते है। इतने मे रानी भानुमती जो शीशे मे अपना श्रृगार निहार रही थी, बोल उठी कि पडितजी का यह श्लोक तो मेरे नयनो पर खूब घटता है, आँखो मे श्वेत और श्याम दोनो रग मौजूद हैं, नेत्रो के पैर नही होते लेकिन बिना पैरो के ही ये एक जगह से दूसरी जगह जाने मे समर्थ हैं, इनके जिह्वा नही है, लेकिन बिना जीभ के ही ये बातें कर सकते हैं (आँखो से बातें करना) ये स्वय किसी से कुछ नही माँगते, दूसरे ही इनकी कामना करते हैं, अस्तु ! रानी की बात पूरी होते न होते राजा भोज बोल उठे कि पडितजी ने यह श्लोक मेरे लिए कहा है, क्योकि सफेद रग के पासे हैं जिन पर काली लकीरें बनी हैं, इनके पैर नही हैं, लेकिन ये एक खाने से दूसरे खाने मे जाते है। इनमे प्राण नही हैं, लेकिन ('पौ बारा' आदि) बोलते हैं, ये स्वय किसी से कुछ नही चाहते, दूसरे ही इनकी चाह करते हैं।

आखिर चारो ने ही पडितजी को पुरस्कार देकर विदा किया।

● कमेडी और साँप

एक कमेडी एक वृक्ष पर रहा करती थी। वह वही अपना घोसला बना लेती और उसी मे अडे दे दिया करती। लेकिन वृक्ष के नीचे एक साँप बिल

बना कर रहने लगा। कमेडी के अंडा से जब बच्चे निकलते तो वह उन्हें खा जाया करता। साँप की दुष्टता के कारण कमेडी बहुत दुखी रहती। एक दिन कमेडी ने वह वृक्ष छोड दिया और दूसरे वृक्ष पर जाकर रहने लगी। वहीं उसने घासला बनाया। लेकिन सर्प वहाँ भी पहुँच गया। उसने कमेडी से कहा कि तू मुझ से बच कर कहाँ जाएगी ? अब देखूं तेरे बच्चों को कौन बचाता है ? कमेडी ने सर्प से बहुत प्रार्थना की कि हे नागराज ! कृपा करके आज आप मेरे बच्चों को न खाओ, कल भले ही खा लेना, आज सोमवती अमावस्या है, इससे तुम्हें भी अधिक पाप लगेगा। नाग किसी तरह उसकी प्रार्थना मान गया और बेचैनी से अगले दिन की प्रतीक्षा करने लगा। कमेडी वृक्ष की डाल पर बैठी आठ-आठ आँसू रो रही थी, तभी वहाँ एक कौवा आया। कमेडी की कष्ट-कथा सुनकर कौवे को बडी दया आयी, उसने एक उपाय सोच कर कमडी को बतलाया। कौवे की तरकीब कमेडी को भी पसन्द आयी। वह उसी वक्त वहाँ से एक नेवले की खोज में उड चली। थोडी ही दूर उडने पर उसे एक नेवला दिखलाई पड गया। वह नीचे आयी। नेवले को राखी बाँध कर कमेडी ने उसे अपना भाई बनाया और अगले दिन उसे अपने यहा जीमने का न्योता दे आयी। कमेडी ने घर आकर नेवले के लिए भोजन की अच्छी तैयारी की। सवेरे ही नेवला आ गया। कमेडी और कौवे ने मिलकर उसे बहुत अच्छी प्रकार भोजन करवाया। नेवला जाने लगा तो कमेडी की आँखों से आँसू बरसने लगे। नेवले के पूछने पर कमेडी ने उसे अपनी कष्ट-कथा कह सुनाई और बोली कि अब वह दुष्ट साँप आता ही होगा। नेवले ने कमेडी से कहा कि तुम फिक्र मत करो। आज मैं उसका काम तमाम कर दूंगा। इतने में काला नाग फुफकारता हुआ आया और वृक्ष पर चढने लगा। नेवले ने लपक कर उसकी पूछ पकड ली और उसे घसीट कर नीचे ले आया। फिर उसने साँप को बुरी तरह से क्षत विक्षत कर डाला। थोडी देर छटपटाकर साँप मर गया और चींटियाँ आकर उसे खाने लगीं। नेवला कमेडी से विदा लेकर चला गया और कमेडी उस वृक्ष पर सुखपूर्वक रहने लगी।

● काल आयां वंचै कोनी

एक ब्राह्मण अपनी स्त्री और लड़के के साथ अपनी झोपड़ी में सोया हुआ था। आधी रात को एक सांप झोंपड़ी पर से उतरा और उसने ब्राह्मणी और लड़के को डस लिया। उन दोनों की तत्काल मृत्यु हो गयी। उन दोनों को डस कर सांप वहाँ से चल पड़ा, ब्राह्मण ने उसका पीछा किया। थोड़ी दूर पीछा किये जाने पर सांप शेर की शक्ल में बदल गया, लेकिन ब्राह्मण ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। तब वह शेर सहसा ही मनुष्य बन गया और उसने ब्राह्मण से पूछा कि तू मेरे पीछे क्यों चला आ रहा है? ब्राह्मण ने कहा कि तू है कौन? यह बात मुझे सच-सच बतला। उस आदमी ने कहा कि मैं काल हूँ जो सबका भक्षण करता हूँ। ब्राह्मण ने कहा कि तू ने मेरी स्त्री और मेरे पुत्र का तो भक्षण किया लेकिन मेरा भक्षण क्यों नहीं किया? इस पर काल भगवान् ने उत्तर दिया कि उनकी-आयु पूरी हो गयी थी, तुम्हारी आयु अभी शेष है, आज से बारह वर्ष बाद तुम्हारी आयु पूरी होगी और तब गंगा-किनारे हरिद्वार में मगर बन कर तुम्हारा भक्षण करूँगा। काल की बात सुनकर ब्राह्मण लौट गया। उसने सोचा कि मैं हरिद्वार कभी जाऊँगा ही नहीं।

वहाँ से जा कर ब्राह्मण ने एक राजा के यहाँ नौकरी की। राजा के कोई संतान नहीं थी। ब्राह्मण के पहुँचने के कुछ दिन पश्चात्, राजा के एक लड़का हो गया। अब ब्राह्मण का सम्मान बहुत बढ़ गया। लड़का जब कुछ बड़ा हुआ तो ब्राह्मण उसे पढ़ाने लगा। ब्राह्मण लड़के को खूब मन लगा कर पढ़ाता था तथा लड़का भी अपने गुरू का बहुत आदर करता था। जब लड़का बारह साल का होने को हुआ तो उसने अपने पिता से कहा कि पिताजी, आप हम सब को लेकर हरिद्वार चलिए। वहीं मेरा यज्ञोपवीत संस्कार होगा, तथा हम सब वहीं कुछ दिन आराम से रहेंगे। राजा ने लड़के की बात स्वीकार कर ली, लेकिन ब्राह्मण किसी तरह हरिद्वार जाने को तैयार नहीं होता था। बहुत समझाने-बुझाने पर वह इस शर्त पर हरिद्वार जाने को तैयार हुआ कि वह गंगा से बहुत दूर अलग झोंपड़ी में रहेगा और गंगा तट पर कदापि नहीं जाएगा।

सब लोग हरिद्वार पहुँच गये। ब्राह्मण के लिए गगा तट से बहुत दूर एक अलग झोपडी बना दी गयी। लेकिन जब यज्ञोपवीत का दिन आया तो लडके ने कहा कि मैं तो गगा के पानी मे गुरूजी के हाथ से ही यज्ञोपवीत लूगा। राजा के पूछने पर ब्राह्मण ने अपनी व्यथा राजा से कह दी। राजा ने कहा कि आप निश्चित रहिये, मैं इसका सारा प्रबन्ध कर दूगा। राजा ने मछुओ को बुलवाकर गगा मे चारो तरफ जाल डलवा कर सारा पानी छनवा डाला। मछुओ ने कहा कि महाराज! इस जाल के घेरे मे मगरमच्छ तो क्या एक छोटी मछली भी नही है। तब राजा ने चारो ओर नगी तलवारो का पहरा लगवा दिया और कार्य शुरू हो गया। ब्राह्मण और राजकुमार जब गगा मे घुटनो तक पानी मे गये तो लडका स्वय ही मगर बन कर ब्राह्मण को दबोच गया और बोला कि मैंने कहा था न कि मैं फलां दिन तुम्हारा गगा-तट पर भक्षण करूँगा। मैं काल हूँ, मेरे से कोई बच नही सकता। सारे लोग अवाक् रह गये, किसी से कुछ करते धरते नही बना।

● भीमसेन को झोटो

एक बार भीमसेन कही जा रहे थे। रास्ते मे उन्होने देखा कि एक औरत झूले पर बैठी धीरे-धीरे झूल रही है। औरत के पास 'झोटा' देने वाला कोई दूसरा व्यक्ति नही था। औरत ने भीमसेन से कहा कि आ राहगीर, जरा एक झोटा तो देते जाना। भीमसेन ने एक झोटा दिया तो झूला आसमान में जा चढा। भय के मारे औरत की आँखें मुद गयी। उसने कल्पना भी न की थी कि झोटा इतने जोर से लगेगा। झोटा लगने पर उसने जाना कि राहगीर वास्तव मे भीमसेन है, अत उसने भय से काँपते हुए आर्त स्वर मे भीमसेन से पुकार कर कहा —

चढ़ता दीस्यो मालवो, उतरता दीखो नाल।
भींवा पड़ती नैं झेलिये, तूं पुरस मैं नार।

● हरी ककेडी हर की पैडी

एक बार अकाल पडा तो एक जाट काम धन्धा छोड कर साधु बन

गया। अपने गाँव को छोड कर वह अन्यत्र चला गया और भिक्षा माँग कर अपना पेट भरने लगा। एक कंकेडे के वृक्ष के नीचे उसने अपना आसन जमा लिया। धीरे-धीरे उसकी मान्यता बढने लगी। चेले-चेलियो का आना-जाना बढ गया और अब बाबा जी को किसी प्रकार का कष्ट न रहा। एक दिन कुछ लोग उधर से होकर उस जाट के गाँव की ओर आ रहे थे तो बाबा जी ने उनके हाथ निम्न सन्देश जाटनी को कहलवाया —

हरी ककेडी हर की पेडी, बैठ्या ध्यान लगावाँ हाँ,
गोदारी नै या कह दीज्यो, साड़ लागतै आवाँ हाँ।
माई बाई आवै भतेरी, दो-दो पातर पावाँ हाँ॥

● कागलो न्हाणै सू धोलो कोनी होवै

एक तालाब पर एक हंस रहता था। हंस का सफेद रंग देख कर कौवे को डाह हुई। उसने सोचा कि पानी मे अधिक रहने और स्नान करने के कारण ही हंस का रंग सफेद हो गया है। अत वह भी सारे काम धाम छोड कर हर समय नहाने धोने मे लग गया। उसने गौरवर्ण होने की धुन मे खाना-पीना और उडना भी छोड दिया, लेकिन कौवे का काला रंग तनिक भी सफेद नही हुआ। इस पर किसी ने व्यग्य करते हुए कहा —

कौवा रें तू मलमल न्हाय, तेरी कालूंस कदे न जाय।

● ना'र की खाल और गधेडो

एक गधे को एक सिंह की खाल जगल मे पडी मिल गई। गधे ने सोचा कि यदि यह खाल ओढ कर मैं सिंह बन जाऊँ तो फिर मुझे किसी हिंसक जानवर का डर न रहे, फिर निर्भय हो कर बडे ठाठ से रहूँ। यो सोच कर गधे ने वह खाल अच्छी तरह ओढ ली। फिर पानी के नाले मे उसने अपनी छाया देखी तो वह सहसा अपने को पहचान भी नही सका। जगल के सारे जानवर अब उससे डरने लगे। कुछ ही दिनो मे गधा मोटा-ताजा हो गया। अब उसने सारे जानवरो को इकट्ठा किया और उनका राजा बन गया।

नये राजा ने हुक्म दे दिया कि कोई जानवर किसी दूसरे जानवर को न मारे, यदि किसी ने राजा का हुक्म नही माना तो उसे जान से मार दिया जाएगा। माँसाहारी जीवो के लिए राजा की यह आज्ञा पूरी मुसीबत बन गई। मांस न मिलने के कारण वे दिन दिन घुलने लगे।

एक दिन एक गीदड ने नये राजा को घास चरते देख लिया। गीदड जान गया कि नया राजा कदापि शेर नही है, उसने सिंह के पास जाकर नये राजा का रहस्य खोला, लेकिन सिंह की हिम्मत नही हुई कि वह राजा का मुकाबला करे। अब गीदड किसी प्रकार नये राजा की पोल खोलने की ताक में रहने लगा। नये राजा के खोज (पग-चिह्न) देख कर गीदड जान गया कि यह तो निरा गधा है। एक दिन जब पूरा दरबार लगा हुआ था तो गीदड ने एक मोटी-ताजी गधी लाकर दरबार मे खडी कर दी। जेठ का महीना था। थोडी देर तो गधी चुपचाप खडी रही, लेकिन फिर वह दरबार का अदब-कायदा भूल गई और चींपों-चींपों करने लगी। अब नये राजा से भी नही रहा गया। वह भी ऊँचा मुह करके सप्तम स्वर मे चींपो-चींपो करने लगा। गीदड ने लपक्कर राजा के बदन पर से सिंह की खाल उतार ली और अब राजा अपने असली रूप मे दिखलाई पडने लगा। सारे मांसाहारी जीव क्रुद्ध तो थे ही, उन्होने गधे की बोटी-बोटी नोच डाली।

● भैंस को सींग लपोदर नांव

एक साधु जगल में कुटिया बना कर रहता था। आस-पास के क्षेत्र में उसकी बहुत मान्यता हो गई थी और काफी लोगो पर उसका प्रभाव जम गया था। एक दिन एक जाट साधु के पास आया और उसने कहा कि गुरूजी, मुझे भी गुरु-मत्र दीजिए। साधु ने सोचा कि यह गँवार जाट भला मत्र की बात क्या जानेगा? साधु ने उसे बहुत टाला, लेकिन जब वह नही माना तो जाट को टालने के लिए साधु ने कह दिया 'भैंस को सींग लपोदर नांव' यही तेरे लिए गुरुमत्र है। जाट ने गुरु की बात पर विश्वास कर लिया और उसी मन्त्र को पूर्ण विश्वास के साथ रटने लगा। जाट के सिर मे सींग

निकल आये और उसकी काया भैंसे के समान हो गई। उसे मन्त्र सिद्ध हो गया। तब एक दिन वह अपने गुरुजी के पास गया और कुटिया के बाहर से ही उसने गुरू को आवाज़ लगाई। गुरू ने वहीं से कहा कि कुटिया में आ जाओ। चेले ने कहा कि गुरुजी, कुटिया का दरवाज़ा चौड़ा करवाइए, यों मैं नहीं आ पाऊँगा। गुरु ने बाहर आकर देखा तो वह अवाक् रह गया। उसे अपने प्रति बड़ी घृणा हुई कि मैंने यों ही आडम्बर में अपना जीवन खो दिया। यदि इसकी तरह पूर्ण विश्वास से परमात्मा को याद करता तो आज मुझे परमात्मा अवश्य मिल जाता। साधु ने उसी क्षण सारा आडम्बर त्याग दिया और सच्चे मन से ईश्वर के भजन में लग गया।

● दो पणिहारी

एक युवती दो घड़े (दोघड़) लेकर पानी लाने के लिए पनघट को चली। रास्ते में उसकी सहेली का घर आया तो उसने सहेली को आवाज़ दी कि आओ पनघट को चलें। इस पर सहेली ने उत्तर दिया कि मैं तो पनघट को नहीं चलूंगी, क्योंकि —

> पनघट जाते पन घटे, पनघट वाको नाम।
> कहिए पन कैसे रहे, पनिहारिन को धाम॥

पनघट जाने से पन घट जाता है, क्योंकि उसका नाम ही पन घट है। फिर पनिहारिन का पन वहाँ जा कर कैसे रह सकता है?

यह दोहा सुनकर पहली ने उत्तर दिया—

> पनघट जाते पन घटे, यही कहे सब कोय।
> पनघट जा नहीं पन घटे, जो घट में पन होय॥

सखी का उत्तर सुन कर वह लजा गई और घड़ा लेकर उसके साथ पनघट को चल पड़ी।

● लालच बुरी बलाय

एक बार एक सिंह ने एक खरगोश का पीछा किया। खरगोश उसकी पकड़ में आने ही वाला था कि सिंह को एक मोटा-ताजा हिरन दिखलाई पड़ा। सिंह ने खरगोश का पीछा छोड़ दिया और वह हिरन के पीछे दौड़ा। लेकिन सिंह को झपटते देख कर हिरन जान लेकर भागा और शीघ्र ही शेर की आँखों से ओझल हो गया। अब शेर उस स्थान पर आया जहाँ उसने पकड़ में आये हुए खरगोश को छोड़ दिया था, लेकिन अब वहाँ खरगोश कहाँ था? वह कभी का गायब हो चुका था। अब सिंह को अपनी भूल ज्ञात हुई और वह पछताता हुआ एक तरफ को चला गया।

● गादड़ै की कुटलाई

एक जंगल में एक बाघ, एक भालू, एक बिलाव, एक गीदड़ और एक चूहा रहा करते थे। वे पाँचों आपस में दोस्त थे। वे आपस में मिलकर शिकार करते और फिर बाँट कर खाते। एक दिन बाघ ने एक हिरन का पीछा किया लेकिन हिरन उसकी पकड़ में नहीं आया और दूर निकल गया। तब उन पाँचों ने आपस में सलाह की कि हिरन का पीछा न किया जाए। हिरन बहुत थक गया है, वह अपना पीछा न होता जान कर किसी वृक्ष की छाया में सो जाएगा। तब चूहा जा कर चुपके से उसके पैर की नसें कुतर डाले। नसें कुतरी जाने पर हिरन भाग नहीं सकेगा और उसे आसानी से मार लिया जाएगा। इसी योजना के अनुसार काम किया गया। हिरन के पैरों की नसें चूहे ने कुतर डालीं और तब बाघ ने उसे अनायास ही मार लिया। अब गीदड़ ने सोचा कि एक हिरन के यदि पाँच हिस्से हो गए तो फिर खाने का पूरा आनन्द नहीं आएगा,अत शेष चारों को यहाँ से टरकाना चाहिए। उसने अपने मित्रों से कहा कि तुम सब कितने गंदे जीव हो कि न नहाते हो न धोते हो, यों ही माँस मिट्टी खा लेते हो और पड़े रहते हो। मैं तो तड़के सवेरे ही नहा धो लेता हूँ। पास ही नदी है, तुम भी जा कर नहा आओ।

अब यह हिरन यहाँ से भाग कर तो जाएगा नहीं, फिर मैं इसकी चौकसी करूँगा। चारों जने नहाने के लिए चले गए।

बाघ सबसे पहले लौटा तो उसने देखा कि गीदड़ उदास बैठा है। बाघ ने गीदड़ से उसकी उदासी का कारण पूछा तो गीदड़ बोला कि चूहा कह रहा था कि शिकार तो अकेले मैंने किया है और खाने को सब तैयार हैं बाघ जैसा बलवान जानवर भी मेरे मारे हुये शिकार पर जीभ लपलपा रहा है। गीदड़ की बात सुनकर बाघ ने गुस्से म भर कर कहा कि बेचारे चूहे की क्या बिसात है जो वह मेरा पेट भरे। मैं आज से अपना किया हुआ शिकार ही खाऊँगा। यो कह कर बाघ वहा से चलता बना। इतने म भालू आ गया। गीदड़ उसी तरह मुह लटकाये बैठा था। रीछ के पूछने पर गीदड़ बोला कि आज तक हम सब मिल-जुल कर रह रहे थे और बड़े आनन्द म थे, लेकिन अब लगता है कि दुर्भाग्य हमारे पीछे पड गया है हम सब बिछुड़ जाएँगे। तुमने न जाने बाघ को क्या कह दिया कि वह गुस्से मे लाल-पीला हो रहा था वह क्रोध म भरा तुम्हारी ही तलाश म गया है कि आज उसे देखते ही जान से मारूँगा। गीदड़ की बात सुनते ही रीछ के होश उड़ गये वह जान बचा कर भाग खड़ा हुआ। इतने मे बिलाव आया। बिलाव को देखते ही गीदड़ बोला कि लो तुम आ गये इस मुर्दे को सभालो आज काली अमावस्या के दिन हिरन को मारकर हमने बड़ा पाप किया है। बाघ और भालू तो प्रायश्चित करने हरिद्वार गये हैं अब मैं भी जा रहा हूँ। गीदड़ की बात सुन कर बिलाव ने सोचा कि कहीं सारा पाप मेरे गले न पड़े इसलिए वह गीदड़ से पहले ही प्रायश्चित करने के लिए हरिद्वार को चल पड़ा। अ त म चूहा आया। चूहे को देखते ही गीदड़ बोला कि आज तुम्हारी खैर नहीं। बिलाव कह रहा था कि चूहे ने मेरी मूछें कुतर डाली है आज उसको इसका खूब मजा चखाऊँगा। आज वह तुम्हे देखते ही दबोच डालेगा। गीदड़ की बात सुन कर चूहा भी भाग गया। अब गीदड़ की बन आई। उसने मृत हिरन को अकेले ही खूब स्वाद से खाया।

● कावली और राजकुमारी

एक राजा के सात लडके थे। राजा ने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जिस आदमी के सात लडकियाँ हाेगी उसी के यहाँ अपने सातों लडकाे की शादी करूँगा। राजा ने काफी धन देकर एक ब्राह्मण को ऐसे आदमी की तलाश मे भेजा जिसके सात लडकियाँ हो। ब्राह्मण बहुत दिनाे तक खाेजता रहा, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। ब्राह्मण के पास का सारा धन चुक गया। अब उसके पास केवल एक टका बचा था। ब्राह्मण एक बाग मे पहुँचा। उस टके को देखकर कभी वह हँसने लगता और कभी उदास हाे जाता। वह बाग उस नगर के राजा का था जिसके सात विवाह-योग्य लडकियाँ थी। उस राजा ने भी यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि मैं अपनी लडकियाे का विवाह ऐसे राजा के यहाँ करूँगा कि जिसके सात राजकुमार हों। साताें लडकियाँ बाग मे घूमने आयीं ताे उन्हाेने ब्राह्मण काे देखा। सारी बात जान कर वे उसे अपने पिता के पास ले गयीं। साताें लडकियाें का विवाह पक्का हो गया। ब्राह्मण अपने नगर को चला आया।

नियत दिन बारात पहुँच गई। साताें राजकुमार अपने-अपने घोडाें पर सवार हाे कर नगर देखने के लिए निकले। और सब भाई ताे घूम फिर कर वापिस आ गए, लेकिन सबसे छाेटा राजकुमार उनसे अलग हाे गया। वह घूमता घामता एक दरवाजे के पास पहुँचा और उस दरवाजे पर चढ गया। दरवाजे के ऊपर एक सुन्दर 'चौबारा' था जिसमें एक पलंग बिछा हुआ था। राजकुमार विश्राम करने के लिए पलँग पर लेटा और उसे निद्रा आ गयी। उस जगह चार 'कावली' आया करती थी। वे अपने नियत समय पर वहाँ आयीं और उन्हाेने कंगन-डोरे बंधे और हल्दी-बान चढे राजकुमार काे वहाँ सोया देखा। उसे देख कर वे एक साथ बाल उठीं कि अहा, आज ताे देखाे कैसा चिकना-चुपडा शिकार अपने आप ही आ गया है? लेकिन इस यों नहीं मुसा कर खाएगी। जाते समय वे खाट के पाये पर एक कच्चे सूत का धागा बाँध गयीं जिससे राजकुमार वहाँ बेहाेश पडा रहे।

उधर बहुत खाेज-बीन के बाद भी जब राजकुमार का कुछ पता नहीं

चला तो लडकों के बाप ने बेटी वालों से कह दिया कि छोटे राजकुमार को हम राज्य की रक्षा के लिए वहीं छोड आये हैं, अतः छोटी राजकुमारी को उसके खांडे के साथ फेरे दिलवा दिये जाएँ। निदान ऐसा ही हुआ और सातों राजकुमारियों का विवाह हो गया। राजा सातों बहुओं को लेकर अपने नगर को आ गया। घर आकर भी जब छोटी बहू ने अपने पति को वहाँ नहीं देखा तो उसने सही बात का पता लगाया और वह पीहर जाने के बहाने कुछ आदमियों को साथ लेकर वहां से निकल पडी। कुछ दूर जाकर उसने साथी अनुचरों को विदा कर दिया और स्वयं मरदाना वेश बना कर वहां से अकेली ही आगे बढी।

खोजते-खोजते वह उसी 'चौवारे' पर पहुँच गई। वहाँ उसने अपने पति को ककन-डोरे बांधे सोया देखा। उसका शरीर बहुत कृश हो गया था, क्योंकि 'कांवलियाँ' उसे खाने के लिए सुखा रही थीं। वे चारों अपने नियत समय पर आती, उसके साथ चौसर खेलतीं और जाते समय उसे फिर बेसुध करके वहीं लिटा जातीं। खाने के लिए वे उसे कुछ नहीं देतीं। राजकुमारी अपने पति के पलंग पर बैठी तो 'जादू का धागा' टूट गया और राजकुमार उठ बैठा। आज उसने पहली बार किसी दूसरे आदमी को अपने सामने बैठा पाया। राजकुमार ने अपनी सारी कथा आगन्तुक को कह सुनाई। आगन्तुक ने कहा कि मैं एक साहूकार का बेटा हूँ और इसी नगर में अपना व्यापार करता हूँ, आज से हम दोनों मित्र हैं और मैं तुम्हें यहाँ से छुटकारा दिलाने का भरसक प्रयत्न करूँगा। आगन्तुक चला गया और राजकुमार वहीं पड रहा। अब "साहूकार का बेटा" वहाँ नित्य आता और राजकुमार को बढिया खाना खिला जाता। राजकुमार अब हृष्ट-पुष्ट होने लगा। तब एक दिन "कांवलियों" ने विचार किया कि यहां तो कोई चोर लग गया है, हम तो इसे खाने के लिए सुखा रही हैं और यह दिन-दिन मोटा होता जा रहा है। यों सोचकर वे उसे समुद्र पार ले गयी और उसे एक सुरक्षित बुर्ज पर टिका दिया।

'साहूकार का लडका' भी किसी तरह वहाँ तक पहुँच गया। जिस

बुर्ज के ऊपर राजकुमार को रखा गया था उस पर चढ़ने के लिए कोई सीढ़ी नहीं थी। 'साहूकार का बेटा' वहीं बुर्ज के नीचे बैठा रहा। आधी रात को वहाँ 'चकवा-चकवी' बोले कि यहाँ जो ढेर-सी बीट पड़ी है यह सर्वरोग नाशक दवा है, यदि कोई सुनना गिनता हो और इस बीट को उठा ले जाए तो इसे पीस कर चाहे जिस रोग पर लगाये, वह रोग तीन दिन में जड़-मूल से चला जाएगा। साहूकार के बेटे ने चकवे-चकवी की बात सुनी। सवेरा होते ही उसने सारी 'बीट' बटोर ली। फिर उसने वैद्य का स्वाँग बनाया और समुद्र पार के उस नगर में निकल गया। गली-कूचों में वैद्य जी आवाज लगाते घूम रहे थे कि गजापन, बहरापन, अन्धापन कोई भी रोग हो, मैं तीन दिन में ठीक कर दूगा। वैद्य की आवाज सुनकर एक कोढ़ी ने उसे अपने पास बुलाया। कोढ़ से उसके सारे अंग गल गए थे, उसके पास खड़ा हो सकना भी दूभर था। लेकिन वैद्य जी ने कहा कि घबड़ाने की कोई बात नहीं है, मैं तुम्हें बहुत शीघ्र चंगा कर दूगा। वैद्य जी ने बीट पीस कर कोढ़ी के सारे शरीर पर लगवाई और कहा कि तीन दिन तक ऐसे ही रहने देना, आज के तीसरे दिन मैं यहाँ फिर आऊँगा। वैद्य तीसरे दिन आया तो कोढ़ी एकदम स्वस्थ हो चुका था। वैद्य को देखते ही वह उसके पैरों में गिर पड़ा। उसने अपनी लड़की का विवाह भी उसके साथ कर दिया।

वास्तव में यह आदमी उन चारों 'कांवलिया' में से एक का पिता था और वैद्य जी से उस ने एक 'कांवली' की ही शादी की थी। विवाह होने के बाद वहाँ की प्रथा के अनुसार, वह बाहर नहीं जा सकती थी, अत: अब राजकुमार के पास तीन ही 'कांवलियां' जाने लगीं। साहूकार के बेटे ने सोचा कि चलो एक से तो पीछा छूटा। दूसरी 'कावली' का पिता अन्धा था, तीसरी का गंजा और चौथी का लकवे से पीड़ित था। 'वैद्य जी' ने उन तीनों का भी नीरोग कर दिया और उन तीनों 'कांवलिया' से शादी कर ली। अब वे चारों घर से बाहर नहीं निकल सकती थीं। 'साहूकार का बेटा' अब अपने दोस्त के पास बेखटके आने-जाने लगा। वह उसको अब और अच्छी तरह-खिलाने पिलाने लगा। उधर वैद्यजी ने अपनी पत्नियों से कहा कि

अब मैं अपने देश को जाऊँगा। कांवलियों ने कहा कि हमें भी अपने साथ ले चलो। एक ने कहा कि मेरे पिता के पास उडन-खटोला है, तुम वह माँग लो, दूसरी ने कहा कि मेरे पिता के पास लग-लग घोटा है, तीसरी ने कहा कि मेरे बाप के पास 'झर-झर कथा' है और चौथी ने कहा कि मेरे बाप के पास सजीवन बूटी है। वैद्यजी ने चारो चीजें हथिया ली और अपनी 'पत्नियो' से कहा कि मेरे साथ मेरा एक मित्र है, वह तुम्हे उडन-खटोले मे नही बैठने देगा। इसलिए यदि तुम मेरे साथ चलना चाहती हो तो उडन-खटोले के पाये पकड लेना। चारो ने अपने पति की आज्ञा मान ली। साहूकार का बेटा अपने दोस्त को उडन-खटोले मे बैठा कर उड चला। कांवलिया ने खटोले के पाये पकड लिये। जब उडन-खटोला बीच समुद्र मे पहुँचा तो साहूकार के बेटे ने अपने दोस्त को एक तलवार दी। राजकुमार ने उन चारो 'कांवलिया' के हाथ काट डाले और वे चारों 'हाय हाय' करती समुद्र म गिर पडी। राजकुमार अपने घर आ गया। चारो ओर आनन्द उत्सव होने लगे। मौका पाकर 'साहूकार का बेटा' अपने महल में चला गया और उसने राजकुमार की पत्नी का अपना असली वेश बना लिया। जब राजकुमार को सारा रहस्य ज्ञात हुआ तो उसके आनन्द की सीमा न रही।

● साँप और कागलो

एक कौवा और एक कौवी एक वृक्ष पर रहते थे। उसी वृक्ष के नीचे एक बडा साँप बिल बनाकर रहने लगा। कौवी के बच्चो को वह खा जाया करता। साँप की दुष्टता के कारण कौवा और कौवी बडे दुखी रहते।

एक गीदड कौवे का मित्र था। एक दिन कौवा अपने मित्र के पास गया और उसने गीदड को अपनी सारी कथा कह सुनाई। गीदड ने कौवे को एक युक्ति बतलाई और कौवा अपने घर आ गया। दूसरे दिन कौवा उडकर रानी के महल पर गया। रानी उस वक्त स्नान कर रही थी। उसने अपना नौलखा हार उतार कर वही रख छोडा था। मौका पाकर कौवा हार को लेकर उड चला। राजा के सिपाही कौवे के पीछे दौडे। कौवा अपने वृक्ष पर आया

और उसने हार को सांप के बिल में डाल दिया। राजा के सिपाही कौवे का पीछा करते-करते वहाँ आ गये। सिपाहियों ने साँप को मार डाला और हार लेकर चले गए। साँप के मर जाने से कौवा-कौवी निर्भय होकर उस वृक्ष पर रहने लगे।

● मणियार की चतराई

एक मनिहार बहुत सारी टोपियाँ लेकर मेले में बेचने चला। रास्ते में वह एक वृक्ष के नीचे सो गया। उस वृक्ष पर बहुत सारे लँगूर रहते थे। मनिहार टोपी ओढ़े हुए था। लँगूरों की भी इच्छा टोपियाँ ओढ़ने की हुई। उन्होंने मनिहार की गठरी खोली और सब एक-एक टोपी लेकर वृक्ष पर चढ़ गये। टोपियाँ ओढ़कर वे बहुत खुश थे। अब उन्होंने मनिहार को छकाने की सोची। वृक्ष का एक फल तोड़ कर एक लँगूर ने मनिहार के मुँह पर दे मारा। मनिहार अचकचा कर उठ बैठा। टोपियों की गठरी भी उस दिखाई नहीं पड़ी। मनिहार ने ऊपर की ओर देखा तो सारे लँगूर टोपियाँ ओढ़े हुए थे। अब मनिहार ने एक युक्ति सोची। उसने अपनी टोपी सिर से उतार कर और गुस्से में भर कर लँगूरों की तरफ फेंकी। लँगूर उस टोपी को नहीं पकड़ सके और टोपी नीचे आ गिरी। अब सारे लँगूरों ने अपनी टोपियाँ उतार-उतार कर मनिहार की ओर फेंक दीं। मनिहार तो यही चाहता था। उसने शीघ्रता से सारी टोपियाँ बटोरीं और वहाँ से चलता बना।

● खाती की बेटी

एक खाती के तीन लड़के थे। दो का विवाह हो गया था और एक अभी अविवाहित था। वह भोजन करने के बाद थाली में ही कुल्ला किया करता था। एक दिन उसकी भावज ने ताना मारा कि थाली में कुल्ला करता हो जैसे रिड़मल खाती की बेटी को ब्याह कर लाओगे। देवर ने कहा कि रिड़मल की बेटी को ही ब्याह कर लाऊँगा। वह उसी समय रिड़मल खाती के घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने एक मरी हुई भैंस देखी। खाती के लड़के

ने भैंस के सींग काट लिये और उन सींगों के चावल बना लिये। चावल बना कर वह रिडमल के घर पहुँचा। रिडमल की बेटी ने हड्डियों के तिल बना रखे थे। उसके साथ विवाह की इच्छा से जो आदमी उसके घर आता उसे 'कलेवे' के लिए वह हड्डियों के तिल दिया करती और इस प्रकार आने वाले की परीक्षा लेती। इस खाती के बेटे को भी कलेवे के लिए तिल भेजे गए लेकिन उसने कहा कि मुझे अभी भूख नहीं है, मेरे पास थोड़े चावल हैं सो इनकी खीर बनवा दो। रिडमल की बेटी ने वे चावल दूध में डाल दिये और खीर बनाने लगी, लेकिन हड्डियों के चावलों की क्या खीर पकती? उसने जान लिया कि यह आदमी बड़ा चतुर है। दोनों का विवाह हो गया और दोनों वहीं रहने लगे। एक दिन भौजाई ने ताना मारा कि बाई जी ने तो यहीं घर बसा लिया, यह पेट में से तो निकली, लेकिन 'हाँडी' में से नहीं निकली। खाती की बेटी ने अपने पति से कहा कि तुम निठल्ले क्यों बैठे हो? कुछ कमा कर लाओ। और कुछ नहीं तो मेरे बाप के बहुत बड़ा वन है उसी में से लकड़ी काट लाओ और उसकी चीजें बनाकर बेचो। दूसरे दिन तड़के ही खाती का बेटा लकड़ी लाने के लिए चला। वन में पहुँचकर उसने लकड़ियों से पूछना शुरू किया कि लकड़ी, काम की या बेकाम की? हर लकड़ी ने यही उत्तर दिया कि बेकाम की। वह निराश होकर लौटने लगा। सहसा उसे एक टेढ़ी मेढ़ी लकड़ी दिखाई पड़ी जिससे उपर्युक्त प्रश्न नहीं पूछा गया था। खाती के बेटे ने उससे भी यही प्रश्न किया। उसका प्रश्न सुनकर लकड़ी ने कहा कि मैं काम की हूँ। खाती उसी लकड़ी को काट कर घर ले आया और उसे अपनी खटिया के नीचे डालकर सो रहा। दूसरे दिन खाती ने उस लकड़ी का एक अटेरन बनाया और उसे अपनी बहू को देकर बोला कि इसे ले जाकर शहर में बेच आ। इस अटेरन को लाख टके से कम पर मत बेचना। खातिन अटेरन लेकर शहर को चली गई। अटेरन बहुत सुन्दर था, लेकिन मोल सुनकर सब हैरान हो जाते थे। शाम तक अटेरन नहीं बिका। शाम को एक सेठ अपने घर जा रहा था। उसने भी अटेरन देखा और उसका मूल्य पूछा। मूल्य सुन कर सेठ ने पूछा कि इसमें गुण क्या है? खाती की बहू ने उत्तर दिया कि

गुण है तभी तो लाख टके मोल के हैं। सेठ ने अटेरन ले लिया और कहा कि लाख टके सबेरे ले जाना। उसने अटेरन ले जा कर अपने गोदाम मे डाल दिया जहाँ सैकड़ो मन रेशम उलझा हुआ पडा था। अटेरन ने रात भर म सारे रेशम को सुलझा कर गोदाम मे करतीब से लगा दिया। सवेरे जब गोदाम खोला गया तो सेठ को बडा मुखद आश्चर्य हुआ। उसने खातिन को बुला कर एक लाख टके तो दिये ही, उसे अतिरिक्त पुरस्कार भी दिया। खातिन अपने घर चली गई और अब दोनो फिर आराम से रहने लगे। लेकिन खाते-खाते तो कुआँ भी खाली हो जाता है, अत एक दिन खातिन ने पति से कहा कि वह धन तो चुक गया है, अब और कुछ बनाओ। खाती उसी प्रकार एक लकडी और लाया और इस बार उसने एक पलग बनाया। पलग देकर उसने अपनी बहू को शहर में भेजा और कहा कि इसका मूल्य नौ लाख टके हैं। खाती की बहू पलग लेकर शहर म गई। पलँग बहुत सुन्दर था, लेकिन मोल सुनकर सब पीछे हट जाते थे। शाम को राजा की सवारी निकली तो उसकी निगाह भी पलँग पर गई। उसने पलँग ले लिया और कहा कि सवेरे दरबार मे आकर कीमत ले जाना। राजा ने पलँग महल मे भिजवा दिया।

सारे नगर मे यह चर्चा फैल गयी कि आज राजा ने नौ लाख टके का पलँग खरीदा है। राजा की बेटी ने अपनी माँ से कहा कि मैं भी पलँग देखकर आती हूँ। रानी ने कहा कि पलँग भले ही देख आ लेकिन उस पर बैठना नही और यदि बैठ ही जाए तो उस पर सोना नही। लडकी गई। उसने पलँग पर बैठ कर देखा, फिर लेट गई और लेटते ही उसे नींद आ गई। रात को राजा आया और महल पर चढने लगा। जब चार सीढियाँ शेष रहीं तो पलँग के एक पाये म से एक पुतली निकली और उसने राजा से कहा कि राजा आगे कदम मत रखना, अन्यथा तू उसी प्रकार पछताएगा कि जिस प्रकार चकवे का वचन देकर चकवी पछताई थी। यो कह कर उसने एक कहानी कहना शुरू की—एक राजा के कोई सतान नहीं थी। दुहागिन रानी से मिलकर एक पडित ने राजा से कहा कि यदि आप दुहागिन रानी के महल मे पधारें

तो आपके एक लडका हो सकता है। पडित की बात मान कर राजा दुहागिन रानी के महल मे गया। पडित के कहने से रानी ने झूठ-मूठ ही यह बात फैला दी कि वह गर्भवती है। राजा को बडी खुशी हुई। पडित के मांगने पर राजा ने उसे नगर मे तीन दिन की लूट बख्श दी। पडित मालामाल हो गया। नौ महीने पूरे होने पर रानी ने यह प्रकट किया कि उसके कुवर जन्मा है। चारो ओर आनन्द-उत्साह छा गया। राजा की खुशी का कोई ठिकाना नही था। लेकिन पण्डित ने राजा से कह दिया कि विवाह होने के पहले यदि कुवर का कोई देख लेगा तो कुवर की अकाल मृत्यु हो जाएगी। राजा ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि कोई कुवर को न देख सके। दिन निकलने लगे और कुवर अपनी माँ के महल मे ही 'बडा' होने लगा। कुवर की सगाई के टीके आने लगे। पडित टालता गया, टालता गया। अन्त मे राजा ने पण्डित से कहा कि आज जो टीका आया है, उसे तो स्वीकार करना ही होगा। हार कर पण्डित ने कहा कि एक ही शर्त पर टीका स्वीकार किया जा सकता है कि कुवर को बन्द पालकी मे बैठा कर मैं ब्याह करवा के लाऊँगा। आप बारात मे नही जा सकेंगे। राजा ने शर्त स्वीकार कर ली। नियत दिन पण्डित ने आटे का एक 'कुवर' बनाया और उसे सजा कर पालकी मे बैठा दिया। पालकी चारो ओर से ढक दी गई। राजा ने बहुत सारे सैनिक और सेवक साथ दे दिये। बारात चल पडी। रात को बारात ने एक बडे वृक्ष के नीचे पडाव डाल दिया। आधी रात को चकवा चकवी बोले। चकवे ने कहा कि कल हजारो घरो मे रोना-पीटना मचेगा, क्योंकि पालकी म आटे के 'लोथडे' के सिवाय कुछ भी नही है। लडकी वाला को जब इस बात का पता चलेगा तो वे इसम अपना अपमान समझेंगे और इन सब आदमियो को निश्चिय हो मार डालेगे। चकवी ने पूछा कि इनको कैसे बचाया जा सकता है तो चकवा बोला कि यदि तू कहे तो मैं राजा का लडका बन कर ब्याह कर लाऊँ। चकवी ने उसे अनुमति दे दी। चकवे ने अपना वह 'चोला' त्याग दिया और राजा का कुवर बन कर पालकी म आ बैठा। आते ही उसने पण्डित से पुकार कर कहा कि इस पालकी के पर्दे खोलो, मेरा दम घुटा जा

रहा है। पडित ने पाल्की का पर्दा उठा कर देखा तो उसकी जान म जान आ गई। कुवर के कहने पर उसने राजा रानी और सारे राजपरिवार को बुलवा लिया।

खूब धूम-धाम से विवाह हो गया। जब बारात लौटी तो चकवी ने 'चकवे' से कहा कि अब आ जाओ। उसने उत्तर दिया कि दो दिन और ठहरो, बारात को घर तो पहुँचा दू। जब दो दिन बीत गये और चक्वा नहीं लौटा तो चक्वी उसके पास गई कि अब चलो, लेकिन चकवे ने चक्वी को रुखा उत्तर दे दिया कि ककड चुगते-चुगते मेरा गला बैठ गया और वृक्ष के ठूठ पर बैठ-बैठे पजे दुखने लगे। बडे सयोग से मैंने राजकुवर का 'चोला' पाया है। अब मैं नहीं आने का, तुम जाओ। चक्वी अब पछताने लगी कि न मैं चक्वे को जाने के लिए कहती और न मुझे यह दिन देखना पडता। सो हे राजा यदि तू आगे कदम रखेगा तो उस चक्वी की तरह ही पछताएगा। या कह कर वह पुतली उसी पाये म समा गई।

कुछ देर बाद राजा ने दूसरी सीढी पर पैर रखा तो दूसरे पाये म से एक पुतली निकली और उसने राजा से कहा कि राजा खबरदार, आगे पग मत बढाना। यदि तूने आगे कदम बढाया तो मत्री के लडके को मरवा देने वाले राजकुमार की तरह पछताएगा। या कहकर दूसरी पुतली ने अपनी कहानी शुरु की—एक राजा के लडके ने एक रात स्वप्न मे एक ऐसी राज-कुमारी को देखा कि जिसके हसने से फूल झडने थे और रोने से मोती बरसते थे। राजकुमार ने अपना सपना मत्री के लडके को सुनाया और कहा कि मैं यदि शादी करूँगा तो इसी राजकुमारी से। मत्री के लडके ने उसे भरोसा दिलाया और बहुत खोज-बीन के पश्चात् उस राजकुमारी का पता लगा लिया। राजकुमार के साथ उसका विवाह हो गया। लेकिन उस राजकुमारी के प्राण एक हार म स्थित रहते थे। इस रहस्य को एक धोबिन की लडकी जानती थी। विवाह के हमले म हार वाला कमरा खुला रह गया और धोबिन की लडकी ने हार चुरा लिया। हार चुराते ही राजकुमारी का जी मिचलाने लगा। उसने अपनी माँ से कहा कि जैसे ही धोबिन की लडकी हार पहनेगी,

मेरी मृत्यु हो जाएगी। लेकिन जबतक हार को तोडा नही जाएगा मेरी पूर्ण मृत्यु नही होगी, अत मरने के बाद मुझे जलाना नही। जिस राजकुमार से मेरा विवाह हुआ है, उस राजा की सीमा मे मेरी देह को रखा देना।

धोबिन की लडकी ने जैसे ही हार पहना, राजकुमारी की मृत्यु हो गई। घरवालों ने इस बात को किसी पर प्रकट नही किया। धोबिन की लडकी को ही राजकुमारी बनाकर राजकुमार के साथ भेज दिया गया। राजकुमारी का शव राजकुमार के राज्य की सीमा मे रखवा दिया गया। जहाँ राजकुमारी का शव रखा गया, वहाँ एक सुन्दर महल बन गया। अब राजकुमारी का शव महल मे सुरक्षित हो गया। दिन मे जब धोबिन की लडकी हार पहने रहती, राजकुमारी का शरीर मृतवत् पडा रहता और रात को जब वह हार निकाल कर रख देती तो राजकुमारी जीवित हो जाती। उधर राजकुमार ने देखा कि 'राजकुमारी' मे कोई विशेषता नही है, न उसके हँसने से फूल झडते हैं और न रोने से मोतियों की वर्षा होती है। उसने सोचा कि वजीर के लडके ने मुझे धोखा दिया है तो उसने वजीर के लडके को जान से मरवा डाला।

एक दिन राजकुमार शिकार के लिए गया तो उसने अपने राज्य की सीमा पर एक सुन्दर महल बना देखा। उसे बडा आश्चर्य हुआ कि यह महल कब बन गया? वह महल के अन्दर गया तो उसने एक सुन्दर राजकुमारी को सोती हुई देखा। राजकुमार वही बैठ गया। रात हुई तो राजकुमारी उठ बैठी। राजकुमारी ने सारा रहस्य राजकुमार पर प्रकट कर दिया और साथ ही धोबिन की लडकी से हार छीनने की तरकीब भी बतला दी।

राजकुमार चला गया। दूसरे दिन उसने अपनी स्त्री से कहा कि मैं विदेश जा रहा हूँ और उसने विदेश जाने की तैयारी भी कर ली। 'राजकुमारी' अपने पति को विदा करने के लिए उसकी 'आरती' उतारने के लिए तत्पर हुई तो राजकुमार ने अपने सेवकों को सकेत कर दिया। उन्होने उसकी दोनों भुजाएँ कस कर पकड ली। राजकुमार ने 'राजकुमारी' के गले से हार निकाल लिया। इसके बाद उसने धोबिन की लडकी को फासी दिलवा

दी। हार लेकर राजकुमार उस महल में गया। उसने सोई हुई राजकुमारी के गले में हार पहना दिया। हार पहनते ही वह उठ बैठी। राजकुमार उसे घर ले आया। इस राजकुमारी के हँसने से फूल झड़ते थे और रोने से मोती बरसते थे। अब राजकुमार पछताने लगा कि मैंने मंत्री के लड़के को व्यर्थ ही मरवा डाला। उस बेचारे ने मेरे लिए क्या नहीं किया? लेकिन अब पछताने से क्या होता? सो हे राजा, तूने आगे कदम बढ़ाया तो उसी तरह पछताएगा। मेरा समय हो गया है, अतः मैं अब जा रही हूँ।

दूसरी पुतली के जाते ही राजा ने फिर कदम बढ़ाया तो तीसरे पाये से एक और पुतली निकली। इसने भी राजा को आगे बढ़ने से मना किया और अपनी कहानी शुरू की—एक राजा और एक साहूकार के लड़के आपस में दोस्त थे। दोनों अपनी-अपनी ससुराल को चले। पहले राजकुमार की ससुराल आई। शर्त के अनुसार साहूकार का लड़का भी राजकुमार के पास महल में सोया। राजकुमार की स्त्री बदचलन थी। वह आधी रात को उठकर एक फकीर के पास जाया करती थी। जब राजकुमार सो गया तो वह चुपचाप उठी। साहूकार के बेटे को नींद नहीं आई थी वह भी चुपके से उठकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। आज फकीर गुस्से में भरा बैठा था। उसने जाते ही राजकुमारी की पीठ पर तड़ातड़ चार चिमटे जड़ दिये और बोला कि हरामजादी इतनी देर कहाँ लगा दी? राजकुमारी ने कहा कि आज मेरा पति आ गया था, इसीलिए देर हो गई। फकीर ने कहा कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं जा इसी समय उसका सिर काट ला। राजकुमारी गई और तुरन्त अपने पति का सिर काट लाई। तब फकीर ने उसे लानत देते हुए कहा कि बदकार औरत यहाँ फिर कभी मत आना इसी समय यहाँ से चली जा। जो अपने पति की नहीं हुई वह और किसी की क्या होगी? राजकुमारी अपने पति का सिर लिये हुए महल को चल पड़ी। साहूकार का बेटा यह सारी लीला देख रहा था। वह राजकुमारी से पहले ही आकर सो गया। राजकुमारी ने आते ही हल्ला मचा दिया कि इस साहूकार के बेटे ने मेरे पति को मार डाला। उस बेचारे को तुरन्त

पकड़ लिया गया और राजा ने हुक्म दिया कि उस दुष्ट को ले जाकर तोप से उड़ा दो। किसी तरह साहूकार के बेटे ने राजा को सच्ची बात बतलाई और राजकुमारी के शरीर पर पड़े चिमटे के निशान दिखला दिये। राजा ने साहूकार के लड़के को छोड़ दिया और वह राजकुमार की लाश को एक सन्दूक में रखकर अपनी ससुराल को चल पड़ा। वह बहुत उदास था। ससुराल पहुँचने पर जब रात को उसे महल पधारने के लिए कहा गया तो वह बोला कि पहले मेरा सदूक वहाँ पहुँचा दो। सदूक को पास रखकर साहूकार का लड़का चुपचाप लेट रहा। उसकी औरत आई और उसे गुदगुदाने लगी, लेकिन वह सिर्फ हाँ-हूँ करता रहा और थोड़ी देर बाद नींद आने का बहाना करके पड़ रहा। औरत आधी रात को शिवजी की पूजा करने के लिए जाया करती थी। पति को सोया जान वह उठी और आरती सजा कर पूजा करने को चल पड़ी। साहूकार के लड़के ने उसका भी पीछा किया। शिवजी की आरती करने के पश्चात् स्त्री ने कहा कि प्रभो! आज मेरा पति आया है, लेकिन वह बहुत उदास है, कृपया उसे प्रसन्न रखें। शिवजी ने वर दिया कि तू बूढ सुहागिन हो। साहूकार का बेटा तुरन्त वहाँ से अपने महल में लौट आया। उसने राजकुमार की लाश सदूक से निकाल कर बाहर सुला दी और उसे कपड़ा ओढ़ा दिया तथा स्वयं सन्दूक में घुसकर बैठ गया। उसकी पत्नी पूजा करके आई और उसने वस्त्र हटाया तो वह देखकर हक्की-बक्की रह गई। उसने जाना कि उसके पति को किसी ने मार डाला है। वह तुरन्त शिवजी के पास गई और बोली कि प्रभो, आपने तो मुझे सोहाग दिया है, मेरा पति तो वहाँ मरा पड़ा है। शिवजी ने कहा वह तेरा पति नहीं है, लेकिन उसका सिर धड़ से जोड़ दे, वह जी उठेगा। स्त्री ने आ कर वैसा ही किया। सिर के जुड़ते ही राजकुमार उठ बैठा और बोला कि आज तो खूब नींद आई। साहूकार के बेटे ने मित्र को जीवित हुआ जाना तो सन्दूक से बाहर निकल आया। कुछ दिन वहाँ रहकर वे अपने नगर को लौट आये।

एक रात साहूकार के बेटे के महल में एक बिल्ली घुस आई। साहूकार की स्त्री ने दासी से कहा कि बिल्ली को निकाल दे, मुझे डर लगता है। दासी

ने कहा कि बहूजी बिल्ली का डर मुझे भी बहुत लगता है, वे आपस मे इस प्रकार बातें कर ही रही थी कि साहूकार का बेटा महल म पहुँच गया। उसने मन म विचारा कि उसकी पत्नी कितनी सीधी है कि बिल्ली से भी डरती है। कुछ दिन पश्चात्, एक दिन साहूकार का बेटा अपने महल में सोया था कि नदी म एक लाश तैरती हुई आई। एक गीदड बोला—

कोक पढती कामणी, सुगणा लेजो बिचार।
नदी बीच मुरदा बहै, जांघ लाल हैं च्यार॥

वह स्त्री पशु-पक्षिया की बाली समझती थी।

गीदड की बात सुनकर साहूकार के बेटे की बहू ने लपक कर लाश पकड ली। लेकिन उसके पास कोई हथियार नही था, अत उसने अपने दाँतो से मुर्दे की जघा चीर कर उसम से चारा लाल निकाल लिये और लाश को फिर पानी म बहा दिया। इतने मे उसका पति जग गया। उसने अपनी बहू का यह कृत्य देख लिया। उसे विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी डाकिन है। उसने तुरन्त अपनी स्त्री को मार डाला। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी के पास चार बहुमूल्य लाल देखे तो उसे सही बात का अनुमान लगाते देर नही लगी। अब वह हाथ मल मल कर पछताने लगा। सो हे राजा यदि तू आगे बढेगा तो उसी साहूकार के बेट की तरह पछताएगा। यों कह कर तीसरी पुतली गायब हो गई।

अब चौथी पुतली आई और उसने अपनी कहानी यों शुरू की—

एक मदारी के पास दो बदर थे। वह गाँव-गाँव घूम कर तमाशा दिख लाता और तमाशे से होने वाली आय से अपनी जीविका चलाता। एक जाट न देखा कि तमाशा दिखलाने के बाद ही मदारी पर पैसो की वर्षा होने लगती है। उसने सोचा कि यह धधा बडा उपयोगी है। उसन मदारी से दोनो बदर खरीद लिय और उन्हे नचाना भी सीख लिया। जाट के पास एक ऊँट था। वह ऊँट पर सवार होकर गाँव-गाव मे तमाशा दिखलाने लगा। थोडे ही दिनो म उसके पास काफी रुपये जुट गये। वह अब सूद पर भी रुपये देने लगा। एक दिन एक दूसरा जाट उससे रुपये उधार लेने के लिए आया।

लेकिन इसने रुपये नही दिये। उसे बड़ा गुस्सा आया और बोला कि बदर नचा-नचा कर तो पैसे इक्ट्ठे किये है और आज बड़ा धना सेठ बन कर बैठ गया है। जाट को इससे बडी शर्म महसूस हुई और उसने दोनो बदरो को मार डाला। अब उससे न खेती होती थी, न उसके पास और कोई आय का साधन था। उसकी सारी पूजी खत्म हो गई और अब वह दिन-रात पछताने लगा कि मैंने बदरो को क्यो मार डाला ? सो हे राजन, यदि तूने आगे पैर बढाया तो उस जाट की तरह ही पछताएगा। राजा वही का वही खडा रह गया। पुतली चली गई। इतने मे राजा की लडकी की आँखें खुल गई और वह हडबडाकर उठ बैठी। अपने को पलँग पर सोया जान वह डर गई और शीघ्रता से अपनी माँ के पास भाग गई। राजा सोचने लगा कि मेरी बेटी इस पलँग पर सोई पड़ी थी और यदि मैं उस समय ऊपर आ जाता तो वास्तव मे ही मुझे पछताना पडता।

अब राजा ऊपर गया और पलँग पर सो गया, लेकिन उसे नीद नही आई। थोडी ही देर मे पलँग के एक पाये ने शेष तीनों से कहा कि भाइयो, मैं गश्त करके आता हूँ, तुम मजबूत रहना। वह गश्त लगाने चला गया। राजा को मन ही मन हँसी आई कि देखो पलँग का पाया भी गश्त लगाने के लिए जाता है। लेकिन उसने पाये को हाथ लगा कर देखा तो सचमुच ही पाया गायब था। थोडी देर बाद पाया गश्त लगा कर आया और उसने अपने साथियों से कहना शुरू किया कि आज तो अपने राजा के खजाने से चोर धन चुरा कर ले जा रहे थे कि इतने मे मैं पहुँच गया। मैंने चोरो को खूब पीटा और सारा धन लाकर महल के बायें कोने पर गाड दिया। फिर दूसरा पाया बोला कि अब मैं जा रहा हूँ, तुम सब सावधान रहना। यो कह कर वह चला गया। थोडी देर बाद पाया लौटा और उसने कहा कि आज तो अपने राजा का मित्र अमुक साहूकार मर गया। दूत उसे लिये जा रहे थे। मैंने उनका पीछा किया और उनमे से कुछ को पीटा भी, लेकिन वे साहूकार को ले ही गये। अब तीसरा पाया चला। उसने आकर अपनी रिपोर्ट दी कि जिन दूतो को दूसरे पाये ने पीटा था उन्होंने जाकर चित्र गुप्त के पास पुकार

की और चित्रगुप्त ने हुक्म दिया कि दूतों की सेना ले जा कर उस राजा की नगरी को नष्ट कर दो। वे लोग आकर अपना काम शुरू कर ही रहे थे कि मैं पहुँच गया। एक हवेली का एक कोना तो उन्होंने गिरा दिया था लेकिन मैंने उन्हें इस बुरी तरह से पीटना शुरू किया कि व सब भाग गये। राजा का पाया की बातें निरी गप्प लग रही थी, अत वह मन ही मन हँस रहा था। अब चौथा पाया गया। उसने आकर कहा कि आज सवेरे तो अपना राजा भी मर जाएगा। एक नागिन आकर राजा के जूते म छिप जाएगी। सवेरे उठकर जैसे ही राजा जूता पहनेगा, वह उसे काट लेगी और राजा की मृत्यु हो जाएगी। लेकिन एक उपाय है। राजा सवेरे उठते ही जूतो की तरफ न जाए और किसी दूसरे आदमी से अपने जूते मँगवाये तो नागिन राजा के स्थान पर उसे ही काट कर चली जाएगी। अपनी मृत्यु का सन्देश सुनकर राजा का नींद नहीं आई। वह सवेरे उठा और दूसरी तरफ को चला गया। इतने म सामने से एक बूढ़ा चपरासी आता दिखलाई पडा। राजा ने उसे जूते लाने का हुक्म दिया। बूढ़ा जूते लाने के लिए गया और जैसे ही उसने जूता मे हाथ डाल कर उन्हे उठाया नागिन ने बूढ़े को काट लिया। अब राजा को विश्वास हो गया कि रात की सारी बातें सर्वथा सच हैं। उसने महल का कोना खुदवाया तो चुराया हुआ सारा धन मिल गया। तभी किसी ने आकर राजा के मित्र की मृत्यु का समाचार सुनाया। राजा न उस मकान को स्वय जाकर देखा कि जिसे पायो के कथनानुसार दूतो ने रात को तोड फोड दिया था। पायो की सारी बातें सच हुई जानकर राजा को बडी प्रसन्नता हुई और उसने खाती की बेटी को दरबार मे बुलवाकर उसका खूब सम्मान किया तथा उसे पलँग की कीमत के अतिरिक्त भारी पुरस्कार दे कर विदा किया।

अब खाती का बेटा पुष्कल धन और बहू को लेकर अपने घर आ गया।

● कविता को मोल

'जमाणे' के ठाकुर सा'ब ने मामराज ढाढी की कविता पर खुश होकर

उसे पोशाक के रूप में एक कुर्ता बख्शा। कुर्ता कई वर्षों का पुराना पड़ा हुआ था और पाँच-सात रोज में ही फट गया। मामराज को बड़ा अफसोस हुआ और उसने जाकर ठाकुर साब को खरी खरी सुनाई —

> कवि अण भाखै क्रीत देख कै बडा दुआरा।
> दूहै रोटी दोय, गीत का आना ग्यारा ॥
> सुण कर दूहो गीत सुरापत होज्या सूरा।
> बक्सै कपड़ो दान पाँच दिन चालै पूरा ॥

अर्थ– (कविगण ठाकुरों और सरदारों के बड़े दरवाजे देखकर उनकी प्रशंसा में न कहने योग्य बातें भी कहते हैं। लेकिन ठाकुर एक दोहे के लिए दो रोटी और एक गीत के लिए बहुत हुआ तो एक कच्चा रुपया दे देते हैं। सरदार गीत सुन कर बहुत खुश होकर ऐसा कपड़ा दान करते हैं जो पूरे पाँच दिन चलता है)

(ठाकुर साहब बहुत प्रसन्न होते तो अधिक से अधिक एक कच्चा रुपया दे देते जिसकी कीमत ग्यारह आने ही होती थी)

● छिनाल कुण ?

एक दिन बादशाह ने वजीर से पूछा कि छिनाल औरत की क्या पहिचान होती है ? वजीर ने सादे कपड़े पहने और बादशाह को भी सादे कपड़े पहना दिये। फिर दोनों चौराहे पर जाकर खड़े हो गये। जो भी औरत उधर से गुजरती वजीर कहता कि यह छिनाल है। वह बेचारी सुनकर चुपचाप चली जाती। अन्त में एक औरत आई वजीर ने जैसे ही उसे 'छिनाल' कहा वह जूता निकाल कर गालियाँ देती हुई वजीर की ओर लपकी कि तेरी माँ छिनाल, तेरी बहिन छिनाल आदि-आदि। लोगों ने बीच-बचाव किया। तब वजीर ने बादशाह से कहा कि यह औरत असल छिनाल है।

(छिनाल की तरह ही गोले की पहिचान बतलाई जाती है।)

● ठाकुर सुजानसिंह

झिरमिर झिरमिर मेवा बरसै, मोरा छतरी छाई ।
कुल में छै तो आव सुजाणा फोज देवरै आई ॥

औरंगजेब की आज्ञा से दराबखां ने एक बड़ी फौज लेकर खंडेले के मंदिर को तोड़ने के लिए चढ़ाई की। खंडेले का राजा बहादुर सिंह भागकर छुप गया। उस वक्त ठाकुर सुजानसिंह जो छापोलो के भोजाणी साख में खंडेले के भाई बन्धुओं में थे, विवाह के लिए मारवाड़ गये हुए थे। लौटते समय जब उन्होंने सुना कि खंडेले का मन्दिर तोड़ा जाने वाला है तो उन्होंने नव-वधू का मोह त्याग दिया और कांकण डोरड़े सहित अपने साथियों को लेकर वहाँ आ डटे और मन्दिर की रक्षा करने लगे। उनके जीते-जी मन्दिर नहीं टूट सका। मन्दिर की रक्षा में वीरतापूर्वक लड़ते हुए वे वीर-गति को प्राप्त हुए। उनके विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है —

दाता मन्दिर सिर दियो, आता दल अवरंग ॥
इण धाता सूजो अमर, रायसलोता रंग ॥

अर्थ— मन्दिर को गिराने के लिए आई हुई औरंगजेब की सेना का मुकाबला करने में सुजानसिंह ने अपने को बलिदान कर दिया। इसमें वह अमर हो गया। रायसल के वंशज धन्य हैं।

● धनजी-भींवजी

जोधपुर के महाराजा अजीतसिंहजी ने पाली के ठाकुर मुकुन्दसिंह को राजकार्य के बहाने बुलवाया तो ठाकुर मुकुन्दसिंह दलबल सहित जोधपुर को चले। रास्ते में वे धनजी भींवजी की ढाणी के समीप विश्राम के लिए ठहरे। धनजी भींवजी का रेवड़ चर रहा था। मुकुन्दसिंहजी के आदमियों ने रेवड़ में से दो साजरे (बकरे-बकरियां) जबर्दस्ती उठा लिये और अपने डेरे में लाकर काट डाले। रक्षा करने वाले ग्वाले को उन्होंने डाँट-डपट कर निकाल दिया। ग्वाले ने यह समाचार जाकर अपने मालिकों

ने कहा। ये दोनों आये और वृक्ष पर से कटे हुए 'साजरू' उतार कर ले चले। जाते समय उन्होंने कहा कि क्षत्रियों के 'साजरू' खाना आसान नहीं है, जिसकी हिम्मत हो वह सामने आये। उन दोनों का सामना करने की हिम्मत किसी की नहीं हुई, लेकिन जब मुकुन्दसिंह अपने डेरे पर आये तो उन्होंने ठाकुर के कान भरे। पर मुकुन्दसिंह वीर होने के साथ साथ बुद्धिमान भी थे। वे अपने भृत्यों द्वारा किये गये अपराध के लिए माफी मांगने के लिए खुद धनजी-भींवजी के पास गये और उनसे बातचीत करके उन दोनों वीरों को भी अपने साथ जोधपुर लेते गये। धनजी-भींवजी दोनों मामा-भानजे थे। धनजी गहलोत राजपूत थे और भींवजी 'नाहर चहुवान' थे।

जोधपुर में 'छिपिया' के ठाकुर प्रतापसिंह उक्त ठाकुर मुकुन्दसिंह से वैमनस्य रखते थे और वे ठाकुर मुकुन्दसिंह को मारने की घात में थे लेकिन ठाकुर मुकुन्दसिंह को इस बात का कतई गुमान न था। एक दिन ठाकुर मुकुन्दसिंह बाहर के चौक में काम कर रहे थे कि महाराजा ने इनको याद किया। इधर से प्रतापसिंह महाराजा के पास से बाहर जा रहे थे। 'तासली' की पोल में दोनों आमने सामने हुए। ठाकुर मुकुन्दसिंह के पास कोई शस्त्र नहीं था और न वे प्रतापसिंह के इरादे को जानते थे, लेकिन प्रतापसिंह सजग था। उसने मुकुन्दसिंह को वहीं मार डाला और स्वयं पोल में जाकर छुप रहा तथा पोल के कपाट बन्द कर लिये। जब धनजी भींवजी को इस बात का पता चला तो वे दोनों वीर वहाँ आये। अपने बल से उन्होंने पोल के कपाट तोड़ डाले और पोल के भीतर पहुँचकर उन्होंने प्रतापसिंह को मार डाला। फिर दोनों वीर राजसेना से वीरतापूर्वक लड़कर काम आये। इनकी प्रशंसा में बहुत से दोहे कहे जाते है, यथा —

> गढ़ राखी गहलोत, कर राखी पातल कमंध।
> मुकन सुधारी मोत, भली सुधारी भींवडा ॥
> आजूणी अधरात, महलज रूनी मुकनरी।
> पातल री परभात, भली रुवाणी भींवडा ॥

पहर एक ला पोलि, जडी रही जोधाण री ।
गढ़ मे रोला रोलि, भली मचाई भींवडा ॥
मुकनू पूछे बात, 'कहो पातल आया क्यां' ।
"सुरगापुर में साथ, भेला मेल्या भीमडे ॥"

● हाथी और ऊदरो

चूहों की एक नगरी थी जिसमे असंख्य चूहे थे और असंख्य ही उनके दिल थे । एक बार हाथियों का झुंड उधर से पानी पीने के लिए गुजरा। चूहों के सरदार ने जाकर हाथियों के सरदार से विनयपूर्वक कहा कि महाराज, यहाँ चूहों की नगरी है, आपके हाथियों के पैरों से रौंद कर सारी नगरी चौपट हो जाएगी, अतः आप कृपा करके अपने झुंड को दूसरी तरफ से ले जाएँ तो बड़ी कृपा होगी । हाथियों के सरदार ने चूहे की बात मान ली और अपने झुंड को दूसरी ओर से लेकर जाने लगा । चूहों के सरदार ने बड़ा आभार माना और हाथियों के सरदार से उसने कहा कि आपने मुझ पर और सारी नगरी पर बड़ी कृपा की है, कभी आवश्यकता पड़े तो मुझे याद करना मैं भी आपकी यथाशक्ति मदद करूँगा । चूहे की बात सुनकर हाथी को हँसी आ गई ।

एक दिन शिकारियों के जाल में हाथी एक गहरे खड्डे में गिर गया । खड्डे में पड़ जाने के कारण हाथी का बल बेकार हो गया । उसने बहुत चेष्टा की, लेकिन सब व्यर्थ । तब उसे चूहों के सरदार की कही हुई बात याद आई । उसने चूहों के सरदार को याद किया । याद करते ही चूहों का सरदार वहाँ भागा आया । हाथी की दशा देखकर उसने कहा कि मैं अभी अपने साथियों को लेकर आता हूँ और हम सब मिलकर आपको बाहर निकाल लेंगे । चूहे की बात सुनकर हाथी को उस वक्त भी हँसी आये बिना न रही । चूहों का सरदार गया और अपनी सारी प्रजा को वहाँ बुला लाया । सरदार के आदेश के अनुसार, सारे चूहे खड्डे को धूल से भरने लगे । चूहों के पैरों से इतनी धूल उड़ी कि अँधेरा छा गया । हाथी अपने पैरों से धूल को दबाता हुआ ऊपर उठने लगा । जल्दी ही सारा खड्डा धूल से भर गया

और हाथी ऊपर आ गया। बाहर निकलकर हाथी ने चूहे के सरदार को अपनी सूड में उठाकर अपने गले लगाया और उसे बहुत धन्यवाद दिया।

● पगातपुरो

एक सेठ के दो लडके थे। बडे का विवाह हो गया था और छोटा अभी अविवाहित था। एक दिन भोजन करते समय देवर ने भाभी से कहा कि आज तो सब्जी में नमक ज्यादा डाल दिया है। इस पर भाभी ने ताना मारा कि जो बढ़िया सब्जी बनाये उसे ले आओ, मैं भी देखूं कैसी बहू लाते हो? देवर उठ खडा हुआ। सेठ ने छोटे लडके की सगाई करने के लिए जगह जगह आदमी भेजे। उन्होंने कई लडकियों के फोटो उतरवा कर भेजे। एक लडकी का चित्र बहुत सुन्दर था। सेठ ने सगाई कर ली। सयोग से वह चित्र बडे भाई की स्त्री के हाथ लग गया, उसने चर्खे का तकुआ गडा कर लडकी की एक आँख फोड दी और फिर वह चित्र अपने देवर को दिखला दिया। उस बेचारे ने भाभी की चालाकी नही समझी और उसका मन भावी पत्नी की ओर से फिर गया।

विवाह हो गया, बहू घर आ गई लेकिन सेठ का लडका उसके पास फटकता भी नही था। बहू सयानी थी उसने जान लिया कि किसी ने मेरे पति को बहका दिया है। उसने चार बढ़िया पोशाकें बनवाई एक हीरा की, एक मोतियों की एक पन्ना की और एक लालो की। एक दिन वह हीरा की पोशाक पहन कर बाग में सैर करने को गई वही उसका पति भी सैर करने के लिए आया हुआ था। स्त्री के सौदर्य को देखकर सेठ का बेटा मोहित हो गया। थोडी देर की बातचीत के बाद स्त्री ने चौसर खेलने का प्रस्ताव किया। सेठ के बेटे ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लडके ने अपना कडा दाव पर लगाया और हार गया। दूसरे दिन फिर वही मिलने का वादा करके दोनो चल गये। अब बहू रोजाना नई पोशाक पहनकर बाग में जाने लगी। दूसरे दिन लडका 'चूड' हार गया, तीसरे दिन कठी और चौथे दिन कानो की 'बालिया' हार गया। स्त्री ने जब लडके से फिर अगले दिन आने के

पहर एक लग पोलि, जड़ो रहो जोधाण री ।
गड मे रोला रोलि, भली मचाई भींवड़ा ॥
मुजनूं पूछे वात, 'कहो पातल आया क्या' ।
"सुरगापुर मे साथ, भेला मेल्या भीमड़े ॥"

● हाथी और ऊंदरो

चूहों की एक नगरी थी जिसमे असख्य चूहे थे और असख्य ही उनके बिल थे । एक बार हाथियो का झुड उधर से पानी पीने के लिए गुजरा। चूहों के सरदार ने जाकर हाथियो के सरदार से विनयपूर्वक कहा कि महाराज, यहाँ चूहों की नगरी है, आपके हाथियो के पैरो मे रूँद कर सारी नगरी चौपट हो जाएगी, अत आप कृपा करके अपने झुड को दूसरी तरफ से ले जाएँ तो बडी कृपा होगी । हाथियो के सरदार ने चूहे की बात मान ली और अपने झुड को दूसरी ओर से लेकर जाने लगा । चूहों के सरदार ने बड़ा आभार माना और हाथियो के सरदार से उसने कहा कि आपने मुझ पर और सारी नगरी पर बड़ी कृपा की है, कभी आवश्यकता पडे तो मुझे याद करना, मैं भी आपकी यथाशक्ति मदद करूँगा । चूहे की बात सुनकर हाथी को हँसी आ गई ।

एक दिन शिकारियो के जाल मे हाथी एक गहरे खड्ड मे गिर गया । खड्ड मे पड जाने के कारण हाथी का बल बेकार हो गया । उसने बहुत चेष्टा की, लेकिन सब व्यर्थ । तब उसे चूहों के सरदार की कही हुई बात याद आई । उसने चूहों के सरदार को याद किया । याद करते ही चूहों का सरदार वहाँ भागा आया । हाथी की दशा देखकर उसने कहा कि मैं अभी अपने साथियों को लेकर आता हूँ और हम सब मिलकर आपको बाहर निकाल लेंगे । चूहे की बात सुनकर हाथी को उस वक्त भी हँसी आये बिना न रही । चूहों का सरदार गया और अपनी सारी प्रजा को वहाँ बुला लाया । सरदार के आदेश के अनुसार, सारे चूहे गड्ढे को धूल से भरने लगे । चूहों के पैरो से इतनी धूल उडी कि अँधेरा छा गया । हाथी अपने पैरों से धूल को दबाता हुआ ऊपर उठने लगा । जल्दी ही सारा गड्ढा धूल से भर गया

और हाथी ऊपर आ गया। बाहर निकलकर हाथी ने चूहों के सरदार को अपनी सूड में उठाकर अपने गले लगाया और उसे बहुत धन्यवाद दिया।

● पंगातपुरो

एक सेठ के दो लड़के थे। बड़े का विवाह हो गया था और छोटा अभी अविवाहित था। एक दिन भोजन करते समय देवर ने भाभी से कहा कि आज तो सब्जी में नमक ज्यादा डाल दिया है। इस पर भाभी ने ताना मारा कि जो बढ़िया सब्जी बनाये उसे ले आओ, मैं भी देखू कैसी बहू लाते हो? देवर उठ खड़ा हुआ। सेठ ने छोटे लड़के की सगाई करने के लिए जगह जगह आदमी भेजे। उन्होंने कई लड़कियों के फोटो उतरवा कर भेजे। एक लड़की का चित्र बहुत सुन्दर था। सेठ ने सगाई कर ली। संयोग से वह चित्र बड़े भाई की स्त्री के हाथ लग गया, उसने चर्खे का तकुआ गडा कर लड़की की एक आँख फोड दी और फिर वह चित्र अपने देवर को दिखला दिया। उस बेचारे ने भाभी की चालाकी नहीं समझी और उसका मन भावी पत्नी की ओर से फिर गया।

विवाह हो गया, बहू घर आ गई, लेकिन सेठ का लड़का उसके पास फटकता भी नहीं था। बहू सयानी थी, उसने जान लिया कि किसी ने मेरे पति को बहका दिया है। उसने चार बढ़िया पोशाकें बनवाई, एक हीरों की, एक मोतियों की, एक पन्ना की और एक लालों की। एक दिन वह हीरों की पोशाक पहन कर बाग में सैर करने को गई, वहीं उसका पति भी सैर करने के लिए आया हुआ था। स्त्री के सौन्दर्य को देखकर सेठ का बेटा मोहित हो गया। थोड़ी देर की बातचीत के बाद स्त्री ने चौसर खेलने का प्रस्ताव किया। सेठ के बेटे ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लड़के ने अपना कड़ा दावँ पर लगाया और हार गया। दूसरे दिन फिर वहीं मिलने का वादा करके दोनों चले गये। अब बहू रोजाना नई पोशाक पहनकर बाग में जाने लगी। दूसरे दिन लड़का 'चूड' हार गया, तीसरे दिन 'कंठी' और चौथे दिन कानों की 'बालियाँ' हार गया। स्त्री ने जब लड़के से फिर अगले दिन आने के

लिए कहा तो उसने उत्तर दिया कि अब शर्त बदने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है,अतः फिर कभी खेलेंगे। लड़की ने कहा कि मैं भी कल अपने नगर को जा रही हूँ। लड़के ने पता माँगा तो लड़की ने कहा कि मेरे नगर का नाम 'पगातपुरा' है और वह यहाँ से उत्तर दिशा में है। दोनों अलग अलग हो गये।

लड़के को अब उसके बिना चैन नहीं पड़ता था। उसने अपनी माँ से कहा कि मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूँ। बहू समझ गई। उसने चार लड्डू बनाये और उनमें कंठा, चूड़, कंठी और बालियाँ डाल दीं। लड़का लड्डू लेकर 'पगातपुरे' को चल पड़ा। लेकिन 'पगातपुरा' तो एक कल्पित नाम था। वह दिन भर भटकता रहा लेकिन कहीं 'पगातपुरे' का अता-पता नहीं चला। शाम को हार कर वह एक तालाब पर बैठ गया। हाथ-मुँह धोकर जैसे ही उसने एक लड्डू को तोड़ा उसमें मोतियों का 'कंठा' निकल आया। अपना 'कंठा' पहिचान कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उसने शेष तीनों लड्डू भी तोड़ कर देखे, उनमें भी 'चूड़' आदि चीजें निकलीं। लड़का घर चला आया। घर आने पर जब उसके सामने सारा रहस्य खुला तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और वह अपनी पत्नी के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा।

● विमला और विद्याधर

एक ब्राह्मण एक वेश्या के यहाँ जाया करता था। एक रात को वह फूलों की एक माला तथा बढ़िया इत्र की एक फुरेरी लिए वेश्या के यहाँ जा रहा था कि रास्ते में उसका जी मिचलाने लगा और उसके प्राण निकलने लगे। वहीं भगवान् शंकर का एक मन्दिर था। ब्राह्मण ने वे दोनों चीजें भगवान् शंकर को अर्पित कर के देह छोड़ दी। उसी पुण्य के प्रभाव से वह दूसरे जन्म में विद्याधर नाम से एक उच्चकोटि का विद्वान् पंडित बना जिसे पिछले जन्मों की बातें भी याद थीं। विद्याधर की ख्याति चारों ओर फैलने लगी। वह भूत-भविष्य की सभी बातें ठीक-ठीक बतला दिया करता था। इतना सब होते

हुए भी घर में खुशी का वातावरण नहीं था, क्योंकि विद्याधर की स्त्री बडी कलहकारिणी थी।

उस नगर के राजा के सिर में बडी पीडा रहा करती थी। किसी ने कहा कि विद्याधर नामक पडित को बुलवाकर उससे इसका उपाय पूछना चाहिए। राजा ने विद्याधर को बुलाने के लिए आदमी भेजे। विद्याधर की स्त्री उस समय अपने पति को खरी-खोटी सुना रही थी। राजा का सन्देश सुनकर पडित ने कहा कि तुम्हारा राजा पिछले जन्म में सन्यासी था। एक दिन वह अर्द्धकपाली (आधा कमडलु) सिर पर ओढे ओढे तपस्या कर रहा था कि उस की मृत्यु हो गई। वह कपाली उसके सिर में ही रह गई। राजा के सिर से वह कपाली निकलवा दो तो राजा की पीडा मिट जाएगी। अनुचरों ने आकर राजा से पडित की बात कही तो राजा ने कहा कि पडित जी को आदर के साथ यहाँ ले आओ, वे ही आकर सिर से कपाली निकलवायेंगे। पडित ने आकर 'कपाली' निकलवा दी और राजा भला-चगा हो गया। राजा ने पडित को बहुत पुरस्कार दिया और उसे अपने यहाँ ही रख लिया। अनुचरों ने राजा से यह बात भी कह दी कि पडित जी की स्त्री बडी कलहकारिणी है। राजा ने पडित से इसका कारण पूछा तो पडित ने कहा कि एक जन्म में मैं कौवा था और मेरी स्त्री ऊँट थी। ऊँट की पीठ पर एक 'पाकी' पड गई थी। मैं नाच नाच कर ऊँट का माँस खाया करता, उसी का बदला यह इस जन्म में मुझ से ले रही है। पाव-आध-पाव जितना माँस मैंने इसके शरीर से खाया है, जब तक यह मेरा उतना माँस नहीं खा लेगी तब तक यह इसी प्रकार करती रहेगी।

पडित की बात सुनकर राजा ने विद्याधर की स्त्री को बुलवा कर महल में रानी के पास रख लिया। उसने जर्राह को बुलवा कर पडित के शरीर से पाव भर खून निकलवाया और उसे रानी को दे दिया। रानी ने उस खून को मिलाकर पडित की स्त्री के लिए बढिया लड्डू बनवाये और उसे नित्य एक-एक करके लड्डू खिलाने लगी। पडितानी के स्वभाव में दिन-दिन परिवर्तन होने लगा और सारे लड्डू खाते-खाते वह बिलकुल सीधी हो गई।

अब वह पंडित की हर तरह से सेवा करती और उसकी हर बात को वेद वाक्य समझती। उसके बिना अब उसे एक क्षण भी चैन नहीं पड़ता था।

एक दिन रानी का एक भाई मर गया। रानी ने पंडिताइन से कहा कि मेरे भाई की मृत्यु हो गई है और मेरी भौजाई सती होगी सो आज तुम भी मेरे साथ वहाँ चलो। पंडिताइन ने उपेक्षा से कहा कि उँह काहे की सती होगी? सती तो मैं तब जानती कि जब पति की मृत्यु का समाचार सुनते ही उसके प्राण पखेरू उड़ जाते। रानी को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने पंडिताइन से कहा कि ऐसी सती तो तुम ही हो। पंडिताइन ने भी उत्तर दिया कि हाँ मैं तो हूँ ही।

रानी ने यह बात राजा से कही। राजा ने कहा कि कभी मौका आने पर देखा जाएगा। एक दिन पंडित बाहर गया हुआ था। रानी ने चुपचाप पंडित के कपड़े मँगवाये और उन्हें खून में भिगोकर पंडिताइन के पास ले गई और बोली कि आज तो बड़ा गजब हो गया पंडितजी किसी दूसरे गाँव गये थे सो रास्ते में शेर ने उन्हें मार डाला। पंडिताइन ने कहा हैं और इस हैं के साथ ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। रानी सन्न रह गई। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसा हो जाएगा। पण्डिताइन का शरीर राजकीय सम्मान के साथ ले जाकर जला दिया गया। जब पंडित आया और उसे सारी बात का पता चला तो वह पागल-सा चिता की ओर भागा। लेकिन अब वहाँ एक राख की ढेरी मात्र थी। पण्डित अपनी पत्नी का नाम ले लेकर हाय विमला हाय विमला करने लगा। सबने उसे बहुत समझाया-बुझाया लेकिन इस समझाने-बुझाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ।

एक दिन घूमते घामते वहाँ गुरु गोरखनाथ जी आ पहुँचे। उन्होंने भी अपना आसन वहीं लगा लिया। पण्डित की दशा देखकर उन्हें बड़ी दया आई। उन्होंने जान-बूझ कर अपना तूमड़ी फोड़ डाली और अब वे भी हाय तूमड़ी हाय तूमड़ी कह-कह कर विलाप करने लगे। अपने दुखी होने पर भी गोरखनाथ का विलाप देखकर पंडित को हँसी आ गई। उसने गोरखनाथ जी से कहा कि महात्मन्! इस दो टके की तूमड़ी के लिए आप

क्यों विलाप करते हैं ? आप कहें तो मैं दूसरी 'तूमड़ी' ला देता हूँ। इस पर गोरखनाथ जी ने कहा कि तुम स्त्री के लिए क्यों विलाप करते हो, मेरे साथ चलो, मैं राजा से कह कर तुम्हारी दो शादियाँ करवा देता हूँ। इस पर पडित बोला कि नहीं मैं तो अपनी 'विमला' को ही लूगा। तब गुरु गोरखनाथ-जी ने अपने योग का चमत्कार दिखलाया। पडित के सामने हजारों 'विमलाएं' खडी हो गईं। गोरखनाथ जी ने कहा कि ले अब अपनी 'विमला' को पहिचान ले।

अब पडित के ज्ञानचक्षु खुल गये और वह वैरागी बनकर शिष्य रूप मे गुरु गोरखनाथ के साथ हो लिया।

● नाई की चतराई

एक नाई एक गाँव मे दूसरे गाँव को जा रहा था। रास्ते मे जगल पडा। जगल मे एक आदमखोर शेर रहता था। आज सयोग से वह नाई उसके सामने पड गया। शेर नाई पर झपटा, लेकिन नाई ने हिम्मत नहीं हारी। उसे एक उपाय सूझा। शेर के झपटते ही नाई ठठाकर हँस पडा। नाई की यह नई बात देखकर शेर आश्चर्य में डूब गया। वह सोचने लगा कि मुझे देखकर आदमी तो क्या हाथी भी कांपने लगते हैं, फिर यह नाकुछ आदमी मेरे आगे क्यो हँस रहा है ? शेर ने नाई से पूछा कि तू क्या हँस रहा है, क्या तुझे प्राणो का भय नहीं ? नाई ने और भी जोर से हँसकर कहा कि प्राणो का भय तो टल गया है। हमारे राजा के कुअर का पेट दुखता है, राजवैद्य ने दवा के लिए दो सिंहो के कलेजे मँगवाये हैं। राजा ने यह काम मुझे सौंपा है। दो सिंहो के कलेजे ले जाने पर मुझे भारी पुरस्कार मिलेगा, अन्यथा मेरी मृत्यु तो निश्चित ही थी, अब तुम्हारे मिल जाने से वह टल गई है। एक सिंह तो मेरे हाथ पहले ही लग गया था, अब तू दूसरा भी मिल गया। यों कहकर नाई ने अपनी 'रछैनी' में से दर्पण निकाल कर सिंह को दिखलाया। शेर ने एक दूसरे क्रोधित शेर को अपने सामने देखा तो उसे नाई की बात का पक्का विश्वास हो गया। वह डर के मारे कांपने लगा। तब नाई ने दर्पण को 'रछैनी' मे रख दिया और उस्तुरा निकाल कर शेर के सामने किया।

धार किया हुआ उस्तुरा दोपहरी की धूप में बिजली की तरह चमक उठा। शेर की आँखें चौंधिया गईं। नाई ने डपट कर कहा कि इसी में तुम दोनों के कलेजे चीर कर निकाल जाएँगे। नाई की बात सुनकर शेर का रहा सहा धैर्य भी जाता रहा और वह वहाँ से प्राण बचा कर भागा। नाई ने शेर को ललकारते हुए दो एक बार जमीन पर पैर पटके कि भागना कहाँ है खड़े रहो लेकिन शेर ने तो पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। अब नाई की जान में जान आई और वह बड़ी शीघ्रता से वहाँ से खिसक गया।

● सोन चिडी को सूण

एक साहूकार दिसावर से कमा कर आ रहा था। रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उसके पास सोन चिड़ी का एक सूण था। साहूकार ने सौ रुपये देकर (शकुन) सूण ले लिया और आगे बढ़ा। आगे बढ़ने पर उसे एक सोनचिड़ी मिली। सोनचिड़ी उसके साथ हो ली। अब दोनों आगे बढ़े तो उन्होंने देखा कि कीचड़ में एक मेंढक फँसा हुआ है। सोनचिड़ी के कहने पर साहूकार ने मेंढक को निकाल लिया। कुछ दूर जाने पर उन्होंने देखा कि एक शेर दलदल में फँसा हुआ है। सोनचिड़ी के कहने पर साहूकार ने उसे भी निकाल लिया। अब वे एक नगर में पहुँचे। सोनचिड़ी एक सुन्दर स्त्री बन गई और उसने साहूकार से कहा कि तुम जाकर राजा के यहाँ नौकरी करो लेकिन लाख टके रोज से कम मत लेना। राजा ने बड़ा गुणी समझ कर लाख टके रोज पर उसे नौकर रख लिया। लेकिन सारे दरबारी उससे जलने लगे।

एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए जंगल में गया तो उसके हाथ की अंगूठी काले नाग की बाँबी में जा गिरी। राजा ने अपने दरबारियों से कहा कि मेरी अंगूठी बाँबी में से निकाल कर लाओ। दरबारियों ने कहा कि हुजूर लखटकिया रोज के लाख टके लेता है वही यह काम करेगा। तब राजा ने लखटकिया को अंगूठी लाने का हुक्म दिया। लखटकिया घर गया तो सुन्दर स्त्री ने कहा कि तुम उस मेंढक के पास जाओ वह

तुम्हें अँगूठी ला देगा। साहूकार ने जाकर मढक से कहा और मेढक ने बाँबी में घुस कर अँगूठी ला दी। लख-टकिया की सफलता पर सारे दरबारी और भी जल उठे।

एक दिन राजा के पेट में बडा दर्द होने लगा। वैद्यों ने कहा कि सिहनी का दूध पीने से ही दर्द जाएगा। दरबारियों के कहने पर राजा ने फिर लखटकिये को भेजा। लखटकिया अपनी स्त्री के कहने पर उसी सिंह के पास गया। उसने सिंहनी का दूध साहूकार का ला दिया। राजा ने प्रसन्न होकर लख-टकिये का और भी अधिक पुरस्कार दिया। सारे दरबारी अब उसे किसी प्रकार मारने की चेष्टा करने लगे।

राजा की नाइन लखटकिये के घर उसकी स्त्री का सिर 'गूथने' के लिए जाया करती थी। लखटकिये की स्त्री के बाल सोने के थे और वह नाइन को सोने चाँदी के 'आखा' का थाल भर कर दिया करती थी। दरबारियों ने नाई को लालच देकर लख-टकिये का मारने की योजना बनाई। एक दिन अवसर पाकर नाई ने राजा से कहा कि अन्नदाता, आपके माता पिता का गुजरे कई वर्ष हो गये, आपने कभी उनका हाल चाल ही नहीं पुछवाया, भला वे क्या समझते होंगे ? आपके पास 'लखटकिये' जैसा होशियार आदमी है, वह बहुत शीघ्र आपके पिताजी और माताजी की खबर ले कर आ जाएगा। राजा को यह बात जँच गई। दूसरे दिन दरबार में आते ही उसने लखटकिये को हुक्म दिया कि वह स्वर्ग में जा कर स्वर्गीय महाराजा और राजमाता की खबर लावे। लखटकिया उदास मुह लेकर घर आया। उसकी स्त्री ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो मैं सारा काम स्वय ही पटा दूगी। उसने चुपचाप अपने पति को एक कमरे में बन्द कर दिया और कहा कि तुम सात आठ मास इसी कमरे में रहो। रहने के लिए कमरे में ही सारी व्यवस्था कर दी गई।

तब लखटकिये की स्त्री (मानचिडी) लखटकिये का वेष बना कर उस स्थल पर पहुँची जहाँ नाई ने लखटकिये को स्वर्ग भेजने की सारी तैयारी कर रखी थी। झोपडी के आकार की एक बडी चिता

बनाई गई थी और उसे बहुत अच्छी तरह से सजाया गया था। चिता में कई मारियाँ बनाई गई थीं। राजा समेत सारा नगर वहाँ इकट्ठा हो रहा था, नगाड़े बज रहे थे। लपटकिये को उस झोंपड़े में भेज दिया गया और उसमें आग लगा दी गई। 'लवटकिया' (जो वास्तव में सोनचिड़ी ही थी) सोनचिड़ी बन कर मोरी में से बाहर निकल कर अपने घर आ गया और उसने घर आ कर फिर लवटकिये की स्त्री का रूप बना लिया।

आठ-दस महीने गुजर जाने के बाद एक दिन लख टकिये की स्त्री ने अपने पति को बाहर निकाला। उसके केश और नख बहुत बढ़ गये थे और वह सहसा ही पहिचाना नहीं जा सकता था। उसकी स्त्री ने अपने पति को सारी बात समझाई और उसे दरबार में भेज दिया। उसे देखते ही सारे दरबार में एक प्रकार का सनाटा-सा छा गया। लख-टकिया सीधा राजा के पास गया और नमस्कार करके बोला कि हुजूर को याद होगा कि इस सेवक को कई मास पहले स्वर्ग भेजा गया था। मैं बड़े महाराजा साहब और महारानी जी से मिलकर आ रहा हूँ। तब राजा ने उसे पहचाना और उत्सुकता पूर्वक अपने माँ-बाप के समाचार पूछने लगा। लखटकिये ने कहा कि हुजूर, वहाँ और तो सब आनन्द है किसी प्रकार की कमी नहीं, लेकिन वहाँ नाई और नाइन नहीं हैं आपके पिताजी के बाल धरती को छूने लगे हैं और माताजी का सिर भी वहाँ से जाने के बाद कभी गूथा नहीं गया। अतः आपके पिताजी ने हुक्म दिया है कि अपने नाई और नाइन को जल्दी ही भेज देना। थोड़े से दिनों में ही मेरे बाल और नख इतने बढ़ गये हैं तो आप कल्पना कर सकते हैं कि उनके बाल और नख कितने बढ़े होंगे? माता पिता के कष्ट को समझकर राजा ने उसी समय हुक्म दिया कि हमारे नाई और नाइन को शीघ्र स्वर्ग भेजा जाए।

स्वर्ग जाने की तरकीब पहले आजमाई हुई थी ही। मैदान में उसी तरह की दो चिताएँ बनाई गईं। सारा नगर इकट्ठा हो गया, नगाड़े बजने लगे। नाई और नाइन को नये कपड़े पहना कर स्वर्ग भेज दिया गया।

घर आने पर लखटकिये की स्त्री ने अपने पति से कहा कि अब यहाँ रहना उचित नहीं है। दोनों वहाँ से चल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर स्त्री 'सोनचिडी' बन कर एक वृक्ष पर जा बैठी। उसने 'साहूकार' से कहा कि मेरा 'मूण' पूरा हो गया, अब तुम अपने घर जाओ। यों कहकर सोनचिडी उड गई और साहूकार अपने घर को चल पड़ा।

● कफन चोर फकीर

एक मुसलमान औरत बडी नेक-नीयत और भली स्त्री थी। न कभी वह झूठ बोलती, न चोरी करती। उसी गाँव मे एक फकीर रहता था। वह कब्र खोद कर मुर्दों के कफन निकाला करता था। उस औरत ने कहा कि भले आदमी, मैं तुम्हे उतना कपडा पहले ही दे देती हूँ। मरने पर मेरी कब्र न खोदना। फकीर ने उसकी बात मान ली तो उस स्त्री ने फकीर को उतना कपडा दे दिया।

लेकिन उस औरत के मरने पर फकीर अपनी आदत के अनुसार कब्र खोदने लगा तो उसने देखा कि वह औरत फूलो के झूले मे झूल रही है और हर तरह के ऐश-आराम का सामान उसके चारो ओर जमा है। लेकिन फकीर ने देखा कि उस औरत के गाल पर एक जख्म हो रहा है। उसने औरत से पूछा कि यह जख्म काहे का है तो उसने ठडी सांस भर कर कहा कि मैंने अपनी दाड कुरेदने के लिए मालिक से बिना पूछे उसकी बाड का एक काटा तोड लिया था, उसी काटे ने नाग बनकर मेरे गाल पर डस लिया। औरत की बात सुनकर फकीर की आँखें खुल गईं। उसी क्षण से उसने अपना यह घृणित कार्य त्याग दिया और खुदा की इबादत मे लग गया।

● हाथी से बदलो

एक चिडिया ने एक छोटे वृक्ष पर अपना घोंसला बनाया और उसमे अडे दे दिये। समय पाकर अडों मे से छोटे-छोटे गुलाबी बच्चे निकले। बच्चे अभी बहुत छोटे ही थे कि एक दिन एक मस्त हाथी उधर आ निकला-

हाथी ने वृक्ष को अपनी सूड की लपेट म ले लिया। चिड़िया ने हाथी स बहुत विनय की लेकिन हाथी ने चिड़िया की एक न सुनी और वृक्ष को जड से उखाड कर जमीन पर पटक दिया। चिड़िया के बच्चे हाथी के पैर के नीचे आ कर पिस गये। चिड़िया को बहुत दुख हुआ। वह चिड़े को साथ ले कर हाथी से बदला लेने के लिए अपने दोस्तो क पास गई। एक मच्छर एक मेंढक और एक कठफोड़वा उनके दोस्त थे। चिड़ी और चिड़े ने अपनी कष्ट-गाथा अपने मित्रो को सुनाई। उन तीनो न चिड़ी और चिड को ढाढस बँधाया और सबने मिलकर हाथी से बदला लेने की योजना बनाई।

मस्त हाथी घूमता हुआ चला जा रहा था। मच्छर उसके कान म घुस गया और भन भन करके गाने लगा। हाथी गाना सुनकर मोहित हो गया और अपनी सूड ऊपर उठा कर गाने का आनन्द लेने लगा। जब हाथी गाना सुनने म तल्लीन हो गया तो कठफोड़वे न अपनी चोंच से हाथी की दोनो आखें फाड डाली। चिड़ी और चिड़े न आक का दूध अपनी चोचो म भर कर हाथी की दोनो आखो म डाल दिया। हाथी की आँखो म बडी जलन होने लगी और वह पीडा से कराहता हुआ सरोवर की तलाश म भाग पडा। अधा हो जाने के कारण वह कभी एक वृक्ष से टकरा जाता था कभी दूसरे वृक्ष से। गिरता पड़ता वह किसी कदर भागा जा रहा था। मेंढक ने भी अपनी तैयारी पूरी कर रखी थी। वह एक बड़े और गहरे खड्ड म बैठा हाथी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। हाथी को देख कर वह टर-टर करने लगा। हाथी ने सोचा कि तालाब आ गया है। वह मेंढक की आवाज की लक्ष्य करके उधर ही दौडा और धड़ाम से खड्ड म जा गिरा। मेंढक दूर भाग गया। हाथी की हड्डी पसली टूट गई और वह वहा पड़ा-पड़ा कराहने लगा। तभी चिड़ और चिड़ी ने आकर हाथी से कहा कि हमने तुम से बहुत प्रार्थना की थी लेकिन तुम अपनी शक्ति के जोश म थ हमने तुमसे बदला ले लिया। अब यहा पड़े-पड़े अपनी करनी का फल भोगो।

● लाल को मोल

एक जाट अपना खेत जोत रहा था। खेत जोतते समय उसे बहुमूल्य लालों की एक हँडिया मिली। जाट ने सोचा कि ये पत्थर हैं। 'डूँच' पर खड़ा होकर वह पक्षियों को उड़ाने लगा और उसने अपने 'गोफिये' से सारे लाल पक्षियों के पीछे फेंक दिये, सिर्फ एक लाल बच रहा। जाटनी छाक ले कर आई। जाट के छोटे बच्चे ने वह लाल अपने हाथ में ले लिया और उसमें खेलने लगा। जाट ने सोचा कि वह 'पत्थर' भी पक्षियों के पीछे फेंका जाए, लेकिन जाटनी ने मना करते हुए कहा कि इतने सारे पत्थर तो तुमने फेंक ही दिये हैं, बच्चे के हाथ का पत्थर भी क्या छीनते हो? जाट मान गया। जाटनी बच्चे को ले कर घर आ गई। घर में उस दिन नमक नहीं था और जाटनी के पास नमक लाने के लिए पैसा भी नहीं था अतः वह उस सुंदर पत्थर को ले कर एक दुकान पर गई और उसने बनिये से कहा कि मुझे एक पैसे का नमक दो और यह पत्थर रख लो। मैं कभी पैसा दे जाऊँगी और अपना पत्थर ले जाऊँगी। बनिये ने नमक दे दिया। उस समय बनिये के पास एक जौहरी बैठा हुआ था। उसने जान लिया कि यह लाल बहुत कीमती है। उसने जाटनी का पता ठिकाना पूछ लिया और बनिये को पैसा दे कर वह लाल उससे ले लिया। जौहरी ने शहर में आकर उस लाल को बेच दिया और उस के जितने रुपये मिले वह सब लाकर जाटनी को दे दिये और उससे कह दिया कि यह तेरे लाल की कीमत है।

आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक जाट अपने खेत में ही रहा करता था, जाटनी उसे वहीं छाक दे आया करती। जाटनी के पास रुपये आ गये तो उसने एक अच्छा मकान बनवा लिया और उसे हर तरह की सामग्रियों से भर दिया। जाटनी अब खूब ठाट-बाट से रहने लगी। दीवाली आई तो जाटनी ने जाट से कहा कि आज तो दीवाली है, घर चले चलो। जाट घर आया तो उसने सारा ही नक्शा बदला हुआ देखा। उसने जाटनी से कड़े स्वर में पूछा कि यह सब क्या है, कैसे हो गया? क्या तू ने किसी की

रकम मार ली है ? जाटनी ने सारा रहस्य खोला तो जाट सिर पकड़ कर बैठ गया। वह अफसोस करने लगा कि एक लाल की यह माया है तो उतने लालों से तो न जाने मैं क्या से क्या हो जाता ? अफसोस करते-करते जब उसे बहुत देर हो गई तो जाटनी ने अपने पति को समझाते हुए कहा कि अब इस प्रकार सोच करने से क्या फायदा है ? जो गया सो गया, अब जो शेष है इसका तो आनन्द लो, इसका मजा भी क्यों खोते हो ?

[इसी कथानक को मत लोग मनुष्य जीवन पर घटाया करते हैं कि हमारा हर श्वास एक कीमती लाल है। जितने लाल हमने अनजाने खो दिये, वे तो खो दिये, लेकिन जब हम इसकी कीमत जान गए तब तो इसका सदुपयोग करना चाहिए।]

● रोजीना तीन सौ कमाऊँ

एक जाट का ऊँट मर गया तो वह बेकार हो गया। न वह शहर से बोझ ढो कर मजदूरी कर सकता था न खेती कर सकता था। अब वह बिल्कुल निश्चिन्त होकर छैल-छबीला बना आवारा घूमा करता। पास के शहर में एक सेठ के यहाँ उसका आना-जाना था। एक दिन सेठ ने उससे पूछा कि चौधरी, आजकल तो बहुत छैल चिकनिया बना रहता है क्या बात है ? जाट ने कहा कि सेठजी आजकल तीन सौ रुपये रोज कमाता हूँ। सेठ ने आश्चर्य से पूछा कि कैसे ? जाट ने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया कि मेरा ऊँट मर गया है, जो वास्तव में दो सौ रुपये का था, लेकिन आजकल जो भी कोई पूछता है, मैं कहता हूँ कि मेरा पाँच सौ रुपये का ऊँट था। इस प्रकार आजकल तीन सौ रुपये नित्य कमाता हूँ।

● तेरो वी ब्याह होग्यो दीखै ?

एक ग्वाला नित्य जंगल में भेड़-बकरियाँ चराने जाया करता था। घर वाले उसका विवाह करना चाहते थे, लेकिन वह विवाह का नाम सुनते ही बिदकता था। उसने विवाह का नाम तो अवश्य सुना था, लेकिन वास्तव में उसे पता नहीं था कि विवाह क्या होता है।

घरवाला ने उसका बलपूर्वक विवाह कर दिया और वहू भी बड़ी कर्कशा आई। वह उस बेचारे को नित्य तग किया करती, कभी कहती यह ला, कभी कहती वह ला, कभी कहती यह कर, कभी कहती वह कर। एक दिन परेशान होकर वह जगल मे निकल गया। जगल मे एक भेड अपने 'रेवड' से बिछुड गई थी। वह कांटा के एक झाड मे उलझ गई और वहाँ से निकल नही सकी। भूख-प्यास से व्याकुल वह उस झाड मे उलझी बैठी थी। ग्वाले को आते देख भेड ने अपनी आवाज मे उसे सहायता के लिए पुकारा। ग्वाला वहाँ गया तो भेड बोली 'म्याँ'। ग्वाले ने भेड को अत्यन्त व्याकुल देखकर सवेदना के स्वर मे कहा "मालूम होता है कि इस बार तुम्हारा भी 'विवाह' होगया है।"

● अरजन को पिराछट

एक बार अर्जुन और श्रीकृष्ण रथ मे बैठे कही जा रहे थे। उसी समय एक ब्राह्मण अपने खेत से सिट्टो का गट्ठर बाँध कर लिये जा रहा था। गट्ठर मे से दो सिट्टे खिसक कर धरती पर गिर पडे तो अर्जुन ने अपने रथ के घोडो को वे सिट्टे खिला दिये। इस पर भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तुमने ब्राह्मण से बिना पूछे सिट्टे लेकर घोडो को खिला दिये, इसका प्रायश्चित्त करो। श्री कृष्ण के कहने के अनुसार अर्जुन उस ब्राह्मण के घर गया। घर मे ब्राह्मण और ब्राह्मणी दो प्राणी थे। अर्जुन उनके यहाँ रह कर उन दोनो की सेवा करने लगा। उनके कोई सतान न थी, इसलिए वे अर्जुन को पुत्रवत् मानने लगे। अब ब्राह्मण की जगह अर्जुन भिक्षाटन के लिए जाने लगा। भिक्षा भी अब अधिक मिलने लगी। भिक्षा मे से जो अनाज बच रहता उसको ब्राह्मण-ब्राह्मणी दान कर दिया करते। अर्जुन ने ब्राह्मणी से कहा कि माताजी, इसमे से कुछ अनाज बचाकर रखना चाहिए, जब खेती की ऋतु आयेगी तो मैं खेत जोतूगा। ब्राह्मणी अब कुछ बचाने लगी और वर्षा-ऋतु के आते आते उसके पास कुछ पैसे इकट्ठे हो गये। अर्जुन उन पैसो से कुछ अनाज खरीद लाया और खेत को चल पडा। सारा अनाज उसने गायो को खिला दिया और स्वय खेत मे आकर लेट

रहता। और सब लोग हल चलाते, अर्जुन सोया रहता। दूसरे लोग अर्जुन की माँ (ब्राह्मणी) से कहते कि अर्जुन तो दिन भर खेत में सोता रहता है। ब्राह्मणी अर्जुन से कहती तो वह उत्तर देता कि तुम चिन्ता न करो, खेती तैयार हो रही है। मैं औरों से अधिक ही तुम्हें ला दूँगा। खेती पक गयी और लोग अनाज निकाल-निकाल कर घर लाने लगे तो अर्जुन ने एक दिन अपना खेत खोदा। खेत में से ढेर के ढेर हीरे-मोती निकले। अर्जुन ने लाकर वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी को दे दिए। दोनों निहाल हो गये। अर्जुन पर अब उनका स्नेह और भी अधिक हो गया।

कुम्भ का पर्व आया तो गाँव के लोग गंगा-स्नान के लिए चले। अर्जुन की माँ ने अर्जुन से कहा कि बेटा, मैं भी गंगा-स्नान करना चाहती हूँ। अर्जुन ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हें गंगा-स्नान अवश्य करा लाऊँगा, जिन्हें जल्दी है उन्हें जाने दो। सब लोग चले गए। जब पर्व के तीन दिन बाकी रहे तो अर्जुन ने ब्राह्मणी से कहा कि माँ आओ तुम्हें भी गंगा-स्नान करा लाऊँ। ब्राह्मणी अर्जुन के साथ हो ली। दूसरे दिन सवेरे तक वे गाँव से पाँच कोस पहुँच गए। अर्जुन ने वहीं गंगाजी का आवाहन करते हुए कहा कि हे गंगा माई, यदि मैंने मन-वचन और कर्म से ब्राह्मण और ब्राह्मणी की सेवा की है तो तू यहीं प्रकट हो जा। तत्काल ही गंगाजी वहाँ प्रकट हो गई। ब्राह्मणी ने खूब स्नान किया और गंगाजी ने नारी रूप में प्रकट हो कर ब्राह्मणी को बहुमूल्य गहने और कपड़े दिये। अर्जुन ब्राह्मणी को स्नान करवा के घर को लौट चला। गाँव के सब लोग आश्चर्य में डूब गये कि सबको महीने भर से अधिक हो गया और अर्जुन दो दिन में अपनी माँ को गंगा-स्नान करा लाया। गंगाजी द्वारा दिये गये गहने-कपड़ों को देखकर स्त्रियाँ कहने लगीं कि वास्तव में गंगा स्नान तो ब्राह्मणी ने ही किया है।

गंगा स्नान करवाने के बाद अर्जुन ने सोचा कि अब मेरे पाप का प्रायश्चित्त हो गया है, अतः वह भगवान् श्रीकृष्ण के पास चला गया। अर्जुन को न देख कर ब्राह्मण-ब्राह्मणी छाती पीट-पीट कर और हाय अर्जुन,

हाय अर्जुन' कह के विलाप करने लगे। भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से पूछा कि तू ब्राह्मण-ब्राह्मणी को ढाढस देकर और समझा-बुझा कर आया है कि नहीं ? अर्जुन ने कहा कि मैं तो ऐसे ही चला आया। तब भगवान् के कहने पर अर्जुन फिर वहाँ गया। जाकर उसने देखा तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी औंधे मुह पडे हैं। अर्जुन ने सारा प्रसग बतलाकर उन दोनों को समझाया कि यो तो ब्राह्मण-ब्राह्मणी होने के नाते तुम मेरे माता-पिता ही हो, लेकिन वास्तव मे मैंने दो सिट्टे ब्राह्मण को बिना पूछे अपने घोडो को खिला दिये थे, मैं उसी पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए यहाँ आया था। अब तुम अपने घर मे रहो और मैं अपने स्थान को जाता हूँ।

● कायथ की खोपरी

अच्छी वर्षा हो गई तो गाँव के सारे लोग हल ले-ले कर अपने खेतो को चले। एक जाट जब अपने खेत को जा रहा था, तो राह मे पडी एक खोपडी को उसके पैर की ठोकर लगी। खोपडी ने हँस कर कहा कि इस साल तो बडा अकाल पडेगा, तुम लोग व्यर्थ ही खेतो की ओर भागे जा रहे हो। खोपडी को बोलते देख कर जाट को विश्वास हो गया कि इस साल तो अकाल ही पडेगा। वह सारा सामान ले कर घर लौट आया और खेती का विचार उसने सर्वथा ही त्याग दिया। सब लोगो ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह यही कहता रहा कि इस वर्ष तो अकाल ही पडेगा। कुछ दिन बाद फिर वर्षा हो गई। लोग-बाग 'निनाण' करने लगे तो वह जाट फिर खोपडी के पास गया और बोला कि इस साल तो फसल अच्छी होती दिखलाई पडती है। लेकिन खोपडी ने उसे फिर विश्वास दिलाया कि नहीं, अकाल ही पडेगा। कुछ दिनो बाद लोग 'मतीरे सिट्टे' आदि लाने लगे तो जाट फिर खोपडी के पास गया। खोपडी ने कहा 'मतीरो और काचरो' से क्या होता है ? खेती खूब अच्छी पक गई तो जाट फिर खोपडी के पास गया। खोपडी ने कहा क्या पकी-पकाई खेती नष्ट नहीं होती ? ये लोग जब अनाज ले जा कर 'कुठलो' मे भरें तब देखना, मैंने जो कह दिया कि इस साल अकाल

पड़ेगा तो अकाल ही पड़ेगा । जाट फिर अपने घर आ गया । और साल की अपेक्षा इस साल बहुत अधिक अनाज हुआ और जाट ने अनाज ला-ला कर अपना घर भर लिये । तब वह जाट मुस्कराता हुआ फिर उस खापड़ी के पास गया और बोला कि इस साल तो अनाज बहुत अच्छा हुआ है । तूने तो मुझे डूबो दिया। न मैं तेरी बातों में आता और न यों कोरा रहता । इस पर खापड़ी ने फिर हँस कर कहा कि यदि हमारे में ही गुण होता तो यों ठोकरें खाती क्या रुलती ? जाट अपना सा मुंह ले कर घर आ गया ।

● स्याणो ऊंदरो

एक बिल्ली ने चूहे के बिल के पास जा कर चूहे से पुकार कर कहा —

इस बिल केरा ऊंदरा इस बिल मे आज्याय ।
लाख टका दू रोकड़ा, बैठो बैठो खाय ॥

(बिल के चूहे यदि तू इस बिल को छोड़ कर दूसरे बिल में आ जाए तो तुझे नकद लाख टके दूंगी सो बैठे बैठे आराम से खाना ।)

लेकिन चूहा बिल्ली के मर्म को समझ गया । उसने बिल के अन्दर से ही उत्तर दिया —

भू थोडी भाडो घणो जोवन जोखा मांय ।
बीच माँहि गटको हुवै, लाख टका कुण खाय ?

(जमीन थोड़ी है और तुम किराया अधिक दे रही हो । सच तो यह है कि मेरा जीवन जोखिम में है बिल से निकलते ही तुम मुझे गटक जाओगी, फिर भला लाख टके कौन खायगा ?)

चूहे का ऐसा उत्तर पाकर बिल्ली अपना-सा मुंह लेकर चली गई ।

● करी जिसी पाई

एक राजा अक्सर आने जाने वालों से पूछा करता था कि मैंने अपने पूर्व जन्म में ऐसा कौन-सा पुण्य किया था कि जिसके फल से मैं राजा बना ।

लेकिन राजा को कोई संतोषप्रद उत्तर कभी नहीं मिला। एक दिन एक साधु राजा के पास आया। राजा ने उससे भी वही प्रश्न किया। साधु ने राजा से कहा कि तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें इसका उत्तर दूँगा। राजा साधु के साथ चल दिया। चलते-चलते वे दोनों एक साधु की कुटिया में पहुँचे, वह साधु कोयले खा रहा था। राजा ने उससे अपना प्रश्न पूछा तो वह बोला कि मेरे से बड़ा साधु फलाँ जगह तपस्या कर रहा है, तुम दोनों वहाँ जाओ, वह तुम्हें उत्तर देगा। दोनों वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि दूसरा साधु 'मोमर' (गरम राख जिसमें जलती चिनगारियाँ भी मिली होती हैं) खा रहा है। साधु ने प्रश्न सुनकर उन दोनों को तीसरे साधु के पास जाने को कहा। तीसरा साधु 'खीरे' (अगारे) खा रहा था। प्रश्न सुनकर तीसरे साधु ने राजा से कहा कि तुम और हम तीनों साधु पूर्वजन्म में भाई थे। घर में बहुत घाटा था। एक दिन एक महात्मा भिक्षा के लिए आया। एक भाई ने (पहले साधु) महात्मा से कहा कि रोटियों के बदले कोयले खा, दूसरे ने कहा कि 'मामर' खा और मैंने कहा कि रोटियों के बदले अगारे खा। महात्मा ने हम तीनों से कहा कि ऐसा ही होगा। लेकिन तुमने अपने पास की दोनों रोटियाँ महात्मा को दे दी। महात्मा तुम्हें आशीर्वाद देकर चला गया। उन्हीं दोनों रोटियों के पुण्य से तुम इस जन्म में राजा बने हो और हम तीनों ने जैसा कहा था वैसा भुगत रहे हैं। हमने जैसा किया वैसा पा रहे हैं, लेकिन अगला जन्म तो सुधरे, इसलिए तपस्या कर रहे हैं। राजा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और वह अपने नगर को लौट आया।

● हणमानजी और सिन्दूर

एक दिन हनुमानजी ने श्रीरामचन्द्रजी से प्रश्न किया कि प्रभो, आप को सीताजी इतनी प्रिय क्यों है? श्रीरामजी ने सीताजी की माँग में भरे हुए सिंदूर की ओर इशारा करते हुए कहा कि सीताजी अपनी माँग में सिंदूर भरती हैं (सौभाग्यचिह्नस्वरूप मुझे ही अपना सर्वस्व मानती हैं)

इसलिए यह मुझे सर्वाधिक प्रिय लगती है। दूसरे दिन हनुमानजी अपने सारे शरीर में खूब सिंदूर पान कर श्रीरामजी के पास गए। रामजी को यह देख कर हँसी आ गई, लेकिन अपने में हनुमानजी की अनन्य अनुरक्ति देखकर भगवान् बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने हनुमानजी को वरदान दिया कि आज से तुम मुझे अत्यन्त प्रिय रहोगे तथा जो भी तुम्हें सिंदूर चढ़ाएगा वह भी मुझे बहुत प्रिय होगा।

● आज तो मारुजी का नैण राता ?

एक चमार गाँव के ठाकुर के यहाँ काम-धन्धा करने के लिए जाया करता था। एक दिन चमार के माँगने पर ठाकुर ने उसे कुछ शराब दे दी। शराब पी कर चमार नशे में झूमता हुआ घर की ओर चला। चमारी ने चमार के डगमगाते कदमों को देखकर चमार से कहा 'आज तो मारुजी का नैण राता ?" चमार ने भी तुरंत मिजाज हुए उत्तर दिया 'दारुडी पीई ये मेरी माता"। जब चमार ने नशे में अपनी स्त्री को माता बना लिया तो उसने फिर प्रश्न किया, 'कठै पीई रे मेरा जामी?" इस पर चमार ने कहा कि रावलै पीई ये मेरी मामी।" चमारी ने फिर पूछा 'कुण प्याई रे मेरा सूवा ?" चमार ने नशे में झूमते हुए उत्तर दिया 'ठाकर प्याई ये मेरी भूवा।"

● ठाकर अर डूम

एक ठाकुर शाम को अपनी 'बाटड़ी' के आगे हुक्का लगा कर बैठता तो एक 'डोम' हमेशा 'चिलम का पान" लेने के लिए आ जाया करता। ठाकुर उसको एक पान' (चिलम में भर कर एक बार पीने योग्य तम्बाकू) दे दिया करता। डोम इधर-उधर की बातें करके चला जाता। एक दिन ठाकुर का मूड बिगड़ा हुआ था, उसने डोम को पान नहीं दिया। डोम ने कहा, 'ठाकरा थे पीवो म्हे तरसां' ?इस पर ठाकुर ने कह दिया 'नित नित कठैऊ बरसा ?" बहुत आरजू मिन्नत करने पर भी जब ठाकुर ने 'पान' नहीं दिया तो डोम को भी तैश आ गया ?उसने कहा—

मांग्या मिलज्या घडा बांकडा,
मांगी मिलज्या घोडी।
बेईमान बदकार रांघडा,
एक पान बेई तोडो।

डोम की बात सुन कर ठाकुर शर्मिंदा हो गया और उसने पान दे कर डोम को पार किया।

● भगवान सब चोखी करै

एक गांव में एक साहूकार अपने बेटे और बहू के सहित रहता था। पहले वह मालदार था लेकिन धीरे धीरे ऐसी स्थिति में पहुँच गया कि अब वह अपने घर की मरम्मत भी नहीं करवा सकता था। एक छोटी सी दूकान पर साधारण कारोबार करके किसी तरह अपना काम चलाता था। एक दिन उसके मकान की एक दीवार गिर पडी। बेटे ने बाप से जा कर कहा तो बाप बोला कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। फिर एक रात को उसके घर में चार घुसे और आगन में से अनाज का खाम खोद कर ले गये। लडके ने अपने बाप से कहा तो बाप ने वही बात दोहरा दी कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। लडका फिर चुप रह गया। एक दिन अकस्मात् लडके की बहू मर गई। लडके ने अपने बाप को यह दुखद संवाद सुनाया तो उसके बाप ने कहा कि भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। लडके को अपने बाप की बात सुन कर बहुत रंज हुआ लेकिन वह कुछ नहीं बोला।

कुछ दिन पश्चात् उस इलाके में भगदड मची और लोग इधर उधर भागने लगे। साहूकार के लडके ने अपने बाप से कहा कि हम भी कहीं अन्यत्र भाग चलें। लेकिन उसके बाप ने कहा कि भगवान सब अच्छी करेगा भाग कर कहां जाएंगे? लोग ऊंट घोडा, बैल ऊंट और गाया पर अपना कीमती सामान लाद-लाद कर इधर उधर भाग रहे थे। संयोग से मोहरों से भरा एक खच्चर रात को भटक कर सेठ के घर की तरफ

आ निकला। सेठ के घर की दीवार तो गिरी हुई थी ही, खच्चर घर में घुस गया और जहाँ से चोरों ने जमीन खोदकर 'खात' निकाला था उस गड्ढे में जा गिरा। सवेरे सेठ के बेटे ने मोहरों से लदे खच्चर को खात में पड़ा देखा। उसने अपने बाप को सूचना दी तो बाप ने कहा कि भगवान जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। बेटे के पूछने पर बाप ने उसे समझाया कि यदि घर की दीवार न गिरती तो खच्चर घर में न घुसता और यदि चोर गड्ढा नहीं खोदते तो खच्चर घर में आकर भी वापिस निकल जाता। और यदि तुम्हारी बहू न मरती तो वह हमें अब तक यहाँ कदापि न टिकने देती, और लोगों के साथ हमें भी यहाँ से भागना पड़ता और हम इतने द्रव्य से वंचित रह जाते। उस दिन तुम्हें मेरी बात बुरी लगी होगी, लेकिन आज तुम्हें मालूम हो गया होगा कि भगवान जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है, अब तुम चाहो तो एक की जगह दो बहू ला सकते हो।

● हाँसी में फाँसी

एक सेठ के घर में बहुत घाटा हो गया। सेठ अपनी स्त्री और छोटे बच्चे के साथ किसी तरह अपने दिन काट रहा था। एक दिन उसकी स्त्री ने कहा कि ऐसे किस तरह काम चलेगा? कुछ दिन मेरे पीहर चल कर रहा जाए, दिन-दशा पलटने से फिर कुछ काम धंधा करेंगे। साहूकार अपनी पत्नी की बात मान गया और बच्चे को साथ लेकर दोनों घर से निकल पड़े। रास्ते में साहूकार की स्त्री सोचती जाती थी कि अपने दामाद की ऐसी गिरी अवस्था देखकर मेरे पीहर वाले क्या कहेंगे? सालियाँ तो ताने के मारे जीने ही नहीं देंगी।

चलते चलते एक कुआँ दिखलाई पड़ा तो पत्नी ने पति से कहा कि कुएँ पर चलो, मुझे बड़ी प्यास लगी है। वे लोग कुएँ पर गये और अवसर पाकर साहूकार की स्त्री ने अपने पति को कुएँ में धकेल दिया। फिर वह अपने नन्हे बच्चे को लेकर बाप के यहाँ चल पड़ी। इधर साहूकार का भी किसी

ने कुएँ से बाहर निकाल दिया और वह पास के शहर मे जाकर काम-धधा करने लगा । थोडे ही अर्से मे उसके पास अच्छा द्रव्य जुट गया । तब एक दिन वह अपनी ससुराल पहुँचा । पति को देखते ही पत्नी सफेद पड गई । उसने इशारे से अपने पति को समझा दिया कि उस रहस्य को गुप्त ही रखना । दो चार दिन ससुराल मे ठहरकर साहूकार अपनी स्त्री को लेकर अपने घर आ गया । अब लडका भी सयाना हो गया और साहूकार ने उसका विवाह कर दिया । लेकिन सयोग से वह बडी कर्कशा आई । वह रात दिन सास से लडती-झगडती ।

एक दिन साहूकार भोजन कर रहा था । सूर्य की धूप उसके शरीर पर पड रही थी । साहूकार की स्त्री ने पति के शरीर पर धूप पडती देख कर अपने आँचल से छाया कर दी । साहूकार ने सोचा कि एक दिन इसी स्त्री ने मुझे कुएँ मे गिराया था और आज यह इस प्रकार आँचल से साया कर रही है । इस बात पर साहूकार को हँसी आ गई । साहूकार के बेटे की बहू ने अपने श्वसुर को हँसते देख लिया । उसका पति घर आया तो उसने अपने पति से कहा कि अपने पिता से पूछ कर आओ कि आज वे भोजन करते समय क्यो हँसे ? बेटे के पूछने पर बाप ने बात टालने की बहुत चेष्टा की, लेकिन अन्त मे उसने सारी बात अपने बेटे को बता दी । सास को छकाने के लिए बहू को मन्त्र मिल गया । दूसरे दिन उसने बातो-बातो मे सास से कह दिया कि तुम तो वही हो न कि जिसने ससुरजी को कुएँ मे पटक दिया था । बहू की बात सुनकर सास को बडी ग्लानि हुई । वह ऊपर के कमरे मे चली गई और वहीं फासी लगाकर मर गई । थोडी देर मे साहूकार घर आया और पत्नी को नीचे न देख कर ऊपर गया, लेकिन उसे इस प्रकार मरी देख कर उसे बहुत दु ख हुआ और वह भी फासी लगा कर मर गया । थोडी देर बाद साहूकार का बेटा आया । उसने अपनी स्त्री से पूछा कि माँ कहाँ है तो उसने तीखे स्वर मे कहा कि यही ऊपर नीचे कहीं ससुरजी के कान भर रही होगी और कहाँ जाती ? लडका ऊपर गया और माँ-बाप को मरा देख कर वह स्वय भी उसी प्रकार फासी लगा कर मर गया । जब बहुत देर

हो गई और ऊपर से कोई नहीं लौटा तो वह खुद ऊपर गई। वहाँ का दृश्य देख कर वह स्तम्भित रह गई और अत्यन्त शोक के कारण वह भी फांसी पर लटक गई। इस प्रकार, ज़रा-सी हँसी के कारण चार व्यक्ति फांसी पर चढ़ गये।

● आठूं पहर रोवै

एक ग्वाला नित्य जंगल में बकरियाँ चराने के लिए जाया करता था। जंगल में एक बकरी उन बकरियों में आकर हमेशा मिल जाती और शाम को उनमें अलग होकर अपने स्थान को चली जाती। एक दिन ग्वाला उस बकरी के पीछे-पीछे गया। बकरी एक गुफा में जाकर रुक गई। ग्वाले ने देखा कि गुफा में एक महात्मा तपस्या कर रहे हैं। महात्मा ने ग्वाले से कहा कि तू शायद बकरी की 'चराई' (चराने की मजदूरी) लेने आया है, यों कह कर महात्मा ने उसे एक मुट्ठी राख धूने में से उठा कर दे दी और कहा कि जा अब तेरे किसी चीज की कमी नहीं रहेगी, लेकिन यह बात किसी को न बतलाना। ग्वाला चला गया। अब उसके नव राजसी ठाट हो गये। रहने के लिए सुन्दर महल, विविध प्रकार की भोग-सामग्री तथा सेवा के लिए अनेक दास-दासियाँ। उसके वैभव को देखकर सब लोग ईर्ष्या करते, लेकिन उसने घोषणा करवा दी कि यदि कोई मुझसे इस विषय में कुछ पूछेगा तो उसे जान से मरवा दूंगा। वह ग्वाला दिन भर में एक पहर रोया करता था। एक दिन एक वृद्ध आदमी ने सोचा कि यह ग्वाला जो अब इतने आराम से रहता है आखिर एक पहर रोता क्यों है? उसने सोचा कि अब मुझे मरना तो है ही अतः इस रहस्य को पूछ लूं तो अच्छा रहे।

वृद्ध आदमी के पूछने पर ग्वाले ने कहा कि इसका रहस्य मेरा गुरु बतला सकता है जो अमुक जगह रहता है। बूढ़ा उस महात्मा के पास पहुँचा, लेकिन उसे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि जहाँ ग्वाला दिन भर में एक पहर रोया करता, वहाँ यह महात्मा दिन भर में दो पहर रोता है। महात्मा ने कहा कि तुम मेरे गुरु के पास जाओ, वह तुम्हें इसका रहस्य बतला देगा।

बूढ़ा उसके गुरु के पास गया जो तीन पहर रोता था। उसने बूढ़े को फिर अपने गुरु के पास भेजा जो चार पहर रोया करता था। बूढ़े के पूछने पर महात्मा ने उसे चार सन्दूक दिखलाये और उनकी चाबियाँ बूढ़े को सम्भलाते हुए कहा कि मैं अपने गुरु के पास जा कर आता हूँ, तब तक तुम यहीं रहना। लेकिन इन सन्दूकों को मत खोलना और यदि एक सन्दूक को खोल भी लो तो दूसरे को न खोलना और यदि उत्सुकतावश दूसरे सन्दूक को भी खोल लो तो तीसरे को मत खोलना और यदि तीसरे को भी खोल लो तो चौथे को तो किसी भी हालत मे मत खोलना।

महात्मा चला गया और बूढ़े को सन्दूक खोलने की धुन सवार हुई। उसने एक सन्दूक खोला, उसमें से एक बहुत सुन्दर सफेद हाथी निकला। हाथी ने बूढ़े से कहा कि तुम मेरे ऊपर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें कैलाश की यात्रा करा दूगा। बूढ़ा हाथी पर सवार हुआ और सवार होते ही हाथी उड़ चला। हाथी ने कुछ ही क्षणों में उसे कैलाश पर पहुँचा दिया जहाँ भगवान् शंकर पार्वती के सहित विराजमान थे। वहाँ पहुँचते ही बूढ़े को अलौकिक आनन्द मिला। बूढ़ा आनन्द मे मग्न हो गया। कहीं 'गणेश' भाग घोट रहे थे तो कहीं षडानन मोरों का नृत्य देख रहे थे। जब कुछ देर हो गई तो हाथी ने बूढ़े से कहा कि अब चलो। बूढ़ा हाथी पर सवार हो कर अपनी जगह लौट आया। लेकिन आनन्द से अब भी उसका शरीर पुलकित हो रहा था। हाथी सन्दूक मे समा गया और बूढ़े ने सन्दूक को ताला लगा दिया।

अब उसने दूसरा सन्दूक खोला। उसमें से एक घोड़ा निकला, वह उसे स्वर्गपुरी की यात्रा करा लाया। बूढ़े की यह यात्रा भी बहुत सुखद रही। अब उसने तीसरा सन्दूक खोला, तीसरे सन्दूक मे से गरुड निकले जिन्होंने उसे विष्णुलोक की यात्रा करवा दी। अन्त मे बूढ़े ने चौथा सन्दूक भी खोल डाला। चौथे सन्दूक मे स एक गधा निकला। गधे ने बूढ़े से कहा कि मैं तुम्हे तुम्हारे माता-पिता, भाई तथा पत्नी आदि से मिला सकता हूँ, लेकिन तुम वहाँ एक पहर से अधिक मत ठहरना, अन्यथा मैं तुम्हे वहाँ से वापिस नहीं ला सकूगा। बूढ़े ने गधे की बात स्वीकार कर ली और गधा उसे अपनी पीठ

पर चढ़ा कर उस लोक मे ले गया जहाँ उसके माँ-बाप आदि थे। अपने परिवार के लोगों से मिलकर बूढा गधे की बात को भूल गया और एक पहर की जगह तीन पहर निकल गये। अब बूढे को सहसा गधे की बात का ध्यान आया, लेकिन अब क्या हो सकता था ? गधा वहाँ से जा चुका था। बूढा हाथ मल मल कर पछताने लगा कि मैं कैलाश गया, स्वर्गलोक गया तथा विष्णुलोक गया, लेकिन वहाँ नही ठहरा और यहाँ आकर इस जजाल मे उलझ गया, जहाँ से मेरा किसी भी प्रकार छुटकारा समव नही है। बूढा जोर जोर से रोने लगा, उसने सोचा कि ग्वाला एक पहर रोता था, उसका गुरू दो पहर रोता था, तीसरा साधु तीन पहर रोता था, चौथा साधु चार पहर रोता था, लेकिन अब मुझे तो नित्य आठो पहर रोना ही रोना है।

● ठग की बेटी

एक साहूकार का लडका कमाकर दिसावर से लौट रहा था। उसके पास चार लाल थे, जिन्हे उसने अपनी जाघ चीर कर उसम छुपा रखे थे। सयोग से वह एक ठगो की नगरी मे पहुँच गया और 'रात-वासे' के लिए एक ठग के घर मे टिक गया। उस ठग के एक युवा लडकी थी जो आये-गये 'शिकार' को फँसाकर उसका सर्वस्व लूट लेती और उसे मार डालती। रात हुई तो ठग की लडकी साहूकार के लडके के पास पहुँची। साहूकार का लडका उसका मन्तव्य समझ गया था। उसने ठग की लडकी से कहा कि तू मेरे प्राण मत ले, मेरे पास कुछ भी नही है। यदि तू मुझे मारेगी तो उसी प्रकार पछताएगी कि जिस प्रकार बनजारा अपने कुत्ते को मार कर पछताया था, या कह कर उसने बनजारे और कुत्ते की कहानी सुनाई —

एक बनजारे के पास रास्ते मे धन की कमी हो गई। उसके पास एक कुत्ता था, जो बहुत समझदार तथा सिखाया पढाया था। बनजारे ने एक सेठ के पास से रुपये उधार लिये और अपना कुत्ता सेठ के पास बधक रख दिया। एक रात को सेठ के घर म चोर घुसे और सारा माल असबाब निकाल कर ले गए। कुत्ते ने भूस-भूस कर घर वालो को जगाने की बहुत चेष्टा

की, लेकिन कोई नहीं जगा। चोरों ने सारा धन जंगल में ले जाकर गाड़ दिया, कुत्ता उनके पीछे-पीछे गया और वह स्थान देख आया।

सवेरा हुआ तो सेठ के घरवालों को बड़ा दुःख हुआ। कुत्ता सबको उस स्थान पर ले गया और सेठ को उसका सारा धन ज्यों का त्यों मिल गया। सेठ कुत्ते पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बनजारे का सारा ऋण चुकता कर दिया। सेठ ने इस आशय की एक चिट्ठी कुत्ते के गले में बांध दी और उसे बनजारे के पास जाने की छूट दे दी। बनजारा कुत्ते को आता देख बड़ा क्रोधित हुआ, उसने कुत्ते को गोली मार दी। कुत्ता वहीं मर गया। फिर बनजारे ने कुत्ते के गले में बँधी चिट्ठी पढ़ी तो बहुत पछताया, लेकिन फिर क्या हो सकता था? सो हे ठग की बेटी, यदि तू मुझे मारेगी तो फिर उस बनजारे की तरह ही तुझे भी पछताना पड़ेगा।

रात्रि का एक पहर बीत गया। ठग की बेटी ने साहूकार के लड़के से कहा कि मुझे अपने पिता का हुक्म है, अतः चाहे जो कुछ भी हो मैं तुम्हें अवश्य मारूँगी। इस पर साहूकार के लड़के ने दूसरी कथा सुनाई—

एक राजा शिकार का पीछा करता हुआ जंगल में बहुत दूर निकल गया। संगी-साथी सब पीछे छूट गए। प्यास के मारे राजा के प्राण निकलने लगे। भटकते-भटकते राजा एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ कई वृक्ष पास-पास लगे थे, उनके नीचे शीतल छाया थी। राजा वहाँ ठहर गया। उसने देखा कि एक वृक्ष के ऊपर से बूंद-बूंद पानी टपक रहा है। राजा ने अपना चाँदी का कटोरा निकाला और पानी के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में ही प्याले में दो घूंट पानी जमा हो गया। राजा ने कंठ शीतल करने के लिए ज्यों ही प्याला उठाया, राजा के बाज ने प्याला गिरा दिया। राजा ने फिर उसी स्थान पर प्याले को रख दिया और सुस्ताने लगा। इस बार भी जब राजा ने पानी पीना चाहा तो बाज ने फिर पानी गिरा दिया। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने बाज को मार डाला। इतने में राजा के सेवक भी वहाँ आ पहुँचे। राजा ने पेट भर कर पानी पी लिया। फिर उसने अपने नौकरों को आदेश दिया कि इस बात का पता लगाओ कि वृक्ष पर से पानी क्यों-

कर आ रहा है ? नौकर ने जाकर देखा कि वृक्ष पर एक बड़ा अजगर मरा पड़ा है और उसी के मुह से विष वह बह कर नीचे टपक रहा है। राजा को सही बात जानकर बाज को मारने का बहुत अफसोस हुआ वह हाथ मल-मल कर पछताने लगा। सो हे ठग की बेटी, यदि तू मुझे मारेगी तो उस राजा की तरह ही पछताएगी। दो पहर रात बीत गई। ठग की बेटी ने फिर कहा कि मैं तो तुम्हे मारूँगी ही। इस पर साहूकार के बेटे ने उसे तीसरी कहानी सुनाई—

एक राजा के पास एक बहुत सुन्दर समझदार सूआ था। राजा सुग्गे को बहुत चाहता था और सुग्गा जो कुछ कह देता राजा उसे ही मान लेता। सुग्गे के मान को देखकर सारे दरबारी सुग्ग से डाह रखने थे और किसी न किसी प्रकार उसका अन्त करना चाहते थे। एक बार राजा का वह प्यारा सुग्गा अन्य सुग्गा के साथ एक मोज म गया। वहा उसे एक 'अमर फल' मिला। सुग्गे ने वह फल लाकर राजा को दिया। राजा के दरबारियो को अब मौका मिल गया। उस अमरफल को उन्होंने फूड़ के ढेर म फेंक दिया और उसके स्थान पर एक विष फल लाकर रख दिया। जब राजा ने उस फल को खाने की इच्छा प्रकट की तो दरबारियो न राजा के कान भरे कि महाराज ! यह जानवर न जाने क्या उठा लाया है ? अत इस फल की पहले परीक्षा कर लेनी चाहिए। राजा को दरबारियो की सलाह ठीक लगी और उस फल का एक टुकड़ा एक कुत्ते को डाला गया। कुत्ता तुरन्त मर गया। राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने उसी क्षण सुग्गे को मरवा डाला।

उस राजा के महल के नीचे एक कोढ़ी रहता था। राजा के महल से जो जूठन वगैरह फेंकी जाती उसी से वह अपना गुजारा किया करता। राजा के महल से फेंका गया वह अमरफल उस कोढ़ी के हाथ लगा उसने अमरफल खाया और खाते ही वह भला-चंगा बन गया। अब वह अत्यन्त रूपवान् और स्वस्थ पुरुष था। एक दिन राजा ने उससे आदमी से पूछा कि यहाँ एक कोढ़ी रहा करता था वह आखिर कहा चला गया ? उस आदमी ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ, वह कोढ़ी मैं ही हूँ एक दिन आपके महल से एक अमर-

फल फेंका गया था, वह मैंने खा लिया और खाते ही मेरी काया कंचन जैसी हो गई। राजा की समझ में दरबारियों का षड्यन्त्र आ गया। अब वह बहुत पछताने लगा, लेकिन अब क्या हो सकता था ? ओ हे ठग की बेटी, तू मुझे मारकर उस राजा की तरह ही पछताएगी, अतः मेरी जान मत ले।

ठग की बेटी ने कहा कि मैं मजबूर हूँ, मेरा बाप ही मुझसे यह दुष्ट कर्म करवाता है, मैं युवा हो गई, लेकिन इसी लोभ के मारे वह मेरी शादी भी नहीं करता। साहूकार के लड़के ने कहा कि तुम मेरे साथ भाग चलो। ठग की बेटी उसके साथ जाने को तैयार हो गई। उसने साहूकार के बेटे से कहा कि अब एक पहर रात्रि शेष है। मेरे बाप के पास दो ऊँट हैं, एक दिन में चलने वाला है तथा दूसरा रात्रि में। तुम दिन में चलनेवाला ऊँट चुपचाप खोलकर ले आओ। साहूकार का लड़का ऊँट ले आया और दोनों उस पर सवार हो कर भाग चले। सवेरे जब ठग को सारी बात का पता चला तो उसने ऊँट पर सवार होकर उनका पीछा किया। साहूकार का लड़का भूल से रात में चलने वाला ऊँट खोल कर ले गया था अतः सवेरा होते ही वह ऊँट एक वृक्ष के नीचे अड़कर खड़ा हो गया। बहुत मारने-पीटने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ। इतने में ठग उनका पीछा करता हुआ पास आ पहुँचा। उसके डर से दोनों जने वृक्ष की डाल पकड़कर वृक्ष पर चढ़ गये। ठग ने ऊँट को वृक्ष के नीचे खड़ा कर दिया और स्वयं वृक्ष पर चढ़ने लगा। अवसर पाकर वे दोनों दिन में चलने वाले ऊँट की पीठ पर आ बैठे और वहां से भाग छूटे। ठग टापता रह गया। उसके पास रात में चलने वाला ऊँट रह गया था अतः वह घर लौटने के लिए संध्या होने की प्रतीक्षा करने लगा।

● लुगाई कौ के भोळी ?

एक आदमी के दो स्त्रियां थीं। एक दिन एक स्त्री गाय दुह रही थी तथा दूसरी उसी समय पानी की 'दोघड़' (दो घड़े) लेकर आई। आते ही उसने गाय दुहने वाली अपनी सौत से कहा कि मेरे घड़े उतरवा दे, लेकिन

उसने कह दिया कि मैं तो गाय दुह रही हूँ। इस पर उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने अपनी 'इडुली' को उसकी तरफ साप बनाकर फेंका। दूसरी भी कुछ कम न थी, उसने अपने पास ही पडी नेत्री को नेवला बनाकर साप के मुकाबिले में खडा कर दिया। उन दोनों का पति यह सब कुछ देख रहा था। उसने सोचा कि दोनों ही स्त्रिया बडी जादूगरनिया हैं, किसी न किसी दिन ये मुझे मार डालेंगी। या सोच कर वह वहा से भाग निकला। लेकिन दोनों ने जादू के बल से उसे भैंसा बनाकर वापिस बुला लिया। एक दिन अवसर पाकर वह फिर भाग निकला और गाव की सीमा से बाहर निकल गया। अब उन दोनों का वश नहीं चल सकता था।

चलते-चलते वह किसी दूसरे गाव मे पहुँचा और वहीं नौकरी करने लगा। एक दिन वह एक गली म से गुज़र रहा था कि एक घर म से उसे आवाज़ सुनाई दी, 'अम्मा, तुम बाहर जा रही हो तो मुझे यह तो बतला जाओ कि खिचडी मे नमक कितना डालू?' उस आदमी ने सोचा कि यह लडकी बडी भोली है जिसे खिचडी म नमक डालने का भी पता नहीं। इसी से विवाह हो जाए तो अच्छा रह। या सोच कर वह उस घर म चला गया और उसने अपना विचार घर वालों को बताया। दोनों का विवाह हो गया और वह आदमी वहीं रहने लगा।

एक दिन उसकी दोनों पहले वाली पत्निया को सारी बात का पता चल गया। व दोनों वहा से चील बन कर उडी। उस आदमी ने अपनी नई पत्नी से कहा कि आज मेरी पहले वाली दोनों पत्निया चील बन कर आ रही हैं सो आज खैर नहीं है। इस पर नई पत्नी बोली कि तुम किसी बात की चिन्ता न करो मैं स्वय ही उनसे निपट लूगी। यो कह कर वह वहा से बाज बनकर उडी और उसने दोनों चीलों को मार कर ज़मीन पर गिरा दिया। यह देखकर उस आदमी के आश्चर्य की सीमा न रही। उसने कल्पना भी न की थी ऐसी भोली भाली दिखाई पड़ने वाली उसकी पत्नी इतनी क्रूर है। अन्त मे जान बचा कर एक दिन वह चुपचाप जगल में निकल गया और फिर उसने कभी विवाह करने की बात नहीं सोची।

● चरड़ मरड को नूतो

चार पड़ोसिनें थी। एक ने अपने लिए नये जूते बनवाये, दूसरी ने घाघरा बनवाया, तीसरी ने नया चूड़ा पहना और चौथी ने अपने दांता में सोने की चोप जड़वाई। फिर चारों ने आपस मे सलाह की कि हमने अपने लिए चीजें तो बनवाई पर इन्हे किसी ने देखा नहीं। अत अपनी नई चीजें सारे गाव को दिखलानी चाहिए। सोच-विचार कर उन चारों ने एक योजना बनाई। जिसने अपने लिए नये जूते बनवाये थे वह अपने नये जूते पहन कर गाव म गई और "चरड मरड को नूतो छैजी, चरड मरड रो नूतो छै।" कह कर सारे गाव को जीमनें का न्योता दे आई। उसके चरमर करने वाले जूते सारे गाव ने देख लिये। तब दूसरी स्त्री अपना नया घाघरा पहन कर जीमने वालो को बुलावा देने के लिए गई, 'घमक घाघरा जीमण चालो, घमक घाघरो जीमण चालो।' सारे लोग जीमने के लिए आ गए तो चूड़े वाली ने अपने हाथ आगे कर करके सबको अपना चूड़ा दिखलाया और बोली, "अठ्ठै बैठो, अठ्ठै बैठो।' सारे लोग जीमने के लिए बैठ गए लेकिन वहा तो जीमने के लिए कुछ भी नहीं था। अब चौथी की बारी आई और वह अपनी 'चोप' दिखलाती हुई खीसें निपोर-निपोर कर कहने लगी 'क्युई न काई, क्युई न काई।" सारे लोग निराश होकर उठ-उठ कर चले गए।

● सूझे से बूझयो भलो

एक सेठ और उसका बेटा ऊँट पर चढ़े चले जा रहे थे। थोड़ी देर बाद सेठ ने अपने लड़के से पूछा कि अपना ऊँट कहा गया? लड़के ने आश्चर्य से कहा कि ऊँट गया कहा? ऊँट पर तो हम दोनो चढ़े हुए है न। तब सेठ ने संतोष की सास लेते हुए कहा कि इतना तो मैं भी जानता था, लेकिन खातरी के लिए पूछ लिया, क्योंकि सूझने से बूझना अच्छा होता है।

● भील की विद्या

एक बार एक भील जगल मे एक वृक्ष पर चढ़ा हुआ कुल्हाड़े से लक-

डिया काट रहा था। संयोग से उनके हाथ से कुल्हाडा छूट कर धरती पर आ गिरा। भील ने अपनी विद्या के बल से वृक्ष पर बैठे-बैठे ही अपना कुल्हाडा वापिस मगा लिया। उसी समय राजा का मत्री उस तरफ से गुजर रहा था, उसने सारी बात देख ली। उसने भील से कहा कि मुझे अपनी यह विद्या सिखला दो। भील ने बहुत टालने की चेष्टा की, लेकिन मत्री ने हठ पकड लिया और लाचार हो के मन मे वह विद्या मत्री को सिखला दी। मत्री खुशी-खुशी अपने घर गया, लेकिन भील उदास था। घर जाने पर भीलनी ने भील से उदासी का कारण पूछा तो भील ने कहा कि आज हमारी पुश्तैनी विद्या चली गई। वजीर ने आज मुझसे वह विद्या ले ली। भीलनी ने कहा कि अभी इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि विद्या चली गई है। तुम लकड़ी का एक भार दरबार में ले जाओ, यदि वजीर गुरुमान कर तुम्हारा आदर करे और लकडी का भार स्वय अपने सिर पर ले ले तब जानना कि वास्तव में विद्या चली गई है। भील ने वैसा ही किया। मत्री ने भील को देखते ही प्रणाम किया और कहा कि गुरुदेव! यह भार आप मुझे दे दें, आप जहा कहें वहीं मैं इसे डाल दूगा। यो कह कर मत्री ने भील के सिर पर से भार उठाकर अपने सिर पर ले लिया। भील ने जान लिया कि विद्या चली गई है, वह अपने घर लौट गया। लेकिन उधर वजीर के आचरण से राजा बडा अप्रसन्न हुआ और उसने वजीर को हटा दिया। वजीर अपने घर जाकर बैठ गया।

कुछ दिना बाद उस राजा पर किसी दूसरे राजा ने चढाई कर दी। राजा किसी प्रकार दुश्मन से जीत नहीं सकता था, क्योंकि दुश्मन के पास बहुत बडी फौज थी जो सब तरह के हथियारों से लैस थी। सोचते-साचते राजा ने अपने पुराने मत्री को बुलाया। मत्री ने आते ही कहा कि आप निश्चिन्त रहिये, मैं सारी फौज से अकेला ही निपट लूगा। रात हुई और सारे सैनिक सो गये तो वजीर ने अपनी विद्या के बल से शत्रु के सारे हथियार अपने पास मँगवा लिये। जब दुश्मनों ने अपने को अस्त्र शस्त्रों से रहित पाया तो सवेरा होने से पहले ही वे भाग खडे हुए। राजा को

अनायास ही विजय प्राप्त हो गई। उसने वजीर को बहुत पुरस्कार दिया और उसे फिर से अपना प्रधान मंत्री बना लिया।

● आंधो और लगडो

एक अन्धा था और एक था लँगडा। एक दिन दाना कमाने के लिए चले। लँगडा अन्धे की पीठ पर सवार हो गया और रास्ता बताने लगा। चलते-चलते वह एक कुएँ के पास पहुँचा। अन्धे ने पूछा कि कुएँ पर क्या है? लँगडे ने कहा कि एक 'लाव' पड़ी है, एक 'पजाली' पडी है और एक सूवा 'चडस' भी पडा है। अन्धे ने कहा कि इन्हे मेरी पीठ पर लाद दे। लँगडे ने तीनो चीज उसकी पीठ पर लाद दी और फिर दोनो आगे बढे। थोडी दूर पर एक कुतिया ब्याई हुई थी, उसके पिल्ले चीं चीं कर रहे थे। जब वे दोनो वहाँ से गुजरे तो अन्धे ने कहा कि इन पिल्लो को भी मेरे ऊपर डाल दे। लँगडे ने सोचा कि अन्धा पागल हो गया है, लेकिन उसने पिल्ले उठा कर अन्धे की पीठ पर डाल दिये। चलते-चलते शाम हो गयी और वे एक जगल मे पहुँच गये। वे दोनो वही एक अच्छा स्थान देखकर ठहर गये। आधी रात को चार चोर वहाँ आये और चोरी किये गये माल का बँटवारा करने लगे। अन्धे ने लँगडे से पूछा कि क्या बात है तो लँगडे ने सारी बात बता दी। अन्धे ने विचित्र आवाज करते हुए कुतिया के पिल्लो को उन चोरो के ऊपर फेंका कि बालो मे कितनी जुएँ पड गई है। चारो अचकचा कर जूओ को देख ही रहे थे कि अन्धे ने 'चडस' फेंका और बोला कि इस 'टोपले' मे भी जुएँ पड गई हैं। अब तो चोर बहुत ही डर गये। फिर अन्धे ने लाव फेंकी और कहा कि इस चोटी मे भी जुएँ पड गई है, अत इसे भी काट फेंकता हूँ और फिर उसने 'पजाली' फेंकते हुए कहा कि जब चोटी ही काट डाली तो फिर कघे का क्या करना है? अब तो चोरो का वहाँ टिक सकना दूभर हो गया, वे जान बचा कर वहाँ से भाग छूटे और सारा धन वही छोड गये। अन्धे और लँगडे ने सारा धन बाँट लिया और खुशी-खुशी अपने घर आ गये।

● प्रेम सें भगवान् परगटै

एक साधु पीपल के वृक्ष के नीचे तपस्या किया करता था तथा दूसरा इमली के वृक्ष के नीचे। तपस्या करते-करते उन्हे बहुत दिन बीत गये। एक दिन नारदजी भगवान् के पास जाते हुए उधर से गुजरे तो उन दोनों साधुओं ने नारद से कहा कि महात्मन्, आप भगवान् से पूछ कर आना कि वे हमें कब दर्शन देंगे? नारद चले गये। उन्होंने भगवान् से दोना साधुओं के प्रश्न पूछे तो भगवान ने कहा कि यदि वे इसी प्रकार तपस्या करेंगे तो जितने पत्ते उन वृक्षा के हैं उतने ही दिना बाद मैं उन्हे दर्शन दूगा। नारदजी लौटे तो उन्होंने दोना साधुओं से भगवान् का सन्देश कह सुनाया। पीपल के नीचे वाले महात्मा ने तो एक बार पीपल के अनगिनत पत्ता की ओर देखा और हताश हो गया कि पीपल म ता बहुत पत्ते हैं, उसने तपस्या त्याग दी और वहाँ से चलता बना। इमली वाले महात्मा को भगवान् का सदेश सुन कर बड़ी भारी प्रसन्नता हुई। वह आनन्द म मग्न हो गया और भगवान् के प्रेम मे बावला होकर नृत्य करने लगा कि प्रभु मुझे कभी तो दर्शन देंगे ही। उसकी यह स्थिति देखते ही भगवान् तुरन्त उसके सामने प्रकट हो गये। भगवान ने कहा कि सच्चा प्रेमी मुझे तुरन्त ही पा जाता है, अत तुम्हारे लिए पत्ता की गिनती का कोई बधन नहा रहा। भगवान् की बात सुन कर और उनके दर्शन पाकर भक्त गद्‌गद हो गया।

● सब से मीठी चीज ?

एक बादशाह ने अपने मन्त्री से पूछा कि सब स मीठी वस्तु क्या है? मन्त्री ने उत्तर दिया कि किसी दिन आपको इसका उत्तर दूँगा। कुछ समय बाद एक दिन मन्त्री ने बादशाह की प्रधान बेगम को अपने यहाँ निमन्त्रित किया। मन्त्री ने सजावट और बेगम के स्वागत-सत्कार म कोई कमी न रखी। बेगम के महल से लेकर अपने घर तक मन्त्री ने गुलाबजल, केवडे और बढ़िया इत्र का छिड़काव करवाया, बहुमूल्य कालीन बिछाये। दास-दासियो की कोई कमी नही थी। सोने के थालो मे अनेक प्रकार के

भोज्य पदार्थ परोसे गये। भोजन के उपरान्त भी बेगम के आराम की हर तरह से व्यवस्था की गई। बेगम ने सोचा कि इतना ठाठ और आराम तो बादशाह के यहाँ भी नहीं है। लेकिन जब बेगम वहाँ से जाने लगी तो मन्त्री ने उसे सुनाकर घरवालों से कहा कि अपने घर में तुरकणी' ने भोजन किया है, सो सारे घर को गंगाजल से धुलवाना। बेगम ने मन्त्री की बात सुनी तो वह आग-बबूला हो गई, उसने आकर बादशाह से शिकायत की। बादशाह ने तुरन्त ही मन्त्री को बुलवा कर पूछा तो मन्त्री ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि जहाँपनाह मैंने तो सिर्फ आपकी बात का जवाब दिया है कि सब से मीठी जबान होती है। मैंने बेगम साहिबा का इतना स्वागत-सत्कार किया लेकिन जबान की जरा सी कड़वाहट के कारण सारा करा कराया चौपट हो गया। इसलिए मैं कहता हूँ कि सब से मीठी जबान होती है जिससे सब काम बनते हैं।

● सरणागत रख सावरा

एक राजा ने एक बार एक बड़ा तालाब खुदवाया लेकिन वह पानी से भरा नहीं। पण्डितों ने राजा से कहा कि जब तक तालाब में नर-बलि नहीं दी जाएगी तब तक यह नहीं भरेगा। राजा ने नर-बलि देने के लिए एक आदमी की तलाश शुरू कर दी। नगर में एक गरीब बनिया रहता था। उसके तीन लड़के थे। बड़ा लड़का बाप को बहुत प्रिय था और छोटा मां को लेकिन मझले लड़के पर मां-बाप का उतना प्यार न था। राजा ने बनिये को धन का लालच दिया और उसने अपने मझले लड़के को बलि के लिए दे दिया। उसे ले जाकर तालाब के किनारे पर बिठला दिया गया। बेचारा लड़का बड़े कष्ट में था वह जमीन पर चार लकीरें खींचता और कहता—

माता पिता धन का लोभी,
राजा लोभी सागरा।
देई देवता बलि का लोभी,
सरणागत रख साँवरा॥

(मां-बाप धन के लोभी हैं, राजा को सरोवर भरने का लोभ है और देवी-देवता बलि के लोभी हैं। हे सांवरे, तू ही शरणागत की रक्षा कर) तीन लकीरों को वह मिटा देता और चौथी लकीर को नमस्कार करता। परमात्मा ने शरणागत की पुकार सुन ली और तालाब पानी से लबालब भर गया। बालक पर भगवान् के अनुग्रह का बड़ा प्रभाव पड़ा और वह भगवान् का सच्चा भक्त बन गया।

● भगवान कहाँ है ?

एक बार एक बादशाह ने अपने वज़ीर से पूछा कि भगवान् कहाँ रहते हैं तथा वे कैसे मिल सकते हैं ? वज़ीर को इसका कोई उत्तर नहीं सूझा अतः उसने तीन महीने की मोहलत मांग ली। दिन बीतने लगे, लेकिन वज़ीर को कोई उत्तर नहीं सूझा, वह दिन-दिन घुलने लगा। एक दिन वज़ीर एक खेत में से गुजर रहा था। उसने देखा कि एक लड़का धरती पर बिखरे हुए गेहूं के दानों को एक-एक करके चुगता और खाता है। वज़ीर ने लड़के से कहा कि बच्चे, तू एक दाना चुगता है और वही खा लेता है, इसमें भला तुझे क्या स्वाद आता है ? यदि तू मुट्ठी भर दाने पहले इकट्ठे करले और फिर उन्हें खाये तो तुझे कुछ आनन्द भी आये। इस पर लड़के ने उत्तर दिया कि महाशय, श्वासों का कोई भरोसा नहीं, न जाने कब श्वास आये और कब न आये। इसलिए जो दाना मैं चुगता हूँ उसका तो आनन्द ले लूं, मैं मुट्ठी भर दाने इकट्ठे करूँ और श्वास निकल जाए तो मुझे क्या आनन्द आएगा ? बालक की बात सुन कर वज़ीर ने सोचा कि शायद यह बालक मेरी उलझन को सुलझा दे, अतः उसने बादशाह का प्रश्न बालक से किया। लड़के ने कहा कि जिसने आपसे यह प्रश्न पूछा है मैं उसी को इसका उत्तर दूँगा। वज़ीर लड़के को अपने साथ ले आया और नियत दिन दरबार में पहुँचा। बादशाह के पूछने पर वज़ीर ने कहा कि जहाँपनाह, आपके प्रश्न का उत्तर तो यह बालक ही दे देगा। जब बालक से पूछा गया तो बालक ने निधड़क उत्तर

दिया कि हाँ मैं आप के प्रश्न का उत्तर दूँगा। लेकिन वक्ता ऊँचे आसन पर बैठता है और श्रोता नीचे बैठते हैं, इसलिए आप अपना सिंहासन त्याग कर नीचे बैठें। बादशाह ने लडके को सिंहासन पर बिठा दिया और स्वयं नीचे बैठा। तब लडके ने एक दही का पात्र मँगवाया और उसमें वह इधर-उधर उँगली चलाने लगा। जब बहुत देर हो गई तो बादशाह ने लडके से कहा कि बच्चे, हमारे प्रश्न का उत्तर दे, व्यर्थ ही क्या टालने की चेष्टा कर रहा है? बालक ने गंभीर होकर कहा कि हुजूर मैं आपके प्रश्न का उत्तर ही दे रहा हूँ। मैंने सुना है कि दही में घी रहा करता है, सो मैं उँगली से उसे ही खोज रहा हूँ कि वह किधर है? इस पर बादशाह ने कहा कि दही मे घी अवश्य है लेकिन वह इस प्रकार थोडे ही मिलता है? उसे प्राप्त करने के लिए तो बडा प्रयत्न करना होता है। तब लडके ने कहा कि बस यही आपके प्रश्न का उत्तर है। ईश्वर सर्वत्र व्यापक है लेकिन उसे वही प्राप्त कर सकता है जो उसके लिए पूर्ण रूप मे प्रयत्न शील होता है, भगवान् का निरन्तर भजन स्मरण करता है और अच्छे रास्ते पर चलता है।

बालक का उत्तर सुन कर बादशाह को संतोष हो गया।

● एक लुगाई तीन सगाई

एक ब्राह्मण अपनी लडकी की सगाई एक गाँव में करके आया। ब्राह्मणी ने उसी लडकी की सगाई किसी दूसरे गाँव में कर दी और लडकी के भाई ने अपनी बहिन की सगाई किसी तीसरे लडके से कर दी। विवाह के लिए नियत दिन तीन बारातें ब्राह्मण के घर पहुँची। लेकिन संयोग से इसी समय लडकी का देहान्त हो गया। घर के लोग उसकी अरथी श्मशान की ओर ले चले। तीनों दूल्हे भी साथ चले। श्मशान पहुँच कर जब लडकी की चिता में आग लगाई गई तो एक दूल्हा उसके वियोग में उसी के साथ जल कर मर गया, दूसरा वैरागी हो कर वहीं कुटिया बना कर रहने लगा और तीसरा सन्यासी बन कर वहां से चल दिया।

निशाटन करते-करते वह सन्यासी एक दिन उसी ब्राह्मण के घर पहुँच गया। घर में छोटा लड़का अपनी माँ को बहुत सता रहा था सो उसकी माँ ने क्रोध में आ कर बच्चे को मार डाला। सन्यासी ने ब्राह्मणी का यह वीभत्स कर्म देखा और वह बिना भिक्षा लिये ही घर से बाहर निकला। सामने से ब्राह्मण आता दिखाई पडा। ब्राह्मण ने सन्यासी से कहा कि मैं तुम्हें बिना भिक्षा लिये नहीं जाने दूँगा। सन्यासी ने कहा कि यह घर ब्राह्मण का नहीं कसाई का घर है, जिसमें माँ ने अपने छोटे बच्चे को मार डाला है। ब्राह्मण ने कहा कि मैं बच्चे को अभी जिला देता हूँ, लेकिन तुम्हें भिक्षा ले कर ही जाना होगा। ब्राह्मण ने लड़के को जिला दिया तो सन्यासी ने ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम मुझे भिक्षा ही देना चाहते हो तो मुझे यह विद्या सिखला दो। ब्राह्मण ने वह संजीवनी विद्या सन्यासी को सिखला दी।

अब सन्यासी वहाँ से चलकर अपनी मंगेतर की चिता पर आया और मन्त्र पढ़ कर जैसे ही उसने चिता के स्थान पर जल छिड़का वैसे ही वह लड़की जीवित हो कर उसके सामने खडी हो गई, लेकिन साथ ही साथ ब्राह्मण का वह लड़का भी जो उसके साथ जल गया था जीवित हो गया। तीसरा लड़का वहाँ वैरागी बना बैठा ही था। अब तीनों आपस में 'पत्नी' के लिए झगडने लगे। तीनों में से प्रत्येक यही कहता था कि यह मेरी पत्नी है। इतने में वहा से एक पंडित गुजरा। तीनों ने उसे पंच बनाया और कहा कि आप जो फैसला कर देंगे वह हमें स्वीकार है। पंडित बोला कि जिस युवक ने इसे पुनर्जन्म दिया है, वह इसका पिता अर्थात् जनक हो गया और जो चिता में जल कर मर गया था वह इस लड़की के साथ ही फिर जन्मा है, अतः वह इसका भाई बन गया। इसलिए अब इस लड़की पर तीसरे युवक का अधिकार रह जाता है जो इसके दर पर कुटी बना कर रह रहा है, वही इसे पत्नी रूप में स्वीकार करे। तीनों ने पंडित का निर्णय मान लिया।

● सत्यनारायण की माया

एक सेठ हर पूर्णिमा को सत्यनारायण भगवान् की कथा सुना करता था। एक पंडित आकर उसे कथा सुनाया करता। एक दिन सेठ का छोटा इकलौता बच्चा गहने कपड़ों से सजा गली में खेल रहा था, पंडित कथा बाँचने आया। लड़के के गहनों को देख कर उसका मन चलायमान हो गया। वह लड़के को भुलावा देकर अपने घर ले गया, उसने बच्चे को मार डाला और उसके गहने-कपड़े निकाल कर घर में रख लिये। जब समय हो गया और पंडित कथा बाँचने नहीं आया तो सेठ ने एक सेवक को भेजा, लेकिन पंडित ने उसे टाल दिया। तब सेठ स्वयं पंडित को बुलाने गया। वहाँ जाकर उसने देखा कि पंडित ने बच्चे को मार डाला है। लेकिन उसने पंडित से कुछ नहीं कहा। पंडित ने सेठ के घर आ कर कथा बाँची और उसके बाद सब को भोजन कराया गया।

सेठ ने अपनी स्त्री से कहा कि आज मैं यह भोजन नहीं करूँगा। तू मेरे लिए खिचड़ी बना दे। सेठानी ने कहा कि आप यह भोजन नहीं करेंगे तो मैं भी नहीं करूँगी। मैं भी खिचड़ी खा लूंगी। सेठानी खिचड़ी बनाने लगी। वह कोई चीज लाने के लिए उठी तो सेठ ने मौका पाकर खिचड़ी में विष मिला दिया। सेठ ने सोचा कि जब हमारा इकलौता लड़का ही चला गया तो अब हमें जी कर क्या करना है? खिचड़ी बन गई तो दो साधु द्वार पर आ गये। सेठ उन्हें खीर-पूड़ी देने लगा, लेकिन वे बोले कि हम तो खिचड़ी खाएँगे। सेठ ने बहुत टालने की चेष्टा की, लेकिन साधु नहीं माने। अन्त में चार पत्तलें लगाई गई। साधुओं ने कहा कि अपने छोटे बच्चे को भी साथ ले आओ। सेठ ने कहा कि वह यहाँ नहीं है, लेकिन साधु बोले कि वह उस सामने के कमरे में है। सेठ मन मार कर कमरे की ओर गया तो सचमुच उसमें लड़का खेल रहा था। सेठ ने मुड़ कर देखा तो वहाँ न साधु थे और न चारों पत्तलें। अब उसकी समझ में आया कि यह सत्यनारायण भगवान् की कृपा का ही फल है। फिर

तीनों ने भगवान् सत्यनारायण का नाम लेकर भोजन ग्रहण किया।

● भगवान की सेवा को फल

एक ब्राह्मण शालग्राम की नित्य पूजा किया करता था। एक दिन वह शालग्राम जी को स्नान कराने के लिए गंगाजी गया तो चार चोरों ने उसे पकड़ लिया। चोर बोले कि हम तुम्हें मारेंगे। ब्राह्मण ने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है, सिर्फ शालग्राम की मूर्ति है। लेकिन चोर अपनी बात पर अड़े रहे। अंत में ब्राह्मण ने कहा कि तुम नहीं मानते तो मैं मूर्ति को गंगाजी में प्रवाहित कर देता हूँ, तब फिर मुझे मार डालना। चोर उस ब्राह्मण की बात को मान गये। ब्राह्मण ने मूर्ति को लेकर गंगाजी में प्रवेश किया और उसने मूर्ति से कहा कि भगवन्, मैं इतने दिनों से आपकी सेवा-पूजा कर रहा हूँ, फिर आप इन चोरों से मेरी रक्षा क्यों नहीं करते ? ब्राह्मण की बात सुन कर शालग्राम ने कहा कि हे ब्राह्मण, तू ने पिछले जन्म में इन चारों को मारा था, अतः वे भी तुझे मारेंगे। लेकिन मेरी सेवा-पूजा करने का फल यह है कि ये चारों तुम्हें चार जन्मों में बारी-बारी से मारते, लेकिन अब चारों एक ही बार मारेंगे। चोरों ने ब्राह्मण से पूछा कि तुम गंगाजी में किस से बात कर रहे हो तो ब्राह्मण ने सारी बात सच-सच बतला दी। इससे चोरों का मन शुद्ध हो गया और उन्होंने ब्राह्मण से कहा कि तू भगवान् शालग्राम की पूजा किया कर हम तुझे नहीं मारेंगे और आज से यह निंद्य कर्म भी नहीं करेंगे। यों कह कर वे चारों चले गये।

● नहचो धारया भगवान मिलै

एक पारधी नित्य जंगल में जानवरों को मारा करता था। एक दिन वह एक साधु की कुटिया के सामने से गुजरा तो साधु ने पारधी से कहा कि आज तू ऐसे जीव को पकड़ना कि जिसके चार भुजाएँ हों, और उन चारों भुजाओं में शंख, पद्म, गदा, चक्र हों, जिसके माथे पर मुकुट हो, गले में वैजयन्ती-माला हो तथा जो पीताम्बर पहने हो। अन्य किसी जीव की तरफ आँख उठा कर भी मत देखना। पारधी ने कहा कि ऐसा ही करूँगा।

वह दिन भर जगत में भटकता रहा, लेकिन उसे ऐसा जीव दिखलाई नहीं पड़ा। यों सात दिन निकल गये। पारधी भूख-प्यास के मारे बेहाल हो गया। अन्त में उसने तय किया कि आज मैं छाती में छुरा भोंक कर मर जाऊँगा। लेकिन ज्योंही वह छुरा भोंकने को उद्यत हुआ, उसने देखा कि सामने से एक अत्यन्त सुन्दर जीव उसी तरफ चला आ रहा है जिसमें साधु की बतलाई हुई सारी बातें मौजूद हैं। पास आने पर पारधी ने उसके गले में फंदा डाल दिया और उसे साधु के पास ले गया। साधु जान गया कि स्वयं भगवान् भक्त के वश में हो कर यहाँ तक आये हैं। साधु ने भगवान् को दण्ड-प्रणाम किया और फिर बोला कि प्रभो ! मेरा जन्म आपकी सेवा-पूजा करते बीत गया, आपने दर्शन नहीं दिये और इस पारधी को आपने इतनी जल्दी ही दर्शन दे दिये, इसका क्या कारण है? भगवान् ने कहा कि इसने जीवन का मोह त्याग दिया था और सच्चे मन से मेरी कामना की थी, इसलिए मैंने इसे दर्शन दिये हैं। सच्ची आराधना से ही मैं द्रवित होता हूँ।

● जाण की पिछाण

एक बार राजा भोज गगू तेली के साथ तेलियों के मुहल्ले में गया। तेलियों में गगू का बहुत सम्मान था। जब वे दोनों एक तेली के घर पहुचे तो तेली ने गगू का बहुत आदर-सत्कार किया और बैठने के लिए उसे एक मूढ़ा दे दिया। लेकिन राजा को वह नहीं जानता था। तेली के घर मे एक मोगरी पड़ी थी। राजा भोज उसी पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक जानकार आदमी वहाँ आ निकला। उसने राजा का अवमान देख कर कहा कि सच है जान-पीछान होने से ही सत्कार होता है इसके लिए किसी को गुस्सा नहीं करना चाहिए, यदि कोई गुस्सा करे तो वह मूर्ख है —

जाण की पिछाण, रोस करै सो गड्डा
राजा भोज नै मोगरी, गाँगलै नै मुड्डा ॥

● खाताँ खाण न पीताँ पाणी

एक मठ में बहुत से साधु रहते थे। उन सब के पास ओढ़ने के लिए एक ही 'उपरोड' (बहुत बड़ी सोड) थी। जाड़े के दिन थे। शाम से ही सर्दी बरसने लगती। सारे साधु उसी 'सोड' में घुस जाते। सभी 'सोड' को ओढ़ने की चेष्टा करते और सब उसे अपनी-अपनी ओर खींचते। अच्छी खासी हुल चल मची रहती। इसी को लक्ष्य करके किसी ने कहा—

> एक सोड अर जणा पचास।
> सारा करै ओढ़ण री आस॥
> सांझ पड़े ई खींचा ताणी।
> खाताँ खाण न पीताँ पाणी॥

● आमकरण

राजा भोज के दो रानियाँ थीं, एक को सुहाग था, जिस का नाम मानमती था और दूसरी का दुहाग, जिसका नाम फूलवती था। लेकिन राजा के कोई सतान नहीं थी। एक बार रानी मानवती गर्भवती हुई तो उसने राजा से कहा कि महाराज! मेरे जब सतान होगी तो आपको पता कैसे चलेगा? आप तो दिन भर दरबार में रहते हैं। राजा ने दरबार में एक घंटा लटका दिया और रानी मानवती के महल से दरबार तक एक जंजीर बाँध दी गई। जंजीर को खींचते ही घंटा बज उठता था। एक दिन दासी ने रानी से कहा कि घंटा तो लग गया, लेकिन क्या तुमने कभी परीक्षा भी ली कि घंटा बजने से राजा आएँगे भी या नहीं। रानी ने जंजीर खींच ली, घंटा बज उठा और राजा आ गया। राजा ने आते ही पूछा कि क्या हुआ? राजकुमार अथवा राजकुमारी? रानी ने कहा कि हमने तो जंजीर खींची ही नहीं शायद कोई पक्षी जंजीर पर बैठ गया हो जिससे जंजीर हिल गई। राजा चला गया और इधर रानी के एक सुन्दर राजकुमार जन्मा। रानी की दासी ने बार-बार जंजीर

हिलाई, लेकिन राजा नहीं आया। रानी फूलवती ने बच्चा जनवाने का काम अपने ऊपर ले लिया। उसने जच्चा रानी की आँखों पर पट्टी बांध दी और उसकी छाती में घुटने लगा दिये। जब बच्चा पैदा हुआ तो उसने बच्चे को उठाकर पास के बगीचे में डाल दिया और एक हाल की ब्याई हुई कुतिया के पिल्ले को लाकर वहाँ सुला दिया। राजा को खबर हुई। उसने आकर पूछा कि क्या हुआ तो रानी फूलवती ने वह पिल्ला दिखला दिया। राजा को बड़ा गुस्सा आया और उसने एक रथवान को बुला कर हुक्म दिया कि रानी को देश-निकाला दिया गया है तुम उसे राज्य की सीमा से बाहर छोड़ आओ। दुःख और दर्द से पीड़ित रानी रथ में बैठ कर चल पड़ी। जब वह बाग के द्वार पर पहुँची तो उसने रथवान से कहा कि मैं तो अब जा ही रही हूँ लेकिन जाते जाते मेरी इच्छा है कि अन्तिम बार अपने बाग को देख लूं। रथवान ने रथ रोक लिया और रानी बाग में चली गई। बाग में रानी ने क्या देखा कि एक घने वृक्ष के नीचे एक नवजात शिशु सो रहा है और एक काला नाग उस पर अपना फन फैलाये झूल रहा है तथा उसके फन से बच्चे के होठों पर अमृत की बूंदें टपक रही हैं, जिन्हें बच्चा चूस रहा है। रानी को देखकर नाग चला गया। रानी ने शिशु को उठाकर अपने आंचल में छिपा लिया और फिर आकर रथ में बैठ गई। रानी की 'आशा' पूरी हुई थी, इसलिए रानी ने उसका नाम 'आसकरण' रख लिया।

चलते चलते रथवान रानी को ले कर दूसरे राजा की सीमा में पहुँच गया। उस राजा का राजकुमार शिकार खेलने के लिए अपने साथियों सहित वहाँ आया हुआ था। रथ को देख कर उसने अपने साथियों से शर्त लगाई कि रथ को लूटा जाए रथ के अन्दर की चीज मेरी और बाहर की चीजें तुम्हारी। सब लोगों ने अपने घोड़े रथ की ओर दौड़ा दिये। राजकुमार ने रथ का पर्दा उठा कर देखा कि एक औरत अपने बच्चे को लिये रथ में बैठी है। राजकुमार के पूछने पर औरत ने कहा कि भाई! मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है, आकाश ने मुझे पटक दिया और धरती ने झेल लिया, मैं

बड़ी दुखिया हूँ। अब मामला दूसरा ही बन गया। राजकुमार को उसने भाई कह कर सम्बोधित किया था, इसलिए राजकुमार उसे अपनी धर्म की बहिन बना कर अपने घर ले आया। उसने अपने पिता से सारी बात कही। उसके पिता राजा ने कहा कि बेटा! अच्छा किया तुम्हारे कोई बहिन नहीं थी और मेरे कोई बेटी नहीं थी। अब राना वहां रहने लगा।

आसकरण कुछ बड़ा हो गया तो अपने सगी-साथियों को तंग करने लगा क्योंकि वह अपने साथियों में सबसे बलिष्ठ था। वह एक लड़के को घोड़ी बना लेता और उस पर सवारी करता। एक दिन लड़के ने अपनी माँ से कहा तो उसने आकर आसकरण को ताना दिया कि तेरे बाप का तो पता ही नहीं कि कौन है और तू मेरे बेटे को घोड़ी बनाता है। आसकरण को यह बात लग गई और वह सीधे अपनी मां के पास पहुँचा। बहुत हठ करने पर उसकी मां ने सारी बात उसे बतला दी। तब आसकरण राजा के पास जाकर बोला कि नानाजी अब हम अपने नगर को जाएँगे सो आप हमें विदा दीजिए। राजा ने उसे बहुत समझाया-बुझाया लेकिन आसकरण नहीं माना तो राजा ने उससे आग्रहपूर्वक कहा कि तुम कम से कम एक वर्ष और यहाँ रहो। आसकरण ने कहा कि आप मुझे सौ घोड़े और सौ सवार दें तो मैं रह सकता हूँ। राजा ने उसे सौ घोड़े और सौ सवार दे दिये। अब आसकरण फिर से निकला तो वह पूरी गारद के साथ अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाता हुआ निकला। कुछ लोग कुचले गये। अब आसकरण का नित्य का यही धंधा हो गया। लोग राजा के पास शिकायत ले कर पहुँचे तो राजा ने उनसे कहा कि मैंने आसकरण को साल भर के लिए रख लिया है, इसलिए जैसे तैसे करके साल भर तो निभाओ इसके बाद उसे रहना नहीं और हमें रखना नहीं। आसकरण तो इसीलिए यह काम करता था कि राजा फिर उसे रहने के लिए न कहे। साल पूरा हुआ तो राजा ने आसकरण को चारसौ घोड़े और चारसौ सवार दिये। आसकरण की माँ के लिए बहुत सुन्दर रथ मँगवाया और फिर उन्हें खूब धन-दौलत और नौकर चाकर दे कर ठाट बाट से विदा कर दिया।

आसकरण दल-बल सहित वहाँ से चला। राह म एक दूसरे राजा का नगर आया। आसकरण से भयभीत हो कर उस राजा ने अपनी बेटी आसकरण को ब्याह दी और फिर उसने भी उसे खूब धन-दौलत देकर विदा किया। वहाँ से चलकर आसकरण अपने नगर मे आया और अपनी माँ के बाग म अपने साथियो सहित ठहर गया। राजा को खबर हुई तो वह गले मे सूत की आटी डाल कर नगे पैरो आसकरण के पास आया। आसकरण ने राजा से कहा कि घबडाने की कोई बात नहीं है। किसी समय मेरे पुरखे यही रहते थे। आज मैं अपने पूर्वजो के नगर म काम की तलाश म आया हूँ। राजा ने आसकरण को लाख टके राज पर रख लिया।

एक रात को सोते म राजा की आखें खुल गई तो उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई पडी। राजा ने आसकरण को बुला कर कहा कि कौन रो रहा है इस बात का पता लगाओ। आसकरण जिधर से आवाज आ रही थी उसी दिशा की ओर चल पडा। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि एक सुन्दर स्त्री खडी रो रही है। आसकरण ने उसके पास जाकर पूछा कि तू कौन ह और क्यो रो रही है? उस स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं इन्द्र की परी हूँ और मुझे इन्द्र सभा म जाना है लेकिन आज मुझे देर हो गई है और इन्द्र मुझे दण्ड देगा। यदि तुम मुझे अपने सिरपर खडी करके अपने हाथो से ऊपर की ओर जोर से धकेल दो तो मैं उड जाऊँगी। आसकरण ने उसकी बात मान ली। लेकिन जैसे ही वह स्त्री आसकरण के सिर पर चढी उसने आसकरण की चोटी पकड ली और उसे खाने की चेष्टा करने लगी। आसकरण उसकी मनशा ताड गया और उसने कटार निकाल कर एक वार किया। कटार से उसका एक पैर कट गया और वह उड गई। इधर आसकरण ने कटे पैर को देखा। पैर म एक बहुत सुन्दर पैंजनी थी। आसकरण न वह पैंजनी ले ली और सवेरे दरबार मे ले जाकर राजा को दे दी। राजा ने वह पैंजनी अपनी रानी को ले जाकर दी। रानी के महल म एक सुग्गा था। रानी अपने पैर म पैंजनी पहन कर

सुग्गे के पास गई और बोली कि देख रे सूआ, मैं कैसी सजी ? सुग्गे ने व्यग्य से कहा कि एक पैर मे पंजनी क्या सजती है ? दूसरे पैर मे भी ऐसी ही पंजनी चाहिए। रानी 'आटी-पाटी' ले कर सो गई। राजा आया तो रानी ने कहा कि मुझे दूसरे पैर की पंजनी और मँगवा कर दो। दूसरे दिन राजा ने आसकरण से एक पंजनी और लाने के लिए कहा।

राजा की आज्ञा सुन कर आसकरण उदास मुह घर आया। भोजन करने बैठा तो मुह का ग्रास मुह मे और हाथ का ग्रास हाथ मे रह गया। अपनी माँ के पूछने पर आसकरण ने सारी बात बतलाई और दूसरे दिन सवेरे ही वह घोडे पर सवार हो कर चल पडा। चलते-चलते शाम के वक्त वह एक नगर के पास पहुँचा। नगर के फाटक बद हो चुके थे, अत वह बाहर ही सो रहा। सवेरे दरवाजा खुला तो राजा के कर्मचारी आसकरण को राजा के पास ले गये। राजा ने इस बात की घोषणा कर रखी थी कि कल सवेरे जो आदमी फाटक पर मिलेगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया जाएगा। आसकरण का राजा की बेटी के साथ विवाह हो गया। अब आसकरण वहा से आगे बढने लगा तो उसकी नई बहू ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूगी। आसकरण ने उसे बहुत समझाया कि मैं लौटते वक्त तुम्हे ले चलूगा, लेकिन वह नहीं मानी तो आसकरण ने कहा कि मेरे साथ चलना ही चाहती हो तो मर्दाना वेष बनाकर घोडे पर सवार हो लो। दोनो घोडा पर सवार होकर चल पडे। चलते-चलते वे दोनो समुद्र के किनारे पहुँच गये जहाँ नीचे सिर्फ पानी और ऊपर आकाश दिखलाई देता था। दोनो ने अपने घोडा के पैर बांध कर वहीं छोड दिये और स्वय दोनो वृक्ष के एक बडे लक्कड पर जो समुद्र के किनारे पडा था, बैठकर समुद्र मे तैर चले। बीच समुद्र म पहुँच कर लक्कड के दो टुकडे हो गये और दोनो अलग-अलग दिशाओ म बहने लगे। स्त्री ने अपने पति से कहा कि राजा के बेटे, तुमने मेरे साथ धोखा किया। लेकिन राजकुमार ने कहा कि यह तो मेरे वश की बात नहीं थी, ईश्वर ने मिलाया तो फिर मिलेंगे। दोनो बहते गये, बहते गये।

राजकुमारी था तरना बहते-बहते किनार लगा ता वहा एक धाबी कपडे धा रहा था। धोबी क कोई सन्तान न थी। उसन साचा कि इसे मैं अपना लडका बना लूगा लेकिन उसने कहा कि मुझे छूना मत। इस पर धाबी ने कहा कि यदि तुम लडके हा तो मरे बेट हा और यदि लडकी हो ता मेरी बेटी बनकर मरे घर रहो। राजकुमारी ने कहा कि मैं लडकी हूँ। इस पर धाबी उसे अपना बेटी बनाकर घर ले गया और वह धाबी के घर रहने लगी। लेकिन किसी ने राजा स जा कर चुगली खाइ कि धोबी क घर एक बडी सुन्दर कन्या है जो आपके लायक है। धाबी को तलब किया गया। धाबी ने कहा कि इसका निर्णय मेरी बिरादरी ही कर सकती है। राजा के भय से बिरादरी ने आज्ञा दे दी ता धोबी की लडकी को बुलवाया गया। धोबी की लडकी ने कहा कि मरी प्रतिज्ञा है कि मैं छ महीने तक पुरुष का स्पर्श नहीं करुगी अत मुझ छह महीने की मोहलत दीजिए, राजा ने उसे एक अलग महल म ठहरा दिया जहा कोई आता-जाता नही था।

इधर आसकरण भी किनार लगा। वहा बियावान जगल था। आसकरण बहुत थका हुआ था अत एक वृक्ष के नीच सोने लगा, लकिन तभी उसने वृक्ष पर किसी पक्षी के बच्चा की ची चा की आवाज सुनी। आसकरण ने देखा कि एक बडा साप वृक्ष पर चढ रहा है। उसने साप को मार डाला और फिर सो गया। व बच्चे गरुड पक्षी के थ। शाम का गरुड-दम्पति आय तो बच्चा ने सारी बात कही। व दोना आसकरण पर बडे प्रसन्न हुए। अब आसकरण वही रहन लगा। भोर होने ही गरुड दम्पति उड जाते और शाम होते होते अपने बच्चा और आसकरण के लिए खाना लेकर लौट आते। ऐसा करते-करते कई दिन हो गये ता एक दिन गरुड न अपने बच्चा से कहा कि अब हम बूढे हो चले अत अब तुम चारा खाना लाने के लिये जाया करो। दूसर दिन चारा बच्चे सवेरा होत ही चार दिशाओ म उड गये और शाम का खाना लेकर लौट। आसकरण ने चारा से पूछा कि तुमने क्या-क्या देखा सो मुझ स कहा। एक ने कहा

कि मैंने समुद्र के उस पार दो घोड़ों को देखा, जिनके पैर बँधे हुए थे। आसकरण ने उनसे कहा कि वे घोड़े मेरे हैं और कल जब उधर जाओ तो उनसे कह देना कि वे अपने-अपने स्थान को चले जाएँ। अब दूसरे बच्चे ने कहा कि मैं एक ऐसे नगर में पहुँचा कि जहाँ एक महल में एक अकेली औरत को बन्द करके रखा गया है और वहाँ का राजा उससे विवाह करना चाहता है, लेकिन उस औरत ने छह महीने की माहलत माग रखी है, अब वह माहलत पूरी होने वाली है। आसकरण समझ गया कि वह उसकी स्त्री ही है। उसने दूसरे बच्चे से कहा कि वह मेरी ही स्त्री है और कल जाकर उस से कह देना कि चिन्ता मत करो, आसकरण तुम्हें शीघ्र ही यहाँ से ले जाएगा। अब तीसरे बच्चे ने कहा कि मैं एक ऐसे नगर में पहुँचा जहाँ एक बाग में पाँच सौ घोड़े और पाँच सौ ही सवार थे, लेकिन सब बड़े उदास थे और आस-करण, आसकरण कह रहे थे। आसकरण ने कहा कि वे भी मेरे ही आदमी हैं, कल जाकर उनसे कहना कि आसकरण शीघ्र आ रहा है। अब चौथे ने कहना शुरू किया कि मैंने एक लंगड़ी परी देखी जो हाय आसकरण, हाय आसकरण कह रही थी। उसकी बात सुनते ही आसकरण उछल पड़ा और बोला कि मैं उसी की तलाश में आया हूँ।

दूसरे दिन आसकरण गरुड़ के बच्चे पर सवार होकर लंगड़ी परी के पास पहुँचा। वह उसे देखते ही पहचान गई। उसने आसकरण से कहा कि तुमने मुझे कहीं की न छोड़ी। लंगड़ी हो जाने के कारण इन्द्र ने मुझे निकाल दी। अब तुम मेरे साथ विवाह करो अन्यथा मेरी मुक्ति नहीं होगी। आसकरण ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ विवाह तो कर लूँगा लेकिन शर्त यह है कि विवाह करते ही तुझे मार डालूँगा। परी के स्वीकार करने पर आसकरण ने उसके साथ विवाह कर लिया और विवाह करते ही उसे मार डाली। फिर उसने परी के दूसरे पैर से पैजनी निकाली और गरुड़ के बच्चे पर सवार हो कर अपने स्थान को आ गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी स्त्री के पास सन्देश भेजा कि मैं कल आऊँगा सो कल रात को अपने महल की सबसे ऊँची छत पर तैयार

मिलना। दूसरे दिन आसकरण गरुड़ के बच्चे पर सवार होकर अपनी स्त्री के पास पहुँच गया। वहाँ उसने अपनी स्त्री को भी गरुड़ पर बैठा लिया और फिर अपने बाग में उतरा। गरुड़ के बच्चे को उसने विदाई दे दी। गरुड़ का बच्चा जाते जाते आसकरण से कह गया कि तुम्हें जब भी आवश्यकता हो मुझे याद कर लेना मैं तुरन्त हाजिर हो जाऊँगा।

आसकरण ने पैंजनी ले जा कर राजा को दी। राजा ने रानी को दी और रानी पैंजनी पहन कर सुग्गे के पास गई और उसने सुग्गे से पूछा—'देख रे सूआ, मैं कैसी सजी?' सुग्गे ने कहा कि इन पैंजनियों पर तो सच्चे हाथीदाँत का चूड़ा पहनो, तब ठीक सजोगी। रानी फिर 'आटी-पाटी' लेकर सो गई। राजा आया तो उसने सच्चे हाथीदाँत का चूड़ा मँगवाने की माँग की। दूसरे दिन राजा ने फिर आसकरण को बुलवा कर सच्चे हाथी-दाँत का चूड़ा लाने का हुक्म दिया। आसकरण उदास मुँह घर आया तो रानी ने पूछा कि आज क्या बात है? आसकरण के बतलाने पर उसकी स्त्री ने कहा कि इसका उपाय मैं कर दूँगी। मैं तुम्हें एक चिट्ठी लिख कर देती हूँ सो ले जा कर मेरी बहिन को दे देना वह तुम्हें सच्चे हाथी दाँत का चूड़ा दे देगी। यहाँ से तुम अमुक दिशा में चले जाओ जाते जाते एक बहुत बड़ा सरोवर आयेगा जिसके आसपास ताड़ के बड़े ऊँचे ऊँचे पेड़ होंगे। तुम एक बहुत ऊँचे और मजबूत ताड़ के वृक्ष पर छिप कर बैठ जाना। वहाँ बहुत से हाथी पानी पीने के लिए आएँगे और पानी पी कर चले जाएँगे। सबसे अन्त में एक बहुत बड़ा हाथी आएगा जो तालाब में नहाकर और पानी पीकर तालाब के किनारे लेट जाएगा। जब हाथी सो जाएगा तो उसके कान में से एक बहुत सुन्दर राजकुमारी निकलेगी। वही मेरी बहिन है। तुम वृक्ष पर से उतर कर यह चिट्ठी उसको दे देना। वह तुम्हें सच्चे हाथीदाँत के चूड़े दे देगी। राजकुमार आसकरण ने वैसा ही किया। चिट्ठी पाकर उस राजकुमारी ने कहा कि बहनोई जी, चूड़े तो मैं आपको अभी दे देती लेकिन इस बीच हाथी जग गया तो वह हम दोनों को मार डालेगा। क्या कोई ऐसी तरकीब नहीं कि हम दोनों यहाँ

की रानियों को देखने का अवसर मिलेगा, लेकिन आस करण ने ऐसा प्रबन्ध किया कि स्त्री और पुरुष अलग-अलग बैठें। स्त्रियों के बैठने के स्थान पर उसने कनातें तनवा दीं। राजा निराश हो गया। लेकिन उसकी इच्छा इतनी बलवती हो गई कि उसने कनात को अपनी कटार से फाड़कर उसके अन्दर झाँका। सामने आसकरण की माँ आई हुई स्त्रियों को भोजन करा रही थी। उसे देखते ही राजा को अपनी रानी की याद हो आई और उसकी आँखों से आँसू टपक पड़े। आसकरण आया तो उसने राजा से कहा कि क्या आप मेरा काम बिगाड़ना चाहते हैं? मैंने हँसी-खुशी आपके भोज में सहयोग दिया था और आप मेरी बदनामी कराने पर तुले हुए हैं।

उधर रानी घूँघट निकाल कर और लजाकर एक तरफ खड़ी हो गई। एकान्त पाकर रानी ने आसकरण को सारी बात बतलाई तो आसकरण राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला कि आप मेरे पिता हैं और ये मेरी माँ हैं। सारा रहस्य खुला तो राजा को बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। उसने आसकरण को राज पाट दे दिया और स्वयं तपस्या करने के लिए वन को चला गया।

● कटोरा-पेंच

एक गाँव में एक गुरुजी अपने शिष्यों को कुश्ती लड़ना सिखलाया करते थे। राज्य की ओर से उनके दस रुपये मासिक बँधे हुए थे। गुरुजी के शिष्यों में एक शिष्य बड़ा होशियार हो गया। उसने सोचा कि अब मैं कुश्ती में गुरूजी को पछाड़ सकता हूँ अत उसने गाँव के राजा से निवेदन किया कि महाराज, राज्य की ओर से दी जाने वाली राशि मुझे मिलना चाहिए। अब मैं गुरूजी को कुश्ती में पछाड़ सकता हूँ। राजा ने कहा कि दोनों में कुश्ती हो जाए, जो जीतेगा उसे ही रुपये मिला करेंगे। कुश्ती का दिन नियत हो गया।

नियत दिन गाँव भर के लोग कुश्ती देखने के लिए मैदान में इकट्ठे हो गये। गुरूजी अभी नहीं आये थे, लेकिन शिष्य लँगोट कसे अखाड़े में

तरह तरह के हुनर दिखला रहा था। जब गुरूजी नहीं आये तो उनको बुलाने के लिए हरकारा भेजा गया। गुरूजी दूध पीकर कटोरे को मल रहे थे। उन्होंने हरकारे से कहा कि मैं कटोरा-पेच करके अभी आ रहा हूँ। हरकारे ने आ कर वैसे ही कह दिया। हरकारे की बात सुनकर शिष्य सोच में पड़ गया कि यह कटोरा-पेच क्या बला है? यह दाँव तो गुरूजी ने मुझे सिखलाया ही नहीं। वह विचार में पड़ गया। निश्चित समय पर कुश्ती शुरू हुई। शिष्य के मन में दुविधा बनी थी कि न जाने गुरूजी का कटोरा-पेच क्या है। इतने में गुरूजी ने अवसर पाकर शिष्य को पछाड़ दिया। सब लोग वाह-वाह कर उठे। गुरु जी को आजीवन राज्य से मासिक वृत्ति मिलने की बात तय हो गई।

● काल कोनी आवै

एक सेठ एक खाती के कुछ रुपये माँगता था। सेठ रोज खाती के घर रुपये माँगने जाता और खाती हमेशा सेठ को 'कल दूँगा' कह कर टाल देता। या करते-करते बहुत दिन बीत गये। एक दिन खाती की बेटी ने अपने बाप से पूछा कि पिताजी! आप सेठ का रोजाना 'कल' का वायदा करके टरका देते हैं, क्या सेठ को रुपये नहीं देने हैं? खाती ने कहा कि ये सामने हमने जो वृक्ष लगाये हैं, ये उगेंगे और बढ़ेंगे, जब ये बड़े-बड़े हो जाएंगे तब इनके डाले काटे जाएंगे, डालों को चीरकर उनके पाटे बनाये जाएंगे। फिर उन पाटों (तख्ता) की चीजें बनाई जाएंगी और फिर उन चीजों को बेचकर सेठ को रुपये दिये जाएंगे। खाती की लड़की ने अपने बाप से कहा कि ऐसा होने में तो युग बीत जायेंगे।

खाती ने उत्तर दिया कि चाहे जो कुछ हो रुपये तभी दिये जाएंगे। दूसरे दिन सेठ खाती के घर आया तो घर पर खाती की बेटी ही थी, खाती बाहर गया हुआ था। खाती की बेटी ने सेठ से सारी बात कह दी कि तुम्हें इतने काम हो जाने पर रुपये मिलेंगे। सेठ ने खाती की बेटी से पूछा कि तब तो रुपये मिलेंगे न? खाती की बेटी ने कहा कि हाँ, तब तुम्हें रुपये

अवश्य मिलेंगे। सेठ चला गया। खाती घर आया तो उसकी बेटी ने अपने बाप से कहा कि मैंने सेठ को कल वाली बात कह दी है, अब वह रोज-रोज नहीं आएगा। इस पर खाती ने अफसोस प्रगट करते हुए कहा कि यह तुमने क्या किया ? वह समय बीस वर्ष बाद ही सही कभी आ तो जाएगा, लेकिन 'कल' कभी नहीं आता और मैं जिन्दगी भर सेठ को रुपये अदा न करता।

● साधु सोनै को के करै ?

एक सेठ एक साधु के पास जाया करता था। जब कई दिन हो गये तो सेठ ने साधु को सोने का एक कड़ा भेंट किया। साधु गंगास्नान के लिए गया तो उसने कड़ा निकाल कर गंगाजी में डाल दिया। सेठ के पूछने पर साधु ने कहा कि कड़ा गंगाजी में गिर गया है। दूसरे दिन सेठ ने साधु को एक और कड़ा लाकर भेंट किया और साधु से बोला कि चलो वह कड़ा भी ढूंढें। साधु सेठ के साथ गंगाजी पर गया और सेठ कड़ा ढूंढने लगा। एक स्थान पर खड़े होकर साधु ने दूसरा कड़ा वहाँ डालते हुए सेठ से कहा कि पहला कड़ा यहीं गिरा था। साधु ने दूसरा कड़ा भी गंगाजी में डाल दिया। सेठ ने आश्चर्य से पूछा कि महाराजजी, यह आपने क्या किया ? साधु ने उत्तर दिया कि सेठजी, हम साधु हैं, हमें इन सोने के कड़ों से क्या प्रयोजन है ? फिर कभी कोई वस्तु लेने का आग्रह मुझसे न करना।

● एक हुनर होया पेट भर लेवै

एक दिन एक मदारी एक गाँव में आया। मदारी के पास एक बिच्छू था। मदारी ने राजा को बिच्छू के बहुत-से सुन्दर-सुन्दर खेल दिखलाये। राजा उस मदारी पर बहुत प्रसन्न हुआ। इतने में राजकुमार ने बिच्छू को अपनी उँगली में छेड़ दिया तो बिच्छू ने उसे काट खाया। मदारी ने तुरन्त बिच्छू का जहर उतार दिया। राजा उस पर और भी प्रसन्न हुआ। उसने मदारी को अच्छा-खासा पुरस्कार दिया और कहा कि तुम बड़े

काबिल आदमी हो। इस पर मदारी ने कहा कि नहीं पृथ्वीनाथ, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। न मैं पढ़ा-लिखा हूँ, न मेरे में किसी प्रकार की योग्यता है और न मेरे पास धन है। मैं तो सर्वदा साधनहीन हूँ। मैंने जंगल से सिर्फ यह एक बिच्छू पकड़ रखा है लेकिन हाँ इस कला का मैं उस्ताद हूँ, यही एक हुनर मेरे पास है जिससे मैं अपना काम चला लेता हूँ। यदि आदमी के पास एक हुनर भी हो तो वह कभी भूखा नहीं मर सकता।

● भगवान कोनी मिल्या

एक राजा ने सुन रखा था कि शास्त्रों का श्रवण करने से भगवान् मिलते हैं। राजा ने एक पंडित को बुलवा कर उससे शास्त्रों को सुना, लेकिन उसे भगवान् नहीं मिले। तब उसने पंडित से कहा कि मैंने शास्त्रों को सुना, लेकिन मुझे भगवान क्यों नहीं मिले? अब बेचारा पंडित भी बड़ी दुविधा में पड़ गया, उसने तो सोचा था कि राजाजी शास्त्र सुन रहे हैं तो चढ़ावा अच्छा आएगा। उन्हें क्या पता था कि उल्टी नमाज गले आ पड़ेगी।

एक दिन उस नगर में एक महात्मा आये। पंडित ने उसके आगे अपना रोना रोया तो महात्मा ने कहा कि मैं राजा को समझा दूँगा। महात्मा ने राजा को अपने पास बुलवाया। उसने कथावाचक पंडित को एक वृक्ष से तथा राजा को दूसरे वृक्ष से बाँध दिया। फिर महात्मा ने राजा से कहा कि तुम पंडित को खोल दो। राजा ने कहा कि महात्मन् मैं तो स्वयं बँधा हुआ हूँ। फिर महात्मा ने पंडित से कहा कि अच्छा तुम राजा को खोल दो। इस पर पंडित ने भी यही उत्तर दिया कि भला मैं कैसे खोल सकता हूँ? तब महात्मा ने दोनों से कहा कि तुम दोनों अपने-अपने स्वार्थों से बँधे हुए थे। राजा इस स्वार्थ से बँधा था कि शास्त्रों के श्रवण कर लेने मात्र से भगवान् मिल जाएँगे और पंडित इस स्वार्थ में बँधा हुआ था कि मुझे भारी पैसे मिल जाएँगे। इसलिए न पंडित राजा को भगवान् से मिला सका, न राजा को भगवान् मिल सके। जब तुम निष्काम भाव से शास्त्रों का श्रवण करोगे तो तुम्हें भगवान अवश्य मिल जाएँगे।

● सेठ और सुनार

एक दिन एक सेठ ने एक सुनार से पूछा कि आज-कल तो बहुत फीके दिखलाई देते हो, क्या बात है ? सुनार ने कहा कि सेठजी, सोना तो आँखों में भी नहीं दिखलाई पड़ता, फिर फीके नहीं तो नीके कहाँ से रहेंगे ? सेठ ने कहा कि सोना तो मैं आँख में दिखला देता हूँ । यों कह कर सेठ ने अपना सोने का थाल मँगवा कर सोनी को दिखलाया और कहा कि यह थाल सौ तोले वजन का है । सुनार ने कहा कि बस, अब काम बन जाएगा ।

सेठ उसी थाल में नित्य भोजन करता था । इधर सुनार ने भी युक्ति सोची । सेठ के यहाँ जो स्त्री बरतन मलने के लिए जाती थी सुनार ने उसे पटाई और कहा कि तुम कुछ छर्रे वाली बालू से थाल को मला करो और खूब रगड़ कर मला करो । फिर वह रेत एक नियत स्थान पर डाल दिया करो । कुछ लालच देने पर वह स्त्री वैसा ही करने लगी । सुनार उस रेत को घर ले जाकर इकट्ठी करने लगा । महीने भर में ही दस तोला सोना उस बालू में मिल कर सुनार के घर पहुँच गया, जिसे सुनार ने बालू से निकलवा लिया । महीने भर बाद जब सेठ और सोनी मिले तो सेठ ने सोनी से पूछा कि आज-कल क्या हाल चाल हैं ? सोनी ने कहा कि आपकी कृपा है, जो सोने का थाल आपने मुझे दिखलाया था उसी से मेरा काम चल जाता है । सेठ ने कहा कि थाल तो मेरे घर में मौजूद है और मैं नित्य उसमें खाना खाता हूँ । तब सोनी ने कहा कि थाल मँगवा कर तौल लीजिए । थाल तौला गया तो नब्बे तोले का हुआ । यह देखकर सेठ को बड़ा आश्चर्य हुआ । सुनार ने अपनी युक्ति सेठ को बतलाई तो सेठ मान गया कि वास्तव में ही सुनार बड़े चतुर होते हैं और सोना आँख से देख लेने मात्र से ही उनकी भूख चली जाती है ।

● वखत की सूझ

एक स्त्री व्यभिचारिणी थी, लेकिन साथ ही बहुत चतुर भी थी । एक दिन उसके पति को उसके मित्र ने कहा कि तुम्हारी स्त्री व्यभिचारिणी है

और तुम्हारे घर पर अन्य पुरुष आते हैं। उसका पति इस बात का पता लगाने के लिए घर पर जाकर अपनी खाट के नीचे छिप गया। उस स्त्री का उप-पति घर आया और उसका आलिंगन करने लगा। तभी उस स्त्री को खटका हुआ कि खाट के नीचे कोई है। तब उसने अपने उप-पति को डाँटते हुए कहा कि खबरदार, इससे आगे मत बढ़ना, अन्यथा तुम्हें अपने पातिव्रत्य के प्रभाव से भस्म कर दूँगी। उस आदमी ने चिढ़ कर पूछा कि तो फिर मुझे बुलाया ही क्यों था? स्त्री ने कहा कि मैंने अपने पति की जन्म-कुण्डली एक बड़े महात्मा को दिखलाई थी तो उन्होंने कहा कि तुम्हारे पति की उम्र बहुत कम रह गई है, यदि तुम किसी अन्य पुरुष को अपने घर पर बुलवाकर उसका आलिंगन करो तो उस आदमी की आयु घट जाएगी और तुम्हारे पति की आयु बढ़ जाएगी। साथ ही उस स्त्री ने संकेत कर दिया कि खटिया के नीचे मेरा पति है। वह व्यक्ति चला गया और उस स्त्री के पति को विश्वास हो गया कि मेरी स्त्री बड़ी पतिव्रता है। उसने निश्चय कर लिया कि आगे कभी मित्रों की बात का विश्वास नहीं करूँगा।

● खीर सबड़के की

एक दिन खाने-पीने की चीज़ों का प्रसंग चला तो मन्त्री ने राजा से कहा कि महाराज, खीर तो सबड़के से ही खाई जाती है और तभी उसके खाने का स्वाद आता है। राजा ने इस बात की परीक्षा करने के लिए कि नगर में कितने असली खीर खाने वाले आदमी हैं, तमाम नगर-निवासियों का एक बड़ा भोज दिया। खाने के लिए खीर परोसी गई, लेकिन साथ ही यह घोषणा कर दी गई कि खीर सबड़के से न खाई जाए। सारे लोग चुप-चाप खीर खाने लगे। लेकिन राजा ने देखा कि बहुत दूर बैठा हुआ एक आदमी सबड़के लगा-लगा कर खीर खा रहा है। राजा मन्त्री के साथ उसके पास पहुँचा। मन्त्री ने उस आदमी से पूछा कि क्या तुम्हें इस बात का पता नहीं कि सबड़के के साथ खीर खाने वाले का सिर काट लिया जाएगा। उस आदमी ने कहा कि महाराज, मुझे सबड़का लेकर स्वाद के

साथ पेट भर खीर खा लेने दीजिए, फिर चाहे मेरा सिर काट ले, लेकिन खीर सबड़के की ही होती है और मैं सबड़के से ही खीर खाऊँगा। तब मंत्री ने राजा से कहा कि नगर भर मे यही एक आदमी असली खीर खाने वाला है।

(रूपांतर-बादशाह ने अपने दरबार मे घोषणा कर दी कि गाना सुनते वक्त कोई सिर हिलाएगा तो उसका सिर काट लिया जाएगा। कहाँ तो सारे लोग झूम झूम कर सिर हिला रहे थे और कहाँ घोषणा होते ही सब निश्चल हो कर बैठ गये। लेकिन बादशाह ने लक्ष्य किया कि एक आदमी फिर भी सिर हिला रहा है। पूछने पर उसने कहा कि जहाँपनाह, मैं सिर नही हिला रहा था, वह तो स्वय ही हिल रहा था, अब आपकी इच्छा है, चाहे मुझे फासी दे चाहे सूली। अच्छा गाना सुनने पर मौतके डर से सिर हिले बिना नही रहता।)

● च्यारूं जुग

एक दिन एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि मुझे चारो युग (सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग दिखलाओ। मत्री ने कहा कि इसके लिए समय चाहिए और उचित अवसर पर मैं आपको चारो युगोंकी झाकी दिखला दूगा। अब मत्री ऐसे अवसर की तलाश मे रहने लगा।

एक आदमी ने किसी दूसरे आदमी को अपना खेत बेचा। एक दिन उस खेत मे सोने से भरा एक कलश निकला। जिस आदमी ने खेत लिया था वह उस कलशको लेकर खेत बेचने वाले के पास गया और बोला कि भाई, यह सोने से भरा कलश खेत मे निकला है। मैंने तुमसे सिर्फ खेत ही खरीदा था, यह कलश नही, अत अपना कलश ले लो। बेचने वाले ने कहा कि भाई, मैंने तुम्हे खेत बेच दिया, अब उस खेत मे जो कुछ निकले वह सब तुम्हारा है, मेरा उससे कोई सरोकार नही। इस विवाद को निपटाने के लिए दोनों मत्री के पास पहुँचे। मत्री उन दोनों को राजा के पास ले गया। सारी बात सुन कर राजा ने उस कलश को सरकारी खजाने में जमा करने का आदेश दे दिया। तब मत्री ने राजा से कहा कि महाराज, अब चारो

युग प्रत्यक्ष देख लीजिए। बादशाह मंत्री का आशय नहीं समझा तो मंत्री ने स्पष्टीकरण किया —यह आदमी जिसने खेत लिया है, सतयुग का है। यह चाहता तो माने से भरा कलश स्वयं ही रख लेता। यह दूसरा आदमी त्रेता का है। सतयुग वाले आदमी द्वारा कलश पेश करने पर यह आदमी उसे स्वीकार कर सकता था, लेकिन इसने नहीं किया। आप मुझे द्वापर का आदमी कह सकते हैं, क्योंकि यदि मैं चाहता तो कलश आपके पास न लाकर स्वयं रख सकता था और गुनाह माफ़ हो, आप साक्षात् कलियुग के प्रतीक कहे जा सकते हैं जो आपने स्वर्ण से भरे कलश को अपने खजाने में भेज दिया।

● भगवान् मिलणै की तरकीब

एक राजा ने सुना कि शास्त्रों का अध्ययन करने से भगवान् मिलता है। लेकिन अब राजा इस दुविधा में पड़ गया कि कौनसा शास्त्र पढ़ा जाए। उसने अपने दरबारी पंडितों से कहा कि इसका निर्णय करके मुझे बतलाओ, अन्यथा सबको देशनिकाला दूंगा। पंडित किसी प्रकार राजा की शंका का समाधान न कर सके और बड़ी चिन्ता में पड़ गये। एक दिन उस गाँव में एक महात्मा आया। पंडितों की बातें सुनकर उसने कहा कि मैं राजा की शंका का समाधान कर दूंगा।

महात्मा ने राजा से कहा कि तुम मेरे साथ नदी तट पर चलो। राजा नदी तट पर चला गया तो महात्मा ने कहा कि हम नदी के उस पार चलना है, अतः नदी पार करने के लिए एक नाव मंगवाओ। राजा ने नाव मंगवाई तो महात्मा ने कहा कि यह नहीं, दूसरी नाव मंगवाओ। राजा ने दूसरी नाव मंगवाई तो महात्मा ने कहा कि यह नहीं और नाव मंगवाओ। यों राजा ने कई नावें मंगवाई, लेकिन महात्मा हर बार यही कहता रहा कि यह नहीं, दूसरी नाव मंगवाओ। अन्त में राजा ने खीज कर महात्मा से कहा कि आप यह क्या तमाशा कर रहे हैं? हम तो उस पार तो जाना है, किसी भी नाव में बैठ कर जा सकते हैं। इतना सुनते ही महात्मा ने कहा कि राजन्, बस यही तुम्हारी शंका का समाधान है। तुम ध्यानपूर्वक मन लगा

कर चाहे जिस शास्त्र का पठन-पाठन करो, तुम्हें भगवान् की प्राप्ति हो जाएगी। राजा की समझ में महात्मा की बात आ गई।

● साधु घोड़ै को के करै ?

एक राजा एक साधु के पास जाया करता था। जब राजा को साधु के पास जाते बहुत दिन हो गये तो राजा ने सोचा कि महात्मा को भेंट-स्वरूप कुछ देना चाहिए। सोच-विचार कर राजा साधु के लिए एक उत्तम किस्म का घोड़ा ले गया। साधु ने राजा से कहा कि राजन्, घोडा तो उसी को शोभा देता है, जिसके पास अच्छा मकान हो। राजा ने कहा कि मैं आपके लिए मकान बनवा दूँगा। तब साधु ने कहा कि घोडे की सेवा करने और मकान की सफाई करने के लिए नौकर भी चाहिएँ। राजा ने कहा कि मैं नौकर भी रख दूँगा। तब साधु ने कहा कि घर की शोभा तो स्त्री होती है, इसलिए घर बसाने के लिए स्त्री भी चाहिए। राजा ने कहा कि मैं आपको स्त्री भी ला दूँगा। इस पर साधु ने कहा कि राजन्, मैं आपका एक घोडा लूँगा तो मेरे पीछे इतने झंझट लगेंगे। भला साधु का इन झंझटों से क्या प्रयोजन है ? मुझे आपका घोडा नहीं चाहिए। साधु की बात राजा को समझ में आ गई और वह अपना घोडा वापिस ले गया।

● माँडचन्द जी आया है

एक सेठ पैसे वाला था लेकिन फिर भी बडा कजूस था। अधिक खर्च लगने के भय से वह माँड पी लेता और सारे घर वालों को भी चावलों का माँड ही पीने को देता था। एक दिन सेठ कार्य की अधिकता के कारण दुकान से घर नहीं आ सका तो उसकी स्त्री ने अपने पति को कहला भेजा —

माँडचन्द जी आया हैं, काठमांडू जावैगा।
मिलणो हो तो मिलल्यो फेर हाथ नहीं आवैगा।।

सेठ समझ गया और घर आकर उसने अपनी पत्नी से कहा कि आज तू ने अपनी चतुराई से मेरी इज्जत बचा ली, नहीं तो आज बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पडती। उसी दिन से सेठ ने कजूसी भी छोड़ दी।

● नारद को घमण्ड

एक बार नारद जी को अभिमान हो गया कि भगवान् का भजन जितना मैं करता हूँ उतना कोई और नहीं करता, अत भक्तो मे मैं ही उन्हे सबसे अधिक प्रिय हूँ। वे इस आशय से भगवान् के पास गये और उन्होंने भगवान् से पूछा कि प्रभो, आजकल आपका सबसे प्रिय भक्त कौन है? नारद के मन की बात भगवान् जान गये, अत उन्होंने कहा कि अमुक गाँव मे अमुक जाट मेरा प्रिय भक्त है, तुम्हे देखना हो तो जाकर उसकी दिनचर्या देख सकते हो। नारद को बडा आश्चर्य हुआ कि भगवान् को एक जाट मुझसे भी अधिक प्रिय है। नारद उस जाट के पास गये।

वह जाट सवेरे सोकर उठा तो उसने दो बार 'राम–राम' कहा और फिर अपने काम मे लग गया। दिन भर वह अपने खेत पर काम करता रहा। शाम का हारा–थका घर आया और रोटी खा पीकर सोने लगा तो उसने फिर दो बार 'राम-राम' कहा और सो गया। नारद ने जाट की दिनचर्या देखी तो उन्हे भगवान् के कथन पर बडा अचभा हुआ। नारद भगवान् के पास गये तो उन्होंने जाते ही एक घी से भरा कटोरा नारद के हाथों मे थमा दिया और कहा कि इसे ले जाओ और मदराचल की परिक्रमा करके आओ, लेकिन ध्यान रहे कि एक बूद भी नीचे न गिरे। घी से भरा कटोरा लेकर नारद मुनि चले गये और पर्वत की परिक्रमा करके दूसरे दिन भगवान् के पास पहुँचे। उन्हाने सगव भगवान् से कहा कि भगवन्, मैं परिक्रमा कर आया हू और एक बूद घृत की इस कटोरे मे नही गिरने पाई है। तब भगवान् ने मुस्कराते हुए नारद से पूछा कि नारद जी, सो ता ठीक है लेकिन इस दरमियान तुमने मेरा नाम कितनी बार लिया? अब नारद जी झेंपते हुए बोले कि भगवन्, कटोर से एक बूद भी न गिर जाए, इस बात की चिन्ता में मुझे आपका नाम लेने की बात याद ही नहीं आई। तब भगवान् ने कहा कि वह जाट अपने कार्य मे इतना अधिक व्यस्त रहता है, लेकिन उठने और सोने दोना वक्त मुझे दो बार अवश्य याद कर लेता है,

लेकिन तुम एक दिन में ही मुझे भूल गये। भगवान् की बात सुन कर नारद का घमंड छूमन्तर हो गया।

● चटोरी लुगाई

एक स्त्री बड़ी चटोरी थी। घर की सारी चीजें वह स्वयं चुरा-चुरा कर खा जाती लेकिन पूछने पर यही कहती कि अमुक चीज़ को चूहे खा गये। चूहों ने सोचा कि हम तो मुफ्त में बदनाम हो रहे हैं, अतः एक रात जब वह स्त्री अपने कपड़े उतार कर सोई तो चूहों ने मिल कर उस स्त्री का घाघरा उठाया और घाघरे को घसीटते हुए ले जाकर उसके सोते हुए पति पर डाल दिया। उसके पति ने सोचा कि उसकी स्त्री कुलटा है, अतः वह कटार लेकर उसे मारने चला। लेकिन दीपक को जलते हुए देख कर वह ठिठक गया। उसने सोचा कि दीपक बुझ जाए तो उसे मारूँ। इधर दीपक ने सोचा कि आज यदि मैं बुझ गया तो यह आदमी अपनी स्त्री को अँधेरे में अवश्य ही मार डालेगा, अतः वह जलता रहा। सबेरा होने को आ गया और उस स्त्री का पति प्रतीक्षा करते करते थक गया। उसने अपनी स्त्री को मारने का विचार त्याग दिया।

सबेरा हुआ और दीपक चला गया (बुझ गया)। आज घर पर दीपक की माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने आते ही बेटे से पूछा कि बेटे, तू आधी रात को ही घर आ जाया करता है, आज सारी रात घर क्यों नहीं आया? इस पर दीपक ने कहा कि माँ, आज मैं सारी रात जागता रहा और रात भर जग कर मैंने एक स्त्री की जान बचाई है। फिर दीपक ने सारी बात अपनी माँ को सुनाई। बेटे की बात सुन कर माँ की आँखों में सतोष के आँसू छलक आये और उसने प्यार से दीपक का सिर चूम लिया।

● आप होवै जिसी ही दुनिया दीखै

एक दिन राजा ने अपने नाई से पूछा कि रावाग, तू सारे नगर में घूमता फिरता है, आजकल जनता के क्या हालचाल हैं, सो बतला। नाई ने कहा कि पृथ्वीनाथ, सारी जनता बहुत आराम से है। ऐसा कोई घर नहीं जिसमें

साधु ने कहा कि नहीं इससे संग्रह करने की इच्छा का बल मिलता है, अत मुझे एक ही लँगोटी काफी है। चेला नहीं माना और वह साधु के लिए एक लँगोटी और बना लाया। कुछ दिनों के बाद चेला तीर्थयात्रा के लिए चला गया। अब साधु जब स्नान के पश्चात् अपनी लँगोटी सुखाता तो उसे चूहे काट जाते। साधु ने चूहों को मारने के लिए एक बिल्ली पाली, लेकिन बिल्ली के लिए दूध चाहिए, इसलिए साधु को दूध के लिए एक गाय लानी पडी। लेकिन गाय की सेवा कौन करे, अत साधु अपना विवाह करके गाय की सेवा करने के लिए एक औरत ले आया। औरत के रहने के लिए साधु को एक मकान बनवाना पडा। कुछ समय पश्चात् उसके बेटे-बेटी हो गये और साधु पूरा गृहस्थी बन गया।

कई वर्षों बाद जब चेला तीर्थयात्रा से लौट कर वहाँ आया तो न वहाँ उसे अपना गुरु मिला और न गुरू की झापडी। उसने उस मकान मे जाकर मकान मालिक स पूछा कि यहाँ एक साधु रहता था, वह कहाँ गया? मकान मालिक ने उसे पहचान लिया और कहा कि मैं ही वह साधु हूँ। अब चेले ने भी अपने गुरु को पहचान लिया और पूछा कि गुरूजी, यह सब क्या है? तब गुरू ने कहा कि यह सब तुम्हारी उस लँगोटी की माया है। यो कह कर गुरू ने आदि स अन्त तक की सारी कथा चेले को सुना दी।

● स्यान्ति को नुस्खो

एक सेठ क चार लडके थे। चारो का विवाह हो गया था। सेठ इस बात का जानता था कि उसके बेटे चाहे आपस मे न लडें लेकिन बहुएँ आपस म झगडे बिना न रहेंगी अत उसने एक तरकीब निकाली। सारे बेटे दुकान पर काम करते और दोपहर को घर जाकर भोजन करके आते। जिस दिन जिस बेटे की बहू झगडा करती उस दिन सेठ उस बेटे को जीमने के लिए घर पर नहीं भेजता था। उसका खाना दुकान पर ही मँगवा लिया जाता। उस बेटे क बहू अपने पति के सान्निध्य स वचित रह जाती। अत कोई बहू झगडा न करती और घर म हमेशा शान्ति बनी रहती।

● काला कुत्तम सदा उत्तम

एक बार एक ओझाजी को भोजन का निमंत्रण मिला। भोजन के लिए बहुत बढ़िया खीर बनाई गई थी, लेकिन एक कुत्ता उसे जूठ गया। अब क्या हो ? लोगों ने ओझाजी से पूछा कि खीर को कुत्ता जूठ गया है, अतः खीर परोसी जाए या नहीं ? ओझाजी ने सोचा कि 'खीर-खाड़' के भोजन हमेशा तो मिलते नहीं हैं और फिर मीठे के साथ जूठा खाया ही जाता है, अत खीर जैसी वस्तु को कुत्ते के जूठ देने मात्र से नहीं छोड़ना चाहिए, फिर चाहे कुत्ता कैसा भी क्यों न हो। अत. उन्होंने सोच विचार कर व्यवस्था दी :—

काला कुत्तम सदा उत्तम,
भूरा कुत्ता सरासरी,
जे हो कुत्ती किरड़काबरी
वीं को के हो बराबरी।

(यदि कुत्ता काले रंग का था तो वह सदा उत्तम है ही और भूरे रंग का था तो भी कोई हानि नहीं। और यदि धब्बेदार कुतिया थी तो फिर उसकी तो कोई समता ही नहीं)

अब चाहे कुत्ता किसी रंग का रहा हो, खीर खाने में कोई दिक्कत न रही।

● अल्ला की सुरमादानी

एक गाँव में सब मूर्ख ही मूर्ख रहते थे। उसी गाँव में एक लालबुझक्कड़ थे। गाँव के लोगों की शंकाओं का वे बड़ी खूबी के साथ समाधान करते थे। एक दिन गाँव के लोगों को एक पुरानी ओखली मिल गई। उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या है। जब वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके तो सब मिलकर लालबुझक्कड़ जी के पास गये। बुझक्कड़जी ने ओखली को बड़े ध्यानपूर्वक देखा और वे सिर खुजाते-खुजाते सोचने लगे। अन्त में उन्होंने सोच विचार कर कहा:—

एक भैंस न हो और ऐसा कोई आदमी नहीं कि जिसके पास कम से कम दस तोले सोना न हो। राजा ने सोचा कि तब तो सारी जनता खुशहाल है। मंत्री आया तो राजा ने उससे नाई की बात कही। मंत्री ने कहा कि महाराज ऐसी बात तो नहीं है। राजा ने मंत्री से कहा कि ऐसी बात क्या नहीं है नाई ने मुझे बड़े भरोसे के साथ यह बात कही है। यदि ऐसी बात नहीं है तो तुम इसे साबित करो।

मंत्री अपने घर चला गया और उसने सारी बात का पता लगाया। नाई के घर में एक भैंस थी और नाई के पास सोने का एक डला था जो करीब १० तोले का था। नाई उस सोने के डले को अपनी टैंट में रखता था। एक दिन मंत्री ने नाई की भैंस चुरवा कर मंगवा ली और जब नाई राजा की हजामत बनाने गया तो मंत्री के कहने से राजा ने उसे बातों में लगा लिया और मंत्री ने नाई की टैंट से सोना निकाल लिया। आज नाई घर गया तो उसे यह सुनकर बड़ा दुख हुआ कि भैंस चोरी चली गई। फिर उसने अपनी टैंट सम्हाली तो सोना भी गायब था।

अब नाई बहुत उदास रहने लगा। इधर मंत्री ने राजा को सारी बात बतलाई और कहा कि आदमी जैसा आप होता है सारी दुनिया उसे वैसी ही लगती है। अब आप नाई से पूछें कि लोगों के क्या हालचाल है ?

कुछ दिन बाद राजा ने नाई से फिर पूछा कि क्या खवास आज-कल जनता के क्या हाल है तो नाई ने बड़ी उदासी से कहा कि अन्नदाता आज कल तो लोगों के हाल बड़े फाके है। न किसी के पास दूध पीने के लिए भैंस है और न किसी के पास सोना ही है।

राजा को मंत्री की बात का विश्वास हो गया कि जैसा आप होता है उसकी दृष्टि में दूसरे भी वैसे ही होते हैं।

० पाप को बाप लोभ

एक दिन राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि पाप का बाप कौन है ? मंत्री इसका कोई उत्तर नहीं दे सका उसने राजा से इसके लिए मोहलत माँगी। राजा ने मंत्री को एक महीने की मोहलत दे दी। मंत्री उदास मुंह घर आ

गया। उसने राजा की बात का उत्तर बहुत सोचा लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं सूझा।

एक दिन मन्त्री राजा की बात का उत्तर पाने के लिए घर से निकल गया और घूमते घामते एक वेश्या के घर पहुँच गया। मन्त्री की बात सुन कर वेश्या ने कहा कि मैं तुम्हे तुम्हारी बात का उत्तर दूगी, तुम यहाँ रहो।

मन्त्री जाति से ब्राह्मण था और वह वेश्या के घर खाना नहीं खाना चाहता था, लेकिन वेश्या ने कहा कि तुम यहाँ रहोगे तभी मैं तुम्हे तुम्हारी बात का उत्तर दूगी तथा राजा तुम्हे जितनी तनख्वाह देता है उससे अधिक मैं दूगी। तब मन्त्री वही टिक गया और उस वेश्या के घर खाने पीने लगा। एक दिन वेश्या ने शराब मँगवाई और मन्त्री से शराब पीने के लिए कहा। मन्त्री ने पहले इनकार किया, लेकिन वेश्या के लालच देने पर उसने शराब पी ली। फिर इसी प्रकार लालच के वशीभूत होकर उसने माँस भी खा लिया। तब एक दिन वेश्या ने मन्त्री को अपने पास बुलाया और लालच देकर उसे अपनी सेज पर सोने के लिए राजी कर लिया। लेकिन जैसे ही वह सेज पर चढने लगा वेश्या ने मन्त्री के गाल पर एक तमाचा जड दिया और कहा कि यह क्या कर रहे हो? मन्त्री हक्का-बक्का रह गया। तब वेश्या ने कहा कि तुम नाराज मत हो, मैंने तुम्हे तुम्हारी बात का उत्तर दिया है। मन्त्री के पूछने पर वेश्या ने स्पष्ट किया कि तुम ब्राह्मण हो, लेकिन तुमने लोभ के वशीभूत हो कर शराब पी, माँस खाया और अब वेश्यागमन करने के लिए तैयार हो गये, अत कहा जाएगा कि लोभ ही पाप का बाप है। मन्त्री को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया और वह अपने घर लौट गया।

● लँगोटी की माया

एक साधु अपने चेले के साथ वन म रहा करता था। साधु के पास सिर्फ एक ही लँगोटी थी। चेले ने साधु से कहा कि गुरुजी, आपके पास एक ही लँगोटी है इससे आपको बडी दिक्कत रहती है, यदि दो लँगोटियाँ हो तो एक स्नान के पश्चात् धुल जाया करे और दूसरा आप पहन लिया करें।

साधु ने कहा कि नहीं इससे सग्रह करने की इच्छा को बल मिलता है, अत मुझे एक ही लँगोटी काफी है। चेला नही माना और वह साधु के लिए एक लँगोटी और बना लाया। कुछ दिना के बाद चेला तीर्थयात्रा के लिए चला गया। अब साधु जब स्नान के पश्चात् अपनी लँगोटी सुखाता तो उसे चूहे काट जाते। साधु ने चूहो को मारने के लिए एक बिल्ली पाली, लेकिन बिल्ली के लिए दूध चाहिए, इसलिए साधु को दूध के लिए एक गाय लानी पडी। लेकिन गाय की सेवा कौन करे, अत साधु अपना विवाह करके गाय की सेवा करने के लिए एक औरत ले आया। औरत के रहने के लिए साधु को एक मकान बनवाना पडा। कुछ समय पश्चात् उसके बेटे-बेटी हो गये और साधु पूरा गृहस्थी बन गया।

कई वर्षों बाद जब चेला तीर्थयात्रा से लौट कर वहाँ आया तो न वहाँ उसे अपना गुरु मिला और न गुरू की झापडी। उसने उस मकान मे जाकर मकान मालिक स पूछा कि यहाँ एक साधु रहता था, वह कहाँ गया ? मकान मालिक ने उसे पहचान लिया और कहा कि मैं ही वह साधु हूँ। अब चेले ने भी अपने गुरू को पहचान लिया और पूछा कि गुरूजी, यह सब क्या है ? तब गुरू ने कहा कि यह सब तुम्हारी उस लँगोटी की माया है। या कह कर गुरू ने आदि से अन्त तक की सारी कथा चेले को सुना दी।

● स्यान्ति को नुस्खो

एक सेठ क चार लडके थे। चारो का विवाह हो गया था। सेठ इस बात को जानता था कि उसके बेटे चाह आपस म न लडें लेकिन बहुएँ आपस मे झगडे बिना न रहगी अत उसने एक तरकीब निकाली। सारे बेटे दुकान पर काम करत और दोपहर को घर जाकर भाजन करके आते। जिस दिन जिस बेटे की बहू झगडा करती उस दिन सेठ उस बेटे को जीमने के लिए घर पर नहीं भेजता था। उसका खाना दुकान पर ही मँगवा लिया जाता। उस बेटे की बहू अपने पति क सान्निध्य स वचित रह जाती। अत कोई बहू झगडा न करती और घर म हमेशा शान्ति बनी रहती।

● काला कुत्तम सदा उत्तम

एक बार एक ओझाजी को भोजन का निमनण मिला । भोजन के लिए बहुत बढिया खीर बनाई गई थी, लेकिन एक कुत्ता उसे जूठ गया । अब क्या हो ? लोगो ने ओझाजी से पूछा कि खीर को कुत्ता जूठ गया है, अत खीर परोसी जाए या नही ? ओझाजी ने सोचा कि 'खीर-खाड' के भोजन हमेशा तो मिलते नही है और फिर मीठे के साथ जूठा खाया ही जाता है, अत खीर जैसी वस्तु को कुत्ते के जूठ देने मात्र से नही छोड़ना चाहिए, फिर चाहे कुत्ता कैसा भी क्यो न हो । अत उन्होने सोच विचार कर व्यवस्था दी —

काला कुत्तम सदा उत्तम,
भूरा कुत्ता सरासरो,
जे हो कुत्तो किरड़काबरो
वीं को के हो बराबरो ।

(यदि कुत्ता काले रग का था तो वह सदा उत्तम है ही और भूरे रग का था तो भी कोई हानि नही । और यदि धब्बेदार कुतिया थी तो फिर उसकी तो कोई समता ही नही)

अब चाहे कुत्ता किसी रग का रहा हो, खीर खाने मे कोई दिक्कत न रही ।

● अल्ला की सुरमादानी

एक गाँव मे सब मूर्ख ही मूर्ख रहते थे । उसी गाँव मे एक लालबुझक्कड थे । गाँव के लोगो की शकाओ का वे बडी खूबी के साथ समाधान करते थे । एक दिन गाँव के लोगो को एक पुरानी ओखली मिल गई । उन लोगो को बडा आश्चर्य हुआ कि यह क्या है । जब वे किसी निर्णय पर नही पहुँच सके तो सब मिलकर लालबुझक्कड जी के पास गये । बुझक्कडजी ने ओखली को बडे ध्यानपूर्वक देखा और वे सिर खुजाते-खुजाते सोचने लगे । अन्त मे उन्होने सोच विचार कर कहा —

"लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझे कोय ।
हो न हो अल्लाह की यह सुरमादानी होय ॥"

सब लोग वाह-वाह कर उठे ।

● बडो कुण ?

एक चूहे के एक ही बेटी थी। उसने सोचा कि मेरे एक ही बेटी है सो इसका विवाह उससे करना चाहिए जो सबसे बडा हो। सोचते-सोचते उसने निश्चय किया कि सूर्य भगवान् ही सबसे बड़े हैं और वह अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव लेकर सूर्य भगवान् के पास गया। सूर्य ने चूहे का प्रस्ताव सुनकर कहा कि मुझे तो बादल ढाक लेता है, अत तुम उसके पास जाओ। बादल ने चूहे की बात सुन कर कहा कि मेरे से बडा पवन है जो मुझे इधर से उधर फेंक देता है, अत तुम पवन के पास जाओ। पवन ने कहा कि मेरे से बडे पहाड हैं जो मुझे रोक लेते हैं। चूहा पहाड के पास गया तो पहाड ने कहा कि भाई, मेरे से बड़े तो तुम ही हो जो मुझे खोद डालते हो। अब चूहे की समझ मे बात आ गई कि अपनी ही जाति के किसी चूहे से अपनी बेटी का विवाह करना उचित है।

● लका में कूद्यो वीर हणमान

एक गाँव मे एक ब्राह्मण कथा बाँचा करता था। वह कुछ पढा लिखा न था, लेकिन गाँव के लोगो पर उसने अपना प्रभाव जमा रखा था और वे उसकी कथा बडी श्रद्धा से सुनते थे। कथा पर चढावा भी अच्छा आ जाता था। एक दिन एक पडित उस गाँव मे आ गया। उसने जान लिया कि कथा-वाचक जी निरे मूर्ख हैं, अत उसने सोचा कि मैं अपना आसन यहाँ जमाऊँ। उधर ब्राह्मण भी बहुत दिनो से वहाँ जमा हुआ था, अत उसने भी निश्चय कर लिया कि इसके पैर यहाँ नही जमने दूगा। आखिरकार दोनो मे सम-झौता हो गया। चढ़ावे मे पहले वाले ब्राह्मण का दस आने और नये पडित का छ आने तय हो गया। पडित ने सोचा कि फिलहाल इसी पर सब्र करना चाहिए।

एक दिन ब्राह्मण कथा बांच रहा था। लका दहन का प्रसग चल रहा था, लेकिन ब्राह्मण हनुमानजी का नाम भूल गया और बार-बार 'वे कूदे, वे कूदे' कह रहा था। कथा आगे नही बढ पा रही थी, अत उसने पास बैठे हुए पडित से पूछा, 'लका में कूदियो, वी को नाम के ?' इस पर पडित ने उत्तर दिया "छ आना दस आना हमाँ जाणा के ?" ब्राह्मण ने सोचा कि अब मामला बिगड जाएगा, अत उसने कहा "आज सें ह्योयो समान, समान।" इस पर पडित खुश होकर बोला, 'लका मे कूद्यो बीर हणमान।'

● कम-खाऊ, कम-पीऊ

एक राजा के दो लडके थे। बडे का विवाह हो गया था, लेकिन छोटा अभी अविवाहित था। छोटा भाई जीमने बैठता तो भोजन मे कुछ न कुछ दोष निकाल दिया करता। एक दिन भाभी ने ताना मार दिया कि इतना दोष निकालते हो तो बहू ले आओ, मैं भी देखूं कैसी चातक बहू लाते हो ? राजकुमार भाभी का ताना सुनकर उसी वक्त घर से निकल पडा।

चलते-चलते वह एक ऐसे नगर मे पहुँचा जहाँ कोई मनुष्य अथवा जानवर नही था लेकिन सारा बाजार अनेक प्रकार के मिष्ठान्नों से भरा पडा था। राजकुमार को बडी भूख लग रही थी, अत उसने मिठाई की तरफ हाथ बढाया, लेकिन तभी एक अजीब व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा। वह आदमी स्वय सवा बालिश्त का था, लेकिन हाथ म सात हाथ लम्बी लाठी लिये था। उसने राजकुमार को लडने के लिए ललकारा। दोनो म कुश्ती हुई और अन्त म राजकुमार ने उस व्यक्ति को जिसका नाम 'गुटैया देव' था, परास्त कर दिया। 'गुटैया देव' ने राजकुमार की अधीनता स्वीकार कर ली और फिर वे दोनो आगे बढे। चलते चलते वे दोनो एक बडे तालाब के पास पहुँचे। राजकुमार को बडी प्यास लग रही थी, अत पानी पीने के लिए उसने तालाब की ओर हाथ बढाया, लेकिन तभी तालाब पर बैठे एक आदमी ने राजकुमार को पुकार कर मना किया कि यह क्या जुल्म कर रहे हो ? मैं प्यासा रह जाऊँगा। राजकुमार ने उसके पास जाकर कहा कि इतना बडा

तालाब तुम्हारे आगे भरा पड़ा है फिर प्यासे मरने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है ? उस आदमी ने कहा कि देखो, मैं तुम्हारे देखते-देखते ही सारा पानी पी डालता हूँ। उस आदमी ने पानी पीना शुरू कर दिया और राजकुमार ने साश्चर्य देखा कि वह आदमी जिसका नाम 'कम-पीऊं' था, तालाब भर के सारे पानी को कुछ ही क्षण में पी गया। अब 'कम-पीऊं' भी राजकुमार के साथ हो लिया और तीनों आगे बढ़े। चलते-चलते वे एक बड़े बाग में पहुँचे जहाँ बाग के सारे वृक्ष मीठे फलों से लदे थे। राजकुमार ने जैसे ही फल तोड़ने के लिए एक वृक्ष की ओर हाथ बढ़ाया उस बगीचे के रक्षक ने राजकुमार से कहा कि ऐसा कदापि मत करना अन्यथा मैं भूखा रह जाऊँगा। राजकुमार ने कहा कि सारे वृक्ष फलों से लदे पड़े हैं, तुम जन्म भर खाते रहो तो भी सारे फल नहीं खा सकोगे। लेकिन उस आदमी ने जिसका नाम 'कम-खाऊं' था, शीघ्र ही बाग के सारे वृक्ष फल-फूल और पत्ता तथा डालियों सहित उदरस्थ कर लिये। अब चारों आगे बढ़े। वे चले जा रहे थे, तभी एक आदमी ने उन्हें पुकार कर कहा कि जहाँ खड़े हो वहीं रुक जाओ। चारों आदमी वहीं खड़े रह गये। वह आदमी ऊपर की ओर देख रहा था और कह रहा था कि वह आ गया, अब गिरा अब गिरा। वे चारों भी ऊपर की ओर देखने लगे, लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं दिखलाई पड़ा। लेकिन थोड़ी ही देर में आकाश से एक तीर सनसनाता हुआ आकर गिरा और धरती में गड़ गया। अब राजकुमार ने उससे पूछा कि यह क्या माजरा है ? उस आदमी ने कहा कि मेरा नाम 'कम नज़र' है। यह तीर मैंने आज सुबह छोड़ा था और तब से इसके आने की बाट देख रहा था। राजकुमार को उसका अद्भुत कौशल देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई और अब पाँचों आगे बढ़े। वे चलते गये, चलते गये और अन्त में एक ऐसे नगर में पहुँचे जहाँ की राजकुमारी अत्यन्त सुन्दरी थी। राजकुमार अपने साथियों सहित राजकुमारी के महल के नीचे पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उसने वहाँ रखे हुए बड़े नगाड़े पर चोट मारी। लोगों ने राजकुमार को समझाया कि जो ऊपर जाता है वह लौट नहीं आता, इसलिए तुम क्या नाहक आफ़त में फँसते हो ? लेकिन राजकुमार

नहीं माना। राजकुमारी ने उसे ऊपर बुलवा लिया। राजकुमार ने देखा कि राजकुमारी वास्तव में ही बहुत सुन्दर है, उसने राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव किया। राजकुमारी ने कहा कि तुम बेशक मेरे साथ विवाह कर सकते हो लेकिन पहले मेरी शर्तें पूरी करो। यदि तुम मेरी शर्तें पूरी न कर सके तो तुम्हें भी उन लोगों के साथ चक्की चलानी पड़ेगी। यों कहकर राजकुमारी ने उस जेलखाने की ओर इशारा किया जहाँ उसके साथ विवाह करने के इच्छुक बहुत से राजकुमार उसकी शर्तें पूरी न कर सकने के कारण खड़े-खड़े चक्की चला रहे थे।

राजकुमार के पूछने पर राजकुमारी ने अपनी शर्तें सुनाई। राजकुमारी ने कहा कि यहाँ से पाँच हज़ार कोस की दूरी पर फलाँ गाँव में मेरी बहिन रहती है, तुम उसे आज शामतक यहाँ मेरे पास ला दो। फिर राजकुमारी ने अपने महल के नीचे एक बड़ा तालाब दिखलाया और कहा कि कोई आदमी इस तालाब के सारे पानी को देखते-देखते पी जाए। फिर उसने अपना बड़ा बाग राजकुमार को दिखलाकर कहा कि कोई आदमी इस बाग के सारे फल मेरे देखते-देखते खा जाए। राजकुमारी की शर्तें सुनकर राजकुमार ने कहा कि मैं तुम्हारी सारी शर्तें पूरी कर दूगा। यों कह कर उसने 'कम पीऊ' को बुलवा कर वह तालाब दिखलाया। 'कम पीऊ' ने पूछा कि तालाब का सिर्फ पानी ही पीना है अथवा कीचड भी। राजकुमार ने कहा कि कीचड समेत ही पी डालो। 'कम पीऊ देखते-देखते कीचड सहित सारा पानी पी गया। राजकुमारी की एक शर्त पूरी हो गई। तब राजकुमार ने 'कम-खाऊ' को बुलवाकर वह बगीचा दिखलाया। 'कम-खाऊ' ने भी कुछ ही क्षणों मे बगीचे को चौपट कर दिया। वह जड मूल सहित सारे वृक्ष चट कर गया। अब राजकुमार ने 'कम-नज़र' को बुलवाया। 'कम-नज़र' ने निगाह दौड़ाई और बोला कि राजकुमारी की बहिन इस वक्त अपने महल पर खड़ी है। 'कम-नज़र' ने 'गुटैया देव' से कहा कि तुम मेरे तीर पर बैठ जाओ, मैं बात की बात में तुम्हें वहा पहुँचा दूगा। लेकिन 'गुटैया देव' ने इसमें अपना अपमान समझा और बोला कि नहीं, मैं तीर की तरह ही जाऊँगा। यों कह कर 'गुटैया

देव' राजकुमारी का पत्र लेकर वहाँ से उडा और पहर भर दिन चढते-चढते राजकुमारी की बहिन के पास जा पहुँचा। गुटैया देव' ने राजकुमारी का पत्र उसकी बहिन को दे दिया। पत्र मे राजकुमारी ने लिख दिया था कि आने वाले को शाम तक किसी प्रकार वहा रोक लेना। राजकुमारी की बहिन ने 'गुटैया देव' को खूब छककर भोजन कराया और कहा कि अब मो जाओ। गुटैया देव' ने सोचा कि अभी तो सध्या दूर है कुछ देर विश्राम कर लू। 'गुटैया देव' गहरी नीद म सो गया। राजकुमारी की बहिन तो यही चाहती थी उसने 'गुटैया देव' को नही जगाया। इधर दिन ढलने लगा तो राजकुमार की चिंता बढने लगी। उसने 'कम-नजर' से कहा कि देखो तो गुटैया देव क्या कर रहा है? 'कम नजर' ने देख कर कहा कि वह तो खूटी ताने सो रहा है। तब 'कम-नजर' ने वही से एक तीर छोडा जो सनसनाता हुआ 'गुटैया देव' के कान के पास से निकल गया। तीर की सनसनाहट ने 'गुटैया देव' की नीद तोड दी। वह हडबडाकर उठ बैठा। उसने देखा कि दिन ढलने लगा है तो उसने राजकुमारी की बहिन को चलने के लिए कहा। वह कुछ इधर उधर करने लगी तो 'गुटैया देव' ने उसका हाथ पकडा और उसे अपनी पीठ पर डाल कर शीघ्रता से उड चला और शाम होने से पहले ही राजकुमार के पास आ पहुँचा। उसके समय पर आ जाने से राजकुमार और उसके साथियो को बडी प्रसन्नता हुई। अब राजकुमारी की शर्ते पूरी हो चुकी थी। अत उसका विवाह राजकुमार के साथ बडी धूम धाम से हो गया। राजकुमार ने सारे बंदियो को मुक्त करवा दिया और फिर राजकुमारी और अपने साथियो को लेकर अपने नगर म आ गया।

● अतिथि को सत्कार

एक ब्राह्मण का यह नियम था कि वह घर आये अतिथि का यथाशक्ति सत्कार करता था। एक दिन एक महात्मा उस ब्राह्मण के घर आया। ब्राह्मण अभ्यागत के लिए भोजन बना रहा था कि किसी ने आ कर खबर दी कि तुम्हारी गाय मर गई है। ब्राह्मण ने उससे कहा कि गाय का पुरस्कार पाठ

के दरवाज़े से ले जाओ। थोडी देर बाद ही दूसरे आदमी ने आ कर ब्राह्मण से कहा कि गाय का बछडा भी मर गया है। ब्राह्मण ने कहा कि उसे भी पीछे के दरवाज़े से ले जाओ। फिर थोडी देर बाद एक आदमी ने आकर खबर दी कि तुम्हारे इक्लौते बेटे की मृत्यु हो गई है। ब्राह्मण बडा दुखी हुआ, लेकिन दुख के घूट को चुपचाप पीकर उसने कहा कि उसे भी पीछे के दरवाज़े से ले जाओ। फिर उसने अतिथि महात्मा से कहा कि आप भोजन कीजिए। महात्मा ने कहा कि मैं तेरे घर भोजन नही कर सकता, क्योंकि तू बडा निर्दयी है। तेरी गाय मर गई, बछडा मर गया और तेरा इक्लौता बेटा भी मर गया, पर तेरी आँख मे एक आँसू नही आया। ब्राह्मण ने कहा कि महाराज, मेरे मन मे इन सब बातो का महान् दुख है, लेकिन आपके भोजन मे विघ्न न पडे, इसलिए मैंने बरबस अपने दुख को रोक रखा है। लेकिन महात्मा बिना भोजन किये ही चला गया तो ब्राह्मण को और भी अधिक दुख हुआ और वह घर से निकल गया।

चलते-चलते वह एक कुएँ पर पहुँचा। पानी निकालने के लिए उसने लोटे मे रस्सी बाँध कर लोटे को कुएँ मे डाला तो किसी ने लोटा पकड लिया। ब्राह्मण के पूछने पर उसने कहा कि मैं शेर हूँ, मुझे बाहर निकाल दो। मैं तुम्हें नही खाऊँगा। शेर के सौगन्ध खाने पर ब्राह्मण ने उसे कुए से निकाल दिया। शेर ने ब्राह्मण से कहा कि मेरी माँद अमुक जगह है, आवश्यकता पडने पर मेरे पास आना। इस कुएँ मे एक सर्प, एक बन्दर और एक सुनार हैं। सर्प और बन्दर को तुम बेशक निकाल देना, लेकिन सुनार को मत निकालना। यों कह कर सिंह चला गया। ब्राह्मण ने फिर रस्सी डाली और इस बार साँप ने रस्सी पकड ली। उसके सौगन्ध खाने पर ब्राह्मण ने उसे भी निकाल दिया। सर्प ने उसे एक बाल दिया और कहा कि आवश्यकता पडने पर इस बाल को अग्नि पर रख देना, मैं उसी वक्त आकर तुम्हारी सहायता करूँगा। हाँ, एक बात याद रखना कि सुनार को कुएँ से मत निकालना। यो कह कर वह भी चला गया। फिर ब्राह्मण ने बन्दर को भी निकाल दिया। बन्दर ने भी अपना पता-ठिकाना बतलाया और वह भी सुनार को न निकालने

की चेतावनी दे कर चला गया। अब ब्राह्मण ने फिर कुएँ में रस्सी डाली तो सुनार ने रस्सी पकड़ ली। ब्राह्मण ने कहा कि मैं तुम्हें नहीं निकालूँगा। लेकिन सुनार ने कहा कि तुमने सिंह व सर्प जैसे हिंसक जीवों को तो निकाल दिया है फिर मैं तो मनुष्य हूँ। तुम मेरे धर्म के भाई हो और मैं कभी तुम्हारा अपकार नहीं करूँगा। सुनार के बहुत कहने-सुनने पर ब्राह्मण ने उसे भी निकाल दिया। सुनार ने भी उसे अपना पता ठिकाना बतलाया और वह भी चला गया। अब ब्राह्मण पानी पीकर आगे बढ़ा।

ब्राह्मण एक दूसरे नगर में जाकर ठहरा लेकिन वहाँ बहुत समय तक रहने पर भी उसे कोई काम धंधा नहीं मिला तो वह वापिस अपने गाँव को चला। रास्ते में उसने सोचा कि शेर से मिलता चलूँ। वह शेर की माँद पर पहुँचा तो शेर के बच्चे उसे देखकर गुर्राने लगे लेकिन शेर ने उन्हें शान्त किया और उनसे कहा कि यह ब्राह्मण देवता मेरा मित्र है। शेर ने ब्राह्मण की बहुत आवभगत की और उसे बहुत धन दिया जिसमें एक नौलखा हार भी था। ब्राह्मण खुशी-खुशी वहाँ से चला और सुनार के घर आया। सुनार ने उसे अपने घर में ठहरा लिया। बातचीत के सिलसिले में ब्राह्मण ने कहा कि मैं बहुत धन लाया हूँ और उसने वह नौलखा हार सुनार को दिखलाया। यह हार उस नगर के राजा की लड़की का था जो एक बार सैर के लिए जंगल में गई थी और वहीं उसे शेर ने उसे मार डाला था। लेकिन राजा को हत्यारे का पता नहीं चल पाया और उसने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई आदमी राजकुमारी के हत्यारे का पता लगा देगा उसे दस हजार रुपये पुरस्कारस्वरूप दिये जाएंगे। हार को देखते ही सुनार ने पहचान लिया कि यह तो राजकुमारी वाला हार है। वह ब्राह्मण को घर में बैठा कर स्वयं राजा के पास पहुँचा और बोला कि अन्नदाता राजकुमारी का हत्यारा मेरे घर पर है। राजा को सूचना देकर सुनार ब्राह्मण के पास आ बैठा और मीठी-मीठी बातें करने लगा। इतने में राजा के सिपाही आये और ब्राह्मण को पकड़ कर ले गये। राजकुमारी के हार को देखकर राजा को विश्वास हो गया कि यही राजकुमारी का हत्यारा है। राजा ने उसे अगले दिन फाँसी

पर लटका देने का हुक्म दे दिया। उसे कठघरे मे बन्द कर दिया गया। अब ब्राह्मण बहुत पछताया कि मैंने सुनार को कुएँ से निकाल कर बडी भूल की। विचार करते-करते उसे सांप की बात याद आ गई। उसने चिलम पीने के बहाने से एक खीरा (अगारा) मगवाया और उस पर सांप का दिया हुआ बाल रखा। बाल रखते ही सर्प वहाँ आ गया। सारी बात सुनकर सर्प ने कहा कि मैं जाकर राजा को डसता हूँ। चाहे सारे गाव के वैद्य आ जाएँ लेकिन वे राजा को ठीक नही कर सकेंगे, पर तुम एक नीम की डाली लेकर हिला दोगे तो मैं आ कर राजा का विष चूस लूगा।

सांप ने जाकर राजा को डस लिया। हर तरह के उपचार किये गये, लेकिन राजा की दशा बिगडती ही चली गई। अत में ब्राह्मण ने अपने पहरे-दारो से कहा कि राजा का विष मैं उतार सकता हूँ। पहरेदारो ने जाकर राजा को सूचना दी तो राजा ने उसे बुलाया। ब्राह्मण ने एक नीम की डाली मॅगवाई और कुछ पढकर उसे हिलाया। हिलाते ही वह सांप वहाँ आ गया। अब सबको विश्वास हो गया कि यह राजा को ठीक कर देगा। सांप ने विष चूस लिया और राजा स्वस्थ हो गया।

राजा ने प्रसन्न होकर न केवल ब्राह्मण की जान ही बख्श दी वरन् उसे पुरस्कार भी दिया और उसे दरबार मे अच्छा स्थान दे दिया। कुछ दिनो बाद एक दिन ब्राह्मण ने सोचा कि मैं अपने मित्र बन्दर से तो मिला ही नही, अत अगले दिन उसने राजा से कहा कि मैं कुछ समय के लिए बाहर जा रहा हूँ और वह बन्दर के पास चल पडा। बन्दर ने मित्र को देखा तो उसका बहुत सत्कार किया और उसे एक 'अमरफल' दिया। अमरफल लेकर ब्राह्मण लौट पडा। उसने सोचा कि ऐसा दुर्लभ फल राजा को देना चाहिए। ब्राह्मण ने फल ले जाकर राजा को दिया। राजा अपनी रानी को बहुत प्यार करता था। अत यह फल उसने स्वय न खाकर रानी को दिया। रानी ने सोचा कि राजा मुझे मार कर दूसरा विवाह करना चाहता है। अत रानी ने वह फल नही खाया। रानी के महल म जो मालिन आती थी, वह बहुत बूढी हो चली थी और अक्सर वह कह देती कि अब तो मौत आ जाए तो अच्छा

है। रानी ने वह फल उस भगिन को दे दिया। भगिन ने फल ले जाकर खाया तो वह रातोंरात सुन्दर षोडशी बन गई। अगले दिन वह महल बुहारने के लिए गई तो रानी ने उससे पूछा कि क्या वह बुढ़िया भगिन मर गई ? तुम उसकी क्या लगती हो ? उसका सौन्दर्य देखकर रानी को ईर्ष्या हुई। भगिन ने उत्तर दिया कि रानी जी, मैं ही तो आपकी बुढ़िया भगिन हूँ। आपने जो फल मुझे दिया था यह सब उसी की करामात है। अब तो रानी को बड़ा पछतावा होने लगा कि अमरफल को मैंने न खाकर भगिन को क्या दे दिया। रानी ने राजा से कहा कि वैसा ही एक फल मुझे और मँगवा कर दो। राजा ने ब्राह्मण से कहा और ब्राह्मण फिर अपने मित्र बन्दर के पास चला।

ब्राह्मण की सारी बात सुनकर बन्दर ने कहा कि मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें एक अमरफल और दूंगा। यों कह कर वह बन्दर अपने ब्राह्मण मित्र को स्वर्ग के बगीचे में ले गया। उसने ब्राह्मण से कहा कि इस बगीचे में बहुत से अमरफल हैं सो तुम एक फल ले आना, लेकिन अधिक देर तक वहाँ मत ठहरना। ब्राह्मण बाग में गया तो क्या देखता है कि उसकी गाय खड़ी है और बछड़ा थन चूस रहा है तथा उसका लड़का भी गाय के पास खड़ा है। उन तीनों को देख कर ब्राह्मण अमरफल की बात भूलगया और आनन्द के सागर में गोते खाने लगा। तभी वह बन्दर वहाँ आया और बोला कि ब्राह्मण् देवता, तुमने तो बहुत देर लगा दी और यों कहते-कहते वह बन्दर उसी महात्मा के रूप में बदल गया। अब महात्मा ने ब्राह्मण से कहा कि मैंने सिर्फ तुम्हारी परीक्षा ली थी कि तुम कैसा आतिथ्य करते हो। अब तुम अपने बेटे को और गाय-बछड़े को लेकर अपने घर जाओ। अब तुम्हें भविष्य में कोई दुख नहीं होगा।

● सूरजवंसी ठाकर

एक गांव में एक सेठ और एक ठाकुर रहते थे। सेठ कुछ पैसे वाला था, और ठाकुर उससे कुछ ऐंठना चाहता था, लेकिन सेठ उसके दावें में नहीं आता था। एक दिन सेठ पेशाब कर रहा था कि उधर से ठाकुर आ निकला। सेठ

के उठते ही ठाकुर ने सेठ को पकड लिया और बोला कि हम सूरजवशी ठाकुर हैं। तुमने हमारे कुलदेवता सूरज भगवान् की ओर मुह कर के पेशाब क्यो किया ? ऐसा करके तुमने हमारा अपमान किया है। सेठ ठाकुर के दावँ मे फँस गया और उसने कुछ देकर ठाकुर से अपना पीछा छुडाया।

● राजा और सुनार

एक बार एक राजा ने अपने मत्री से पूछा कि सब से चतुर जाति कौन-सी है ? मन्त्री ने कहा कि महाराज, सब से चतुर जाति 'सुनार' है। राजा ने प्रमाण माँगा तो मन्त्री ने राजा से कहा कि आप नगर के किसी सुनार को बुलवाकर उसे सोना गढने के लिए दे दीजिए। वह सख्त पहरे मे भी उस सोने को पीतल बना कर आपको दे देगा। राजा ने एक सुनार को बुलवाया और उसे सोने की एक मूर्ति गढने का हुक्म दिया। बीस तोला खरा सोना उसे राज्य के खजाने से दिला दिया गया। सुनार ने कहा कि मैं एक हफ्ते म मूर्ति बना दूगा। सुनार राजा के महल मे ही मूर्ति बनाता था और उस पर सख्त पहरा रहता था। घर से आते वक्त तथा घर को जाते वक्त उसकी तलाशी ली जाती थी। लेकिन सुनार ने इसका उपाय सोच लिया। वह जैसी स्वर्ण मूर्ति राजा के महल मे बनाता था वैसी ही पीतल की एक मूर्ति अपने घर पर तैयार करने लगा।

सातवें दिन जब सुनार काम पर जाने लगा तो उसने सुनारी को समझाया कि मूर्ति तैयार हो गई है। तुम दिन के दो बजे इस पीतल की मूर्ति को खट्टी छाछ की हँडिया मे रखकर राजा के महल की ओर खट्टी छाछ बेचने के बहाने आ जाना, फिर मैं सारा काम अपने आप बना लूगा। सातवें दिन राजा ने सुनार से पूछा कि मूर्ति तैयार हुई कि नही ? सुनार ने कहा कि पृथ्वीनाथ, मूर्ति तैयार है, लेकिन इसे 'उजलाने' के लिए खट्टी छाछ की आवश्यकता है। खट्टी छाछ मे उजलाने से मूर्ति की चमक बहुत बढ जाएगी। राजा ने खट्टी छाछ लाने के लिए एक दो जगह सेवकों को भेजा लेकिन सब यही उत्तर लाये कि मीठी छाछ तो है, खट्टी छाछ नही मिली। इतने म सुनारी उधर से खट्टी छाछ की हँडिया सिर पर रखे हुए निकली। 'खट्टी

छाछ चाहिए ता ले लो' की आवाज सुनकर राजा ने उसे महल मे बुलवा ली और सुनार से कहा कि सानी जी, खट्टी छाछ हाजिर है। सुनार ता यह चाहता ही था। उसने सोने की मूर्ति छाछ की हँडिया मे छोड दी और पीतल वाली मूर्ति निकाल ली। उसने एक दो बार उस मूर्ति को हँडिया में डुबोया और फिर राजा से कहा कि अपना काम हो गया। राजा ने छाछ बेचने वाली का कुछ देकर विदा किया। इधर सुनार ने मूर्ति 'उजाल' कर राजा जी का दे दी और बोला कि महाराज! मेरी मजदूरी मिल जाए। राजा ने कहा वह तो मिल जाएगी, लेकिन तुमने तो कहा था कि मैं स्वर्ण को पीतल बनाकर दूगा। इस पर सुनार बोला कि पृथ्वीनाथ! गुनाह माफ हो, यह पीतल ही तो है, विश्वास न हो तो कसौटी पर कसकर देख लीजिए तथा इसका मुझे अतिरिक्त पुरस्कार दिलवाइए। राजा ने मूर्ति को कसौटी पर लगाया तो वह निरा पीतल था। राजा को बडा आश्चर्य हुआ। राजा के पूछने पर सुनार ने सारी बात बतलाई ता राजा बडा प्रसन्न हुआ और उसने सुनार को उसकी मजदूरी के अतिरिक्त अच्छा पुरस्कार देकर विदा किया।

● हाथी की पिछाण

एक बार एक गाँव म एक हाथी बिकने के लिए आया। हाथी एक खुली जगह में खडा था और महावत उसके पास बैठा था। हाथी का देखने वाला और मोल-भाव करने वालो की भीड लगी थी। तभी वहाँ एक आदमी आया। उसने पहले कभी हाथी देखा नहीं था। वह हाथी के चारो ओर घूम-घूम कर उसे बडे ध्यान से देखने लगा। हाथी बेचने वाले ने सोचा कि यह अवश्य कोई बडा पारखी है। यदि इसने कोई दोष निकाल दिया तो फिर हाथी नहीं बिकेगा, अत उसने उस आदमी को अलग ले जाकर कहा कि भाई, यह लो पचास रुपये और चले जाओ। उस आदमी को बडा अचभा हुआ। उसने सौदागर से पूछा कि भाई, तुम मुझे किस बात के रुपये दे रहे हो? मैं तो घूम फिर कर यह देख रहा था कि यह कौन जानवर है

जिसके आगे और पीछे दोनो तरफ पूछ लटक रही है। अब सौदागर ने जान लिया कि यह तो निपट मूर्ख है, अत उसने उसे दुरकारते हुए कहा कि इस प्रकार उल्लू की तरह क्या देखते थे, जाओ अपनी राह लगो।

● उमर घटै वढै कोनी

एक गाँव मे एक आदमी अपनी स्त्री के साथ रहता था। एक दिन एक भूत उस घर मे आ घुसा। भूत नित्य नये उत्पात करने लगा और एक दिन उसने घर के मालिक को मार डाला। उसकी स्त्री गर्भवती थी। उसने सोचा कि अब यहाँ रहने मे कुशल नही है। यह भूत मुझे तथा मेरे भावी बच्चे को भी मार डालेगा। यो सोच कर वह अपने पीहर चली गई और वही उसके एक लडका हुआ। लडका बहुत हृष्ट-पुष्ट था और वह अपन साथी लडको को मार-पीट दिया करता था। एक दिन उन लडको ने कहा कि तुझे अपने पिता का तो पता ही नही कि वह कौन था और हमको मारने चला है। लडके को यह बात लग गई और उसने अपनी माँ से पूछा। उसकी माँ ने सारी बात बतला दी तो लडका बोला कि मैं तो अपने घर मे जा कर रहूँगा, तू भले ही यहाँ रह। उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह नही माना और अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसने घर को साफ किया और फिर उसने घर मे खूब आग जलाई। भूत आया तो लडका जलता हुआ लक्कड लेकर उस पर झपटा। भूत बडा घबडाया और बोला कि तुम कौन हो ? लडके ने कहा कि मैं इस घर का मालिक हूँ। मैं खाना बना दिया करूँगा और तुम सामान ला दिया करना। भूत ने लडके की बात स्वीकार कर ली। अब दोनो वही रहने लगे। एक दिन लडके ने पूछा कि तुम हमेशा कहाँ जाया करते हो ? भूत ने कहा कि मैं भगवान् के 'दरीखाने' जाया करता हूँ। यह सुन कर लडके ने कहा कि अच्छा तो कल तुम यह पूछ कर आना कि मेरी उम्र कितनी है ? दूसरे दिन भूत ने आकर कहा कि तुम्हारी उम्र भगवान् ने अस्सी वर्ष की बतलाई है। लडके ने कहा कि कल यह बात और पूछकर आना कि क्या इसमे एक दो दिन कम या

अधिक भी हो सकते हैं ? दूसरे दिन भूत ने आ कर कहा कि भगवान् का कहना है कि तुम्हारी उम्र में एक दिन का हेर-फेर तो क्या एक क्षण का भी हेर-फेर नहीं हो सकता। इतना सुनते ही लड़का जलते हुए 'ठूठ' लेकर उस पर लपका। भूत ने कहा कि यह क्या करते हो ? मैं तुम्हें मार डालूंगा। इस पर लड़का बोला कि मेरी उम्र पूरी होने के पहले तुम तो क्या मुझे स्वयं भगवान् भी नहीं मार सकते। यह बात तुम स्वयं भगवान् से पूछ कर आये हो, अतः अपनी कुशल चाहते हो तो यहां से चले जाओ और फिर कभी इधर मुंह न करना। भूत अपना सा मुंह ले कर वहां से चलता बना। लड़के ने अपनी मां को भी वहीं बुला लिया और अब दोनों निर्विघ्न वहां रहने लगे।

● जाट की चतराई

एक गांव में एक स्त्री अपने छोटे लड़के के साथ रहती थी। इकलौता होने के कारण लड़का बड़े लाड़-चाव में पला था और इसलिए उसकी आदत बिगड़ गई थी। वह हर समय अपनी मां को तंग किया करता कि मुझे यह चीज दे, वह चीज दे, अन्यथा मैं छत पर से कूद कर मर जाऊँगा।

एक दिन वह लड़का छत पर चढ़ा हुआ था और अपनी मां से कह रहा था कि मुझे इतने रुपये दे नहीं तो मैं अभी छत पर से गिरता हूं। उसकी मां नीचे खड़ी गिड़गिड़ा रही थी और उसे न गिरने के लिए मना रही थी। इतने में एक जाट उधर से आ निकला। उसने सोचा कि यह क्या तमाशा हो रहा है ? स्त्री से पूछने पर उसने सारी बात बतला दी। तब जाट ने कहा कि तुम अलग हट जाओ, मैं अभी इसे मना देता हूं। यों कहकर जाट ने अपनी 'जेळी' मजबूती से जमीन पर खड़ी करके लड़के से पुकार कर कहा कि लड़के, जल्दी गिर। जैसे ही तू नीचे गिरा मैं तुझे अपनी 'जेळी' में पिरो लूंगा। जेळी के नुकीले सींगे देख कर लड़का घब-राया। जाट ने फिर ललकारा कि जल्दी से नीचे गिर। अब लड़के की आंखें

ठिकाने आ गई। वह चुपचाप नीचे आकर अपनी माँ से लिपट गया और बोला कि मैं अब कभी छत पर नहीं चढ़ूगा।

● जाट को छोरो

एक बार एक जाट अपने झोंपडे के आगे बैठा था। उसने अपने नन्हें बच्चे को जो कुछ ही दिन पहले जन्मा था, धूप मे सुला रखा था। उधर से गाँव के वैद्य जी आ निकले तो उन्होंने कहा कि चौधरी, बच्चे को धूप में क्यो सुला रखा है ? इसे छाया मे सुला दे। इतनी धूप बच्चे को सहन नही होगी। चौधरी ने वैद्य की बात सुन कर कहा कि वैद्य जी, हम तो हमेशा कडी धूप मे ही खेती करते है। इस बच्चे को अभी से धूप सहने का अभ्यास कराया जाएगा तभी तो यह बडा होकर धूप मे काम कर सकेगा। जाट की बात सुन कर वैद्य जी चुपचाप आगे बढ गये।

● राजा भोज और च्यार मूरख

राजा भोज हर नई कविता पर पुरस्कार देता था। एक दिन चार मूर्ख मित्रों ने विचार किया कि हमे भी चल कर राजा भोज से इनाम लेना चाहिए। यो सलाह कर के चारो मित्र धारा-नगरी की ओर चल पडे। चलते-चलते वे एक गाँव मे पहुँचे। वहाँ लोग अरहट से पानी निकाल रहे थे। एक मूर्ख ने अरहट को देखकर कहा कि मेरी कविता तो बन गई है, "अरड अरड अरडाट चलै।" फिर सब आगे बढे। एक मूर्ख ने एक तेली के घर मे कोल्हू चलते देखा तो चिल्लाया कि मेरी कविता भी बन गई है, "कोल्हू ऊपर लाट फिरै।" रात को चारो वही सो गये। सबेरे चारो उठे तो एक ने एक बुझते हुए दीपक को देख कर कहा, "अब तो जोति भई है मन्द।" इस पर चौथा बोल पडा, "राजा भोज है मूसलचन्द।" कविता पूरी बन गई थी और वे सब मिलकर उसे गा रहे थे। तभी एक अपरिचित आदमी वहाँ आया। चारो की कविता सुनकर उसने कहा कि भाइयों, और तो सब ठीक है, लेकिन "राजा भोज है मूसलचन्द।" ऐसा कहना ठीक नहीं है। इस पंक्ति को तुम यो कर दो, "भोज काटे दरिद्र

को फन्द।" चारो ने उसकी बात मान ली और दरबार को चल पडे। दरबार में पहुँच कर उन्होने अपनी कविता सुनाई—

अरड अरड अरडाट चलै,
कोल्हू ऊपर लाट फिरै।
अब तो जोत भई है मन्द,
भोज काटे दरिद्र को फन्द।

कविता सुनकर राजा मुस्कराया। उसने जान लिया कि चारो आदमी मूर्ख है। फिर उसने चौथे कवि से कहा कि तीन पंक्तियाँ तो इन तीनो ने बनाई हैं, लेकिन चौथी पंक्ति तुम्हारी बनाई हुई नही है। तुम्हे इनाम नही मिलेगा। इस पर चौथे ने कहा महाराज, मैंने तो कविता ठीक ही बनाई थी जो यो है, "राजा भोज है मूसलचन्द", लेकिन एक अनाडी आदमी रास्ते म मिल गया था, उसने मेरी कविता बिगाड दी। अब राजा भोज जान गया कि यह अनाडी आदमी कालिदास ही हो सकता है, जो रुष्ट होकर दरबार से चला गया था। राजा ने उसका पता ठिकाना पूछ लिया और चारो कवियो को इनाम दे कर विदा किया।

● चोर बेटो

एक सेठ-सेठानी रात को अपने घर म सो रहे थे। आधी रात को एक चोर उनके घर म घुस गया। सेठ ने उसे देख लिया, लेकिन उसने सोचा कि इसे युक्ति से पकडना चाहिए। यो सोच कर उसने सेठानी को जगाया और दोनो ने चोर को पकडने की तरकीब सोच ली। वे दोनो आपस म बातें करने लगे। सेठ ने सेठानी से कहा कि अपने पास धन बहुत है, लेकिन लडका नही है, इसलिए अपने मरने के बाद इस सारे धन का क्या होगा? सेठानी बोली कि यही चिन्ता मुझे रात दिन लगी रहती है। यदि कोई लडका गोद ले लें तो भी अच्छा है। इस पर सेठ ने कहा कि यदि कोई इस समय मुझे आकर कह दे कि पिता जी! मैं आपका बेटा हूँ तो तुम्हारी कसम सारा धन मैं उस को ही दे दू, चाहे वह कोई भी हो।

सेठानी ने कहा, कि हाँ, इसमे मुझे भी बडी खुशी होगी, लेकिन कोई ऐसा कहने वाला भी तो हो।

चोर ने सोचा कि धन प्राप्ति का इससे आसान तरीका और क्या हो सकता है ? यह स्वर्ण अवसर तो सयोग से ही हाथ लगा है। वह उसी वक्त सेठ के पास चला गया और बोला कि बाप जी ! मैं आपका बेटा हूँ। इतना सुनते ही सेठ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने सेठानी से कहा कि आज भगवान् ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। मुझे अपने मुह से किसी ने 'बाप' कहा तो सही। अब तुम शीघ्र सारा धन ला कर मेरे बेटे को दे दो। सेठानी ने कहा कि ऐसी भी क्या जल्दी है ? जब आप अपने बेटे को धन दे रहे है तो फिर रोकने वाला कौन है ? लेकिन अपना बेटा क्या एक वक्त अपने घर म भोजन भी नही करेगा। मैं अभी इसके लिए पानी गरम करती हूँ, यह नहा धो ले तो फिर इसके लिए रसोई बना दूगी। फिर भोजन करने के बाद आप इसे सारा धन दे देना। यो कह कर सेठानी काम म लग गयी और बेटे को नहलाने धुलाने तथा रसोई बनाने मे तडका हो गया। बेटे ने भोजन कर लिया तो सेठ ने सेठानी से कहा कि अब तुम सारा धन निकालो। सेठानी ने कहा कि मैं सारा धन निकाल कर रखती हूँ लेकिन इतना धन यह सिर पर थोडे ही उठा कर ले जाएगा। तब तक आप एक 'बहली' जुडवा लाइये। सेठानी धन निकालने लगी और सेठ बहली लाने के लिए निकल गया। घर से निकल कर सेठ शीघ्रता से कोतवाली गया और कोतवाल को बुला लाया। कोतवाल ने आ कर चोर को पकड लिया और कहा कि चलो बेटे, तुम्हे धन की कोठरी म ही बैठा देता हूँ ताकि तुम्हे ढोने का श्रम ही न करना पडे।

● बाकी बच्चो मे

एक चोर के चार लडके थे। एक दिन उसने अपने चारो बेटो को बुलाकर कहा कि अब मैं बूढा हो चला हूँ, इसलिए तुम सब चोरी करना सीख लो। चारो ने कहा कि हम चोरी नही करना चाहते, और कोई दूसरा काम

करना चाहते हैं। लेकिन चार का यह सहय नहीं था। उसने चारों से कहा कि तुम आज रात का चोरी कर के देखो तो सही इसमें कितना मजा है ? उस रात का चारो बेटे चोरी करने के लिए निकले। उन्होंने एक मकान म सेंध लगानी शुरू की, लेकिन उन्हे इस तरह का अभ्यास न था। दीवार गिर पडी और उसके नीचे एक भाई दब कर मर गया। अब तीन भाई बडी सावधानी से उस मकान म घुस। वह राजा का अस्तबल था। आहट पाकर एक घोडा बिदका और उसने लात फटकारी, जिससे एक भाई और मर गया। अब दो भाई आगे बढे। अस्तबल मे एक पुराना कुआँ था, जिस पर घास उग आई थी। एक भाई चलते-चलते उसम जा गिरा। अब शेष बचा हुआ एक भाइ सबेरे घर आया। उसके बाप ने सोचा कि यह चोरी म सफलता मिलने का सदेश ले कर आया है, अत उसने अपने बेटे स पूछा—

"कहो रात की जीत ?"

बेटे ने उत्तर दिया—

"एक के ऊपर गिरी भींत।"

बेटे का उत्तर सुन कर बाप ने कहा—

"या तो भई गजब की बात।"

इस पर बेटे ने फिर उत्तर दिया—

"एक के मारी घोडे ने लात।"

इस पर उसका बाप अफ़सोस जाहिर करते हुए बोला, अरे' लेकिन—

बेटे ने शीघ्रता स उत्तर दिया—

"एक कुवें में गिर के मरे।"

अब बाप की आँखें फटी-की-फटी रह गईं और उसके मुह स निकला, 'एँ लेकिन बेटे ने फिर उसी मुस्तैदी स उत्तर दिया 'बाबा बच्या हूँ मैं।'

● राजा और बेटे की बहू

एक राजा ने अपने बेटे की बहू का स्नान करते समय देख लिया। वह उस पर मोहित हो गया और उसे किसी प्रकार हथियाने का ध्यान म रहने

लगा। बहू ने भी जान लिया कि श्वसुर की मति बिगड़ गई है। एक दिन राजा ने बहू को कहला भेजा कि आज मैं तुम्हारे महल मे आऊँगा। बहू बेचारी अब क्या करे ? उसने चारो ओर तुलसी के 'बिड़ले' लगा रखे थे। राजा आया और कुछ देर बैठा तो बहू ने राजा से कहा कि आप पहले पेशाब कर आयें। राजा पेशाब करने के लिए गया तो उसे पेशाब करने के लिए कोई स्थान नहीं मिला। सब जगह तुलसी के बिड़ले लगे हुए थे। राजा यों ही वापिस आ गया। उसने बहू से आकर कहा कि चारो ओर तुलसी के बिडले लगे हैं, कहीं पेशाब करने को जगह नहीं है। इसके उत्तर मे बहू ने कहा कि पिता जी, बेटे की बहू भी श्वसुर के लिए तुलसी के बिडले के समान ही पवित्र होती है, जब आपने उस पर मन चलाया है तो फिर तुलसी के बिडले मे पेशाब करने से आपको कौन पाप लगता है ? राजा पुत्रवधू की बात सुन कर लज्जित हो गया और अपने महल को लौट आया।

● कर भला, हो भला

एक साधु एक गाँव मे भिक्षा माँगने जाया करता था। वह यही आवाज लगाया करता कि, 'कर भला हो भला, कर बुरा हो बुरा।' एक स्त्री ने सोचा कि यह साधु यों ही बकता है। बुरा करने से बुरा नहीं हो सकता। यों सोचकर उसने दो लड्डू बनाये और उनमे विष मिला दिया। साधु आया तो उसने वे लड्डू उसे दे दिये। साधु सारे गाँव में भिक्षा ले कर चला गया और गाँव के बाहर वाले कुएँ पर बैठ कर सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में वहाँ दो आदमी आ गये। एक आदमी उस स्त्री का पति था और दूसरा बेटा। वे दोनों कमाने के लिए किसी दूसरे नगर मे गये थे। वे भी आकर कुएँ पर बैठ गये और विश्राम करने लगे। उन्होंने साधु से कहा कि हमें बहुत भूख लग रही है। तुम्हारे पास कुछ खाने को हो तो हमे दो। साधु ने कहा कि और तो सब सूखी-बासी रोटियाँ हैं, सिर्फ दो लड्डू हैं सो ये दोनों तुम खा लो। साधु ने सूखी रोटियाँ खाकर पानी पी लिया और उन दोनों ने वे लड्डू खा लिये। लड्डू खाते ही उनकी मृत्यु हो गई।

गाँव के लोगा ने सुना कि आज दो आदमी अमुक कुएँ पर मर गये। उस स्त्री ने भी यह बात सुनी। वह शंकित तो थी ही, अतः देखने के लिए कुएँ पर गई। जब उसने देखा कि ये ता उसके ही पति और पुत्र हैं ता वह धाड मार कर रोने लगी। लेकिन अब उसकी समझ म यह बात आ गई कि दूसरे का बुरा करने से अपना ही बुरा होता है।

● मुँह देखकर टीका काटै

एक बार दो दामाद साथ-साथ अपनी ससुराल पहुँचे। एक दामाद बहुत मालदार था और वह खूब ठाठ-बाट से ससुराल गया था। दूसरा सर्वथा निर्धन हो गया था और वह साधारण ढग से गया था। भोजन का समय हुआ तो सास ने मालदार दामाद को रसोईघर के पास जीमने के लिए बिठलाया और उसके लिए माल-मलीदे बनाये गये। निर्धन दामाद को ड्योढी के पास बैठाया गया और उसको साधारण दाल-दलिया परोसा गया। धनवान् दामाद के पास उसकी सास स्वय बैठी थी और उसे बडे सत्कार से खिला पिला रही थी, लेकिन उस गरीब की कोई पूछ न थी। उसने उचक कर देखा कि उसके साढू के लिए विविध प्रकार के भोजन बने हैं और उस सिर्फ दाल-दलिया ही परोसा गया है तो उसने सास से पुकार कर पूछा—

के सासूजी म्हारा भाग पातला,
के थे म्हानै भूली?
थांनै घाली माल-मलाई,
म्हानै घाली धूली।

इस पर उसकी सास ने उत्तर दिया—

ना कँवर जी थारा भाग पातला,
ना मैं थानै भूली,
मुह देख कर टीका काढ्या,
मार ग्वागव धूली।

● जाटणी और बटाऊ

एक जाटनी बडी कजूस थी। आये हुए बटाऊ को वह भोजन न करा कर भूखा ही निकाल देती। इसके लिए उसने एक तरकीब निकाल रखी थी। जब भी कोई बटाऊ उसके घर आता वह धान को एक थाली म डाल कर और थाली को पानी से भर कर घर के बाहर रख देती और कहती —

सूक रे धान तू सज्या ताई सूक।

जाटनी की बात सुन कर बटाऊ निराश हो कर चला जाता। लेकिन एक दिन एक चालाक बटाऊ उस जाटनी के घर आया। जब जाटनी ने थाली रख कर कहा —

सूक रे धान तू सज्या ताई सूक,

तो बटाऊ ने भी उत्तर दिया — सो रे मनवा तू सज्या ताई सो।' और यो कह कर वह खूटी तान कर सो गया। जाटनी समझ गई कि यह बटाऊ या नही जाएगा, अत उसने बटाऊ को खिला पिला कर विदा किया।

● एक टोपो भी अकारथ क्युँ जावे ?

एक दिन एक सेठ अपनी दुकान पर बैठा घी तोल रहा था। तौलने मे घी की एक बूद जमीन पर गिर गई तो सेठ ने उस बूद को उँगली से उठा कर अपनी दाढी मे लगा ली। एक चेजारा (मकान बनाने वाला) यह सब देख रहा था। उसने सोचा कि सेठ बडा कजूस है।

कुछ दिना बाद उसी सेठ ने एक मकान बनाना शुरू किया और वही चेजारा काम करने के लिए आया। चेजारे की यह धारणा थी कि सेठ बडा कजूस है, अत उसने जान बूझ कर सेठ से कहा कि सेठ जी, हवेली की नीव मे डालने के लिए एक मन घी चाहिए। घी डालने स नाव बडी मजबूत हो जाएगी। सेठ ने उसी समय एक मन घी मँगवा कर द दिया। यह देख कर चेजारे को बडा आश्चय हुआ। उसने सेठ से पूछा कि उस दिन जब आप घी तोल रहे थे तो आप ने जमीन पर गिरी एक बूद को भी उठा कर दाढी म लगा लिया था और आज एक मन घी आपने कहने ही मँगवा दिया,

इसका क्या कारण है ? इस पर सेठ ने उत्तर दिया कि जमीन पर गिरी उस बूंद का कोई उपयोग नहीं था। वह तो बेकार ही चली जाती, इसलिए मैंने उसका उपयोग कर लिया, लेकिन इस एक मन घी का तो अच्छा उपयोग हो रहा है, इससे हवेली की नींव मजबूत होगी। एक बूंद भी निरर्थक क्या जाए ? सेठ की बात सुन कर चजारे का भ्रम मिट गया।

● औरत चतर होवै क' मरद ?

एक दिन एक राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि औरत अधिक चतुर होती है या मर्द ? मन्त्री ने उत्तर दिया कि पृथ्वीनाथ, दोना ही अपनी-अपनी जगह चतुर हैं। लेकिन राजा ने कहा कि मैं एक उत्तर चाहता हूँ। इस पर मन्त्री को कोई उत्तर नहीं सूझा। वह उदास मुह घर आ गया। मन्त्री की लड़की बड़ी चतुर थी, उसने अपने बाप से उसकी उदासी का कारण पूछा। कारण जान कर उसने कहा कि मैं राजा को इसका उत्तर दे दूंगी। मन्त्री की लड़की ने राजा से जाकर कहा 'मर्द की अपेक्षा औरत अधिक चतुर होती है।" राजा ने कहा कि इसे साबित कर के दिखलाओ और उसने मन्त्री की लड़की को अपने नगर से बिना कुछ दिये निकाल दिया। मन्त्री की बेटी चलते-चलते एक जगल मे पहुँची और एक वृक्ष की छाया म बैठ गई। पास ही एक जाट जिसका नाम गोदू था, अपनी बकरी चरा रहा था। उसने जाट को अपने पास बुलाकर उसका परिचय पूछा। जाट ने कहा कि मैं यही जगल मे रहता हूँ और नगर म से रोटी मांग कर ले आता हूँ। गाँव के लड़के मुझे पागल' कह कर चिढ़ाते हैं अत मैं उनसे बहुत कतराता हूँ। मन्त्री की लड़की ने उसे धर्म का भाई बना लिया और फिर उससे पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है भी ? जाट के पास एक रुपया था जो उसने एक वृक्ष के नीचे गाड रखा था। यही उसकी धरोहर थी। बहिन के कहने पर वह रुपया निकाल लाया। तब मन्त्री की लड़की ने कहा कि तुम गाँव म जाओ और खाने-पीने की अमुक-अमुक चीजें ले आओ। साथ ही एक मखमल का टुकड़ा, एक सूई व कुछ धागा भी उसने मँगवाया। मन्त्री की बेटी ने उससे यह भी कहा कि आज यदि लड़के तुम्हें चिढ़ायें तो उन्हे

कडी आवाज मे दुत्कार देना कि मैं पागल नही हूँ। सारा सौदा ठीक से खरीद कर ले आना। जो पैसे बाकी बचें वे भी अच्छी तरह गिन कर ले आना।

गोदू ने वैसा ही किया। मन्त्री की बेटी ने रोटियाँ बनाईं और फिर दोनो ने भोजन किया। गोदू ने आज तक ऐसी रोटी नही खाई थी। रोटी खा कर वह बडा खुश हुआ और फिर बकरी के पास चला गया। इधर मन्त्री की बेटी ने उस मखमल के टुकडे की एक बहुत सुन्दर टोपी बनाई। फिर उसने गोदू को बुला कर कहा कि इसे शहर म जा कर बेच आ, लेकिन तू अपनी ओर से टोपी की कोई कीमत न कहना अपितु ग्राहक जो दे दे वही ले आना। नगर मे एक बनजारा आया हुआ था। उसने नगर के बाहर अपना डेरा लगा रखा था। गोदू टोपी ले कर उसी के पास पहुँचा। बनजारे को टोपी बडी पसन्द आई। उसने पच्चीस रुपये मे वह टोपी खरीद ली। गोदू ने रुपये लाकर अपनी बहिन का दे दिये। दूसरे दिन उसने गोदू को फिर एक रुपया दिया और वही सामान मँगवा लिया। उसने फिर टोपी बना कर गोदू को दी और वह उसी बनजारे को पच्चीस रुपये मे बेच आया। यो उसने सात टोपियाँ बेच दी। आठवें दिन जब वह टोपी ले कर पहुँचा तो बनजारे ने उससे पूछा कि तुझे ये टोपियाँ बना कर कौन देता है? गोदू ने कहा कि मेरी बहिन मुझे टोपी बना कर देती है। बनजारे ने कहा कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ। गोदू ने कहा कि मैं कल अपनी बहिन से पूछकर तुम्हे इसका उत्तर दूगा।

गोदू ने अपनी बहिन को बनजारे की बात बतलाई तो उसने कहा कि बनजारे को ले आना। दूसरे दिन बनजारा आया तो वह मन्त्री की लडकी को देखकर मोहित हो गया। बनजारे ने उसस विवाह का प्रस्ताव किया तो मन्त्री की लडकी ने कहा कि पहले मुझे एक लाख रुपये दो ताकि मैं अपनी स्थिति सुधार लू। फिर मैं तुमसे विवाह कर लूगी। बनजारे ने उस एक लाख रुपये ला दिये। मन्त्री की लडकी ने अब एक अच्छा-सा मकान ले लिया और खूब ठाट-बाट से रहने लगी। बनजारा उसके पास गया तो

उसने उत्तर दिया कि वे रुपये तो मकान आदि में खर्च हो गये, अब तुम मुझे विवाह की तैयारी करने के लिए एक लाख रुपये और दो। बनजारे ने सोचा कि यह लड़की मुझे ठग रही है। इसलिए वह कोतवाल के पास गया। कोतवाल आया और मन्त्री की लड़की को देख कर वह खुद आसक्त हो गया। उसने स्वयं मन्त्री की लड़की से विवाह का प्रस्ताव किया। लड़की ने कहा कि आप रात को दस बजे आइये, तब मैं आपसे बात करूँगी। कोतवाल ने बनजारे को धुड़क कर निकाल दिया। तब बनजारा पुलिस के ऊँचे अफसर के पास गया। वह भी मन्त्री की लड़की के पास आया तो उसकी भी वही गति हुई। मन्त्री की लड़की ने उसे रात को ग्यारह बजे आने के लिए कह दिया। तब बनजारा दीवान के पास गया। दीवानजी को रात के बारह बजे आने का हुक्म हुआ और राजा साहब आये तो उन्हें मन्त्री की लड़की ने आधी रात के बाद आने को कह दिया।

दस बजते ही कोतवाल साहब सज धज कर आ पहुँचे। मन्त्री की बेटी ने कोतवाल को एक कमरे में बैठा दिया। फिर वह उसके लिए खाने-पीने की चीजें जुटाने लगी। देर होती देख कर कोतवाल साहब जल्दी करने लगे तो मन्त्री की लड़की ने कहा कि अब रात आगे क्या देर है? अब यहाँ आप हैं और मैं हूँ। ग्यारह बजते-बजते बड़े अफसर ने दरवाजे पर दस्तक दी तो कोतवाल साहब ने पूछा कि कौन है? मन्त्री की लड़की ने कहा कि पुलिस के बड़े अफसर हैं। कोतवाल साहब की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। उन्होंने मन्त्री की लड़की से कहा कि मुझे शीघ्र कहीं छिपा। मन्त्री की लड़की ने कहा कि मैं कहाँ छिपाऊँ? अन्त में जब कोतवाल साहब बहुत गिड़गिड़ाने लगे तो उसने मन्त्री के ऊपर एक फटा हुआ टाट डाल दिया और उसके दोनों हाथों में दीपक टिका दिये। अब बड़े अफसर की आवभगत होने लगी। इतने में दीवान आ गये। अब अफसर साहब ने कहा कि मुझे जल्द छिपा। मन्त्री की लड़की ने उसे मुर्गा बना कर एक कोने में खड़ा कर दिया और फिर उस पर कपड़ा ओढ़ा कर एक घड़ा उसकी पीठ पर रख दिया। अब दीवान की खातिर होने लगी। इतने में राजा आ गये।

मन्त्री की लडकी ने दीवान जी को एक ओढनी ओढा कर चक्की पीसने के लिये बैठा दिया । अब राजा की खातिर होने लगी । थोडी देर बाद मन्त्री की लडकी किसी दूसरे कमरे म जाकर निश्चिन्त हो कर सो रही ।

इधर राजाजी बैठे-बैठे ऊँघने लगे । वे किसी को पुकारते तो कोइ उत्तर न मिलता । वे बडे असमजस म पड गये कि कहा आ फँसे ? दीपक की बत्ती मन्द होने लगी तो राजा बत्ती ठीक करने के लिए उठे । उधर कोतवाल न सोचा कि मेरी शामत आ गई । वह गिडगिडाकर राजा के पैरा पर गिर पडा । राजा कोतवाल का इस रूप म देख कर हक्का-बक्का रह गया । उसने डाँट कर कोतवाल से पूछा कि तू यहा कैसे ? कोतवाल ने उत्तर दिया कि हुजूर मैं ही नही, बड अफसर साहब कोने म खडे है और दीवान बहादुर चक्की पीस रह हैं ।

सवेरा हुआ तो मत्री की लडकी वहाँ आई । उसने राजा से कहा कि महाराज ! गुस्ताखी माफ हो । आपन मुझसे एक सवाल पूछा था कि औरत अधिक चतुर होती है या मर्द ? मैंने कहा था कि औरत अधिक चतुर होती है और आपकी आज्ञा से ही मैंन अपने इस कथन को सिद्ध करके दिखलाया है । लडकी की बात सुन कर राजा शर्मिदा हो कर अपने महल को चला गया ।

● पीसो बडो क' भाग ?

दो मित्रा म विवाद हो गया । एक ने कहा कि भाग्य बडा है, दूसरे ने कहा कि धन बडा है । दोना इस बात की परीक्षा करने के लिए चल पडे । चलते-चलते वे एक गाँव म पहुँचे । वहाँ उन्होंने देखा कि एक आदमी रस्सी बट रहा है । पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह बहुत गरीब है और रस्सी बटकर ही अपने परिवार का निर्वाह करता है । दोना मित्रा ने सलाह की कि इसी पर परीक्षा की जाए । धनवाल ने उसे सौ रुपये दिये और कहा कि तुम रस्सी बटना छोड दो और इन सौ रुपया से कोई धधा शुरू कर दो । दोना मित्र अपन गाँव को चले आये । वह आदमी रुपये लेकर अपने घर चला

आया। रुपये मिलने की बात उसने अपनी पत्नी को भी नही बतलाई। घर मे एक पुराने घडे मे घास भरी पडी थी। उसने वे रुपये उस घास के घडे मे छिपा दिये।

एक दिन एक घुडसवार उधर से निकला। आज उसके घोडे के लिए घास नही मिली थी। सयोग से उस घुडसवार ने उस घर मे भी पूछा कि क्या घोडे के लिए थोडी सूखी घास मिल सकती है? घरवाली ने वह घडा उस घुडसवार को दो आने मे बेच दिया। इधर जब घर का मालिक आया और उसे सारी बात मालूम हुई तो वह पछताने लगा। कुछ दिनो बाद वे दोनों मित्र उस गाँव मे फिर आये। आकर उन्होने देखा तो वह आदमी उन्हें रस्सी बटता हुआ ही मिला। सारी बात सुनकर धनवाले आदमी ने उसे सौ रुपये और दिये और कहा कि इस बार बहुत सावधानी से काम करना। इस बार उस आदमी ने रुपये अपनी पगडी मे बाँध लिये। एक दिन वह गगा-स्नान को गया तो कपडे उतार कर नहाने के लिए गगा जी मे घुसा। पीछे से उसकी पगडी कोई उठा ले गया। साथ ही रुपये भी चले गये।

तीसरी बार वे दोनो मित्र वहाँ आये तो वह आदमी उन्हे फिर रस्सी बटता हुआ मिला। इस बार भाग्य वाले ने उसे एक काँच का टुकडा दिया और कहा कि यदि तुम्हारा भाग्य चमकना होगा तो इसी से चमक जायेगा। हम अब एक साल बाद यहाँ आएगे। उस आदमी ने वह काँच का टुकडा ले जा कर घर मे डाल दिया।

उस आदमी के घर के पास ही एक मछुआ रहता था। एक दिन मछुवे की स्त्री ने उसके घर आकर कहा कि आज हमारे जाल मे लगाने का काँच खो गया है सो तुम्हारे पास कोई पडा हो तो दे दो। मछुवे की स्त्री ने पडोसिन से वह टुकडा लाकर अपने पति को दे दिया। मछुआ तालाब पर गया। पहले-पहल जो मछली आई वह उसने पडोसी के लिए रख दी और फिर और मछलियाँ अपनी टोकरी मे भर कर घर ले आया। उसने पहले-पहल वाली मछली पडोसी की स्त्री को दे दी। मछली को चीरने पर उसमे से एक कीमती मोती निकला। उसने मोती बेच दिया और अब वह मालदार

घन गया । उसन अपने लिए एक मकान बनवा लिया और खूब कारोबार करने लगा ।

अगली बार जब वे दोनो मित्र उस गाँव मे आये और उन्हे सारी बात का पता चला तो दोना ने एक साथ ही कहा कि भाग्य ही बडा है ।

❶ रग न्यारा न्यारा, सुआद एक है

एक बार एक राजा न अपनी पुत्र-वधू को स्नान करते समय देख लिया। पुत्र वधू अत्यन्त रूपवती थी सो राजा का मन चलायमान हो गया। राजा अब किसी प्रकार उस पान की चेप्टा करन लगा । वहू को भी श्वसुर की इस कुत्सित इच्छा का पता चल गया । उसने सोचा कि श्वसुर को समझाने के लिए युक्ति स ही काम लेना चाहिए । उसने राजा को सकेत कर दिया कि आज रात को मेरे महल मे आ जाएँ । राजा बडी व्यग्रता से रात्रि की प्रतीक्षा करन लगा। दो घडी रात बीतते ही राजा वहू के महल मे जा पहुँचा।

इधर वहू ने चार नीबू मँगवाये और उनके दो-दो टुकडे करके उन्हें भिन्न भिन्न रगो से रग कर एक मेज पर राजा कर रख दिये । राजा आ कर बैठ गया तो बहू न राजा से कहा कि पहले उस मेज पर जो भी चीजें रखी हैं आप उन्ह चख कर उन सब के स्वाद मुझ बतलाएँ तब मैं आपके पास आऊँगी। राजा न उठकर आठा टुकडे चक्खे और बहू से कहा कि इनके रग यद्यपि भिन भिन हैं लेकिन स्वाद सब का एक ही है। तब बहू ने राजा के गाल पर एक चाटा मारते हुए कहा कि पापी जिस प्रकार इन नीबुओ के रग भिन्न भिन्न हैं लकिन स्वाद एक ही है उसी प्रकार स्त्रियो के भी रग भिन्न भिन्न है लकिन वात एक ही है। तुम्हार यहाँ जितनी रानियाँ हैं उनस अधिक मर म काई विशषता नहा है फिर तू क्या अपने लिए कलक का टीका लेता है और पाप का भागी बनना ह।

वात राजा का समझ म आ गइ और वह वहू से माफी माँग कर अपने महल को चला गया ।

● धुवें का धोतिया

एक सेठ बहुत धनवान् था। वहाँ के राजा से भी उसके पास अधिक धन था। सेठ और राजा आपस में दोस्त थे, लेकिन सेठ की बेटी इससे खुश नहीं थी। वह अपने बाप से कहा करती—पिताजी, राजा से अधिक दोस्ती न रखा करें, क्योंकि, 'राजा, जोगी, अग्नि, जल इनकी उल्टी रीत' होती है। लेकिन सेठ ने बेटी की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उधर राजा के मन्त्री ने राजा को सुझाया कि राज्य-कोष तो खाली पड़ा है, यदि किसी प्रकार आपके मित्र का सारा धन हथिया लिया जाए तो खजाना भर जाए। राजा को यह बात बहुत पसन्द आई और उसने कहा कि सेठ का धन छीनने की कोई युक्ति निकालो। मन्त्री के कहने से राजा ने सेठ को कहलवाया कि हम तुम्हारी कुई को अपने कुएँ की बहू बनाना चाहते हैं सो अपनी कुईं को भेज दो अन्यथा तुम्हारी सम्पत्ति छीन ली जायेगी। राजा का हुक्म सुन कर सेठ की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई, लेकिन सेठ की बेटी ने अपने बाप से कहा—पिताजी, घबराने की कोई बात नहीं है, आप राजा को कहला दें कि कुंवारी बेटी कभी ससुराल नहीं भेजी जाती, अतः अपने कुएँ को दूल्हा बनाकर ले आओ और तब हम अपनी कुई का विवाह उसके साथ करके अपनी कुईं को भेजेंगे। राजा की यह चाल विफल हो गई तो मन्त्री ने राजा को दूसरी चाल बतलाई। राजा ने सेठ को कहला भेजा कि हमें 'धुएँ के धोतिये' भेजो। इस पर सेठ की बेटी ने अपने बाप से कहा कि राजा को कहला दीजिये कि आप पवन के धागे भेज दीजिए सो हम उनसे 'धुएँ के धोतिये' बना कर भेज देंगे। अब राजा ने सेठ को कहलवाया कि बैल का दूध भेजो। सेठ की बेटी ने राजा से कहलवाया कि यह एक अलभ्य वस्तु है, अतः आप स्वयं आकर ले जाएँ। इधर सेठ की बेटी ने अपने बाप को एक कमरे में सुला दिया और कमरे के दरवाजे पर पर्दा लगा दिया। फिर वह स्वयं 'पोतड़े' धोने के लिए बैठ गयी। राजा आया और उसने लड़की से पूछा कि सेठजी कहाँ हैं? लड़की ने उत्तर दिया कि उनके लड़का हुआ है, अतः वे जच्चा घर में हैं। आप देखते नहीं कि मैं 'पोतड़े' धो रही हूँ। लड़की की बात सुनकर राजा को

बडा विस्मय हुआ। उसने लडकी से कहा कि कही मर्द भी बच्चा जनते हैं ? इसपर लडकी ने तडाक से उत्तर दिया, तो कही बैल भी दूध देता है ? राजा हार मानकर अपने महल को लौट गया। फिर राजा ने सेठ को कहला भेजा कि अपनी लडकी की शादी राजकुमार के साथ करनी होगी। इस पर सेठ ने राजा को उत्तर भेजा कि आप सारी चाले हार गये हैं अत वह राजकुमार से शादी करने के लिए तैयार नहीं है। राजा निरुत्तर हो गया। फिर बेटी के कहने से सेठ दूसरे राज्य मे जा कर बस गया।

● स्याणी बहू की खोज

एक ब्राह्मण अपने बेटे के लिए बहू की खोज म निकला। वह ऐसी बहू चाहता था जो कम आय मे भी हर तरह से किफायत करके घर बसा सके। ढूढते-खोजते वह एक गाव मे पहुँचा। एक जगह बहुत सारी लडकियाँ खेल रही थी। ब्राह्मण ने उन सबसे पूछा कि क्या तुम म से कोई ऐसी लडकी भी है जो मुझे एक धोवा' (अजलि या दो पसर) धान म रसोई बनाकर जिमा सके ? और सब लडकिया तो नट गई लेकिन एक लडकी ने कहा कि मैं ऐसा कर सकती हूँ। ब्राह्मण ने अपने पास का दो पसर धान लडकी का दे दिया। लडकी उस ब्राह्मण को अपने घर ले गयी। घर जाकर लडकी ने धान को कूटकर छिलके अलग किये। फिर उन छिल्का को बारीक कूट कर एव सुनार को बेच आई और उन पैसो से कुछ लकडियाँ ले आई। फिर उसने कुछ लकडियाँ जलाकर कोयले बनाये और लकडिया की आँच मे चावल पका लिये। फिर उन कोयलो को बेच कर वह दाल और मसाले लायी और तब उसने रसोई बनाकर ब्राह्मण को भोजन करा दिया। ब्राह्मण के पूछने पर लडकी ने सारी बात बतलाई। लडकी की बात सुन कर ब्राह्मण बडा खुश हुआ कि उसे मनचाही पुत्र-वधू मिल गई। लडकी का पिता भी एक गरीब ब्राह्मण था। इसलिए उसने उस ब्राह्मण के बेटे से अपनी बेटी की शादी खुशी-खुशी कर दी।

● बेटो डेढ ई हैं

एक नगर म एक बडा मालदार सेठ रहता था। लेकिन साथ ही वह

बडा कजूस भी था। दान-पुण्य करना तो वह जानता ही न था। उसके चार लडके थे, जिनम तीन का विवाह हो चुका था लेकिन सेठ के तीनो बेटे और उनकी बहुएँ भी वैसी ही कजूस थी। सेठ की स्त्री भी अपने पति के अनुरूप ही थी।

लेकिन चौथे बेटे की बहू आई तो वह उन सब से एकदम भिन्न थी। वह ईश्वर भजन भी करती और दान-पुण्य भी किया करती। एक दिन वह अपनी हवेली के झरोखे म बैठी थी कि रास्ते स एक साधु गुजरा। साधु ने बहू से अन्न का सवाल किया तो बहू ने कहा कि बाबा यह सराय है यहाँ तुझे कुछ नही मिलेगा। इस पर साधु ने पूछा कि तुम्हार श्वसुर के पास कितने रुपय हाग ? बहू न उत्तर दिया कि यही कोई सौ-पचास रुपये हाग। साधु के पूछने पर बहू ने कहा कि मेरी सास की आयु काई दो साल की हागी और मेरे पति की आयु तो साल भर की ही है। साधु ने अन्तिम प्रश्न पूछा कि तुम्हारे श्वसुर के बेटे कितने हैं ? इस पर बहू ने उत्तर दिया कि डेढ बेटा है।

सेठ छिपकर यह सारा वार्त्तालाप सुन रहा था। बहू की निरर्थक बातें सुन कर श्वसुर को बडा गुस्सा आ रहा था। साधु के जाते ही उसने बहू के पास जाकर क्रोध से पूछा कि तुम उस साधु के साथ क्या बकवास कर रही थी ? बहू ने श्वसुर को शान्त करते हुए कहा कि बापजी, मैं सत्य ही कह रही थी। या कह कर उसने अपनी बातो का खुलासा करते हुए कहा कि मैंने साधु से कहा था कि यह सराय है। आप बतलाइये कि यह मकान किसने बनवाया था ? सेठ ने सक्रोध कहा कि मेरे दादा ने। बहू ने पूछा कि आपके दादाजी कहाँ गये ? सेठ न कहा कि वे स्वर्ग चल गये। तब बहू ने कहा कि उसके बाद आपके पिताजी इस हवली म रह हाग और अब आप रह रह हैं और आपके जाने के बाद आपके बच्चे, याने इसम रहना भी सराय म जैसे मुसाफिर आते हैं, ठहरते हैं और फिर चले जाते हैं इसी प्रकार इस हवेली का भी समझिये। सेठ का क्रोध कुछ कम हुआ ता बहू न दूसरी बात का खुलासा किया कि आप कहते हैं कि मरे पास लाखो की सम्पत्ति है, लेकिन

मैंने कहा कि आपके पास सिर्फ सौ-पचास रुपये होंगे। इसका तात्पर्य यह है कि आपके पिताजी के पास भी लाखों रुपये थे लेकिन मरने के बाद वे सब यहीं पड़े रहे और आप उनके मालिक हो गये। आपके मरने पर भी सारे रुपये यही पड़े रह जाएँगे। अपनी जिन्दगी में जो सौ-पचास रुपये आप सत्कार्य में लगा देंगे वे ही आपके हैं और वे ही आपको मिलेंगे। सासजी की आयु मैंने जो दो साल की बताई है, उसका मतलब यह है कि भगवान् के भजन के बिना जितने दिन जाते हैं वे बेकार हैं। मेरे कहने-सुनने से सासजी दो साल से ईश्वर के भजन में मन लगा रही हैं और आपके सुपुत्र भी साल भर से इधर लगे हैं, अतः मैंने सास जी की आयु दो साल और अपने पति की आयु एक साल बतलाई थी। इस पर सेठ ने कहा कि और तो जो तुम कहती हो सो सब ठीक है लेकिन मेरे चार पुत्र तो तुम आँखों से देख रही हो, फिर तुमने यह कैसे कहा कि मेरे श्वसुर के सिर्फ डेढ़ बेटा है ? श्वसुर की बात सुनकर बहू ने कहा कि आप अपने चारों बेटों को अभी यहाँ बुलवाइये। सेठ ने नौकर को भेजा कि चारों बेटों को इसी क्षण बुला कर लाओ। चारों बेटे अपनी-अपनी दुकानें अलग-अलग करते थे। बड़े बेटे के पास जब नौकर पहुँचा तो वह एक ग्राहक को चीजें तौल कर दे रहा था। सेठ का हुक्म सुनकर उसने कह दिया कि इस समय मैं काम में फँसा हूँ, जा कर कह दो कि मैं नहीं आ सकता। दूसरा बेटा किसी ग्राहक को कपड़ा दिखला रहा था, उसने भी जाने से इनकार कर दिया। तीसरा बेटा अपनी रोकड़ जोड़ रहा था। बाप की आज्ञा सुन कर उसने कहा कि पिताजी से जाकर कह दो कि मैं अभी आ रहा हूँ, रोकड़ में थोड़ा फर्क है, उसे निकाल कर अभी आया। अब सेठ का हरकारा चौथे बेटे के पास पहुँचा। आज दुकान पर काम अधिक होने से वह खाना खाने के लिए घर पर नहीं गया था। उसने अपना भोजन दुकान पर ही मँगवा लिया था और अब वह हाथ-मुह धोकर खाना खाने के लिए बैठा ही था। पिता की आज्ञा सुनते ही वह खाना छोड़ कर हरकारे के साथ हो लिया।

नौकर तथा छोटे बेटे को आया देख कर सेठ ने अन्य बेटों के विषय

में भी पूछा। नौकर ने सारी बात बतला दी। तब बहू ने कहा कि श्वसुरजी, मैंने कहा था न कि आपके डेढ़ बेटा है। जो बेटा अपने पिता की आज्ञा का तत्काल पालन करता है, वही वास्तव में बेटा है। आपके छोटे बेटे ने ऐसा ही किया है और वह देखो सामने आपका दूसरा बेटा भी आ रहा है। उन्होंने कुछ विलम्ब से आपकी आज्ञा का पालन किया है, अतः उन्हें आधा बेटा ही कहना चाहिए और शेष दोनों को तो आप वास्तव में बेटा कह ही नहीं सकते।

बहू की बात सुनकर सेठ की आँखें खुल गई और वह बहू के कहे अनुसार चलने लगा।

कथाओं की प्रतीकानुक्रमणिका